सामुदायिक रेडियो:
उच्च शिक्षा में चलन एवं संभावनाएं

पत्रकारिता एवं जनसंचार विषय में डॉक्टर ऑफ़ फ़िलासफ़ी की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध

2022

डॉ.(श्रीमती) रश्मि बोहरा
शोध पर्यवेक्षक

मुहम्मद मेराज अहमद
शोधकर्ता

सतत शिक्षा विद्यापीठ
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय
रावतभाटा रोड, कोटा (राजस्थान) भारत पिन-कोड-324021

सतत शिक्षा विद्यापीठ (पत्रकारिता एवं जनसंचार) **मुहम्मद मेराज अहमद**

व0 म0 खु0 वि0, कोटा(राजस्थान) **VMOU/ Research /Ph.D. /JM/2014/45**

घोषणा पत्र

मैं, मुहम्मद मेराज अहमद निष्ठापूर्वक घोषणा करता हूँ कि मैं वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय का नियमित एवं पूर्णकालिक शोध छात्र हूँ । मैंने***विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (एम. फिल./पीएच.डी. उपाधि के लिए न्यूनतम मानक एवं प्रक्रिया) विनियम*, 2009** में वर्णित दिशा-निर्देशों के अंतर्गत पत्रकारिता एवं जनसंचार विषय में " सामुदायिक रेडियो: उच्च शिक्षा में चलन एवं संभावनाएं" शीर्षक पर शोध कार्य डॉ. (श्रीमती) रश्मि बोहरा के पर्यवेक्षण में पूर्ण किया है।

मैं घोषणा करता हूँ कि प्रस्तुत शोध कार्य मौलिक है तथा इसमें प्रयुक्त समस्त प्रदत्त मैंने स्वयं संकलित किये हैं। यह शोध कार्य पूर्व में अन्यत्र कहीं भी किसी भी उपाधि के लिए अथवा प्रकाशनार्थ प्रस्तुत नहीं किया गया है। यह शोध प्रबंध डॉक्टर आफ़ फिलॉसफी की उपाधि के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है। हालांकि इसके संपादन में पर्याप्त सजगता एवं सावधानी बरतने का हरसंभव प्रयास किया गया है फिर भी मुद्रण एवं प्रूफ संबंधी त्रुटियों का शेष रह जाना स्वाभाविक है। अतः उन्हें बहुत महत्व ना देकर शोध प्रबंध का औचित्य, इसका उद्देश्य, इसकी उपयोगिता, इसके निष्कर्ष तथा इसके सुझावों को महत्व देना ही समीचीन होगा।

स्थान : कोटा **मुहम्मद मेराज अहमद**

दिनांक : 22-12-2022 **शोध छात्र**

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय

सतत शिक्षा विद्यापीठ (पत्रकारिता एवं जनसंचार)
व0 म0 खु0 वि0, कोटा(राजस्थान)

डॉ.(श्रीमती) रश्मि बोहरा
शोध पर्यवेक्षक

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि मुहम्मद मेराज अहमद, पत्रकारिता एवं जनसंचार विषय में नियमित एवं पूर्णकालिक शोध छात्र हैं । इन्होंने *विश्वविद्यालय अनुदान* ***आयोग (एम. फिल. / पीएच.डी. उपाधि के लिए न्यूनतम मानक एवं प्रक्रिया) विनियम, 2009***में वर्णित दिशा-निर्देशों के अंतर्गत मेरे पर्यवेक्षण में ष्सामुदायिक रेडियो रू उच्च शिक्षा में चलन एवं संभावनाएंष् शीर्षक पर शोध कार्य पूर्ण किया है। इनका शोध कार्य मौलिक है, इन्होंने शोध अध्ययन में समाहित समस्त प्रदत्त स्वयं संकलित किये हैं।

मैं, मुहम्मद मेराज अहमद के उज्जवल भविष्य की कामना के साथ शोध प्रबंध को पत्रकारिता एवं जनसंचार विषय में डॉक्टर आफ़ फ़िलॉसफ़ी की उपाधि के विश्वविद्यालय को प्रेषित करते हुए इसके मूल्यांकन की अनुशंसा करती हूँ।

दिनांक:

डॉ (श्रीमती) रश्मि बोहरा
शोध पर्यवेक्षक

स्थान: **कोटा**

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय

शोध विभाग
व0 म0 खु0 वि0, कोटा(राजस्थान)

डॉ.क्षमता चौधरी
निदेशक (**शोध**)

CERTIFICATE OF PLAGIARISM

This is to certify that the document detailed below has been evaluated by plagiarism checking software URKUND.

Document Type	:	Thesis
Document Title	:	सामुदायिक रेडियो : उच्च शिक्षा में चलन एवं संभावनाएं
Research Scholar	:	Mohd Meraj Ahmad
Similarity	:	3%
Remarks	:	Low plagiarism detected.

Date :

Dr. Kshamta Chaudhary
Director (Research)

Place : VMO University, Kota

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय

शोध विभाग
व0 म0 खु0 वि0, कोटा(राजस्थान)

डॉ.**क्षमता चौधरी**
निदेशक (**शोध**)

प्री पीएच.डी. सब्मिशन सेमिनार प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि मुहम्मद मेराज अहमद, पत्रकारिता एवं जनसंचार विषय में नियमित एवं पूर्णकालिक शोध छात्र हैं। इन्होंने प्री पीएच. डी. सेमिनार सफलतापूर्वक पूर्ण किया है।

ज्ञातव्य है कि मुहम्मद मेराज अहमद ***विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (एम. फिल. / पीएच.डी. उपाधि के लिए न्यूनतम मानक एवं प्रक्रिया) विनियम 2009***में वर्णित दिशा-निर्देशों के अंतर्गत पीएच. डी. कर रहे हैं।

दिनांक:

डॉ. क्षमता चौधरी
निदेशक (**शोध**)

स्थान: **कोटा**

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय

शोध विभाग
व0 म0 खु0 वि0, कोटा(राजस्थान)

डॉ.**क्षमता चौधरी**
निदेशक (**शोध**)

प्री पीएच. डी. कोर्स वर्क प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि मुहम्मद मेराज अहमद, पत्रकारिता एवं जनसंचार विषय में नियमित एवं पूर्णकालिक शोध छात्र हैं। इन्होंने प्री पीएच. डी. कोर्स वर्क प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया है।

ज्ञातव्य है कि मुहम्मद मेराज अहमद *विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (एम. फिल. / पीएच.डी. उपाधि के लिए न्यूनतम मानक एवं प्रक्रिया) विनियम 2009* **में वर्णित दिशा-निर्देशों के अंतर्गत पीएच.डी.कर रहे है।**

दिनांक:

डॉ. क्षमता चौधरी
निदेशक (**शोध**)

स्थान: **कोटा**

प्रकाशित शोध कार्यों की सूची

1- शोध पत्र / Research Papers.

- अहमद, एमएम. बोहरा , डॉ रश्मि. कुमार, डॉ सुबोध. (2019). ग्रामीण क्षेत्रों के शैक्षिक विकास में सामुदायिक रेडियो की चुनौतियां एवं संभावनाएं. प्रिंटिंग एरिया, ISSN 2394-5303, Vol 16(50), 110-113.
- Ahmad, MM. Bohra, Dr. Rashmi. Kumar, Dr. Subodh. (2019). The Role of Community Radio in the Inclusive Development of Higher Education. Vidyawarta, ISSN 2319-9318, Vol 09 (29), 023-027.

2- अकादमिक कॉन्फ्रेंस में शोध पत्र ‘शोध आलेख का प्रस्तुतीकरण / Papers Presented in Academic conferences

- Attended 1 day National Seminar on Social Concern of Social Media and presented paper bearing the title of "Social Harmony & Socialisation of Higher Education through Community Radio in Social Media Age". Seminar was organised by UPRT Open University at Allahabad held on 29th March 2017.
- Attended 2 Day's International Seminar on Aspects of Contemporary Arts and presented paper bearing the title of " Role of Community Radio in Contemporary Art". Seminar was organised by DSMN Rehabilitation University in Collaboration with State Lalit Kala Akademi at Lucknow held on 30-31, March 2017.

3- पुस्तक अध्याय लेखन / Books Chapter's Published.

- अहमद, एमएम. (2015). डिजीटल मीडिया प्रोडक्शन, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा।
- अहमद, एमएम. (2019). वेब पत्रकारिता : कौशल, तकनीक एवं प्रबंधन, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा ।

4- अकादमिक सेमीनार, वेबीनार एवं कार्यशालाओं में सहभागिता / Participated in Seminar, Webinar and Workshops.

- Participated in Workshop on Health of Higher Education in India organised by VMO University at Kota held on 5th September 2014.
- Participated in Documentary Presentation on the occasion of National Unity Day organised by VMO University at Kota held on 31st October 2014.
- Participated in 3 Day's Workshops on Development of Question Bank organised by Department of JMC, VMO University at Kota held on 8-10 February 2015.
- Participated in 3 Day's Workshop on Community Radio Awareness organised by Community Radio Association in collaboration with Ministry of Information and Broadcasting, Govt. of India at Varanasi held on 3-5 February, 2020.
- Participated in a National Webinar on Challenges and Prospects of Media During Covid 19 Pandemic organised by Department of JMC, VMO University, Kota held on 3rd June, 2020.
- Participated in a National Webinar on Media Ethics During Covid 19 Pandemic organised by Department of JMC, UPRT Open University, Prayagraj held on 6th June, 2020.

आभार ज्ञापन

मेरे लिए ये पल अत्यन्त हर्ष एवं भावुकता के साथ साथ आप सभी श्रद्धेय जनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का पल है, आपने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मेरे शोध शीर्षक "सामुदायिक रेडियो : उच्च शिक्षा में चलन एवं संभावनाएं" को पूर्णता प्रदान करने की दिशा में महत्वपूर्ण सहयोग दिया तथा इसे शोध प्रबंध के रूप में आकार देने के लिए प्रेरित किया। प्रथमतः आपको मेरा नमन। सच तो यह है कि शब्दों के जरिये आपके प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर पाना दुष्कर कार्य है क्योंकि शब्दों की एक सीमा होती है लेकिन एक शिष्य शब्दों एवं सदव्यवहार के जरिये ही अपने भावों को प्रकट कर सकता है इसलिए शब्दों के समर्पण द्वारा ही आपके आशीर्वाद का आकांक्षी हूँ। प्रस्तुत शोध प्रबंध को प्रस्तुत करते हुए पत्रकारिता एवं जनसंचार विषय के संयोजक तथा सतत शिक्षा विद्यापीठ के निदेशक डॉ सुबोध कुमार के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। जिन्होंने न केवल मेरे शोध प्रबंध को डॉक्टर आफ़ फ़िलॉस्फ़ी की उपाधि के लिए प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान की अपितु समय-समय पर बहुमूल्य सुझाव द्वारा इस शोध को समृद्ध भी किया । निश्चित ही उनकी प्रेरणा एवं उत्साहवर्धन से यह शोध प्रबंध मूर्त रूप ले सका है । शोध प्रबंध की पूर्णता में कुलाधिपति कार्यालय (राजभवन) जयपुर के आशीर्वाद एवं तत्कालीन कुलपति प्रोफेसर (डॉ.) नीलिमा सिंह तथा विश्वविद्यालय के प्रबंध मंडल के सदस्य डॉ संतोष कुमार शील द्वारा दिये गये अकल्पनीय सहयोग एवं समर्पण को मैं ईश्वरीय वरदान मान कर उन्हें नमन करता हूँ तथा कुलपति प्रोफेसर (डॉ.) कैलाश सोडाणी का आभार व्यक्त करते हुए उनके शिष्यवत्सल स्नेह और आशीर्वाद की निरंतर अभिलाषा रखता हूँ।

ये लिखते हुए मैं अत्यन्त भावुक हूँ कि तमाम विषम परिस्थितियों के बावजूद मेरी शोध पर्यवेक्षक डॉ (श्रीमती) रश्मि बोहरा ने मुझे कभी हतोत्साहित नहीं होने दिया, यह शोध कार्य उनके कुशल पर्यवेक्षण एवं निदेशन में पूर्ण हुआ। मैं मेरे शोध संपूर्ति का श्रेय उनको अर्पित करता हूँ। शोध कार्य के लिए शीर्षक चयन से लेकर उसकी संपूर्ति तक उनके

शिष्यवत्सल व्यवहार का रिणी हूँ। उनका सम्यक मार्गदर्शन मेरे लिए सदैव संस्मरणीय तथा अनमोल रहेगा। पीएचडी की प्रवेश परीक्षा से लेकर शोधकर्ता के रूप में पंजीकृत होते हुए शोध प्रबंध के प्रस्तुतीकरण तक मेरे शोध कार्य को नित नई ऊर्जा एवं प्रेरणा प्रदान करने के लिए वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर (डॉ.) विनय कुमार पाठक एवं उनके परिवार के प्रति कृतज्ञ हूँ एवं उनके स्नेह और आशीर्वाद का आकांक्षी हूँ। मेरी शोध यात्रा में भावनात्मक एवं आर्थिक संबल के साथ साथ शोध कार्य की रुपरेखा बनाने एवं शोध कार्य से संबंधित विभिन्न पक्षों पर परामर्श प्रदान करने के लिए प्रोफेसर (डॉ.) रजनी रंजन सिंह, डॉ पतंजलि मिश्रा, डॉ अखिलेश कुमार का सम्यक मार्गदर्शन मेरे लिए अमूल्य रहा है, मैं विनम्रतापूर्वक उनका आभार व्यक्त करता हूँ। शोध कार्य एक लंबी एवं वैज्ञानिक प्रक्रिया का नाम है मेरे शोध कार्य को व्यवस्थित एवं मानकीकृत रूप से अपने पूर्णता की ओर ले जाने तथा संकलित प्रदतों के सांख्यिकीय विश्लेषण में डॉ कल्पनाथ वर्मा का अतुलनीय सहयोग रहा, मैं उनके सहयोग के लिए कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। इस यात्रा में प्रवेश से लेकर पूर्णता तक मेरे सहचर की भूमिका निभाने वाले मेरे वरिष्ठ सहपाठी एवं मित्र डॉ आयुष श्रीवास्तव, अंकल श्री बृजेश श्रीवास्तव एवं आंटी श्रीमती निर्मला श्रीवास्तव का आभार प्रकट करता हूँ। विषम परिस्थितियों में संबल प्रदान करने वाले मित्रगण डॉ उमाशंकर मिश्रा, डॉ सौरभ पाण्डेय, डॉ मयंक गौड़, डॉ विजेन्द्र कुमार, डॉ रवि मेघवाल, श्री शौकत अली एवं प्रोफेसर (डॉ.) प्रमोद कुमार को उनकी सहृदयता के लिए धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। साथ ही साथ मित्र एवं पारिवारिक चिकित्सक डॉ शारिक नज़ीर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

मेरे विश्विद्यालय ने मेरी शोध यात्रा के हर पड़ाव पर मेरा मनोबल बढ़ाया है। शोध कार्य हेतु अनुकूल स्थितियों के निर्माण एवं गुणवत्तायुक्त शोध के प्रति प्रतिबद्ध शोध निदेशक श्रीमती (डॉ.) क्षमता चौधरी के प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ तथा हर समय हरसंभव सहयोग के लिए तत्पर शिक्षा विद्यापीठ के निदेशक डॉ अनिल जैन एवं परीक्षा नियंत्रक प्रो बी अरुण कुमार का आभार व्यक्त करता हूँ। आभार तब तक अपूर्ण रहेगा जब

तक कि विश्वविद्यालय के सतत शिक्षा विद्यापीठ के तत्कालीन निदेशक प्रोफेसर (डॉ.) एचबी नंदवाना को नमन ना कर लूं। पीएचडी प्रवेश से लेकर उसकी पूर्णता तक उनका आशीर्वाद सदैव साथ रहा। मैं उनके उत्तम स्वास्थ एवं दीर्घायु जीवन की कामनाओं के साथ उनका आभारी हूँ तथा अकादमिक विभाग के तत्कालीन निदेशक प्रोफेसर (डॉ.) एलआर गुर्जर को उनके प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन के लिए धन्यवाद व्यक्त करता हूँ। इसके साथ मैं इनफ्लिब्नेट का भी आभार प्रकट करता हूँ उनके द्वारा विश्वविद्यालय को प्रदान की गई फ्री एक्सेस की सुविधा से साहित्य समीक्षा में काफी मदद मिली। शोध कार्य में सहयोग के लिए पुस्तकालय विभाग के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ साथ शोध विभाग के बड़े बाबू श्री सुरेश सैनी एवं श्री बालकृष्ण का आभार व्यक्त करता हूँ। मेरे शोध प्रबंध की पूर्णता में लखनऊ विश्वविद्यालय के सह आचार्य एवं बड़े भईया डॉ महेन्द्र अग्निहोत्री व उनके परिवार का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, मुझे उनसे व उनके परिवार से सदैव स्नेह एवं आशीर्वाद मिलता रहा है मैं उनका आभार व्यक्त करता हूँ। मीडिया शिक्षक डॉ विजय प्रकाश उपाध्याय, रेडियो इंजीनियर राघवेन्द्र प्रताप सिंह, रेडियो विधा के महान हस्ताक्षर एवं प्रधानमंत्री के मासिक रेडियो कार्यक्रम "मन की बात" का फॉलो अप कार्यक्रम "पोस्ट बॉक्स नंबर 111"के सूत्रधार श्री जैनेन्द्र सिंह के स्नेह व मार्गदर्शन के लिए कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

सामुदायिक रेडियो के संबंध में सरकार की नीतियों एवं कार्यक्रमों तथा समुदाय की भागीदारी संबंधी तथ्यों का मेरे शोध प्रबंध को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इनकी सहज व सुलभ उपलब्धता के लिए मैं भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अतिरिक्त निदेशक श्री जीएस केसरवानी, आर्थिक सलाहकार श्री पीके अब्दुल करीम, सामुदायिक रेडियो विशेषज्ञ डॉ आर श्रीधर एवं सामुदायिक रेडियो एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री एनए शाह अंसारी का हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। इसी के साथ मीडिया के अकादमिक क्षेत्र से संबध संबंध रखने वाले मेरे गुरुवर प्रोफेसर गोविंद सिंह (आईआईएमसी, दिल्ली), प्रोफेसर मुकुल श्रीवास्तव (लखनऊ विश्वविद्यालय),

प्रोफेसर संजीव भानावत, प्रोफेसर आरसी त्रिपाठी के आशीर्वाद के लिए कृतज्ञ हूँ। इस अवसर पर मैं दूरदर्शन केंद्र लखनऊ परिवार का धन्यवाद ज्ञापन करता हूँ । विशेषकर क्षेत्रीय समाचार एकांश की संयुक्त निदेशक श्रीमती गार्गी मलिक(आईआईएस) कार्यक्रम प्रमुख श्रीमती रमा अरुण त्रिवेदी (आईबीपीएस) , सहायक निदेशक श्री आत्म प्रकाश मिश्र(आईबीपीएस) , सहायक निदेशक श्री अनुपम पाठक(आईबीपीएस) , वरिष्ठ कार्यक्रम अधिशासी एमए अल्वी, कार्यक्रम अधिशासी (समन्वय) श्री श्याम नारायण चौधरी और श्री मुकेश कुमार तथा श्री मुकेश कुमार "नादान" का आभार व्यक्त करता हूँ। इसी के साथ आकाशवाणी लखनऊ परिवार का आभारी हूँ विशेषकर क्षेत्रीय समाचार एकांश के प्रमुख एवं उपनिदेशक दिलीप शुक्ला (आईआईएस) , कार्यक्रम प्रमुख सुश्री मीनू खरे (आईबीपीएस) , कार्यक्रम अधिशासी डॉ सुशील कुमार राय एवं कार्यक्रम अधिशासी श्री सुभाष खन्ना को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। आकाशवाणी लखनऊ के पूर्व निदेशक श्री पृथ्वीराज चव्हाण, पूर्व वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारीगण श्री अवधेश प्रताप सिंह एवं श्री प्रतुल जोशी के सहयोग एवं सलाह ने मेरी शोध यात्रा को सरल बनाया उनके आशीर्वाद के लिए आभार प्रकट करता हूँ।

मेरे जीवन के हर सफल असफल फैसले में मेरे परिवार का समर्थन मेरे परिवार की विशेषता रही है। प्रस्तुत शोध कार्य को पूर्णता तक ले जाने में मेरे परिवार की भूमिका साहस बढ़ाने की रही। मेरे पिता स्वर्गीय श्री आशिक़ अली की इच्छा एवं माता श्रीमती सगीरन ख़ातून की प्रेरणा मुझे हर निराशा में आशा की किरण बन कर मंजिल की राह प्रशस्त करती रही। बहन श्रीमती ज़ाहिरा ख़ातून और बहनोई श्री इमरानुल्लाह भाईयों श्री इम्तियाज अहमद, श्री मुमताज़ अहमद और श्री फ़ैयाज़ अहमद ने हरसंभव मदद के अलावा हर परिस्थिति में मेरा उत्साहवर्धन किया। मैं अपनी भाभियों (शमशाद बेगम एवं तलत जहाँ) के साथ कुलसुम के सहयोग के लिए भी शुक्रिया अदा करता हूँ। मेरा एक परिवार ऐसा भी है जिससे कोई बॉयोलॉजिकल रिश्ता तो नहीं लेकिन वो रिश्ता बहुत भावपूर्ण रहा है, श्रीमती मनोरमा शुक्ला आंटी और उनके परिवार ने मेरी शोध यात्रा को

सफल बनाने के लिए लाखों जतन किये हैं उन्होंने हर स्थिति मुझे में उत्साहित किया और हर परिस्थिति में संबल दिया है। मैं श्री अनिल कुमार शुक्ला, उनकी पुत्री सुश्री श्रुति के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ और आर्यन एवं शौर्य शुक्ला का भी शुक्रिया अदा करता हूँ। भारतीय संस्कृति में बच्चे परिवार का अभिन्न अंग होते हैं। माना कि ये आभार का पन्ना है लेकिन आभार के पन्ने में प्यार प्रेषित करना कहां मना है। मेरी शोध यात्रा को रोचक, मनोरंजक और उल्लास से परिपूर्ण कर देने में मेरे भांजे तारिक़, तौहीद, ख़ालिद, नाहिद, अशरफ़ और तौफ़ीक़ की भूमिका मनमोहक रही। भतीजे वासिफ़, साक़िब, नाविद और भतीजियों सारा एवं हाना ने हमेशा ही मेरी शोध यात्रा को शानदार बनाने में सहयोग किया है, आप सबका शुक्रिया और आपको प्यार।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के टंकण, मुद्रण एवं साज सज्जा को पालिका बाजार परिवार, कपूरथला लखनऊ ने जिस लगन एवं तत्परता के साथ पूर्ण किया है उसके लिए मैं सन्नी , अरविंद, सत्येन्द्र, रवि, आशीष, कुलदीप एवं संजय के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

स्थान : कोटा   **मुहम्मद मेराज अहमद**
दिनांक : 22-12-2022   **शोध छात्र**

शोध कार्य का सारांश

सामुदायिक रेडियो की संकल्पना अपेक्षाकृत नई है। राज्य नियंत्रित एवं प्रबंधित लेकिन आमजन के प्रति संकल्पित सार्वजनिक रेडियो तथा विशुद्ध रूप से लाभ के लिए संचालित वाणिज्यिक रेडियो से भिन्न यह एक गैर लाभकारी प्रसारण सेवा है। सर्वप्रथम सामुदायिक रेडियो अमेरिका में पुष्पित हुआ, दक्षिण अमेरिकी देश बोलिविया में पल्लवित हुआ और अफ्रीका होते हुए भारतीय उपमहाद्वीप में प्रवेशित हुआ।बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध से भारत में समुदाय का, समुदाय के लिए और समुदाय द्वारा संचालित रेडियो के लिये आंदोलन चल रहा था। उस आंदोलन को बल तब मिला जब भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने ऐतिहासिक फैसला देते हुए वायु तरंगों को सार्वजनिक संपत्ति घोषित कर दिया। 1995 में न्यायमूर्ति पीवी सावंत ने अपने निर्णय में लिखा कि वायु तरंगों पर किसी का एकाधिकार नहीं हो सकता, ये सार्वजनिक संपत्ति हैं। सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद केंद्र सरकार सक्रिय हुई। 2002 में उसने शैक्षणिक संस्थानों को सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के संचालन के लिये लाइसेंस देने का निर्णय किया।आरंभ में अन्ना विश्वविद्यालय से लेकर आईआईएमसी तक और सत्यजीत रे टीवी एवं फिल्म इंस्टीट्यूट से लेकर जामिया मिलिया इस्लामिया समेत 17 उच्च शैक्षणिक संस्थानों ने लाइसेंस के लिए आवेदन किया लेकिन देश में पहला शैक्षिक सामुदायिक रेडियो के लिए लाइसेंस अन्ना एफएम को प्राप्त हुआ जो अन्ना विश्वविद्यालय द्वारा संचालित किया जाता है।

वर्ष 2006 में "सामुदायिक रेडियो नीति 2002"को संशोधित करते हुए "सामुदायिक रेडियो नीति 2006"को अधिसूचित किया गया तथा उसमें शैक्षणिक संस्थानों के अलावा कृषि विज्ञान केन्द्रों और गैर सरकारी संगठनों को भी सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के संचालन की पात्रता श्रेणी में शामिल कर लिया गया। इस दौरान सामुदायिक रेडियो केन्द्र के संचालन के लिए उपरोक्त तीनों श्रेणियों के आवेदकों को लाइसेंस निर्गत किये गये।लाइसेंस धारक कुछ सामुदायिक रेडियो केन्द्रों ने सामुदायिक रेडियो की संकल्पना एवं उसके उद्देश्यों के अनुरूप प्रसारण किया लेकिन कुछ सामुदायिक रेडियो केन्द्र संचालन की चुनौतियों का सामना नहीं कर पाये इसलिए वो बंद हो गये। साहित्य समीक्षा के पश्चात शोधकर्ता इस निष्कर्ष

पर पहुँचा कि पूर्व के शोधकर्ताओं ने सामुदायिक रेडियो अके सामाजिक एवं साहित्यिक सरोकारों के साथ प्राकृतिक आपदाओं में इसके प्रभाव का अध्ययन किया है लेकिन शिक्षा विशेषकर उच्च शिक्षा पर कोई अध्ययन नहीं हुआ है जबकि सामुदायिक रेडियो के संचालन के लिए सबसे पहले अनुमति प्राप्त करने वाला क्षेत्र शिक्षा था।

उपरोक्त पृष्ठभूमि को दृष्टिगत रखते हुए शोधकर्ता ने प्रस्तुत शीर्षक "सामुदायिक रेडियो : उच्च शिक्षा में चलन एवं संभावनाएं" पर अध्ययन किया है, जिसमें विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की वस्तुस्थिति का पता लगाया गया है। सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की उपयोगिता पर अध्ययन के साथ साथ उसके संचालन में व्याप्त चुनौतियों एवं वित्तीय प्रबंधन का भी अध्ययन किया गया है। तथा विश्वविद्यालयों के लिए सामुदायिक रेडियो के एक उपयुक्त मॉडल का सुझाव एवं संस्तुति की गई है। अध्ययन के सारगर्भित परिणामों के लिए शोध की विश्वसनीय एवं मानकीकृत विधियों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन का भौगोलिक क्षेत्र भारत गणराज्य का उत्तर प्रदेश राज्य है जिसके मंडल मुख्यालयों पर स्थित उन विश्वविद्यालयों में अध्ययन पूर्ण किया गया है जिनके द्वारा सामुदायिक रेडियो केन्द्रों का संचालन किया जा रहा है। शोध अध्ययन की जनसंख्या उत्तर प्रदेश के उन विश्वविद्यालयों के समस्त स्नातक एवं परास्नातक कक्षाओं के विद्यार्थी हैं जिन विश्वविद्यालयों द्वारा सामुदायिक रेडियो केन्द्रों का संचालन हो रहा है। प्रतिनिधि इकाई के रूप में 8 विश्वविद्यालयों एवं उसमें अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों को उद्देश्यपरक न्यादर्श तकनीक (Purposive and Convenient Sampling Technique) द्वारा चुना गया है। तथा आंकड़ों का संग्रहण स्वनिर्मित प्रश्नावली, अर्ध संरचनात्मक साक्षात्कार के साथ फोकस समूह परिचर्चा के माध्यम से किया गया है। संग्रहित आंकड़ों में परिमाणात्मक आंकड़ों को प्रतिशत विश्लेषण एवं काई वर्ग मान द्वारा व्याख्यायित किया गया है। जबकि गुणात्मक आंकड़ों का विषय वस्तु विश्लेषण किया गया है।

आंकड़ों के संग्रहण के दौरान एक रोचक तथ्य उजागर हुआ एक प्रश्न के उत्तर में उत्तरदाताओं ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात के कार्यक्रम को शैक्षिक जागरूकता एवं मनोबल बढ़ाने वाला कार्यक्रम बताया है। हालांकि सामुदायिक रेडियो अभी अपने शैशवावस्था में है इसके प्रसार के लिए

भारत सरकार प्रयासरत है, सरकार की महत्वाकांक्षी योजना है कि देश के प्रत्येक प्रखंड में सामुदायिक रेडियो केन्द्र स्थापित किया जाये। नीति निर्माताओं की रुचि एवं सामुदायिक रेडियो की भूमिका को दृष्टिगत रखते हुए अनुमान लगाया जा रहा है कि निकट भविष्य में लगभग चार हज़ार सामुदायिक रेडियो केन्द्र खोले जाएंगे। उक्त संदर्भ में प्रस्तुत शोध अध्ययन के सुझाव एवं संस्तुतियां सरकार एवं समाज के लिए लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं। प्रस्तुत शोध कार्य को पांच अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय का नाम शोध कार्य की पृष्ठभूमि है, द्वितीय अध्याय का नाम साहित्य पुनरावलोकन है, तृतीय अध्याय का नाम शोध अभिकल्प है, चतुर्थ अध्याय का नाम आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या है तथा पंचम अध्याय का नाम प्राप्तियां, निष्कर्ष एवं संस्तुतियां हैं। इसके बाद संदर्भ ग्रंथ एवं परिशिष्ट है जिसमें प्रतिनिधि इकाई के लिए स्क्रीनिंग प्रपत्र तथा मिश्रित प्रश्नावली (सामुदायिक रेडियो उपयोगिता प्रश्नावली) है साथ ही साथ फोकस समूह परिचर्चा के प्रश्न हैं तथा प्रकाशित शोध पत्रों / शोध आलेखों के प्रमाणपत्र, अकादमिक सेमिनारों में पत्र प्रस्तुतीकरण के प्रमाणपत्र, अकादमिक कार्यशालाओं में सहभागिता के प्रमाणपत्र, अध्याय लेखन के प्रमाणपत्र, अकादमिक सेमीनारों/ वेबीनारों में सहभागिता के प्रमाणपत्र संलग्न हैं।

तालिका सूची

तालिका संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.1	देश में सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के आंकड़े	38
1.2	उत्तर प्रदेश में सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के आंकड़े	61
3.1	अध्ययन के उद्देश्य, न्यादर्श, उपकरण एवं सांख्यिकी	119
3.2	उत्तर प्रदेश का मण्डलवार विवरण	122
4.1.	न्यादर्श एवं सांख्यिकी परीक्षण विधि का परिचय प्रदर्शित करती तालिका	142
4.2.	**उत्तरदाताओं का लिंग के आधार पर परिचय**	143
4.3.	**उत्तरदाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर परिचय**	143
4.4.	**उत्तरदाताओं का विषय वर्ग के आधार पर परिचय**	144
4.5.	**उत्तरदाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर परिचय**	144
4.6.	**प्रश्न सं0 1 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	145
4.7.	प्रश्न संख्या 1 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	146
4.8.	प्रश्न संख्या 1 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	147
4.9.	प्रश्न संख्या 1 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	148
4.10.	प्रश्न संख्या 1 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	149
4.11.	**प्रश्न सं0 2 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	150
4.12.	प्रश्न संख्या 2 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	151
4.13.	प्रश्न संख्या 2 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	152
4.14.	प्रश्न संख्या 2 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	153
4.15.	प्रश्न संख्या 2 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	154

4.16.	**प्रश्न सं0 3 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	155
4.17.	प्रश्न संख्या 3 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	156
4.18.	प्रश्न संख्या 3 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	157
4.19.	प्रश्न संख्या 3 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	158
4.20.	प्रश्न संख्या 3 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	159
4.21.	**प्रश्न सं**0 4 **के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	160
4.22.	प्रश्न संख्या 4 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	161
4.23.	प्रश्न संख्या 4 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	162
4.24.	प्रश्न संख्या 4 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	163
4.25.	प्रश्न संख्या 4 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	164
4.26.	**प्रश्न सं0 5 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	165
4.27.	प्रश्न संख्या 5 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	166
4.28.	प्रश्न संख्या 5 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	167
4.29.	प्रश्न संख्या 5 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	168
4.30.	प्रश्न संख्या 5 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	169
4.31.	**प्रश्न सं0 6 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	170
4.32.	प्रश्न संख्या 6 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	171

4.33.	प्रश्न संख्या 6 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	172
4.34.	प्रश्न संख्या 6 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	173
4.35.	प्रश्न संख्या 6 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	174
4.36.	**प्रश्न सं0 7 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	175
4.37.	प्रश्न संख्या 7 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	176
4.38.	प्रश्न संख्या 7 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	177
4.39.	प्रश्न संख्या 7 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	178
4.40.	प्रश्न संख्या 7 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	179
4.41.	**प्रश्न सं0 8 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	180
4.42.	प्रश्न संख्या 8 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	181
4.43.	प्रश्न संख्या 8 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	182
4.44.	प्रश्न संख्या 8 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	183
4.45.	प्रश्न संख्या 8 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	184
4.46.	**प्रश्न सं0 9 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	185
4.47.	प्रश्न संख्या 9 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	186
4.48.	प्रश्न संख्या 9 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	187
4.49.	प्रश्न संख्या 9 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	188

4.50.	प्रश्न संख्या 9 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	189
4.51.	**प्रश्न सं0 10 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	190
4.52.	प्रश्न संख्या 10 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	191
4.53.	प्रश्न संख्या 10 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	192
4.54.	प्रश्न संख्या 10 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	193
4.55.	प्रश्न संख्या 10 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	194
4.56.	**प्रश्न सं0 11 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	195
4.57.	प्रश्न संख्या 11 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	196
4.58.	प्रश्न संख्या 11 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	197
4.59.	प्रश्न संख्या 11 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	198
4.60.	प्रश्न संख्या 11 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	199
4.61.	**प्रश्न सं0 12 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	200
4.62.	प्रश्न संख्या 12 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	201
4.63.	प्रश्न संख्या 12 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	202
4.64.	प्रश्न संख्या 12 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	203
4.65.	प्रश्न संख्या 12 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	204
4.66.	**प्रश्न सं0 13 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	205

4.67.	प्रश्न संख्या 13 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	206
4.68.	प्रश्न संख्या 13 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	207
4.69.	प्रश्न संख्या 13 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	208
4.70.	प्रश्न संख्या 13 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	209
4.71.	**प्रश्न सं0 14 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	210
4.72.	प्रश्न संख्या 14 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	211
4.73.	प्रश्न संख्या 14 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	212
4.74.	प्रश्न संख्या 14 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	213
4.75.	प्रश्न संख्या 14 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	214
4.76.	**प्रश्न सं0 15 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	215
4.77.	प्रश्न संख्या 15 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	216
4.78.	प्रश्न संख्या 15 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	217
4.79.	प्रश्न संख्या 15 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	218
4.80.	प्रश्न संख्या 15 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	219
4.81.	**प्रश्न सं0 16 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	220
4.82.	प्रश्न संख्या 16 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	221
4.83.	प्रश्न संख्या 16 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	222

4.84.	प्रश्न संख्या 16 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	223
4.85.	प्रश्न संख्या 16 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	224
4.86.	**प्रश्न सं0 17 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	225
4.87.	प्रश्न संख्या 17 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	226
4.88.	प्रश्न संख्या 17 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	227
4.89.	प्रश्न संख्या 17 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	228
4.90.	प्रश्न संख्या 17 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	229
4.91.	**प्रश्न सं0 18 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	230
4.92.	प्रश्न संख्या 18 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	231
4.93.	प्रश्न संख्या 18 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	232
4.94.	प्रश्न संख्या 18 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	233
4.95.	प्रश्न संख्या 18 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	234
4.96.	**प्रश्न सं0 19 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	235
4.97.	प्रश्न संख्या 19 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	236
4.98.	प्रश्न संख्या 19 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	237
4.99.	प्रश्न संख्या 19 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	238
4.100.	प्रश्न संख्या 19 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	239

4.101.	**प्रश्न सं0 20 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	240
4.102.	प्रश्न संख्या 20 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	241
4.103.	प्रश्न संख्या 20 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	242
4.104.	प्रश्न संख्या 20 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	243
4.105.	प्रश्न संख्या 20 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	244
4.106.	**प्रश्न सं0 21 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	245
4.107.	प्रश्न संख्या 21 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	246
4.108.	प्रश्न संख्या 21 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	247
4.109.	प्रश्न संख्या 21 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	248
4.110.	प्रश्न संख्या 21 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	249
4.111.	**प्रश्न सं0 22 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	250
4.112.	प्रश्न संख्या 22 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	251
4.113.	प्रश्न संख्या 22 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	252
4.114.	प्रश्न संख्या 22 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	253
4.115.	प्रश्न संख्या 22 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	254
4.116.	**प्रश्न सं0 23 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	255
4.117.	प्रश्न संख्या 23 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	256

4.118.	प्रश्न संख्या 23 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	257
4.119.	प्रश्न संख्या 23 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	258
4.120.	प्रश्न संख्या 23 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	259
4.121.	**प्रश्न सं0 24 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	260
4.122.	प्रश्न संख्या 24 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	261
4.123.	प्रश्न संख्या 24 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	262
4.124.	प्रश्न संख्या 24 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	263
4.125.	प्रश्न संख्या 24 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	264
4.126.	**प्रश्न सं0 25 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	265
4.127.	प्रश्न संख्या 25 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	266
4.128.	प्रश्न संख्या 25 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	267
4.129.	प्रश्न संख्या 25 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	268
4.130.	प्रश्न संख्या 25 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	269
4.131.	गुणात्मक आंकड़ों के लिए उपकरण, विशेषज्ञ एवं सांख्यिकीय विधि	271

ग्राफ सूची

ग्राफ संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.1	देश में सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के आंकड़े	39
1.2	उत्तर प्रदेश में सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के आंकड़े	61
4.1.	**उत्तरदाताओं का लिंग के आधार पर परिचय**	143
4.2.	**उत्तरदाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर परिचय**	143
4.3.	**उत्तरदाताओं का विषय वर्ग के आधार पर परिचय**	144
4.4.	**उत्तरदाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर परिचय**	144
4.5.	**प्रश्न सं0 1 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	145
4.6.	प्रश्न संख्या 1 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	146
4.7.	प्रश्न संख्या 1 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	147
4.8.	प्रश्न संख्या 1 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	148
4.9.	प्रश्न संख्या 1 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	149
4.10.	**प्रश्न सं0 2 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	150
4.11.	प्रश्न संख्या 2 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	151
4.12.	प्रश्न संख्या 2 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	152
4.13.	प्रश्न संख्या 2 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	153
4.14.	प्रश्न संख्या 2 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	154
4.15.	**प्रश्न सं0 3 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	155
4.16.	प्रश्न संख्या 3 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	156
4.17.	प्रश्न संख्या 3 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर	157

	प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	
4.18.	प्रश्न संख्या 3 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	158
4.19.	प्रश्न संख्या 3 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	159
4.20.	**प्रश्न सं0 4 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	160
4.21.	प्रश्न संख्या 4 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	161
4.22.	प्रश्न संख्या 4 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	162
4.23.	प्रश्न संख्या 4 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	163
4.24.	प्रश्न संख्या 4 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	164
4.25.	**प्रश्न सं0 5 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	165
4.26.	प्रश्न संख्या 5 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	166
4.27.	प्रश्न संख्या 5 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	167
4.28.	प्रश्न संख्या 5 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	168
4.29.	प्रश्न संख्या 5 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	169
4.30.	**प्रश्न सं0 6 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	170
4.31.	प्रश्न संख्या 6 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	171
4.32.	प्रश्न संख्या 6 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	172
4.33.	प्रश्न संख्या 6 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	173
4.34.	प्रश्न संख्या 6 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार	174

	पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	
4.35.	**प्रश्न सं0 7 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	175
4.36.	प्रश्न संख्या 7 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	176
4.37.	प्रश्न संख्या 7 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	177
4.38.	प्रश्न संख्या 7 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	178
4.39.	प्रश्न संख्या 7 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	179
4.40.	**प्रश्न सं0 8 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	180
4.41.	प्रश्न संख्या 8 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	181
4.42.	प्रश्न संख्या 8 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	182
4.43.	प्रश्न संख्या 8 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	183
4.44.	प्रश्न संख्या 8 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	184
4.45.	**प्रश्न सं0 9 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	185
4.46.	प्रश्न संख्या 9 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	186
4.47.	प्रश्न संख्या 9 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	187
4.48.	प्रश्न संख्या 9 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	188
4.49.	प्रश्न संख्या 9 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	189
4.50.	**प्रश्न सं0 10 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	190
4.51.	प्रश्न संख्या 10 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर	191

	प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	
4.52.	प्रश्न संख्या 10 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	192
4.53.	प्रश्न संख्या 10 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	193
4.54.	प्रश्न संख्या 10 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	194
4.55.	**प्रश्न सं0 11 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	195
4.56.	प्रश्न संख्या 11 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	196
4.57.	प्रश्न संख्या 11 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	197
4.58.	प्रश्न संख्या 11 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	198
4.59.	प्रश्न संख्या 11 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	199
4.60.	**प्रश्न सं0 12 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	200
4.61.	प्रश्न संख्या 12 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	201
4.62.	प्रश्न संख्या 12 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	202
4.63.	प्रश्न संख्या 12 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	203
4.64.	प्रश्न संख्या 12 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	204
4.65.	**प्रश्न सं0 13 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	205
4.66.	प्रश्न संख्या 13 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	206
4.67.	प्रश्न संख्या 13 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	207
4.68.	प्रश्न संख्या 13 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर	208

	प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	
4.69.	प्रश्न संख्या 13 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	209
4.70.	**प्रश्न सं0 14 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	210
4.71.	प्रश्न संख्या 14 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	211
4.72.	प्रश्न संख्या 14 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	212
4.73.	प्रश्न संख्या 14 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	213
4.74.	प्रश्न संख्या 14 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	214
4.75.	**प्रश्न सं0 15 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	215
4.76.	प्रश्न संख्या 15 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	216
4.77.	प्रश्न संख्या 15 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	217
4.78.	प्रश्न संख्या 15 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	218
4.79.	प्रश्न संख्या 15 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	219
4.80.	**प्रश्न सं0 16 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	220
4.81.	प्रश्न संख्या 16 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	221
4.82.	प्रश्न संख्या 16 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	222
4.83.	प्रश्न संख्या 16 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	223
4.84.	प्रश्न संख्या 16 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	224
4.85.	**प्रश्न सं0 17 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का**	225

	विश्लेषण	
4.86.	प्रश्न संख्या 17 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	226
4.87.	प्रश्न संख्या 17 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	227
4.88.	प्रश्न संख्या 17 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	228
4.89.	प्रश्न संख्या 17 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	229
4.90.	**प्रश्न सं0 18 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	230
4.91.	प्रश्न संख्या 18 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	231
4.92.	प्रश्न संख्या 18 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	232
4.93.	प्रश्न संख्या 18 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	233
4.94.	प्रश्न संख्या 18 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	234
4.95.	**प्रश्न सं0 19 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	235
4.96.	प्रश्न संख्या 19 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	236
4.97.	प्रश्न संख्या 19 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	237
4.98.	प्रश्न संख्या 19 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	238
4.99.	प्रश्न संख्या 19 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	239
4.100.	**प्रश्न सं0 20 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	240
4.101.	प्रश्न संख्या 20 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	241
4.102.	प्रश्न संख्या 20 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर	242

	प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	
4.103.	प्रश्न संख्या 20 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	243
4.104.	प्रश्न संख्या 20 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	244
4.105.	**प्रश्न सं0 21 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	245
4.106.	प्रश्न संख्या 21 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	246
4.107.	प्रश्न संख्या 21 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	247
4.108.	प्रश्न संख्या 21 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	248
4.109.	प्रश्न संख्या 21 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	249
4.110.	**प्रश्न सं0 22 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	250
4.111.	प्रश्न संख्या 22 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	251
4.112.	प्रश्न संख्या 22 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	252
4.113.	प्रश्न संख्या 22 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	253
4.114.	प्रश्न संख्या 22 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	254
4.115.	**प्रश्न सं0 23 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	255
4.116.	प्रश्न संख्या 23 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	256
4.117.	प्रश्न संख्या 23 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	257
4.118.	प्रश्न संख्या 23 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	258
4.119.	प्रश्न संख्या 23 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार	259

	पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	
4.120.	**प्रश्न सं0 24 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	260
4.121.	प्रश्न संख्या 24 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	261
4.122.	प्रश्न संख्या 24 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	262
4.123.	प्रश्न संख्या 24 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	263
4.124.	प्रश्न संख्या 24 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	264
4.125.	**प्रश्न सं0 25 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण**	265
4.126.	प्रश्न संख्या 25 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	266
4.127.	प्रश्न संख्या 25 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	267
4.128.	प्रश्न संख्या 25 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	268
4.129.	प्रश्न संख्या 25 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण	269

चित्र सूची

चित्र संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
3.1	शोध अध्ययन में प्रयुक्त शोध प्रारूप	117
3.2	शोध अध्ययन के निष्कर्ष एवं विवेचन की प्रक्रिया	119
3.3	उत्तर प्रदेश का मानचित्र	120

विषय अनुक्रमणिका

- **तालिका सूची** **(i-viii)**
- **ग्राफ सूची** **(ix-xvi)**
- **चित्र सूची** **(xvii)**

प्रथम अध्याय: शोध कार्य की पृष्ठभूमि **(1-64)**

1.1	प्रस्तावना	1
1.2	रेडियो : अर्थ एवं स्वरूप	2
1.3	रेडियो : उद्भव एवं विकास	4
1.4	भारत में रेडियो	5
1.5	रेडियो कितना सशक्त कितना समर्थ	10
1.6	रेडियो: तकनीक के नए आयाम	16
1.7	रेडियो : कार्यक्रमों के नए आयाम	18
1.8	रेडियो : सच्चा साथी	20
1.9	रेडियो : प्रकार	24
1.10	सामुदायिक रेडियो : अर्थ एवं अवधारणा	25
1.11	सामुदायिक रेडियो : उद्भव एवं विकास	27
1.12	सामुदायिक रेडियो : स्वरूप एवं प्रकार	40
1.13	सामुदायिक रेडियो : शक्ति एवं क्षमताएं	40
1.14	सामुदायिक रेडियो : कमजोरी एवं बाधाएँ	42
1.15	सामुदायिक रेडियो: भूमिका एवं उपयोगिता	43

1.16 सामुदायिक रेडियो : कार्यक्रम एवं विधाएँ 46

1.17 सामुदायिक रेडियो : शिक्षण एवं प्रशिक्षण 48

1.18 उच्च शिक्षा : आवश्यकता एवं उद्देश्य 52

1.19 उच्च शिक्षा और सामुदायिक रेडियो 56

1.20 उत्तर प्रदेश : उच्च शिक्षा और सामुदायिक रेडियो 59

1.21 अध्ययन का औचित्य 61

1.22 समस्या का कथन 62

1.23 संक्रियात्मक परिभाषाएँ 62

1.24 प्रयुक्त संचार सिद्धान्त 63

द्वितीय अध्याय: साहित्य पुनरावलोकन (65-111)

2.1 प्रस्तावना 65

2.2 साहित्य का वर्गीकरण 65

2.3 शोध अंतराल 110

तृतीय अध्याय: शोध अभिकल्प (112-140)

3.1 प्रस्तावना 112

3.2 अर्थ एवं परिभाषाएँ 112

3.3 वैज्ञानिक पद्धति 113

3.4 शोध के उद्देश्य 114

3.5 शोध के प्रश्न 115

3.6 शोध की परिकल्पनाऐं 115

3.7 शोध प्रारूप 116

3.8 निदर्शन विधि 122

3.9 न्यादर्श 126

3.10 आंकड़ों के संकलन की विधि 133

3.12. द्वितीयक आंकड़े 136

3.13. उपकरण का मानकीकरण 137

3.14 शोध अध्ययन की सीमाएं 138

3.15. प्रयुक्त सांख्यिकी विधियाँ 139

चतुर्थ अध्याय: आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या (140-281)

4.1 **प्रस्तावना** 141

4.2 **अर्थ एवं आवश्यकता** 141

4.3 **आँकड़ों का अर्थापन या** विवेचन 142

4.4 **परिमाणात्मक आंकड़े** 142

4.5 **गुणात्मक आंकड़े** 271

पंचम अध्याय: प्राप्तियाँ, निष्कर्ष एवं संस्तुतियाँ (282-294)

5.1 **प्रस्तावना** 282

5.2 **प्राप्तियाँ** 283

5.3 **परिकल्पनाओं का परिणाम** 288

5.4 **निष्कर्ष** 289

5.5 **संस्तुतियाँ** 290

5.6 **भावी शोध अध्ययन की संभावनाऐं** 294

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची (295-303)

- शोध पत्र
- पुस्तक

- शोध प्रबंध
- वेबसाइट

परिशिष्ट **(304-312)**

- स्क्रीनिंग प्रपत्र
- प्रश्नावली
- साक्षात्कार एवं फोकस समूह परिचर्चा के प्रश्न

प्रकाशित शोध कार्यों के प्रमाण पत्र

- शोध पत्र
- अकादमिक कांफ्रेंस में शोध पत्र / शोध आलेखों का प्रस्तुतीकरण
- पुस्तक / अध्याय लेखन
- अकादमिक सेमीनारों /वेबीनारों /कार्यशालाओं में सहभागिता

शोध कार्य की पृष्ठभूमि

1.1 प्रस्तावना

बात उन दिनों की है जब शोधकर्ता स्नातक पाठ्यक्रम का छात्र था हालांकि मेरा मुख्य विषय लोक प्रशासन था लेकिन स्नातक पाठ्यक्रम में एक विषय रेडियो लेखन का भी था। रेडियो पढ़ते, सुनते, रेडियो के लिए लिखते और रेडियो पर बोलते मेरी नजर ब्रिटिश भारत के आल इंडिया रेडियो के कंट्रोलर लॉयनेल फ़िल्डन और राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के वक्तव्यों पर पड़ी। जिन्होंने मेरे मन में रेडियो के प्रति आत्मिक लगाव को जन्म दिया। 1935 में ब्रिटिश भारत में आल इंडिया रेडियो के नियंत्रक लॉयनेल फ़िल्डन ने कहा कि था " निश्चय ही भारत जैसे विशाल देश में प्रसारण जितनी शिक्षा दे सकता है जितनी एकता ला सकता है तथा जितना निर्देश दे सकता है उतना कोई दूसरा माध्यम नहीं कर सकता" एक तरफ लॉयनेल फ़िल्डन रेडियो के द्वारा एकता की बात कर रहे थे वहीं दूसरी तरफ देश के नागरिक आजादी की खुशियों के साथ साथ दुखों के पहाड़ सिर पर लादे विभाजन रेखा के इस पार से उस पार और उस पार से इस पार पलायन कर रहे थे। ऐसी हृदय विदारक परिस्थितियों में नवगठित पाकिस्तान से डरे सहमे शरणार्थियों का एक समूह दिल्ली से सटे कुरुक्षेत्र में पडाव डालता है। उस भयभीत एवं आशंकित समूह को सांत्वना देने के लिए 12 नवंबर 1947 को महात्मा गाँधी को रेडियो पर आमंत्रित किया जाता है। शुरू शुरू में कुछ झिझक के साथ राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी स्टूडियो बूथ में माइक्रोफोन के पास आते हैं लेकिन माइक्रोफ़ोन पर बोलने के साथ ही उनकी झिझक दूर हो जाती है और वो कहते हैं। " ये तो अद्भुत चमत्कार है, मैं इसमें ईश्वरीय शक्ति देखता हूँ।" रेडियो की इस चमत्कारिक शक्ति को मन में आत्मसात किये एक शोध छात्र के रूप में जब मैं वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय के परिसर में पहुंचा तो वहां मेरी नजर विश्वविद्यालय के सूत्र वाक्य " सा विद्या या विमुक्तये " पर पड़ी। उसी समय मैंने ये तय कर लिया था कि मेरा शोध " रेडियो" और "उच्च शिक्षा" के परस्पर संबंधों के संदर्भ में ही होगा।

प्रस्तुत अध्याय *शोध कार्य की पृष्ठभूमि* रेडियो, सामुदायिक रेडियो, शिक्षा एवं उच्च शिक्षा के अंतर्संबंधों की व्याख्या के साथ साथ शोधकर्ता को शोध कार्य के लिए एक ठोस आधार प्रदान करता है।

1.2 रेडियो : अर्थ एवं स्वरूप

रेडियो इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का सबसे सीनियर साथी है। यह कुछ इलेक्ट्रॉनिक यंत्रों का सुव्यवस्थित समुच्चय है जिसे हम रेडियो सेट के रूप में जानते हैं लेकिन बोलचाल की भाषा में इसे रेडियो कहा जाता है।

रेडियो के अर्थ एवं इसके परिचालन एक उदाहरण के द्वारा समझने की कोशिश करते हैं। फर्ज कीजिये कि आपको 25 किलोमीटर जाना हैं लेकिन आपकी पैदल चलने की क्षमता महज़ 5 किलोमीटर तक की है लेकिन आपको दूर तक जाना है ऐसे में आप क्या करेंगे? यही न कि पब्लिक या प्राइवेट सवारी से यात्रा करना चाहेंगे। आप ने पैदल 5 किलोमीटर की यात्रा पूरी कर ली बाकी की 20 किलोमीटर की यात्रा के लिए मैं आपको एक ऐसा घोड़ा उपलब्ध कराता हूँ जिस पर सवार होकर आप 20 किलोमीटर तक जा सकते हैं तो आपकी यात्रा 25 किलोमीटर सम्पन्न हो गई। इसी प्रक्रिया को रेडियो ़ प्रसारण का सिद्धांत कहते हैं। मैं यानि ऐंकर/कम्पीयर/एनाउंसर स्टूडियो में बैठकर कुछ बोलता हूं। यह आवाज कुछ मीटर से आगे नहीं जा सकती तब मैं आवाज को एक घोड़े पर बिठाता हूं जिसका नाम कैरियर वेव है मैं उसे हवा में छोड़ देता हूँ, प्रकाश की गति के समान चलने वाली ये वेव आसमान में उड़ती रहती है जब आवश्यकता होती है तो इसे पकड़कर इस पर से आवाज को उतार लिया जाता है और दूसरा व्यक्ति यह आवाज सुन लेता है।

भारत में कुछ लोग अक्सर ये भूल करते हैं वो किसी भी रेडियो प्रसारण सेवा को आल इंडिया रेडियो या आकाशवाणी समझ लेते हैं, जबकि प्रत्येक रेडियो प्रसारण की एक विशेष पहचान होती है, जैसे अमेरिका की रेडियो प्रसारण सेवा को "वॉयस आफ अमेरिका" ब्रिटेन की रेडियो प्रसारण सेवा को "बीबीसी" नेपाल की रेडियो प्रसारण सेवा को "रेडियो नेपाल" तथा पाकिस्तान की रेडियो प्रसारण सेवा को "रेडियो पाकिस्तान" आदि के नाम से जाना जाता है। भारत में शासकीय प्रसारण सेवा को आल इंडिया रेडियो / आकाशवाणी के नाम से जाना जाता है जो अब स्वायत्तशासी निकाय प्रसार भारती के अधीन कार्य करती है। हालांकि हमारे देश में निजी क्षेत्र के रेडियो चैनल भी उपलब्ध हैं। किसी भी रेडियो केन्द्र के बूथ से जब पर ऐंकर /एनाउंसर माइक्रोफ़ोन के सामने बोलता है तो यह माइक्रोफोन ध्वनि ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में बदल देता है। कुछ पदार्थों में यह गुण होता है कि वे दबाव पड़ने पर यांत्रिक ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित कर देता है। कार्बन अथवा कोयला ऐसा ही पदार्थ है। माइक्रोफोन एक ऐसा यंत्र है जिसके अंदर सूक्ष्म कार्बन के कण कैप्सूल में बंद होते हैं। इन कैप्सूल का संबंध एक तार से होता है जो कार्बन कणों में उत्पादित विद्युत ऊर्जा को आगे बढ़ाता है। ऐंकर प्लास्टिक अथवा धातु की लचीली पट्टी अथवा पटल के सम्मुख बोलता है, उसके बोलने से निकली ऊर्जा पटल और उसके पीछे स्थित कार्बन कणों को दबाकर तार के माध्यम से विद्युत ऊर्जा को आगे बढ़ाता है।

स्वरूप :

यूं तो सूचना शिक्षा एवं मनोरंजन के लिए रेडियो को सुन लेना ही पर्याप्त है लेकिन जब रेडियो में करियर की बात मन में उभरती है तो रेडियो का एक समेकित स्वरूप सामने आता है जिसे हम रेडियो का संगठनात्मक स्वरूप कहते हैं। रेडियो प्रसारण की कोई भी संस्था आम तौर पर चार मुख्य विभागों का संयुक्त स्वरूप होती है -

* कार्यक्रम विभाग
* तकनीकी विभाग
* प्रशासनिक विभाग
* विज्ञापन विभाग

कार्यक्रम विभाग

इस विभाग को रेडियो केन्द्र की आत्मा कहा जाता है।रेडियो केन्द्र से कब और क्या प्रसारित करना है, इसका निर्णय कार्यक्रम विभाग करता है। इस विभाग को काम की सुविधा के अनुसार कई अनुभागों में बांट दिया जाता है जैसे श्रमिक जगत , नाटक, बाल एवं महिला जगत, खेल, खेती-किसानी, युववणी भारतीय भाषाएँ, विज्ञान एवं तकनीकी तथा ओबी कार्यक्रम इत्यादि । श्रोताओं तक जानकारी अथवा मनोरंजन सामग्री पहुंचाने एवं उसके निर्माण तथा संयोजन का दायित्व कार्यक्रम विभाग का होता है। इस विभाग में आम तौर पर निदेशक, उपनिदेशक, सहायक निदेशक, कार्यक्रम अधिशासी, कार्यक्रम निष्पादक जैसे विभिन्न स्तरीय अधिकारी एवं कर्मचारी काम करते हैं। आवश्यकतानुसार बड़ी संख्या में कैजुअल, कलाकार, अनाउंसर और कम्पीयर भी कार्यक्रम विभाग से जुड़े रहते हैं।

तकनीकी विभाग

इस विभाग को रेडियो केन्द्र का दिल कहा जाता है रेडियो केंद्र द्वारा चयनित सामग्री को श्रोताओं तक पहुँचाने का दायित्व इस विभाग का होता है। माइक्रोफोन, टेपरिकॉर्डर, सी.डी. प्लेयर, कंप्यूटर के सही चयन एवं रख-रखाव को यही विभाग देखता है। प्रसारण केंद्र में कंट्रोल रूम होता है जहाँ सभी प्रकार की प्रसारण प्रक्रिया केंद्रित है यानी सभी स्टूडियो इस कंट्रोल रूम से जुड़े होते हैं और कंट्रोल रूम ही ध्वनि तरंगों को ट्रांसमीटर तक पहुंचाने का काम करता है। ट्रांसमीटर से ही कैरियर वेब्ज (Carrier Waves) के माध्यम से ध्वनि संकेत दूर-दराज इलाकों तक पहुंचते हैं। इसके अलावा दूसरे शहरों अथवा देशों से

स्टूडियों तक का लिंक संयोजन भी इसी विभाग द्वारा किया जाता है। अगर ऑस्ट्रेलिया के मैदान से दिल्ली स्टूडियो तक आवाज पहुँचानी है तो इसी विभाग द्वारा पहुँचाई जाती है। केंद्र में अधीक्षक अभियंता, केंद्र अभियंता, सहायक अभियंता, तकनीकी सहायक, तकनीशियन आदि अधिकारियों एवं कर्मचारियों की पूरी श्रृंखला इस विभाग को संचालित करती हैं।

प्रशासनिक विभाग

इस विभाग को रेडियो केन्द्र का दिमाग कहा जाता है। रेडियो केंद्र के विभिन्न विभागों तथा समुचित बजट व्यवस्था का दायित्व इस विभाग का होता है। कलाकारों, उद्घोषकों आदि को मानदेय तथा कार्यक्रम एवं तकनीकी विभाग द्वारा वांछित सामग्री के क्रय की व्यवस्था इस विभाग द्वारा संचालित किया जाता है। इस विभाग का प्रमुख उपनिदेशक प्रशासन तथा वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, मुख्य लिपिक, अवर एवं अपर लिपिक, चतुर्थ वर्ग कर्मचारी इस विभाग में कार्यरत रहते हैं।

विज्ञापन विभाग

इस विभाग को रेडियो केन्द्र की श्वास नली कहा जाता है। रेडियो केन्द्र की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विज्ञापन /वाणिज्य विभाग इसका अनिवार्य हिस्सा बन चुका है। इस विभाग द्वारा विज्ञापन संबंधी कार्य-प्रणाली को संचालित किया जाता है। प्रसारण केंद्र बाजारवाद की संस्कृति से अलग नहीं रहे हैं। इसी कारण इस विभाग को नित्यप्रति नई-नई योजनाएं बनानी पड़ती हैं जिससे केंद्र की आय में निरंतर वृद्धि होती रहे तथा विज्ञापनों एवं स्पॉन्सरशिप कार्यक्रमों
की देख-रेख इसी विभाग द्वारा की जाती है।

1.3 रेडियो : उद्भव एवं विकास

सन् 1870 में प्रो. मैक्सवेल ने विद्युत चुम्बकीय तरंगों के माध्यम से बिना तार के संदेश भेजने में सफलता प्राप्त की। उसी परिघटना के साथ ही संचार तकनीक से रेडियो का इतिहास शुरु होता है। 17 वर्षो के बाद सन 1887 में हेनरिच रूडोल्फ हर्टज ने रेडियो तरंगों के अस्तित्व को प्रमाणित किया तथा 1895 में मारकोनी ने इन्हीं रेडियो तरंगों द्वारा बिना तार के संकेत भेजने और प्राप्त करने के सफल प्रयोग किए। यहीं से शुरू हुआ संचार का एक नया सफर। 1896 में लंदन रेडियो पेटेंट होने के साथ ही इलेक्ट्रॉनिक जनसंचार माध्यमों के वर्तमान युग की शुरूआत हुई। इस प्रकार बेतार यंत्र तकनीक का विकास होना जारी हुआ और यह 20वीं सदी के आखिरी वर्षों में तैयार हो गया था। शुरूआती दौर में रेडियो के संकेतों का

उपयोग नौका चालकों की सुरक्षा के लिए किया जाता था। जब नाविक किसी समुद्री तूफान में फंस जाते थे जो वे दूसरे तट पर रहने वालों तक अपनी पुकार को पहुँचाने के लिए इसका उपयोग किया करते थे ताकि उन्हें सहायता प्राप्त हो सके। प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान रेडियो तरंगों का उपयोग सैन्य गतिविधियों के लिए गोपनीय सूचनाओं के आदान प्रदान हेतु किया जाने लगा।

सन् 1916 में रेडियो के माध्यम से पहला समाचार प्रसारित किया गया। यह समाचार संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति के चुनाव की सूचना से संबंधित था। प्रिंट मीडिया से पहले ही संयुक्त राज्य अमेरिका के लोगों ने जब इस सूचना को सुना तो व आश्चर्यचकित थे।उस वक्त अमेरिका के लोगों को पहली बार यह अहसास हुआ कि रेडियो का उपयोग संचार एवं संवाद के लिए किया जा सकता है। अमेरिकी लोगों की उत्सुकता को देखते हुए 1919 में रेडियो कार्पोरेशन ऑफ अमेरिका की स्थापना की गई। 1921 में ईस्ट पिट्सबर्ग के मेसाचुसेट्स नगर में रेडियो ब्रॉडकॉस्टिंग का आरम्भ हुआ तथा 21 दिसंबर 1922 को दुनिया के पहले रेडियो केन्द्र का जन्म हुआ।

प्रसारण की दिशा में अमेरिका में हो रहे प्रयासों को देखते हुए दुनिया के अन्य देशों कनाडा, ब्राजील, फ्रांस, इटली और रूस ने भी प्रसारण के क्षेत्र में अपने कदम आगे बढ़ाए। फलस्वरूप रेडियो का प्रयोग राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर होने लगा। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रेडियो की लोकप्रियता तथा राष्ट्रीय भावनाओं के मद्देनजर ग्रेट ब्रिटेन ने रेडियो की आवश्यकता महसूस की तथा 1922 में रेडियो प्रसारण के लिए एक कम्पनी की स्थापना की। इस कम्पनी का नाम ब्रिटिश ब्रॉडकॉस्टिंग कम्पनी रखा गया। यही कम्पनी जनवरी 1927 में आधिकारिक तौर पर ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग के रूप में कार्य करने लगी तथा कालांतर में बी.बी.सी. के नाम से पूरे विश्व में विख्यात हुई।

1.4 भारत में रेडियो

सन् 1920 आते आते अनौपचारिक एवं एकल प्रयासों के तहत भारत में रेडियो प्रसारण की शुरुआत हुई । 1923 में रेडियो क्लब बंबई से छिटपुट एवं अनियमित प्रसारण शुरू किए गए परंतु 1927 से नियमित प्रसारण बंबई और कलकत्ता से आरंभ हुए। समय तेजी से आगे बढ़ता रहा, 1936 में भारतीय प्रसारण सेवा को ऑल इंडिया रेडियो का नाम दिया गया तथा 1957 से इसे आकाशवाणी के नाम से पुकारा जाने लगा । आज भी देश के सभी केंद्रों को आकाशवाणी के नाम से जाना जाता है। भारत विभाजन से पूर्व देश में कुल 9 रेडियो प्रसारण केंद्र थे जिनमें से 6 विभाजन के बाद देश में रह गए तथा

तीन पाकिस्तान के हिस्से आए। रेडियो केन्द्र दिल्ली (नई दिल्ली) , कलकत्ता (कोलकाता) , बंबई (मुंबई), मद्रास (चेन्नई), लखनऊ तथा त्रिचुरापल्ली (त्रिची) भारत के हिस्से में आये। प्रसारण की प्रभाव-शक्ति के कारण देश में तीव्र गति से रेडियो का विकास हुआ और 2004 तक देश में 215 आकाशवाणी केंद्रों से प्रसारण होने लगे। इनमें 77 स्थानीय केंद्र तथा 40 विविध भारती सेवा केंद्र शामिल हैं। यह प्रसारण 144 मीडियम वेब, 55 शॉर्ट वेब तथा 199 एफ.एम. ट्रांसमीटर्स द्वारा श्रोताओं तक पहुंचाए जाते हैं। भारत में रेडियो लगभग सभी बदलावों का सारथी रहा है। हरित क्रांति, श्वेत क्रांति एवं नीली क्रांति में रेडियो की सराहनीय भूमिका रही है। 99.13 प्रतिशत जनसंख्या तक पहुंच होने के कारण देश के अशिक्षित वर्ग, कमजोर वर्गों तथा दूरदराज के वासियों के लिए रेडियो मनोरंजन एवं सूचना तथा शिक्षा का सशक्त साधन बना रहा है। वर्ष 2004 में शुरू की गई डी.टी.एच. (डाइरेक्ट टू होम) सेवा द्वारा विभिन्न भाषाओं में प्रसारण कर रेडियो ने पूरे देश में अपनी सार्थकता को पुनः स्थापित किया है। इससे पहले संयुक्त राज्य अमेरिका और यूनाइटेड किंगडम में ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन के गठन के तुरंत बाद से ही भारत में भी इस दिशा में सोचा जाने लगा था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व भारत में रेडियो से पहला प्रसारण 23 जुलाई 1927 में बंबई से शुरू हुआ। भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड इर्विन ने बंबई में इस केन्द्र का उद्घाटन किया। उसी वर्ष 26 अगस्त 1927 को कलकत्ता केन्द्र का भी उद्घाटन बंगाल के गवर्नर सर स्टैनले जेक्सन ने किया।

बंबई प्रसारण केन्द्र का उद्घाटन भाषण देते हुए तत्कालीन वॉयसराय लॉर्ड इरविन ने कहा कि "प्रसारण के लिए भारत में विशेष संभावनाएँ हैं। क्षेत्र का विस्तार और उसकी दूरियाँ इस देश को प्रसारण के लिए विशेष रूप से उपयुक्त बना देती हैं। मनोरंजन और शिक्षा दोनों ही दृष्टियों से इसकी संभावनाएँ अधिक हैं, यद्यपि इस समय हम शायद उनकी सीमा का अनुमान नहीं लगा पा रहे हैं" लॉर्ड इरविन का यह कथन सही निकला और भारत में प्रसारण के विस्तार की संभावनाएँ दिखाई देने लगी थीं। हालांकि सन् 1927 के पूर्व ही प्राइवेट कम्पनियों और क्लबों द्वारा रेडियो का प्रसारण शुरू हो गया था। शुरू-शुरू में टाइम्स ऑफ इंडिया और डाक-तार विभाग ने आपस में मिल-जुलकर बंबई से प्रसारण का कार्य शुरू किया था। इन्हीं दिनों मद्रास प्रेसीडेन्सी रेडियो क्लब ने भी हल्के-फुल्के मनोरंजन कार्यक्रमों का प्रसारण शुरू कर दिया था। इस रेडियो क्लब का प्रसारण 21 जुलाई 1924 से शुरू हुआ था। क्लब के सदस्यों ने आपस में पैसा इकट्ठा करके एक किलोवॉट का एक ट्रांसमीटर भी लगाया था। लेकिन आर्थिक

कठिनाइयों के कारण यह रेडियो क्लब अधिक समय तक प्रसारण कार्य जारी नहीं रख सका। सन 1926 में यह क्लब बंद हो गया था। लेकिन प्रसारण में रूचि रखने वालों की संख्या में वृद्धि होने लगी थी। रेडियो स्टेशन चालू करने के लिए क्या प्रक्रियाएँ अपनाई जाएँ इस संबंध में रेडियो निर्माताओं और प्रेस के प्रतिनिधियों ने सरकार से बातचीत करना शुरू कर दिया। मार्च 1926 में इंडिया ब्रॉडकास्टिंग कम्पनी बनाई गई और कम्पनी ने 13 सितम्बर 1926 को प्रसारण करने का लाइसेंस सरकार से प्राप्त कर लिया। इस कम्पनी ने बंबई और कलकत्ता में डेढ़-डेढ़ किलोवॉट क्षमता वाले ट्रांसमीटर लगाए। इन केन्द्रों से लगभग 55 किलोमीटर के दायरे में कार्यक्रम आसानी से सुने जा सकते थे। इस तरह भारत में प्रसारण की शुरूआत हुई।

1.4.1 स्वतंत्रता के पूर्व

ब्रिटिश भारत में रेडियो प्रसारण कंपनी इण्डियन ब्राडकास्टिंग कॉर्पोरेशन (आईबीसी) की आय का मुख्य स्रोत लाइसेंसों से प्राप्त होने वाला राजस्व था लेकिन लाइसेंसों से कम्पनी को इतनी आय नहीं होती थी कि वह अपना काम सुचारू रूप से चला सके।प्रसारण कम्पनी ट्रांसमीटर का खर्चा, रखरखाव, कार्यक्रमों का खर्चा वहन नहीं कर पा रही थी। इसलिए कम्पनी ने सरकार से अनुरोध किया कि वह आर्थिक स्थिति को सुधारने का प्रयास करे। भारत सरकार ने कम्पनी को अपने अधीन कर लिया और इसका नाम इंडियन स्टेट ब्रॉडकास्टिंग सर्विस कर दिया। नाम बदल जाने पर आर्थिक दृष्टि से कोई सुधार नहीं आया। सरकार ने 9 अक्टूबर 1931 को इंडियन स्टेट ब्रॉडकास्टिंग सर्विस को बंद करने का निर्णय लिया तो इसका भारी विरोध हुआ। जनमानस की रूचि और आक्रोश को देखते हुए इस सर्विस को चालू रखने का निर्णय लिया गया और सरकार ने कम्पनी के विकास के लिए 40 लाख रूपये दिए। श्री पी.जी. एडमन्ड्स को कम्पनी के कन्ट्रोलर ऑफ ब्रॉडिकास्टिंग के पद पर नियुक्त किया गया। दिल्ली में रेडियो स्टेशन की स्थापना के लिए सरकार ने जनवरी 1934 में ढाई लाख रूपए स्वीकृत किए। ब्रिटिश सरकार ने आय में वृद्धि के लिए ग्रामोफोन रिकार्ड तथा रेडियो सेट पर आयात शुल्क में 50 प्रतिशत की वृद्धि कर दी। परिणामस्वरूप ब्रॉडकास्टिंग सर्विस की आय में दुगुनी वृद्धि हो गई। इसके अलावा सरकार को ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन की प्रसारण प्रणाली के बारे में भी पर्याप्त जानकारी प्राप्त हो चुकी थी। अतः दिल्ली में रेडियो स्टेशन खोलने के लिए ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉपोरेशन के लिए वरिष्ठ अधिकारी श्री लायनेल फील्डन को सन 1935 में अगस्त माह में भारत भेजा गया। उन्होंने 30 अगस्त 1935 को

कन्ट्रोलर ऑफ ब्रॉडकास्टिंग का पद सम्भाला। सरकार ने उनके लिए एक अलग ऑफिस खोला। उस समय यह ऑफिस उद्योग और श्रम विभाग के अधीन रखा गया था। भारत में रेडियो स्टेशन की शुरूआत के लिए फील्डन ने बी.बी.सी. के अनुसंधान विभाग के प्रमुख श्री एच.एल. किर्की की सेवाओं की मांग की। किर्की ने भारत आकर पहले तो विभिन्न स्थानों का दौरा किया और बाद में एक योजना का प्रारूप प्रस्तुत किया जिसमें पूरे देश में मध्यम तरंग (मीडियम वेब) के ट्रांसमीटर लगाने का सुझाव दिया। अगस्त 1936 में बी.बी.सी. के श्री सी. डब्ल्यू गोयडर भारत आए और उन्होंने चीफ इंजीनियर के रूप में पदभार संभाला।

श्री गोयडर ने यह अनुभव किया कि ट्रांसमीटरों के निर्माण के लिए जो धनराशि निर्धारित की गई, वह पर्याप्त नहीं है। इसलिए उन्होंने मीडियम वेव तथा शॉर्टवेव की मिली-जुली सेवा प्रदान करने का प्रस्ताव किया। फील्डन के भारत आगमन के बाद प्रसारण के विकास में कार्य आरम्भ होने लगा और एक जनवरी 1936 को दिल्ली में इंडियन स्टेट ब्रॉडकास्टिंग सर्विस ने प्रसारण आरम्भ कर दिया। दिल्ली में प्रसारण के इतिहास में यह महत्वपूर्ण घटना हुई। ‘‘8 जून 1936 में इडियन स्टेट ब्रॉडकास्टिंग सर्विस का नाम बदल दिया गया और इसके स्थान पर ऑल इंडिया रेडियो रखा गया।‘‘ दिल्ली केन्द्र से जब प्रसारण आरम्भ हुआ तो इस बात का ध्यान रखा गया कि रेडियो से प्रसारित कार्यक्रम शहरों तक ही न हो इसका विस्तार ग्रामीण क्षेत्रों तक हो। कार्यक्रमों में सुधार के लिए सलाहकार समितियां एवं सलाहकार परामर्श परिषद बनाई गई। जनवरी 1937 में श्रोताओं की प्रतिक्रियाएँ जानने के लिए श्रोता अनुसंधान एकांश खोला गया तथा 9 सितम्बर 1937 को चार्ल्स बार्न्स को समाचार वाचक (न्यूज रीडर) के पद पर नियुक्त किया गया। कालांतर में वे ऑल इंडिया रेडियो के पहले समाचार संपादक (न्यूज एडीटर) होते हुए सेन्टर न्यूज ऑर्गेनाइजेशन के प्रथम समाचार निदेशक (डायरेक्टर ऑफ न्यूज) बने।

1.4.2 स्वतंत्रता के पश्चात

स्वतंत्र भारत का पहला रेडियो स्टेशन 1 नवम्बर 1947 को जालंधर में खोला गया। पहली जुलाई 1948 को श्रीनगर में रेडियो स्टेशन से प्रसारण आरम्भ हुआ, इसके बाद से देश के विभिन्न क्षेत्रों में ट्रांसमीटर लगाए गये और प्रसारण को गति मिली। 1948 में पटना, कटक, अमृतसर, शिलांग, नागपुर, विजयवाड़ा और पणजी में प्रसारण के लिए केन्द्र खोले गए। 1950 के बाद प्रसारण केन्द्रों के लिए जो योजनाएँ बनाई गई उन्हें पंचवर्षीय योजनाओं में प्राथमिकताएँ दी गई। देश की सांस्कृतिक और राष्ट्रीय

एकता को बनाए रखने में रेडियो की भूमिका के महत्व को समझा गया। ''स्वाधीनता प्राप्ति के बाद सरदार वल्लभभाई पटेल भारत के पहले सूचना एवं प्रसारण मंत्री बने। उन्होंने भारतीय संदर्भ में प्रसारण को आगे बढ़ाने में नयी दिशा दी।'' सन् 15 अगस्त 1947 तक छह रेडियो स्टेशन दिल्ली, बंबई, कलकत्ता, मद्रास तिरूचि और लखनऊ भारत में रह गए और तीन रेडियो स्टेशन-लाहौर, पेशावर और ढाका- तत्कालीन पाकिस्तान में चले गए। लेकिन आजादी के बाद जब देश में स्थितियाँ अनुकूल हुई तब प्रसारण की योजना और विस्तार पर अधिक ध्यान दिया गया। प्रसारण केन्द्रों को विस्तार हुआ। ''बहुजन हिताय बहुजन सुखाय'' की भावना को ध्यान में रखते हुए देश के कोने-कोने में ट्रांसमीटर लगाने के काम को प्राथमिकता दी गई और सूचना, शिक्षा और मनोरंजन का माध्यम बनकर रेडियो प्रसारण श्रोताओं के समक्ष उपस्थित हुआ। ''1957 में ऑल इंडिया रेडियो का नाम भारतीय परम्परा और संस्कृति से अनुप्रेरित होकर ''आकाशवाणी'' रखा गया।''

भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने आधुनिक भारत के निर्माण के लिए पंचवर्षीय योजनाएँ बनाई। इन योजनाओं में भारत के समग्र विकास की कहानी छिपी हुई थी। सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, औद्योगिक, शैक्षणिक और कृषि के क्षेत्र में विकास की योजनाएँ बनाकर उन्हें क्रियान्वित करने पर विशेष बल दिया गया। इस दिशा में प्रसारण के विकास को भी पंचवर्षीय योजनाओं में प्राथमिकता दी गई। 1947 में आकाशवाणी के पास केवल 18 ट्रांसमीटर थे, जबकि पहली पंचवर्षीय योजना के अंत तक 46, दूसरी पंचवर्षीय योजना के अंत तक 110 और आठवीं योजना के अंत तक 59, तीसरी पंचवर्षीय योजना के अंत तक 110 और आठवीं योजना के अंत तक 297 ट्रांसमीटर हो गए। ये आँकड़े प्रसारण के क्षेत्र में विकास को दर्शाते हैं। आठवीं योजना के अंत तक 297 ट्रांसमीटर थे जो 2004 में बढ़कर 337 हो गए। 1947 में रेडियो स्टेशनों की संख्या मात्र छह थी, जो सन 2004 में बढ़ 215 तक पहुँच गई। आज मीडियम वेब के 144, शॉर्ट वेब के 54 और एफ.एम. के 139 ट्रांसमीटर, देश के विभिन्न भागों में लगे हुए हैं। जहाँ से कार्यक्रम प्रसारित होते हैं।

प्रसार भारती

4 सितम्बर 1964 को श्री अशोक चंदा की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया। इस समिति को आकाशवाणी और दूरदर्शन के बारे में सूचना और प्रसारण मंत्रालय को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करनी थीं इस समिति ने आकाशवाणी के बारे में 219 सिफारिशें प्रस्तुत की तथा आकाशवाणी और दूरदर्शन को

एक अलग-अलग संगठन के रूप में कार्य करने की सिफारिश की। 18 अप्रैल 1966 को समिति ने अपनी सिफारिशें और सुझाव की रिपोर्ट सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय को सौंप दी। चंदा समिति की रिपोर्ट पेश करने के बाद प्रसारण के स्वायत्त निगम की बात सोची गई। 1977 में जनता पार्टी की सरकार के समय पहली बार राजनैतिक दलों के चुनाव प्रसारण आकाशवाणी और दूरदर्शन से प्रसारित किए गए। तत्कालीन सरकार ने आकाशवाणी और दूरदर्शन दोनों संगठनों को स्वायत्ता प्रदान करने के लिए एक समिति का गठन किया। इस समिति में 11 सदस्य थे। समिति के अध्यक्ष श्री वी.जी. वर्गीज थे। समिति ने अपनी रिपोर्ट 24 फरवरी 1978 को सरकार को पेश कर दी। इस रिपोर्ट में समिति ने आकाशवाणी को स्वायत्त संगठन के रूप में कार्य करने की सिफारिश की। 12 मार्च 1978 को संसद में 'आकाश भारती' विधेयक पेश किया गया, लेकिन वह पारित नहीं हो सका। आकाश भारती विधेयक में कुछ संशोधन किए गए और मई 1979 में 'प्रसार भारती' विधेयक पेश किया गया। इसी बीच जनता पार्टी की सरकार सत्ता से बाहर हो गई और यह विधेयक भी पास नहीं हो सका। श्रीमती इंदिरा गांधी के पुनः प्रधानमंत्री बनने के बाद 28 नवम्बर 1980 को श्री पार्थसारथी की अध्यक्षता में 14 सदस्यों की एक समिति का गठन किया गया और स्वायत्ता की दिशा में विचार-विमर्श चलता रहा। भारत सरकार ने 'प्रसार भारती' का गठन स्वायत्त प्रसारण निगम के रूप में किया। इसका उद्देश्य आकाशवाणी एवं दूरदर्शन को भारत सरकार के नियंत्रण से मुक्त करके अपनी वचनबद्धता को पूरा करना था। आकाशवाणी और दूरदर्शन के प्रबंधन करने के लिए प्रसार भारती बोर्ड की नियुक्ति नवम्बर 1997 में की गई। प्रसार भारती बोर्ड ने 23 नवम्बर 1997 को आकाशवाणी और दूरदर्शन का नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया। बोर्ड के चेयरमैन एन.के. चक्रवर्ती और कार्यकारी सदस्य एस.एस. गिल थे।

1.5 रेडियो कितना सशक्त कितना समर्थ

'मैं रेडियो में शक्ति देखता हूँ' - महात्मा गांधी

12 नवम्बर 1947 को बापू पहली दिल्ली के ब्रॉडकास्टिंग हाउस में आए। उस दिन उन्हें दोपहर तीन बजे पाकिस्तान से आए शरणार्थियों को संबोधित करना था। जो कुरुक्षेत्र में ठहरे हुए थे। स्टूडियो में जाने से पहले उनके मन में कुछ झिझक थी लेकिन ऐंकर बूथ में माइक्रोफोन पर बोलते हुए ही वह दूर हो गयी। ''गांधी जी ने कहा- यह चमत्कारिक है। मैं इसमें 'शक्ति' देखता हूँ, ईश्वर की चमत्कारी शक्ति इसमें है।'' जनसंचार विशेषज्ञों ने रेडियो की शक्ति को भले ही देर से पहचाना हो लेकिन हमारे देश के कर्णधारों

ने उसे जल्दी ही अपना लिया। देश की अधिकांश आबादी आजादी के समय निरक्षर थी। विकास की गति तेज करने के लिए इस बाधा को पार करना जरूरी लगा। नए विचारों और तोर-तरीकों की जानकारी उपलब्ध कराने के लिए रेडियो का भरपूर उपयोग हुआ। देश में हरित क्रांति लाने में रेडियो का बड़ा योगदान है। नए बीजों, खादों और कीटनाशकों की जानकारी रेडियो के माध्यम से गांव-गांव पहुंची। शिक्षा के प्रचार-प्रसार में भी रेडियो का जमकर उपयोग हुआ। सूचना, शिक्षा और मनोरंजन के अलावा रेडियो ने देश में जनमत को जागृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सामुदायिक भावना, साम्प्रदायिक एकता और प्रजातांत्रिक मूल्यों को मजबूत करने में रेडियो शक्तिशाली जनसंचार माध्यम सिद्ध हुआ।

1.5.1 शक्तिशाली माध्यम

ट्रांसमीटर रेडियो की शक्ति आंकने का एक पैमाना हो सकता है, यानि कितने किलोवाट शक्ति का ट्रांसमीटर किस केन्द्र पर लगा है? रेडियो के ट्रांसमीटर की शक्ति कुछ वाट से लेकर हजार किलोवाट तक हो सकती है। एफ.एम. ट्रांसमीटर की शक्ति कम होती है। इसलिए उसके प्रसारण का दायरा सीमित होता है। मीडियम और शॉर्टवेव के ट्रांसमीटर शक्तिशाली होते हैं। इसलिए उनके प्रसारण सैकड़ों-हजारों किलोमीटर दूर तक सुने जा सकते हैं हमारे देश में आकाशवाणी के ही 215 केन्द्र हैं सभी ट्रांसमीटर्स की सम्मिलित शक्ति का ही यह असर है कि रेडियो के कार्यक्रम क्षेत्रफल के हिसाब से 91 प्रतिशत से भी ज्यादा इलाके में सुने जा सकते हैं देश की 99 प्रतिशत से अधिक आबादी रेडियो के कार्यक्रम सुन सकती है। 'पहुंच' के हिसाब से रेडियो की शक्ति तेजी से बढ़ रही है। सैकड़ों निजी ओर सामुदायिक रेडियो केन्द्र खुल रहे हैं। इससे सूचना, शिक्षा, मनोरंजन और व्यापार की गुंजाइश भी बढ़ रही है। राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और स्थानीय केन्द्रों के अलावा आकाशवाणी के सामुदायिक केन्द्र भी चल रहे हैं; राष्ट्रीय प्रसारण सेवा, विदेश प्रसारण सेवा और उत्तर-पूर्वी प्रसारण सेवा के माध्यम से आकाशवाणी लोगों से जुड़ा है। डायरेक्ट-टू-होम (डी.टी.एच.) सेवा में अकाशवाणी के बारह चैनल सीधे ही टी वी सेट पर उपलब्ध हैं। मनोरंजन के कार्यक्रमों के लिए विविध भारतीय सेवा चल रही है। कार्यक्रमों की गुणवत्ता सुधारने के लिए डिजीटल टेक्नोलॉजी अपनाई जा रही है। 'तात्कालिकता' लोग नई से नई सूचना या समाचार यथाशीघ्र सुनना चाहते हैं आकाशवाणी का समाचार सेवा प्रभाग रोजाना 363 समाचार बुलेटिन दिल्ली और विभिन्न केन्द्रों से प्रसारित करता है। देश की भाषाई विविधता को ध्यान में रखकर 80 से ज्यादा भाषाओं और भारतीय भाषाओं में कार्यक्रमों की प्रस्तुति करता है।

‘वास्तविकता’ घटना स्थल से सीधे प्रसारण की सुविधा के कारण प्रभावित लोगों और व्यवस्थापकों से सीधी बातचीत श्रोता सुन सकते है। प्राकृतिक आपदाओं जैसे भूकम्प, बाढ़, चक्रवात और सुनामी के दौरान रेडियो ने वास्तविक स्थिति का अहसास श्रोताओं को कराया। दुर्घटनाओं और महतवपूर्ण आयोजनों के प्रसारण इसी कड़ी में शामिल हैं। क्रिकेट, हॉकी और फुटबाल जैसे खेलों का आंखों देखा हाल सनते हुए लोग स्टेडियमों में मौजूद भीड़ की प्रतिक्रिया का आनंद लेते हैं। वास्तविकता का यह अहसास रेडियो की एक और शक्ति ‘अपनत्व’ को बढ़ावा देता है। ‘दृश्यहीनता’ दृश्यों का अभाव लोगों की कल्पना शक्ति को बढ़ाता है। आवाज के जरिए कार्यक्रम श्रोताओं के कानों तक पहुंचते हैं उसे वास्तविक दृश्य या चित्र नहीं दिखाई देता। वह अपनी कलपना शक्ति के द्वारा दृश्य बनाता है। यदि किसी राजा का वर्णय है तो उसकी वेशभूषा और डीलडौल की कल्पना आज के आधार पर ही होगी। हर श्रोता के मन में अपने अनुभव के आधार पर अलग छवि उभरेगी। दृष्टिहीन व्यक्तियों के लिए भी रेडियो की उपयोगिता इसीलिए है कि वे केवल सुनकर सूचना, शिक्षा और मनोरंजन का लाभ उठा सकते हैं कल्पनाशक्ति को बढ़ावा देने के कारण ही रेडियो को ‘हॉट मीडियम’ कहा जाता है। यह लोगों के दिमाग को सक्रिय बनाकर उन्हें सोच विचार के लिए प्रेरित करता है। ‘‘सुलभ एवं सस्ता’’ रेडियो एक ‘सस्ता’ माध्यम है। कार्यक्रम निर्माताओं, विज्ञापनदाताओं और विपणन से जुड़े लोगों के लिए सस्ती लागत वरदान सिद्ध होती है। समाचार पत्र और टेलीविजन में विज्ञापन काफी महंगे पड़ते हैं। रेडियो में बहुत कम लोगत से ही करोड़ों लोगों तक एक साथ संदेश पहुंचाए जा सकते हैं।

1.5.2 विकास का वाहक

रेडियो प्रसारणों का प्रमुख उद्देश्य आम आदमी के जीवन स्तर में सुधार लाना है। यह सुधार उसकी भौतिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति से ही संभव है। हर सरकार चाहती है कि लोगों के जीवन स्तर में निरंतर सुधार होता रहे। सभी जनसंचार माध्यम इसमें सहायता करते हैं। रेडियो सहित अन्य जनसंचार माध्यम श्रोताओं को पहले अच्छे जीवन स्तर के बारे में जागरूक करते हैं और उन्हें प्रेरित करते हैं। जनसंचार विशेषज्ञ विल्वर श्रम ने अपनी पुस्तक ‘मास मीडिया एंड डेवलपमेंट’ में माना है कि संचार साधन दुनिया का नक्शा बदल सकते हैं किसी भी देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण है। रेडियो जैसे जनसंचार माध्यम का उद्देश्य केवल समुचित सूचना उपलब्ध कराना नहीं होता बल्कि इच्छित सामाजिक परिवर्तन उनका

अंतिम लक्ष्य होता है। रेडियो सामाजीकरण, सतर्कता और आम सहमति बनाने के अलावा लोगों की आकांक्षाओं को बढ़ाने में भी मदद करता है। वह मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित करने में सहायक होता है। लोगों को सोच-विचार के लिए प्रेरित करने में भी रेडियो की भूमिका है। नए विचार और जीवन मूल्यों के विकास में उसका महत्वपूर्ण योगदान है। आम लोगों की रूचि नवाचारों में बढ़े, वे नए प्रयोगों के लिए तेयार रहें और नए परिणामों को अपनाने में न झिझकें, इस सबमें रेडियो कारगर भूमिका निभाता है। देश के प्रमुख जनसंचार विशेषज्ञ डॉ. वाई. वी. लक्ष्मणराव भी यह सिद्ध कर चुके हैं कि जनसंचार माध्यम सामाजिक-आर्थिक बदलाव की प्रक्रिया को तेज कर देते हैं डॉ. राव ने इसे सिद्ध करने के लिए आंध्र प्रदेश के दो गोंवों को चुना। दोनों गांव लगभग बराबर आबादी के थे उनका क्षेत्रफल भी बराबर था। बस उनमें केवल एक अंतर था। एक गांव सड़क से जुड़ा था। वहाँ तरक्की हो रही थी। दूसरा गांव सड़क के दूर था। वह पिछड़ा हुआ था। दोनों गांवों में यह अंतर क्यों? डॉ. राव ने इसकी गहरी छानबीन की। वे इस नतीजे पर पहुंचे कि जो गांव सड़क से जुड़ा था वहाँ नए विचार जल्दी पहुंचे। लोगों ने रेडियो और समाचार पत्रों के माध्यम से नई सूचनाएं प्राप्त की। उन्हें अपनाया और तरक्की की राह पकड़ी। दूसरे गांव में सड़क नहीं थी। वहाँ नए विचार नहीं पहुंचे। लोगों को रेडियो और समाचार पत्रों की जानकारी भी नहीं मिली। नतीजतन वे पिछड़े रहे। उनमें आपसी द्वेष, ईर्ष्या और लड़ाई-झगड़े बढ़े। ‘‘एक गांव में सूचना का बहाव बढ़ा, वहाँ तरक्की हुई दूसरा गांव सूचना से कटा रहा। वहाँ पिछड़ापन बढ़ा’’।

राष्ट्रीय विकास में सूचना के बहाव का बड़ा महत्व है। विशेषज्ञों का मानना है कि न्यायोचित ‘सूचना समाज’ का निर्माण करने के लिए चार अवस्थाओं सामग्री, सूचना, ज्ञान और विवेक से गुजरना होता है। रेडियो, टीवी और समाचार पत्र निरंतर सूचनाएं उपलबध कराते हैं इन सूचनाओं से ही लोगों को ज्ञान प्राप्त होता है। ज्ञान का समुचित उपयोग करने के लिए विवेक का विकास आवश्यक हैं विवेक के बिना हम सूचनाओं का विश्लेषण नहीं कर सकते। वार्ताओं, साक्षात्कारों, परिचर्चाओं और समाचारों के माध्यम से रेडियो हमारे विवेक को बनाए रखता है। हमारे देश के लोगों ने रेडियो से प्राप्त सूचनाओं का उपयोग अपने विवेक के अनुसार भरपूर किया है। हमारे यहाँ हरित क्रांति लाने का श्रेय रेडियो का ही है। अनपढ़ किसानों ने रेडियो के माध्यम से नए ज्ञान को प्राप्त किया और उसे अपनाया। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण के क्षेत्र में भी हमें काफी सफलता मिली। नई योजनाओं की जानकारी ने लोगों को अपना भौतिक स्तर सुधारने के लिए प्रेरित किया। खेलों का आंखों देखा हाल सुनाकर पूरे देश में खेलों का

बढ़ावा देने का कार्य भी रेडियो ने किया। क्रिकेट, हॉकी, फुटबाल जैसे खेलों के अलावा घरेलू खेल जैसे खो-खो, कबड्डी और कुश्ती के बारे में भी जानकारी लोगों को मिली। शैक्षणिक स्तर सुधारने के लिए रेडियो ने औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के विस्तार में अपना योगदान निरंतर दिया है। फोन-इन और रेडियो ब्रिज जैसे कार्यक्रमों से श्रोताओं और प्रसारकों के बीच संबंध बढ़े हैं। अब सूचना का बहाव एकतरफा नहीं रहा। दोतरफा संवाद से कार्यक्रमों की उपयोगिता बढ़ी है। रेडियो लोगों को अपना माध्यम लगता है। वह उन्हें अपनी बात कहने का मंच प्रदान करता है। नई पीढ़ी में नेतृत्व विकास के प्रशिक्षण का काम रेडियो ने सदैव किया है। रेडियो पर प्रसारण का अवसर मिलने से उनमें एक नया विश्वास जगा है। बच्चों और महिलाओं के लिए रेडियो सबसे बड़ा मंच है। किसान, ग्रामीण, बुजुर्ग, श्रमिक, और अन्य सभी वर्गों के लिए रेडियो आज भी विश्वसनीय माध्यम है। 'संचार और विकास' विषय पर चर्चा करते हुए प्रसिद्ध समाज विज्ञानी प्रो. श्यामाचरण दुबे ने ठीक ही कहा है-''विकास की प्रक्रिया का सूत्रपात मनुष्य के मस्तिष्क में होता है। आधुनिकता के लिए किया जाने वाला संघर्ष मूलतः सम-सामयिक मानव की मान्यताओं, मूल्यों और कार्य शैलियों को एक नया मोड़ देने का संघर्ष है। उनका मानना है कि विकास के लिए संचार आवश्यक है, पर वह अपने आप में र्प्याप्त नहीं है। उनकी अग्रगामी और पूरक भूमिकाएं विकास के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करती हैं और योजनाओं के कार्यान्वयन में अनेक रूपों में सहायक होती है।'' प्रो. दुबे कहते हैं कि 'विकास के लिए आवश्यक है कि राष्ट्रीय आत्मविश्वास सशक्त हो और सामान्य नागरिक को राष्ट्रीय संस्थानों के प्रति आदर हो। रेडियो ने हमेशा परिवर्तन की आवश्यकता पर जोर देते हुए स्वस्थ मनोरंजन, सूचना और शिक्षा पर जोर दिया है। संचार क्रांति के कारण हमारी विशाल दुनिया छोटे से कस्बे में बदल गई है। उपग्रहों के माध्यम से क्षण भर में सूचनाएं कहीं भी पहुंच सकती हैं। इंटरनेट के कारण दुनिया का संपूर्ण ज्ञान एक कंप्यूटर में समाने लगा है। 'माउस' के क्लिक करते ही कोई भी सूचना कंप्यूटर के परदे पर दिखाई देने लगी है। बिजली के तार और केबल भी अब संकट में हैं। सूचनाएं बिना किसी तार के इस छोर से उस छोर तक दौड़ रही हैं। कंप्यूटर की क्षमता दिनों-दिन बढ़ रही है।

नई प्रौद्योगिकी से एक नई संचार क्रांति का सूत्रपात हो रहा है। परमाणु से भी छोटे स्तर पर संकेतों का आदान-प्रदान होने लगा है। प्रसिद्ध भविष्य विज्ञानी एलविन टाफ्लर ने इस क्रांति की ओर इशारा बहुत पहले ही कर दिया था। उन्होंने अपनी पुस्तक 'थर्ड वेव' और बाद में 'फ्यूचर शॉक' में विस्तार से भावी

सभ्यता की कल्पना की है। संचार क्रांति के कारण एक नई सभ्यता का उदय हो रहा है। इस सूचना क्रांति के कारण परिवारों के तौर-तरीके बदल रहे हैं। नई अर्थ-व्यवस्था पनप रही है। नए राजनीतिक संकट खड़े हो रहे हैं। यहाँ तक कि 'आत्मा की आवाज' भी बदल रही है। आधुनिक परिवेश हमारी पुरानी मान्यताओं को छिन्न-भिन्न कर रही है। हमारे सोचने का ढंग बदलने लगा है। नई दुनिया उभर कर सामने आ रही है। भौगोलिक सीमाओं और आपसी संबंधों की पुनर्व्याख्या हो रही है। नई जीवन शैली विकसित हो रही है। रहन-सहन, खान-पान और पारिवारिक संबंधों में तेजी से बदलाव आ रहा है। रेडियो के सामने अस्तित्व का संकट सदैव मंडराता रहा है। जब टेलीविजन का प्रादुर्भाव हुआ तो लोगों को अचानक लगने लगा कि रेडियो शायद ही बचे। तस्वीरों की चकाचौंध के सामने वह कैसे टिकेगा? यही प्रश्न अब सूचना-प्रौद्योगिकी (आई.टी.) के युग में उभर रहा है। क्या रेडियो के दिन लदने वाले हैं? इन सवालों को रेडियो ने सकारात्मक रूप से ग्रहण करते हुए उसने अपने अनूठे गुणों से हमेशा जीवंत बने रहने में मदद की है। रेडियो का लचीलापन, अपनत्व और चंचलता किसी अन्य माध्यम में समा नहीं पाते। रेडियो तकनीकी एवं साइज के रूप से काफ़ी लचीला हुआ है। वाल्व वाले भारी-भरकम रेडियो सेट अब छोटे ट्रांजिस्टर सेटों में बदल गये हैं। मीडियम और शार्टवेव का स्थान एफएम फ्रीक्वेंसी ने लेना शुरू कर दिया है । उपग्रह ने रेडियो की पहुँच को बढ़ाया है । डायरेक्ट-टू-होम (डीटीएच) सेवा के माध्यम से रेडियो, टीवी के साथ-साथ जंगलों और पहाड़ों के दुर्गम स्थलों तक पहुँच गया। मोबाइल फोन के साथ हुए संगम ने उसे जन-जन का प्रिय माध्यम बना दिया। कार रेडियो में लगे होने से उसकी गतिशीलता और बढ़ गई। लैंड लाइन फोन में भी रेडियो समाचार सुनाई देने लगे। आभूषणों के रूप में रेडियो इयर रिंग, चूड़ियों और गले के लॉकेट की जगह लेने लगा। कार्यक्रमों-वार्ताओं, परिचर्चाओं, नाटकों, रूपकों, शास्त्रीय संगीत की समय सीमा घटने लगी है। फिल्म संगीत, पॉप म्यूजिक और पाश्चातय संगीत रेडियो पर छाने लगा है। नई पीढ़ी के लिए विशुद्ध हिंदी या अंग्रेजी के स्थान पर मिली-जुली भाषा 'हिंग्लिश' को स्वीकारा जाने लगा है। सूचना, शिक्षा और मनोरंजन का घरेलू साधन संचार का साधन हो गया। चमक-दमक भले ही कम हुई हो लेकिन उपयोगिता कम नहीं हुई है।

1.5.3 सौ साल का सफर

रेडियो इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के सबसे सीनियर सदस्य है जिसकी उम्र सौ वर्ष से अधिक हो चुकी है। अपनी उम्र के इन सौ वर्षों में रेडियो ने खुद को बहुत बदला है। यह बदलाव तकनीक तथा कार्यक्रम दोनों

ही क्षेत्रों में हुआ है। हम कह सकते हैं कि रेडियो की शुरूआत स्टूडियो के बंद दरवाजों के अंदर माइक्रोफोन के द्वारा भेजे गए एक-तरफा संदेशों से हुई थी। ये संदेश बिजली द्वारा चलने वाले रेडियो के माध्यम से श्रोताओं तक पहुँचते थे। वर्ष 1947 में ट्रांजिस्टर के आविष्कार के बाद बिजली की अनिवार्यता समाप्त हो गई। रेडियो ने टेलीफोन तकनीक का लाभ लेते हुए कई वर्षों पहले ही स्टूडियो के बाहर से प्रसारण आरंभ कर दिया था। माइक्रोफोन के स्टूडियो से बाहर आने के साथ ही रेडियो कार्यक्रमों में आम आदमी की सहभागिता बढ़ गई। 10 जुलाई, 1962 में दुनिया के पहले संचार सैटेलाइट ने प्रायोगिक रूप से कार्य आरंभ किया। इन प्रयोगों के साथ बंद दरवाजों वाले स्टूडियो से अपनी यात्रा आरंभ करने वाली रेडियो संचार तकनीक सैटेलाइट के माध्यम से भौगोलिक तथा राजनैतिक सीमाओं को पार कर मुक्त आसमान तक पहुँच गई। संदेशों का आदान-प्रदान सहज तो हुआ ही, वे अधिक स्पष्ट भी हो गए। रेडियो की एक नई छवि उभरी।

1.6 रेडियो: तकनीक के नए आयाम

02 मई, 1965 को दुनिया के पहले व्यवसायिक संचार सैटेलाइट अर्ली बर्ड द्वारा नियमित रूप से प्रसारण आरंभ हुआ। सैटेलाइट, कम्प्यूटर तथा इंटरनेट के साथ रेडियो-टेलीविजन जुड़ने के तकनीकी अभिसरण ने इन इलेक्ट्रानिक जनसंचार माध्यमों को अभूतपूर्व शक्ति प्रदान की। रेडियो तकनीक के नये प्रयोगों को निम्नलिखित तीन शीर्षकों में समझा जा सकता है।

रेडियो में डिजीटल तकनीक का उपयोग

रेडियो में एफएम तकनीक का उपयोग

रेडियो में सैटेलाइट व इंटरनेट तकनीक का उपयोग

1.6.1 डिजीटल तकनीक

रेडियो आवाज का माध्यम है। हर श्रोता बिना किसी व्यवधान के रेडियो संदेश की आवाज सुनना चाहता है पहले आवाज पहुँचाने के लिए जिस रिकार्डिंग तथा प्रसारण तकनीक का उपयोग किया जाता रहा है, उसे हम 'एनेलॉग प्रणाली' के नाम से संबोधित करते हैं। इस तकनीक में अपरिवर्तनीय तथा हठीली प्रणाली- ध्वनि संकेतों का सम्मिलन व निष्कासन काफी कठिन होता है तथा इसकी गुणवत्ता उपयोग के साथ निरंतर घटती जाती है। इसमें संपादन कठिन व श्रमसाध्य होता है। इसमें जोड़ने और घटाने की तकनीक संभव नहीं तथा एनेलॉग तकनीक के उपकरणों में प्रगति तथा सुधार की धीमी गति होती है।

डिजीटल तकनीक संचार की आधुनिक प्रणाली है। इस प्रणाली में सूचनाओं को संप्रेषित करते समय इलेक्ट्रानिक संकेतों में बदल कर उनका पृथक्कीकरण किया जाता है, जिसके कारण ये संकेत स्पष्ट रूप में प्रभावी हो सकते हैं डिजीटल प्रणाली में कम्प्यूटर तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है। यह एक लचीली तथा बहुमुखी तकनीक है तथा यह बहु-उपयोगी तकनीक है।यह प्रणाली विश्वसनीय, दक्ष तथा संपूर्ण रचनात्मक है जो संकेतों को नुकसान नहीं पहुँचाती। इस तकनीक में संपूर्ण स्वचालन तथा संक्षिप्तीकरण संभव है। संकेत, ध्वनि व्यवधानों से सुरक्षित रहते हैं। इस कारण गंतव्य तक वे अपने मौलिक गुणों के साथ पहुँचते हैं, इसके संकेतों का केंद्रीय भंडारण किया जा सकता है।

आजकल रेडियो में हार्ड डिस्क आधारित प्रणाली का उपयोग किया जाता है। रेडियो में डबिंग, रिकॉर्डिंग, संपादन, संग्रहण, निर्धारण, संप्रेषण तथा वितरण के लिए डिजीटल तकनीक पर आधारित 'हार्ड डिस्क प्रणाली' का उपयोग किया जाता है।

1.6.2 एफएम तकनीक

एफएम एक लोकप्रिय बहुचर्चित शब्द है। आमतौर पर मनोरंजन प्रधान तथा निजी रेडियो के कार्यक्रमों को ही एफएम समझ लिया जाता है। जबकि एफएम कोई कार्यक्रम नहीं है बल्कि आवाज प्रसारण की एक तकनीक है। रेडियो के संकेत ध्वनि तरंगों के माध्यम से प्रसारित होते हैं। इन ध्वनि तरंगों की यात्रा रेडियो स्टेशन के ट्रांसमीटर से श्रोता के रेडियो रिसीवर तक वायुमंडल के माध्यम से होती है। ट्रांसमीटर का काम रेडियो कार्यक्रमों के संकेतों को ध्वनि तरंगों में बदलना होता है। मध्यम तरंग का मीडियम वेव तथा लघु तरंग का शार्ट वेव कहते हैं। आमतौर पर इन दिनों दुनियाभर में रेडियो संकेतों का प्रसारण एएम अर्थात 'एम्पलीट्यूड माडयूलेशन' अथवा एफएम अर्थात 'फ्रीक्वेंसी माड्यूलेशन' तकनीक से आता है।एफ एम रेडियो स्टेशन अत्यंत उच्च आवृत्ति (VHF) पर प्रसारण करते हैं। इसी कारण एफ एम रेडियो/ट्रांजिस्टर पर मेगा हर्टज MHz लिखा रहता है, जबकि मीडियो वेव में किलो हर्टज KHz मीटर को अभिव्यक्त किया जाता है। एफएम तकनीक में ध्वनि संकेत मौलिक गुणवत्ता के साथ रेडियो रिसीवर तक पहुँचते हैं। इसी कारण एफ एम रेडियो से प्रसारित होने वाला संगीत स्टीरियोफोनिक, डिजीटल जैसे उच्च गुणों सहित सुनाई देता है। वातावरण के ध्वनि दोष उसमें मिलकर गुणों को नष्ट नहीं करते हैं। लेकिन एफ एम तकनीक की एक कमी भी है कि इससे प्रसारित होने वाले ध्वनि संकेतों की दूरी सीमित होती है।

इस कारण इन रेडियो स्टेशनों से प्रसारित होने वाले कार्यक्रम एक सीमित दूरी के अंदर ही सुने जा सकते हैं।

1.6.3 सैटेलाइट व इंटरनेट तकनीक

तकनीक के विकास के साथ अब रेडियो की आवाज ट्रांजिस्टर के अतिरिक्त टेलीविजन पर भी सुन सकते हैं। सैटेलाइट तकनीक ने रेडियो संकेतों को ट्रांसमीटर के बिना भी घर-घर तक पहुंचा दिया है। आज हम लद्दाख के लेह में भी आकाशवाणी चेन्नई से प्रसारित होने वाले तमिल कार्यक्रम सुन सकते हैं यह चमत्कार रेडियो के साथ हाल में ही जुड़ी सैटेलाइट आधारित 'डायरेक्ट टू होम' अथवा DTH तकनीक के कारण हुआ है। रेडियो स्टेशन से सीधे सैटेलाइट को संकेत भेजे जाते हैं जिन्हें आप विशेष उपकरण रिसीवर पर भारत में ही नहीं, दक्षिण-पूर्वी एशिया सहित दुनिया के कई देशों में प्राप्त कर सकते हैं। सैटेलाइट व इंटरनेट ने रेडियो को तकनीकी रूप् से समृद्ध किया है तथा कार्यक्रमों को दूर-दूर तक सहज, सुलभ, आकर्षक तथा जनोपयोगी बना दिया है। पाश्चात्य देशों में इंटरनेट रेडियो अत्यंत लोकप्रिय हो रहे हैं। आज मल्टी मीडिया, सीडी रोम, इंटरनेट तथा सैटेलाइट जैसी तकनीकों ने रेडियो को न केवल सुस्पष्ट डिजीटल गुणों की आवाज दी है, बल्कि सामाजिक व व्यवसायिक महत्ता के नए क्षितिज भी प्रदान किए हैं।

1.7 रेडियो : कार्यक्रमों के नए आयाम

वैज्ञानिक अनुसंधानों की नई तकनीकों के कारण रेडियो की उपयोगिता बहुत बढ़ गई है। संदेश भेजने के साथ-साथ यह विचारों के आदान-प्रदान का भी माध्यम बन गया है। रेडियो में आम आदमी की पहुँच सहज-सुलभ हो जाने के कारण कार्यक्रमों में भी कई नए क्षितिज जुड़ गए हैं। आज रेडियो में स्थल रिकार्डिंग पर केंद्रित कार्यक्रमों के साथ-साथ मोबाइल फोन का भी सीधे प्रसारण के लिए उपयोग होने लगा है। तकनीकी परिवर्तनों के साथ-साथ सामाजिक व सांस्कृतिक परिवर्तनों ने भी रेडियो कार्यक्रमों में कुछ नए आयाम जोड़े हैं।

रेडियो कार्यक्रमों में नए प्रयोग।

रेडियो कार्यक्रमों के निर्माण में नए प्रारूपों की खोज।

रेडियो कार्यक्रमों के प्रस्तुतिकरण की नई शैली।

1.7.1 नए प्रयोग

भारत में आईटी क्रांति के फलस्वरूप मीडिया क्रांति के कारण रेडियो कार्यक्रमों के क्षेत्र में भी अनेक परिवर्तन आए हैं। कार्यक्रमों के आयोजन तथा नीतियों में एक नई सोच विकसित हुई है कि नई परियोजनाओं तथा विषयों पर समय केंद्रित एवं सम सामयिक विषयों पर आधारित कार्यक्रम प्रसारित हो। आम जनों की रूचि के विषयों पर केंद्रित सूचनात्मक, शैक्षणिक तथा मनोरंजन प्रधान कार्यक्रम का निर्माण हो। कार्यक्रमों के आयोजन में श्रोताओं की सहभागिता के साथ कार्यक्रमों द्वारा राजस्व अर्जन तथा व्यवसायिक गतिविधियों को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रम प्रसारित किये जाये।

1.7.2 नए प्रारूप

रेडियो को समृद्ध बनाने में टेलीफोन, सैटेलाइट, कम्प्यूटर तथा इंटरनेट जेसी तकनीकों ने रेडियो के साथ जुड़कर उसे विस्तार दिया है उसे सहज-सुलभ और जनोपयोगी भी बनाया है । नई तकनीक के द्वारा कई नए कार्यक्रम प्रारूप बनाए जा सकते हैं, जैसे-फोन आधारित जन-सहभागी कार्यक्रमों का निर्माण किया जा सकता है। रेडियो कार्यक्रमों में संदेशों व सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए मोबाइल व इंटरनेट का इस्तेमाल हो सकता है। श्रोताओं हेतु मैत्री कार्यक्रम एवं क्विज़ कार्यक्रम किये जा सकते हैं। स्थल केंद्रित सीधा प्रसारण कर अधिक से अधिक जनोपयोगी सूचनाओं का कार्यक्रम बनाया जा सकता है। एफ. एम. तकनीक का लाभ लेते हुए स्थानीय रूचि के अधिक से अधिक कार्यक्रम, जिनमें सूचनाओं व संगीत का उचित समन्वय हो। आपातकालीन समय में रेडियो कार्यक्रमों का उपयोग हो सकता है। लंबी अवधि के कार्यक्रमों में रोचकता बनाए रखने के लिए संगीत, नाटक, उच्चारित शब्द इत्यादि सभी विधाओं का उचित तालमेल के साथ उपयोग करके भी रेडियों से श्रोताओं को जोड़ा जा सकता है। ऑन-लाइन क्विज, लॉटरी, मौसम, बाजार भाव तथा यातायात संबंधी सूचनाओं का नियमित प्रसारण किया जा सकता है तथा तथ्य आधारित कार्यक्रमों का निर्माण किया जा सकता है।

1.7.3 नए प्रस्तुतिकरण

जिस तरह से फास्टफूड और मैगी कल्चर ने आम लोगों के फूड हैबिट को बदल कर रख दिया है कुछ वैसा ही पिछले दस वर्षों में रेडियो कार्यक्रमों के प्रस्तुतिकरण की शैली बिल्कुल बदल गई है। नई तकनीक के साथ नई सोच के नए कार्यक्रम विकसित हुए हैं। इसके साथ ही कार्यक्रमों के प्रस्तुतिकरण की शैली भी अधिक जीवंत, आत्मीय तथा रोचक हुई। इस नई शैली में श्रोता को मित्र का स्थान प्राप्त हुआ है।

जो मात्र बाहरी श्रोता नहीं है, बल्कि हमारे कार्यक्रम का सहभागी भी है। इस नई शैली के लिए लिखित भाषा की नहीं, बल्कि बोले जाने वाली भाषा की जरूरत होती है। यह भाषा मुहावरेदान तथा सरल होने के साथ-साथ सरस लेकिन शिष्ट होनी चाहिए। यह भी आवश्यक है कि कार्यक्रम के प्रस्तोता अपने लक्षित श्रोताओं की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षणिक पृष्ठभूमि से पूरी तरह परिचित हों। वह जिस क्षेत्र के श्रोताओं के लिए कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहा है, उस क्षेत्र के भूगोल, मौसम, इतिहास इत्यादि के साथ-साथ बाजार इत्यादि की जानकारी भी उसके पास हो।

1.8 रेडियो : सच्चा साथी

रेडियो का अपना एक अनूठा एवं आकर्षक संसार है। अक्सर इसे 'आवाज की दुनिया' के रूप में जाना जाता है और इस दुनिया का अपना ही जादू है। रेडियो के 'दीवानों' और उनकी 'दीवानगी' की एक लंबी परंपरा है। देश भर में हजारों की संख्या में 'रेडियो श्रोता क्लब' इसी दीवानगी का प्रतिफलन है, जो स्थानीय या प्रादेशिक या राष्ट्रीय स्तर पर 'स्मारिकाएं' प्रकाशित करते हैं टेलीविजन के सैकड़ों चैनलों एवं इंटरनेट पर लाखों 'वेबसाइटों' के बावजूद रेडियो के श्रोताओं की दीवानगी अपनी जगह है। कुछ ऐसे भी श्रोता हैं जो मात्र रेडियो सुनने के शौक के कारण दूसरे देशों के रेडियो संगठनों द्वारा सम्मानित किए गए हैं।

1.8.1 हमारी बोली

रेडियो की 'आवाज की दुनिया' में हम पल भर में न जाने कहाँ से कहाँ पहुँच जाते हैं। ट्रांजिस्टर की सुई थोड़ी-थोड़ी देर में इधर से उधर घुमाते रहना लाखों लोगों का बाकायदा शौक होता है। श्रोता को पूरी छूट रहती है कि वह संगीत का रसास्वादन करे, नवीनतम सूचनाएँ प्राप्त करे, ताजा से ताजा समाचार सुने या ज्ञानवर्धन करे। वह किसी नाटक के माध्यम से कल्पना और यथार्थ के बीच अपनी भावनाओं को तरंगित करे या किसी 'वृत्त रूपक' में यथार्थ के कठोर धरातल पर उतरे या 'क्विज' से अपने ज्ञान की परीक्षा करे या किसी विदेशी स्टेशन से वहाँ के समाज, संस्कृति को जानें।

1.8.2 रेडियो बनाम अन्य

अन्य माध्यमों से रेडियो की तुलना का उद्देश्य सिर्फ रेडियो की भाषा को समझना है। रेडियो में आमने सामने की बातचीत संदेश देने का मूलभूत और सर्वाधिक प्रयोग होने वाला तरीका है। इस बातचीत में 'बोले हुए शब्द' 'चेहरे के हावभाव' एवं 'अंग संचालन' कोड होते हैं सामने वाला व्यक्ति

इस संदेश को पूरी तरह 'डिकोड' कर लेता है यानी कि समझ लेता है। आमने सामने की बातचीत में यह सुविधा रहती है कि संदेश देने वाला बीच-बीच में 'ठीक है न!' जैसे कुछ शब्दों से इस बात की पुष्टि कर सकता है कि संदेश ठीक ठीक ग्रहण किया जा रहा है। आपसी बातचीत की तुलना में, जनसंचार माध्यमों से कही गई बात हजारों लाखों लोगों तक पहुँचती है और यह जानने की सुविधा नहीं होती है कि संदेश ठीक से समझा भी जा रहा है अथवा नहीं!

प्रिंट माध्यम जैसे किताबों, समाचार पत्रों में 'लिखित शब्दों' के साथ साथ संख्याओं, चित्रों, रेखाचित्रों, फोटोग्राफ, ग्राफ, तालिका के 'कोड' के जरिए संदेश पहुंचाया जाता है। लेकिन संदेश देने वाला व्यक्तिगत रूप से उपस्थित नहीं होता, किन्तु छपी हुई सामग्री के साथ यह सुविधा होती है कि यह हमेशा के लिए अपने साथ रखी जा सकती है। इसे बार-बार पढ़ा जा सकता है। 'फिल्म' या 'टेलीविजन' में 'बोले हुए शब्दों' के साथ-साथ 'तस्वीरें' तथा परदे पर लिखे 'कैप्शन' संदेश पहुंचाते हैं किन्तु इन माध्यमों में साथ के साथ संदेश ग्रहण करना होता है यानी 'संदेश' को तुरंत 'डिकोड' करना होता है। फिल्म या टेलीविजन में यह सुविधा भी हे कि परदे पर एक 'साइनबोर्ड' दिखाकर ही किसी शहर या मोहल्ले का नाम आदि अनेक सूचनाएं दी जा सकती हैं।

रेडियो की सबसे बुनियादी बात यह है कि इसके संदेश देखे नहीं जा सकते है। रेडियो के संदेशों में न छपे हुए शब्द होते हैं न कोई तस्वीर। इसके संदेश सुनकर ही ग्रहण किए जा सकते हैं। यह भी वैज्ञानिक तथ्य है कि कान उतनी सशक्त इन्द्रिय नहीं है जितनी कि हमारी आंखें हैं। हम आंखों से एक साथ कई दृश्य एक ही बार में देख लेते हैं लेकिन एक ही साथ कई लोग बोल रहे हों तो बहुत सारे आवाजों को एक साथ सुनकर उन्हें विश्लेषित कर पाना अथवा याद रखना आसान नहीं होता तभी तो फोन पर बात करते समय हम आसपास बैठे लोगों के चुप्पी का संकेत देते हैं श्रव्य माध्यम होने के कारण रेडियो के संदेश विशिष्ट रूप में ढालने पड़ते हैं यह प्रयास किया जाता है कि रेडियो की भाषा में उपयोग किए जाने वाले 'कोड' बहुत सरल बनाए जाएँ। अन्यथा हो सकता है कि रेडियो के संदेश 'अस्पष्ट' रहें, समझ न आएं और 'संचार' सफल न हो पाए। रेडियो की इसी कमी का प्रभाव कम से कम करने के लिए विशेष प्रयास करने होते हैं और यही प्रयास रेडियो लेखक के लिए चुनौती प्रस्तुत करते हैं हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि रेडियो के संदेश भी तुरंत 'डिकोड' किए जाते हैं यानी उनको साथ-साथ समझना जरूरी होता है अन्यथा वे हवा में विलीन हो जाते हैं उन्हें छपी हुई सामग्री की तरह बार बार समझा नहीं

जा सकता। श्रव्य माध्यम होने के कारण ही रेडियो पर सारे संदर्भ बताकर ही स्थापित किए जाते हैं जैसेकि रेडियो पर थोड़ी थोड़ी देर में प्रसारण कर रहे केन्द्र की पहचान उद्घोषित होती रहती है। जैसे-ये आकाशवाणी लखनऊ का एफ.एम. रेनबो है रेनबो की तरह सात सुरों से सजे इस म्यूजिकल सफर का हमसफ़र है, आवाज़ का लख़नवी अंदाज़.... और मैं... अब्राहम मिराज । अथवा ये आकाशवाणी की राष्ट्रीय प्रसारण सेवा है मीडियम वेव 191.6 मीटर पर। एक ओर जहाँ फिल्म या टेलीविजन में एक दृश्य से काफी सूचनाएं दी जा सकती हैं वहीं रेडियो में प्रायः हर बात शब्दों के माध्यम से ही बताई जा सकती है।

1.8.3 कुछ अलग

रेडियो श्रोताओं की कल्पना शक्ति को जगा कर एवं उसे साथ लेकर चलता है । दृश्य माध्यम में कल्पना के लिए बहुत कम गुंजाश रहती है। एक तो दृश्यों के कारण कल्पना की आवश्यकता भी कम रहती है, साथ ही पल पल बदलते दृश्यों और परदे पर 'सब टाइटल' या 'कैप्शन' पर टिके ध्यान के कारण समय भी नहीं रहता। दृश्य माध्यमों में कलपना का नकारात्मक पहलू भी शामिल है। दृश्य यदि हमारी कल्पना के विपरीत है तो हमें 'आघात' सा लगता है। रेडियो के कार्यक्रमों में हमेशा 'सामयिकता' 'जीवन्तता' और 'वर्तमान' का बोध होता है क्योंकि वो आवाज़ का माध्यम होते हैं। उदाहरण के लिए- भारत अमेरिका संबंधों पर तेयार कार्यक्रम का नैरेटर जब कहता है कि 'आइए अमेरिका और भारत के संबंधों पर अमेरिका में बसे भारतीयों के विचार सुने' तब ऐसा जरूरी नहीं है कि वह सचमुच स्टूडियो में बैठा होगा तथा वे भारतीय भी वहां बैठे होंगे या वे उसी समय बोल रहे होंगे किंतु प्रसारण के समय श्रोता को ऐसा ही आभास होगा। रेडियो बंधन में नहीं जकड़ता बल्कि बंधन मुक्त करता है जबकि दूसरे माध्यमों के साथ बंधकर बैठना पड़ता है। दृश्य माध्यमों में पल पल बदलते दृश्यों को छोड़ना संभव नहीं होता क्योंकि फिर पूरे कार्यक्रम को समझना, उसका आनंद लेना असंभव होगा। दृश्य माध्यमों में कार्यक्रम देखते हुए कोई अन्य कार्य कर पाना संभव नहीं होता। रेडियो के लिए एक जगह टिककर बैठने की आवश्यकता नहीं होती। रेडियो कार्यक्रम सुनते हुए दूसरे मनचाहे काम किए जा सकते हैं। रेडियो त्वरित है, तीव्र है, तत्पर है और आसान भी है जबकि दृश्य माध्यमों के लिए ज्यादा उपकरणों की आवश्यकता होती है उसकी तुलना में रेडियो प्रसारण की तकनीक एवं कार्यक्रम निर्माण एवं प्रसारण की आवश्यकताएं भी जटिल नहीं होतीं। इसलिए समाचार एवं सूचनाएं तुरंत देने में कोई दूसरा माध्यम रेडियो की बराबरी

मुश्किल से कर सकता है। गीत संगीत रेडियो कार्यक्रमों में प्रमुख भूमिका निभाते हैं । जन समस्याओं पर आधारित इस कार्यक्रम में किसी समस्या या सवाल को उठाकर कार्यक्रम प्रस्तुतकर्ता, समाधानकर्ता के साक्षात्कार के बाद एक गीत प्रस्तुत करता है। यह जुड़ा हुआ गीत कई बार जनाक्रोश को अभिव्यक्ति करता है, कई बार व्यंग्य का तीखा वार रकता है, कई बार श्रोताओं को करूणा से भर देता हे या समाधानकर्ता के झूठे आश्वासनों को निशाना बनाता है।

यूं तो रेडियो ध्वनि का ही माध्यम है किन्तु रेडियो पर ध्वनि की 'गैर मौजूदगी' का भी विशेष महत्व है और वह रेडियो के संदेशों में एक महत्वपूर्ण कोड का काम करता है। रेडियो पर 'पॉज' यानी 'चुप्पी' या 'मौन' की भूमिका दो प्रकार की हो सकती है। पहली भूमिका यह हो सकती है कि 'मौन' रेडियो पर कार्यक्रम समाप्त होने की सूचना दे। किसी कार्यक्रम की सीमा रेखा तय करने का काम भी 'मौन' करता है। यानी कि किसी संदेश के शुरू और अंत में थोड़े से पॉज से कार्यक्रम का स्वरूप नियत होता है। जैसे कि समाचारों के बीच में पॉज, एक प्रकार के समाचार के बाद दूसरे प्रकार के समाचार को आसानी से समझने में मदद करता है। किसी वार्ता में पैराग्राफ बदलने का कार्य पॉज से ही संभव होता है। समाचार बुलेटिन में यदि पॉज का सहारा नहीं लिया जाय तो एक समाचार दूसरे समाचार से जुकर हास्यास्पद स्थिति पैदा कर सकता है अथवा अर्थ का अनर्थ करके अप्रिय स्थिति को जन्म दे सकता है। जैसे,

रूको, मत जाओ

फर्ज कीजिये अब यदि विराम चिन्ह बदल दिया जाए तो वाक्य का अर्थ उलट जाएगा रूको मत, जाओ किंतु रेडियो पर विराम चिन्ह का कार्य 'पॉज' से लेना पड़ता है,

रूको..........(पॉज) .... मत जाओ

रूको.......... मत ....(पॉज) ....जाओ

ध्यान रखना चाहिए कि यह पॉज कुछ क्षण मात्र का होता है किंतु लंबा पॉज या मौन रेडियो माध्यम के लिए खतरनाक हो सकता है। श्रोता के लिए लम्बे पॉज का अर्थ होगा ट्रांसमीटर या स्टूडियो में कोई खराबी आ गई है या फिर प्रस्तुतकर्ता से कोई गंभीर भूल हो गई है।

1.9 रेडियो : प्रकार

रेडियो आवाज़ का माध्यम है, सभी रेडियो का लक्ष्य अपने श्रोताओं तक सूचना, शिक्षा और मनोरंजन पहुंचाना होता है फिर भी रेडियो को उसके ध्येय एवं उसकी प्राथमिकताओं के आधार पर तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

1.9.1 सार्वजनिक रेडियो

स्वायत्त उपक्रम प्रसार भारती द्वारा संचालित प्रसारण सेवाओं यानी आकाशवाणी (आल इंडिया रेडियो) को सार्वजनिक रेडियो कहा जाता है। आकाशवाणी को भारत का लोक प्रसारक भी कहते हैं। जिसका ध्येय वाक्य बहुजन हिताय बहुजन सुखाय है।

1.9.2 वाणिज्यिक रेडियो

निजी संस्थाओं द्वारा संचालित प्रसारण सेवाओं को वाणिज्यिक रेडियो के नाम से जाना जाता है। ये विशुद्ध रूप से मनोरंजन आधारित कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण करता है। हालांकि ये अपने कार्यक्रमों के निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण में स्वतंत्र तो है लेकिन स्वछंद नहीं। वाणिज्यिक रेडियो को भारत सरकार के प्रसारणों के दिशानिर्देशों का पालन करना पड़ता है।

1.9.3. सामुदायिक रेडियो

यह एक ऐसी रेडियो प्रसारण सेवा है जो वाणिज्यिक और सार्वजनिक प्रसारण से अलग है। यह रेडियो प्रसारण के तीसरे मॉडल को प्रस्तुत करता है। सामुदायिक रेडियो स्टेशन स्थानीय समुदायों और समान रुचि के समुदायों के लिए संकल्पित रहते हैं उनकी प्रसारण सामग्री स्थानीय एवं विशिष्ट श्रोताओं के लिए समर्पित होती है जिसकी वाणिज्यिक या मुख्य धारा के मीडिया प्रसारकों द्वारा अनदेखी की जाती है। सामुदायिक रेडियो की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये उन्हीं समुदायों द्वारा संचालित, प्रबंधित और प्रभावित होते हैं जिनकी सेवा के लिए वो कृतसंकल्पित होते हैं। सामुदायिक रेडियो आम तौर पर गैर-लाभकारी उपक्रम होते हैं तथा यह व्यक्तियों, समूहों और समुदायों को अपनी कहानियां बताने, अनुभव साझा करने और मीडिया समृद्ध दुनिया में मीडिया के निर्माता और योगदानकर्ता बनने के लिए सक्षम तंत्र प्रदान करते हैं।

1.10 सामुदायिक रेडियो : अर्थ एवं अवधारणा

सामुदायिक रेडियो, दो शब्दों "समुदाय एवं रेडियो" के योग से बना है। यहां समुदाय का अर्थ एक समान बोली - भाषा, एक समान खान-पान, एक समान रहन - सहन और एक ही भौगोलिक क्षेत्र में निवास करने वाले समुदाय से है। तथा रेडियो का अर्थ उस माध्यम से है जो समुदाय के प्रत्येक व्यक्ति की पहुंच में हो जहाँ वो अपने अंतर्मन के भावों को प्रकट कर सकता हो। सामुदायिक रेडियो में न सिर्फ समुदायों की अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित की जाती है बल्कि सामुदायिक हितों को भी सर्वा ेपरि रखा जाता है। इसमें विकसात्मक मुद्दों, कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण, सामजिक कल्याण, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और सामदायिक विकास के लक्ष्यों पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित किया जाता है। वस्तुतः सामुदायिक रेडियो कम शक्ति के एफएम रेडियो स्टेशन होते है जो स्थानीय मुद्दों पर आधारित स्थानीय समुदाय की अभिव्यक्ति के साधन हैं। मूलतः सामुदायिक रेडियो का स्वामित्व, प्रबंधन और संचालन स्थानीय लोगों के द्वारा संपादित किया जाता है जो विशेष रूप से स्थानीय समुदाय के सशक्तिकरण के लिए परिचालित किये जाते हैं। सामुदायिक रेडियो का प्रसारण दस से बारह किलोमीटर के दायरे में किया जाता है। सार्वजनिक प्रसारण सेवा एवं वाणिज्यिक प्रसारण सेवा के इतर सामुदायिक रेडियो प्रसारण की कल्पना बहु-सामाजिकता और विविधता को सही अर्थों में अभिव्यक्ति देने के उपयोगी माध्यम के रूप में महत्त्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज कराने के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए की गई है। भले ही इसने अभी तक व्यापकता के निर्धारित आयामों को नहीं छुआ है, लेकिन यह स्पष्ट है कि विशाल और विविधतापूर्ण जनसंख्या वाले देशों में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण है। इसके विकास की प्रक्रिया में कुछ सिद्धांतों और मूल्यों का विशेष योगदान रहता है। इसलिए सामुदायिक रेडियो गरीब और अविकसित देशों में विकास की असीम संभावनाओं को आवाज देने वाले उपकरण के रूप में स्थापित है क्योंकि सामुदायिक रेडियो सार्वजनिक हितों से जुड़ा है। सामुदायिक रेडियो प्रसारण की अवधारणा का प्रमुख पहलू उन समुदायों को आवाज़ का सरल, सहज एवं सशक्त माध्यम देना है जो भौगोलिक रूप से अलग हैं साथ ही वंचित हैं एवं समाज की मुख्यधारा से कटे हुए हैं। इसका लक्ष्य हाशिये के समुदायों के हितों की रक्षा करना है। सामुदायिक रेडियो से अपेक्षा की जाती है कि ये समाज के विभिन्न वर्गों में सामाजिक सौहार्द की भावना विकसित करेगा एवं हाशिये पर धकेल दिये समाज को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने में महत्वपूर्ण योगदान करेगा।

1.10.1 परिभाषायें

सामुदायिक रेडियो को किसी एक परिभाषा में बांधना संभव नहीं है। प्रत्येक देश के संस्कृति संबंधी क़ानूनों में अन्तर होने के कारण देश और काल के साथ इसकी परिभाषा बदल जाती है। किन्तु मोटे तौर पर किसी छोटे समुदाय द्वारा संचालित कम लागत वाला रेडियो स्टेशन जो समुदाय के हितों, उसकी पसंद और समुदाय के विकास को दृष्टिगत रखते हुए ग़ैरव्यावसायिक प्रसारण करता है वो सामुदायिक रेडियो कहलाता है।

शोधकर्ता ने अपनी शोध यात्रा के दौरान ''सामुदायिक रेडियो की विभिन्न विशेषताऐं व परिभाषाऐं पढ़ी हैं, किसी ने सामुदायिक रेडियो को सामुदाय का, सामुदाय के द्वारा, सामुदाय के लिए मीडिया बताया तो किसी ने अनुसुनी आवाजों को आवाज देने का माध्यम बताया।" वहीं कुछ लोगों ने कहा, " सामुदायिक रेडियो मीडिया द्वारा उपेक्षित समुदाय का मीडिया है।" जबकि कुछ लोगों ने" सामुदायिक रेडियो को रेडियो का थर्ड मॉडल बताये जाने की परिभाषा को खारिज करते हुए इसे सामुदायिक सहभागिता का प्रथम मॉडल बताया है।" शोधकर्ता ने अपनी शोध यात्रा के दौरान सामुदायिक रेडियो को उसकी परिकल्पना, उसके उद्देश्य एवं उसके परिचालन को दृष्टिगत रखते हुए निम्नलिखित रुप से परिभाषित किया है,

''व्यक्ति, अपने भावों अथवा विचारों को प्रकट करने के लिए रेडियो तक पहुचता है जबकि व्यक्ति के भावों अथवा विचारों को प्राप्त करने के लिए सामुदायिक रेडियो, व्यक्ति तक पहुंचता है।''

''जिन्हें, सब इग्नोर करते है उन्हे वो प्रोमोट करता है, जिन्हें सब छुपाते है, उन्हें वो बताता है। '

1.10.2. दृष्टिकोण

वैश्विक स्तर पर सामुदायिक रेडियो के संचालन के लिए दो दार्शनिक दृष्टिकोण मौजूद हैं हालांकि ये दोनों दृष्टिकोण आपस में अनन्य नहीं हैं फिर भी काफी कुछ समानताएं दिखती हैं।

सेवा का दृष्टिकोण

सहभागिता का दृष्टिकोण

सेवा का दृष्टिकोण इस प्रश्न को संबोधित करता है कि वो समुदाय के लिए क्या भूमिका निभा सकता है। ये दृष्टिकोण सामुदायिक रेडियो केन्द्र के सुचारू संचालन, कार्मिकों की कुशलता,, सामग्री की उपयोगिता, वित्त के प्रबंधन एवं कार्यक्रमों के निरंतर प्रसारणों पर ध्यान केंद्रित करता है।

सहभागिता का दृष्टिकोण इस प्रश्न को संबोधित करता है कि सामुदायिक रेडियो केन्द्र के सुचारू संचालन में समुदाय की भूमिका क्या होगी। इस दृष्टिकोण में स्थानीयता को महत्व दिया जाता है। यह दृष्टिकोण श्रोताओं की भागीदारी तथा कार्यक्रमों के निर्माण में उनकी आवश्यकताओं एवं रुचि पर ध्यान केंद्रित करता है।

1.11 सामुदायिक रेडियो : उद्भव एवं विकास

1946 में वेस्ट कोस्ट से जुड़े प्रसारणकर्ताओं ने 'पेसिफिका फाउंडेशन' की स्थापना की। वहीं से सामुदायिक रेडियो की परिकल्पना को साकार करने का कार्य शुरू किया गया। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सामुदायिक रेडियो का जन्म 'वेस्ट कोस्ट' में हुआ। विश्व का पहला सामुदायिक रेडियो केन्द्र 'वेस्ट कोस्ट' में पत्रकार लुइस हिल ने आरम्भ किया था। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् उस समय विभिन्न राष्ट्रों के बीच समझ पैदा करने की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। इसी उद्देश्य से पेसेफिका फाउंडेशन ने सामुदायिक रेडियो प्रसारण आरम्भ किया। इस फाउंडेशन से जुड़े बुद्धिजीवी इस बात से भली भाँति परिचित थे कि रेडियो के प्रायोजक इसके कार्यक्रमों को अपने हितों के अनुरूप प्रभावित कर सकते हैं। इसलिए ये निर्णय लिया गया कि श्रोताओं की सहायता से ही सामुदायिक रेडियो केन्द्र का खर्च वहन किया जाएगा। 15 अप्रैल 1949 को फाउंडेशन ने बर्कले कैलिफोर्निया से प्रसारण आरम्भ कर दिया। आज भी इस रेडियो केन्द्र से प्रसारण हो रहा है यह अपनी तरह का सबसे पुराना रेडियो केन्द्र है। 1949 में लेटिन अमरीकी देश बोलीविया में खदान श्रमिकों द्वारा आरम्भ किया गया प्रसारण केन्द्र, सामुदायिक रेडियो का अनूठा उदाहरण है। बोलीविया अपनी चांदी एवम् टिन की खानों के लिए विश्व प्रसिद्ध था। शहरों से मीलों दूर इन खानों में हज़ारों श्रमिक कार्य करते थे। इनके लिए मनोरंजन और संचार के माध्यमों का नितांत अभाव था। इन श्रमिकों ने अपने वेतन का एक भाग जमा कर उस राशि से सामुदायिक रेडियो केन्द्र स्थापित किया गया। प्रसारण की लोकप्रियता इस कदर बढ़ी कि इसने स्थानीय पत्र और तार सेवा तक के महत्व को कम दिया। श्रमिकों के संदेश सांस्कृतिक गतिविधियों की सूचना आपातकालीन उदघोषणाएं, सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों सम्बन्धी जानकारियों के साथ-साथ ट्रेड यूनियन और सरकार के बीच संवाद के समाचार प्रसारित होने लगे। कुछ ही वर्षों में बोलीविया में ऐसे 26 सामुदायिक रेडियो केन्द्रों से प्रसारण आरम्भ हो गया। हालांकि सैन्य शासन के दौरान कई बार इन केन्द्रों को कुचल दिया गया किन्तु इस विचार में इतनी शक्ति थी कि ये बार-बार उठ खड़ा हुआ। बोलिविया के बाद इंग्लैंड

में सामुदायिक रेडियो का विचार उन अवैधानिक रेडियो केन्द्रों से आरम्भ हुआ जो सत्तर के दशक में बरमिंघम, बिस्टल, लंदन और मैनचेस्टर में ऐफ्रो-कैरिबियाई अप्रवासियों द्वारा आरम्भ किए गए थे। हालाकि ब्रिटिश सरकार ने इन्हें 'नकलची रेडियो' की संज्ञा दी थी लेकिन अवैधानिक होने के बावजूद इन रेडियो केन्द्रों ने सामुदायिक रेडियो की शक्ति एवं उपयोगिता को सिद्ध कर दिया।

1.11.1 विश्व में सामुदायिक रेडियो

अनसुनी आवाजों को आवाज देने और वंचित समुदायों की कहानियों को दुनिया के सामने लाने में सामुदायिक रेडियो ने वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। आइये, एक नज़र डालते है विश्व में सामुदायिक रेडियो के सफर पर-

ऑस्ट्रिया

ऑस्ट्रिया में 90 के दशक में सामुदायिक रेडियो एक माध्यम के रूप में शुरू किया गया ।हालांकि वहां नियमित लाइसेंस वाले प्रसारण 1998 में शुरू हो गये थे। वहां सामुदायिक रेडियो पर विज्ञापनों की अनुमति नहीं है इसलिए स्टेशनों को मुख्य रूप से गैर-लाभकारी गैर सरकारी संगठनों के रूप में संचालित किया जाता है। वर्तमान में देश में 14 सामुदायिक रेडियो स्टेशन संचालित हैं।

बांग्लादेश

बांग्लादेश में एनजीओ नेटवर्क फॉर रेडियो एंड कम्युनिकेशन (बीएनएनआरसी) पिछले 12 वर्षों से सामुदायिक मीडिया को जनता के लिये खोलने और लोगों की आवाज के रूप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के मुद्दे पर पर ध्यान आकर्षित करने के लिए संघर्ष कर रहा है। बीएनएनआरसी एक दशक से अधिक समय से सामुदायिक रेडियो और सामुदायिक टीवी एक्सेस मुद्दे को संबोधित कर रहा है।

बेनिन

उप-सहारा अफ्रीका में प्राथमिक जन माध्यम के रूप में रेडियो बेनिन स्थापित है। इसके 55 रेडियो स्टेशनों में से 36 सामुदायिक रेडियो स्टेशन हैं जहां समाचार और खेल से लेकर संगीत और प्रश्नोत्तरी कार्यक्रमों तक की प्रोग्रामिंग होती है। वहां इस प्रकार के अधिकतम सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की आवश्यकता है लेकिन वित्तीय और संरचनात्मक समस्याओं के कारण अभी उनके लिए सफल होना मुश्किल लगता है।

बोलीविया

बोलीविया सामुदायिक रेडियो के संचालन का एक प्रसिद्ध उदाहरण है। 1960-1985 के बीच वहां ट्रेड यूनियन द्वारा वित्त पोषित और मुख्य रूप से स्थानीय और क्षेत्रीय स्तर पर संचालित 25 से अधिक रेडियो स्टेशन थे। 1985 के बाद सरकारी नीतियों के बदलावों ने कई संघीकृत खनन नौकरियों को समाप्त कर दिया इसलिए सामुदायिक रेडियो के श्रोताओं की संख्या घट गई जिस कारण कुछ रेडियो स्टेशनों को बेच दिया गया या उनका अस्तित्व समाप्त हो गया।फिर भी वर्तमान समय में तमाम कठिनाइयों के बावजूद सामुदायिक रेडियो केन्द्रों द्वारा प्रसारण जारी है तथा पांच सामुदायिक रेडियो केन्द्र कार्यक्रमों का प्रसारण कर रहे हैं।

ब्राज़ील

ब्राजील में सामुदायिक रेडियो केन्द्र को गैर लाभकारी एवं जनता का प्रतिनिधित्व करने वाले संघों से संबंधित रेडियो स्टेशनों के रूप में परिभाषित किया जाता है। यहां सामुदायिक रेडियो स्टेशन खुद को स्थानीय लोगों के प्रवक्ता के रूप में प्रस्तुत करते हैं। दक्षिणी ब्राजील के घोंटा ग्रोसा में प्रिंसेसा एफएम, सामुदायिक रेडियो का एक उदाहरण है। इस सामुदायिक रेडियो कि आवृत्ति 87.9 मेगाहर्ट्ज है।

कनाडा

कनाडा में सामुदायिक रेडियो स्टेशन अक्सर फ्रैंको-ओन्टेरियन एकेडियन एंग्लो-क्यूबेकर्स या फर्स्ट नेशंस जैसे व्यावसायिक रूप से मुख्य धारा से दूर अल्पसंख्यक भाषा समुदायों को लक्षित करते हैं। ये रेडियो केन्द्र अक्सर स्वयंसेवी संगठनों तथा सहकारी समितियों या अन्य गैर-लाभकारी निगमों द्वारा संचालित होते हैं। बड़े शहरों में समुदाय उन्मुख प्रोग्रामिंग आमतौर पर कैंपस रेडियो स्टेशनों पर प्रसारित होती हैं, हालांकि कुछ शहरों में सामुदायिक रेडियो स्टेशन भी हैं। कनाडा में अधिकांश अंग्रेजी भाषा के सामुदायिक रेडियो स्टेशन नेशनल कैंपस एण्ड कम्युनिटी रेडियो एसोसिएशन के सदस्य हैं।

इक्वेडोर

इक्वाडोर में सामुदायिक रेडियो स्टेशन धार्मिक समूहों द्वारा संचालित होते हैं इसमें कैथोलिक, प्रोटेस्टेंट और बहाई फेथ द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो स्टेशन शामिल हैं। इनकी भागीदारी और स्व-प्रबंधन की मात्रा भिन्न होती है। रेडियो लताकुंगा एक ऐसा ही चर्चित सामुदायिक रेडियो केन्द्र है। जिसकी प्रोग्रामिंग में सहयोग स्वरूप कुछ स्वदेशी संगठनों द्वारा सुबह-सुबह के साप्ताहिक कार्यक्रमों को रिकॉर्ड

करने के लिए उपकरण दिए गए थे। कुछ स्वदेशी समूह अपने स्वयं के रेडियो स्टेशन संचालित करते है। बोलीविया के विपरीत इक्वाडोर में ट्रेड यूनियन रेडियो प्रभावशाली नहीं रहा है।

इथियोपिया

इथियोपिया में स्पष्ट नीतियों के अभाव के बावजूद सामुदायिक रेडियो केन्द्रों का संचालन हो रहा है संघीय गणराज्य इथियोपिया और विश्व विकास फाउंडेशन ने 30 जून 2014 को सात सामुदायिक रेडियो स्टेशनों की स्थापना के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। इथियोपिया के ग्वाटेमाला में 100 से अधिक सामुदायिक रेडियो स्टेशन चल रहे हैं लेकिन स्वदेशी समुदायों के पास रेडियो फ्रीक्वेंसी का उपयोग करने का स्पष्ट अधिकार नहीं है हालांकि उनके अस्तित्व के अधिकार की गारंटी शांति समझौते द्वारा दी गई है। लेकिन बहुत से लोग मानते हैं कि सामुदायिक रेडियो के संचालन में अत्यधिक स्वतंत्रता की आवश्यकता है। सेंसरशिप सामुदायिक रेडियो को बहुत कमजोर स्थिति में डालती है तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को खतरे में डालती है।

हंगरी

हंगरी में पहला सामुदायिक रेडियो केन्द्र सत्ता परिवर्तन के बाद खोला गया। पहला प्रसारण गैर राजनीतिक भाषण और संगीत कार्यक्रमों का किया गया। 2004 के बाद से रेडियो प्रसारण की एक नई श्रेणी का उदय हुआ जो कम-शक्ति वाले रेडियो स्टेशन के रूप में जाने जाते हैं। 2010 तक देश में 70 से अधिक ऐसे माइक्रो रेडियो स्टेशन प्रसारित होने लगे हैं। जिनमें गाँव के स्टेशन, छोटे शहर के स्टेशन, विश्वविद्यालय के स्टेशन, उप-सांस्कृतिक और धार्मिक स्टेशन हैं। बुडापेस्ट में कूल एफएम, एल्सो पेस्टी ईजीटेगी रेडियो और फ़ज़ियो रेडियो छोटे सामुदायिक रेडियो स्टेशन हैं।

यूनाइटेड किंगडम

1960 के दशक के शुरुआती दौर में ब्रिटेन में समुदाय आधारित प्रसारण सेवाओं का विचार प्रस्फुटित हुआ। इसे बीबीसी की स्थानीय रेडियो के मूल अवधारणा के रूप में देखा जा सकता है। इसके बाद विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में बिना लाइसेंस वाले रेडियो स्टेशनों ने इस विचार को विकसित किया। उदाहरण के लिए ईस्ट लंदन रेडियो तथा रेडियो एएमवाई प्रमुख नाम हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका

अमेरिका में सामुदायिक रेडियो स्टेशन संघीय संचार आयोग द्वारा लाइसेंस प्राप्त गैर-लाभकारी समुदाय द्वारा संचालित होते हैं। सामुदायिक रेडियो स्वयंसेवकों को प्रसारक के रूप में भाग लेने की अनुमति है। ये स्टेशन अमेरिका के अन्य सार्वजनिक रेडियो केन्द्रों से भिन्न हैं तथा एनपीआर स्टेशनों से अलग हैं क्योंकि अधिकांश सामुदायिक रेडियो पर प्रोग्रामिंग स्थानीय रूप से गैर-पेशेवर रेडियो जॉकी और कार्यक्रम उत्पादकों द्वारा निर्मित की जाती है, जबकि पारंपरिक सार्वजनिक रेडियो स्टेशन एनपीआर पी.आर.आई. से प्रोग्रामिंग पर भरोसा करते हैं।

जॉर्डन

सन् 2000 में जॉर्डन में पहला सामुदायिक रेडियो अम्माननेट की स्थापना की गई। अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता तथा अरब के चर्चित पत्रकार दाउद कुट्टब ने इसे स्थापित किया। यह सामुदायिक रेडियो निजी गैर सरकारी रेडियो केन्द्र सरकारी प्रतिबंधों से अलग एक साधन के रूप में स्थापित किया गया था। 2005 में अम्माननेट को जॉर्डन की राजधानी अम्मान में एक एफएम निजी स्टेशन के रूप में लाइसेंस दिया गया था। जनवरी 2008 में अम्माननेट रेडियो का नाम बदलकर अल-बलाद रेडियो कर दिया गया जबकि अम्माननेट नेट एक समाचार वेबसाइट के रूप में बना रहा।

आयरलैंड

आयरलैंड में सामुदायिक रेडियो स्टेशनों को भौगोलिक समुदाय या समान रुचि के समुदाय की सेवा करने वाले प्रसारण केन्द्र के रूप में जाना जाता है। 2004 से यहां के सामुदायिक रेडियो केन्द्रों पर मान्यता प्राप्त प्रशिक्षण की सुविधा उपलब्ध है। आयरलैंड के सभी चार प्रांतों में सामुदायिक रेडियो केन्द्र स्थित हैं और संचालन में सक्रिय हैं। हालांकि इनका कवरेज सार्वभौमिक नहीं है। फिर भी डबलिन में सामुदायिक रेडियो स्टेशनों की बड़ी संख्या है तथा उत्तर और पश्चिम कनॉट और मध्य मुंस्टर में इनका महत्वपूर्ण क्लस्टर है।

जापान

जापान में देश भर में कम-शक्ति वाले सामुदायिक रेडियो स्टेशनों का एक बड़ा नेटवर्क है। पिछले दो वर्षों में सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने वंचित दुनिया के कई आवाज़ों को बढ़ावा दिया है। दक्षिण एशिया में सामुदायिक रेडियो प्रैक्टिशनरों के लिए एक ऑडियो और ज्ञान विनिमय पोर्टल है। यहां का चर्चित

सामुदायिक रेडियो केन्द्र एडा रेडियो अपनी स्थापनर्ष के 14 वर्ष पूरे कर रहा है। 1 सितंबर 2008 को इसे लॉन्च किया गया था।

फिलीपींस

फिलीपींस में सबसे प्रसिद्ध सामुदायिक रेडियो नेटवर्क रेडियो नतिन (हमारा रेडियो) है। देश भर में इसके स्टेशनों ने उपग्रह के माध्यम से सीधा प्रसारण किया है। यह कभी-कभी मनीला फ़ीड को काटकर, स्थानीय प्रोग्रामिंग को प्रसारित करता है। रेडियो नतिन का नेटवर्क उत्तर में बटानेस से लेकर दक्षिण में तवी-तवी तक पूरे द्वीपसमूह में 150 से अधिक छोटे एफएम स्टेशनों को संचालित करता है। इन स्टेशनों का स्वामित्व और संचालन समुदाय के पास होता है। रेडियो नतिन का ऑडियो स्ट्रीमिंग राष्ट्रीय फ़ीड इंटरनेट के माध्यम से दुनिया भर के श्रोताओं तक पहुंचना संभव बना दिया है।

नेपाल

सन् 1997 में नेपाल में सामुदायिक रेडियो सेवा का उदय हुआ। नेपाल का रेडियो सागरमाथा लोकप्रिय सामुदायिक रेडियो है। यह 102.4 मेगाहर्ट्ज पर प्रसारित होता है। रेडियो सागरमाथा की स्थापना नेपाल पर्यावरण पत्रकार मंच (एनईएफईजे) द्वारा की गई है। रेडियो सागरमाथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और नेपाली नागरिकों के सूचना के अधिकार के वाहक के रूप में अग्रिम पंक्ति में जाना जाता है। रेडियो सागरमाथा का इतिहास नेपाल में वायु तरंगों पर सरकारी नियंत्रण के धीरे-धीरे ढीले होने के साथ जुड़ा हुआ है। हालांकि नेपाल में 150 से अधिक सामुदायिक रेडियो स्टेशन हैं जिन्हें सरकार द्वारा लाइसेंस दिया गया है। नेपाल में सामुदायिक रेडियो के लिए अलग से कोई नीति या कानून नहीं है। मौजूदा नीति और कानून सामुदायिक और वाणिज्यिक दोनों रेडियो स्टेशनों पर लागू होती है।

सोलोमन आइसलैण्ड

सोलोमन द्वीप में सामुदायिक एफएम रेडियो के तहत स्थापित रेडियो स्टेशनों की एक बड़ी संख्या है। 2009 में इनका उपयोग कॉमनवेल्थ ऑफ लर्निंग की शांति निर्माण परियोजना के तहत महिलाओं और युवाओं के सशक्तिकरण के लिए किया गया था। ये रेडियो केन्द्र स्टेशन पीपल फर्स्ट नेटवर्क से जुड़े हुए हैं। सोलोमन द्वीप विकास ट्रस्ट ने सामुदायिक मीडिया सेंटर की स्थापना के साथ ही उसकी क्षमता का विस्तार करने की योजना पर कार्य करना शुरू कर रहा है।

दक्षिण कोरिया

सामुदायिक रेडियो की उपयोगिता को समझते हुए दक्षिण कोरियाई सरकार ने 2005 में बड़ी संख्या में कम-शक्ति वाले सामुदायिक रेडियो स्टेशनों को लाइसेंस दिया था। दक्षिण कोरिया में सामुदायिक रेडियो के लिए अधिकतम ट्रांसमीटर शक्ति एक किलोवाट निर्धारित की गई है जो 5 किमी की रेडियस में प्रसारण करता है।

स्वीडन

1978 में स्वीडन में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारण शुरू किया गया था। 1993 तक सामुदायिक रेडियो पर विज्ञापनों की अनुमति नहीं थी। यहाँ सामुदायिक रेडियो स्टेशन मुख्य रूप से गैर-लाभकारी गैर सरकारी संगठनों के रूप में संचालित होते हैं। वर्तमान समय में देश के कुल 150 सामुदायिक रेडियो स्टेशन संचालन में सक्रिय हैं।

सीरिया

खाड़ी के देश सीरिया में सामुदायिक रेडियो का इतिहास पुराना नही है। सीरिया का एआरटीए एफएम पहला सामुदायिक रेडियो स्टेशन है जो स्थानीय समुदाय की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए तीन भाषाओं में प्रसारित होता है। सीरिया में कुर्द, सिरिएक और अरबी मूल के समुदायों को संबोधित करने के इन्हीं तीन भाषाओं में इसका प्रसारण किया जाता है। यह सामुदायिक रेडियो केन्द्र 2013 में स्थापित किया गया था।

थाईलैण्ड

थाईलैण्ड में सामुदायिक रेडियो की विशेष बात ये है कि यहाँ प्रधान मंत्री थाकसिन शिनावात्रा की सरकार के दौरान सामुदायिक रेडियो तेजी से विकसित हुआ। थाईलैंड में 2,000 से ज्यादा सामुदायिक रेडियो केन्द्र हैं।थाईलैण्ड में सामुदायिक रेडियो केन्द्र फोरम को 26 फरवरी 2008 को एक सोसायटी एवं ट्रस्ट के रूप में पंजीकृत किया गया था। सामुदायिक रेडियो फोरम के सदस्य संभावित आवेदकों की स्क्रीनिंग के लिए स्क्रीनिंग कमेटी की बैठकों में भाग लेते हैं।

ऑस्टेलिया

ऑस्टेलिया में सामुदायिक रेडियो प्रसारण में स्वयंसेवकों की भूमिका महत्वपूर्ण है। 2002 की एक रिपोर्ट में पाया गया कि 20,000 ऑस्ट्रेलियाई अर्थात जनसंख्या का 0.1 प्रतिशत नियमित रूप से सामुदायिक रेडियो के प्रसारणों में स्वयंसेवकों के रूप में शामिल थे। यहां प्रत्येक वर्ष स्वयंसेवकों का अवैतनिक रुप

में 145 मिलियन से अधिक का योगदान होता है। एक आंकड़े के अनुसार 7 मिलियन से अधिक ऑस्ट्रेलियाई हर महीने सामुदायिक रेडियो सुनते हैं।

यूनेस्को (UNESCO)

यूनेस्को यानी संयुक्त राष्ट्र शैक्षणिक वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठन सामुदायिक रेडियो का प्रबल समर्थक है तथा दुनिया भर में स्थानीय रेडियो केन्द्रों की व्यवहार्यता बढ़ाने के लिए काम करता है। 2007 से यह कम्युनिटी रेडियो एंड कॉमनवेल्थ एजुकेशनल मीडिया सेंटर फॉर एशिया (CEMCA) के साथ मिलकर कार्यकर रहा है। भारत में CEMCA ने सामुदायिक रेडियो के प्रति जन जागरुकता अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। सिम्का के साथ मिलकर सामुदायिक रेडियो विशेषज्ञ डॉ0 आर श्रीधर ने भारत में 40 से अधिक सामुदायिक रेडियो जागरूकता कार्यशालाओं का आयोजन किया। डॉ श्रीधर ने सामुदायिक रेडियो के संचालन तथा आवेदन के लिए अधिक से अधिक संगठनों को प्रोत्साहित करने हेतु माहौल तैयार किया। तमाम प्रयासों के परिणामस्वरूप जून 2012 तक भारत सरकार को एक हजार से अधिक आवेदन प्राप्त हो चुके थे उनमें से 400 को आशय पत्र (एलओआई) मिला था। प्रारंभिक चरण में शैक्षणिक परिसरों में अपेक्षाकृत अधिक सामुदायिक रेडियो स्टेशन देखे गए। हालांकि 400 एलओआई के विश्लेषण से यह तथ्य सामने आया कि दो तिहाई एलओआई नागरिक समाज संगठनों के पास गए हैं। एलओआई प्राप्त संस्थाओं के पास पर्याप्त धन की व्यवस्था का अभाव , समुचित प्रशिक्षण का अभाव , मानव संसाधन का अभाव और दूरसंचार मंत्रालय के WPC (डब्ल्यूपीआई) विंग द्वारा फ्रीक्वेंसी को मंजूरी में कठिनाई के कारण सामुदायिक रेडियो केन्द्रों को लॉन्च करना मुश्किल हो गया। इन चुनौतियों को दूर करने के लिए जुलाई 2014 में भारत सरकार ने सामुदायिक रेडियो स्टेशनों को समर्थन देने के लिए एक योजना की घोषणा की तथा इसके लिए 100 करोड़ रूपए आवंटित किए।

2011 में सामुदायिक रेडियो केन्द्रों (सीआरएस) के संचालकों का पहला सम्मेलन दिल्ली में आयोजित किया गया। सम्मेलन के तुरंत बाद सामुदायिक रेडियो संघ का गठन किया गया। अप्रैल 2011 में 58 सामुदायिक रेडियो स्टेशनों ने एक एसोसिएशन के गठन में अपनी रुचि व्यक्त की. इसका उद्देश्य जमीन पर काम करने वाले लोगों के साथ अपने अपने सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के समक्ष चुनौतियों एवं परामर्श को साझा करने के लिए एक प्लेटफार्म की आवश्यकता को पूरा किया जा सके। चूंकि सामुदायिक रेडियो संघ (Community Radio Association) सामुदायिक रेडियो केन्द्र संचालनकर्ता

सदस्य आधारित संगठन है। ज्ञातव है कि इसके सभी सदस्य विभिन्न क्षेत्रों और बोलियों में सामुदायिक रेडियो स्टेशन संचालित कर रहे है। भारत में सभी कार्यात्मक एवं वांछित सामुदायिक रेडियो स्टेशनों को बढ़ावा देने, प्रोत्साहित करने, समर्थन करने और सुविधा प्रदान करने के लिए सूचना प्रसारण मंत्रालय 16 कार्यशालायें आयोजित की है। सामुदायिक रेडियो संघ (सीआरए) ने सूचना और प्रसारण मंत्रालय के साथ मिलकर सामुदायिक रेडियो जागरुकता कार्यशालाओं की मेजबानी की है। ये जागरूकता कार्यशालाएं डिब्रूगढ़, ऊटी, गोवा, फरीदाबाद, भुवनेश्वर, कोच्चि, जयपुर और वाराणसी समेत देश के विभिन्न भागों में आयोजित की गई हैं । शोधकर्ता ने वाराणसी में आयोजित सामुदायिक रेडियो जागरूकता कार्यशाला के प्रत्यक्ष अवलोकन एवं उसमे भागीदारी की। उसमें सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के संचालकों के साथ साथ इच्छुक आवेदकों की जबरदस्त भागीदारी रही। कार्यशालाओं की गुणवत्ता और सामग्री अच्छी तरह से सोची-समझी और प्रेरक थी।

1.11.2 भारत में सामुदायिक रेडियो

1995 में भारत में सामुदायिक रेडियो की आधारशिला रखी गई। सर्वोच्च न्यायालय ने अपने एक महत्वपूर्ण फ़ैसले में कहा कि रेडियो तरंगे लोक सम्पति हैं। सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के आलोक में वर्ष 2003-04 में सर्वप्रथम भारत सरकार ने सामुदायिक रेडियो से जुड़े दिशा-निर्देश तैयार किये और इन्हें जारी किया। इन दिशा निर्देशों में सामुदायिक रेडियो की पात्रता के दायरे में शैक्षिणक संस्थाओं को लाया गया तथा यह तय किया गया कि सामुदायिक रेडियो के संचालन का लाइसेंस शैक्षणिक संस्थानों को दिया जाये। शुरुआत के दो वर्षों यानी वर्ष 2004 से 2006 के दौरान लगभग 104 शैक्षणिक संस्थानों को सामुदायिक रेडियो के लाइसेंस निर्गत किये गये। वर्ष 2006 में इसके दायरे को बढ़ाया गया तथा यह तय किया गया कि कृषि विज्ञान केंद्रों के साथ साथ गैर लाभकारी संगठनों को भी इसके दायरे में लाया जाए। इन पहलों के बावजूद भारत में सामुदायिक रेडियो की शुरुआत फीकी ही रही। न तो इसका समुचित विस्तार ही हुआ और न ही इसके प्रति जनचेतना ही बढ़ी। हालांकि सामुदायिक रेडियो केन्द्र प्रसारण का दायरा सीमित होने के बावजूद किसी बड़े प्रसारण समूह की तुलना में लोकप्रियता एवं संदेश संप्रेषण के मामले में कहीं से भी कमतर नहीं होता। इसके संचालन में देश से बाहर भी कई प्रसारण समूहों ने रूचि दिखाई लेकिन शुरूआत में केवल शैक्षणिक परिसरों में ही ऐसे रेडियो स्टेशनों को कुछ बंदिशों के साथ अनुमति दी गई। सामुदायिक रेडियो नीति के तहत अन्ना एफ.एम. लाइसेंस पाने वाला पहला कैम्पस

रेडियो बना। इसे 01 फरवरी 2004 को लॉन्च किया गया। अन्ना एफ.एम. को अन्ना विश्वविद्यालय के शैक्षणिक और मल्टीमीडिया अनुसंधान केन्द्र ने शुरू किया जिसके सारे कार्यक्रम संचार विज्ञान के छात्रों ने तैयार किए।

देश के अन्य राज्यों की तरह राजस्थान में भी सामुदायिक रेडियो के विस्तार पर कार्य हुआ है। 2005 में राजधानी जयपुर के आईआईएम में सामुदायिक रेडियो केंद्र की शुरुआत की गई। इसका उद्देश्य कमज़ोर वर्ग के लोगों को उनकी अभिव्यक्ति के लिये एक मंच प्रदान करना था। प्रदेश के सामुदायिक रेडियो समाज को जागरूक करने के लिए विभिन्न तरीके के प्रोग्राम प्रसारित करते हैं। सर्वाधिक चर्चित सामुदायिक रेडियो में रेडियो-7, अलवर की आवाज, बनस्थली रेडियो, एमिनेंट रेडियो, ज्योतिराव फुले यूनिवर्सिटी रेडियो, बियानी कोल्लगे रेडियो, सीकर का रेडियो, मधुबन रेडियो, बचा रेडियो, बाघा रेडियो, तिलोनिया रेडियो के नाम शामिल हैं। वैसे देश भर में लगभग 356 सामुदायिक रेडियो केंद्र हैं। जबकि राजस्थान में इनकी संख्या लगभग 15 है। प्रदेश में भी अब धीरे-धीरे ही सही लेकिन सामुदायिक रेडियो केंद्रों की संख्या बढ़ रही है।

शुरुआत में लगभग 10 किलोमीटर क्षेत्र में प्रसारण के लिए 100 वॉट क्षमता के रेडियो स्टेशनों के लिए लाइसेंस दिए गए। इसके लिए अधिकतम 30 मीटर ऊंचाई के एंटिना लगाने की अनुमति दी गई। सामुदायिक रेडियो से करीब 50 फीसदी स्थानीय मुद्दों व रूचियों के कार्यक्रम प्रसारित करने की उमीद की जाती है। इनमें भी जहाँ तक संभव हो स्थानीय भाषा-उपभाषा को तरजीह दिए जाने की आशा की जाती है। हालांकि विकासात्मक कार्यक्रमों के प्रसारण का आग्रह तो रहता है लेकिन मनोरंजनात्मक कार्यक्रमों पर भी प्रतिबंध जैसी भी कोई बात नहीं है। वैसे भारत में सामुदायिक रेडियो और व्यावसायिक एफएम रेडियो पर समाचार आधारित कार्यक्रमों के प्रसारण पर रोक है। यहां तक कि प्रत्येक घंटे में केवल 7 मिनट के विज्ञापनों की अनुमति है। निजी क्षेत्र द्वारा प्रायोजित कार्यक्रमों को अनुमति नहीं दी जाती है। अभी तक केन्द्र या राज्य सरकार द्वारा प्रायोजित कार्यक्रमों के प्रसारण की अनुमति है। ज्ञातव्य है कि आकाशवाणी का अपना सामुदायिक रेडियो केन्द्र है, सामुदायिक रेडियो के प्रारंभिक काल में देश के उत्तर-पूर्वी यथा नागालैंड, मिजोरम व मेघालय में जनजातीय आबादी के लिए प्रायोगिक तौर पर 5 स्थानों पर ऐसे केन्द्र खोले गए थे। एफएम स्टेशनों की मानिन्द छोटे समूहों के विकासात्मक कार्यक्रमों के सुचारू प्रसारण हेतु कई राज्यों में लाईसेन्स दिए गए जिसके उत्साहजनक परिणाम भी सामने आए हैं । इनमें से

आंध्र प्रदेश के मेडक जिले में संगम रेडियो, उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में रेडियो बुंदेलखंड, मध्य प्रदेश का ध्वनिनामा सहित तमिलनाडु में मुदराई के पास सामुदायिक रेडियो कार्यक्रमों से प्रेरित होकर ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों ने विकास के उल्लेखनीय काम करके इसकी सार्थकता सिद्ध की है। इसके बाद तो सामुदायिक रेडियो का लाइसेन्स लेने वालों की कतार धीर-धीरे बढ़ने लगी है। वर्तमान में 356 सामुदायिक रेडियो केन्द्रों का संचालन हो रहा है जो देश के लगभग 9 करोड़ लोगो को कवर करता है। इनमें शैक्षणिक संस्थान, स्वयंसेवी संस्थान और कृषि विज्ञान केंद्र के सामुदायिक रेडियो केन्द्र भी शामिल हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने वोकल फार लोकल" का नारा दिया है जो आत्मनिर्भर भारत के सपने को पूरा करने में महत्वपूर्ण औजार साबित हो सकता है। हाल ही में सरकार द्वारा घोषणा की गई है कि देश में 600 नए सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की स्थापना की जाएगी। इसके पूर्व 1996 में बंगलौर स्थित एक मीडिया एडवोकेसी समूह ने वॉयस नामक सामुदायिक रेडियो हितधारकों की एक सभा का आयोजन किया गया था जहां सामुदायिक प्रसारण की स्थापना के लिए एक घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए गए थे, ये सुझाव दिया गया था कि आकाशवाणी के स्थानीय स्टेशनों को सामुदायिक प्रसारण के लिए नियमित एयरटाइम आवंटित करना चाहिए। सामुदायिक रेडियो स्टेशन चलाने के लिए गैर-सरकारी संगठनों और अन्य गैर-लाभकारी समूहों को लाइसेंस देने के लिए अनुरोध किए गए थे। इसके बाद, यूनेस्को ने स्वतंत्र रूप से चलने वाले सामुदायिक रेडियो स्टेशन की स्थापना करने के लिए पोर्टेबल प्रोडक्शन और ट्रांसमिशन ब्रीफकेस रेडियो स्टेशन किट उपलब्ध कराया। एक यूनेस्को प्रायोजित कार्यशाला, आंध्र प्रदेश के एक गैर सरकारी संगठन, डेक्कन डेवलपमेंट सोसाइटी (डीडीएस) द्वारा 17-20 जुलाई, 2000 को हैदराबाद में आयोजित की गयी थी, उसने सरकार से राज्य के एकाधिकार से प्रसारण को मुक्त करने का आग्रह किया। इस ऐतिहासिक दस्तावेज़ में सरकार से आग्रह किया गया कि वह पहले से मौजूद राज्य के स्वामित्व वाले सार्वजनिक रेडियो और निजी वाणिज्यिक रेडियो में गैर-लाभकारी सामुदायिक रेडियो को जोड़कर प्रसारण की त्रि-स्तरीय संरचना तैयार करे। गुजरात में एक नागरिक समाज समूह ने स्थानीय विकास और सांस्कृतिक मुद्दों पर कार्यक्रमों का निर्माण करने के लिए कच्छ जिले में महिलाओं के साथ काम किया, और निकटतम ऑल इंडिया रेडियो स्टेशन पर प्रसारण शुरू किया। अल्टरनेटिव फॉर इंडिया डेवलपमेंट ने झारखंड के गढ़वा ब्लॉक में समुदाय के सदस्यों के साथ कार्यक्रम बनाए, इसे डाल्टनगंज

ऑल इंडिया रेडियो स्टेशन पर प्रसारित किया। उत्तराखंड में चंबा और रुद्रप्रयाग में सामुदायिक समूहों ने सहभागी कार्यक्रमों का निर्माण शुरू किया और विश्व अंतरिक्ष उपग्रह रेडियो नेटवर्क पर प्रसारित किया। मार्च 2010 में उत्तराखंड के नैनीताल जिले में द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट द्वारा कुमाऊंवाणी सामुदायिक रेडियो केन्द्र की स्थापना कुमाऊं क्षेत्र के कई गांवों में समुदायों को एक साथ लाने के उद्देश्य से की गई थी। यह स्थानीय कृषक समुदाय के बीच सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए एक उपकरण के रूप में रेडियो का उपयोग करने के लिए स्थापित किया गया था।

2003 के शुरुआती दिनों में भारत सरकार ने डॉ. हरिओम श्रीवास्तव द्वारा तैयार किए गए सामुदायिक रेडियो के लिए दिशानिर्देशों का पहला सेट जारी किया लेकिन दुर्भाग्य से, शैक्षणिक संस्थानों के अलावा सबकी पात्रता को प्रतिबंधित कर दिया। हाशिए पर खड़े और आवाजहीन समुदाय तत्कालीन जारी सामुदायिक रेडियो नीति दिशानिर्देशों के दायरे से बाहर बने रहे। हालांकि Community Radio Guidelines 2006 से बहुत पहले 1995 में सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के बाद ही स्थानीय समुदाय की आवश्यकताआं को आवाज देने के लिये स्थानीय रेडियो के बारे में सोचा जाने लगा था। तब से लेकर अब तक कई सामुदायिक रेडियो केन्द्रों को लाइसेंस दिया गया। कुछ का लाईसेंस रद्द किया गया कुछ शुरू हुए और कुछ शुरू होकर बंद हुए। हालांकि भारत सरकार ने सामुदायिक रेडियो के प्रोत्साहन के लिए विशेष प्रयास किए है। इस संबंध में भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण (Telecom Regulatory Authority of India) ने 31 अगस्त, 2022 तक हितधारकों से प्रत्येक जिले में संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की संख्या पर विचार मांगे है। सरकार ने सामुदायिक रेडियो की मदद के लिए 2013 में सामुदायिक रेडियो आन्दोलन का समर्थन नाम से एक योजना शुरु की थी। इस योजना में समुदाय के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास को बढ़ावा देने के लिए 10 लाख रूपये तक की मदद का प्रावधान है।

भारत में सामुदायिक रेडियो का विवरण

क्रम संख्या	श्रेणी	संख्या
1	शैक्षिक सामुदायिक रेडियो	172
2	अन्य सामुदायिक रेडियो	184
3	बंद सामुदायिक रेडियो	1642
योग		**1998**

तालिका संख्या 1.1 देश में सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के आंकड़े

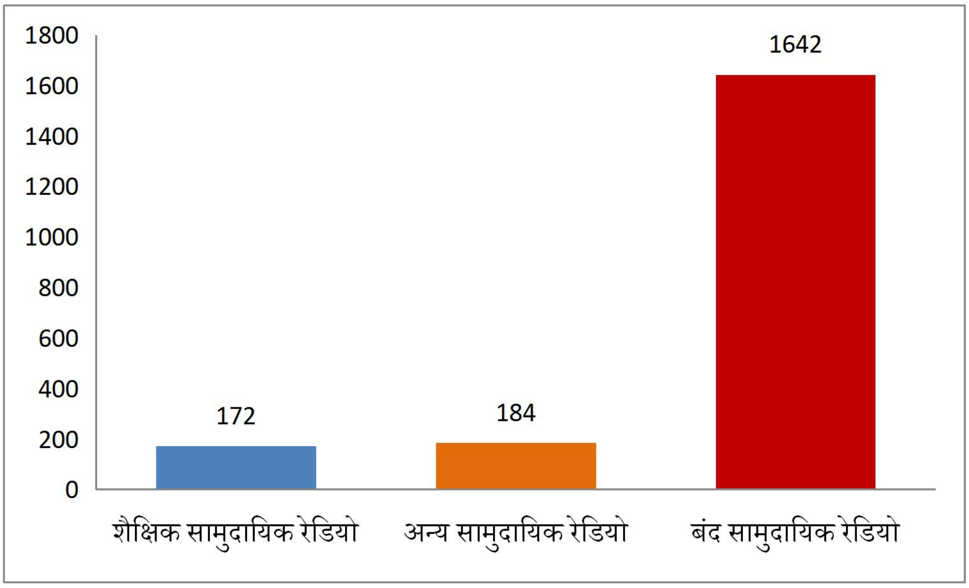

ग्राफ संख्या 1.1 देश में सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के आंकड़े

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से यह स्पष्ट होता है कि सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के संचालन के लिए निर्गत किये गये कुल लाइसेंस के 17.8 प्रतिशत सामुदायिक रेडियो केन्द्र संचालन में सक्रिय हैं। जबकि 82.2 प्रतिशत लाइसेंस धारी संस्थानों ने या तो लाइसेंस प्राप्त करने के पश्चात सामुदायिक रेडियो केन्द्र को संचालित करने में कोई रुचि नहीं दिखाई अथवा संचालन के उपरांत उनका सतत संचालन जारी नहीं रख सके। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की लाइसेंसिंग प्रकिया के अपेक्षाकृत उनके सतत संचालन का कार्य अधिक दुरुह है।

भारत सरकार सामुदायिक रेडियो के विस्तार एवं उसके संचालन संबधी चुनौतियों से निपटने के लिए प्रयास कर रही है, इसी कड़ी में विज्ञापन की मांग को संबोधित करते हुए भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण (TRAI) ने 31 अगस्त 2022 तक सामुदायिक रेडियो संचालकों से विचार आमंत्रित किए थे। अब तक महज़ 52 सामुदायिक रेडियो केन्द्रों ने ट्राई (TRAI) को आंकड़े उपलब्ध कराएं हैं। उक्त आंकडों के अनुसार 16 सामुदायिक रेडियो केन्द्रों पर किसी भी प्रकार के एडवरटाइजमेंट का प्रसारण नहीं किया जाता है जबकि 32 सामुदायिक रेडियो केन्द्रों पर प्रति घंटे पांच मिनट या उससे कम समय का विज्ञापन प्रसारित किया जाता है। परामर्श पत्रों में ट्राई ने सामुदायिक रेडियो पर विज्ञापन के प्रसारण की अधिकतम अवधि बढ़ाने पर भी विचार मांगे हैं। वर्तमान नीतियों के अंतर्गत सामुदायिक रेडियो पर सात मिनट प्रति घंटे का विज्ञापन अनुमन्य है।

सामुदायिक रेडियो के विस्तार एवं प्रोत्साहन के लिए प्रत्येक वर्ष भारत सरकार राष्ट्रीय सामुदायिक रेडियो पुरस्कार प्रदान करती है। राष्ट्रीय पुरस्कार चार श्रेणियों में दिये जाते हैं जिनमें विषयगत पुरस्कार, सामुदायिक जुड़ाव पुरस्कार, स्थानीय संस्कृति प्रोत्साहन पुरस्कार एवं अभिनव सामुदायिक सहभागिता पुरस्कार शामिल हैं। अब तक आठ राष्ट्रीय सामुदायिक रेडियो पुरस्कार प्रदान किये जा चुके हैं।

1.12 सामुदायिक रेडियो : स्वरूप एवं प्रकार

आकाशवाणी की तर्ज पर सामुदायिक रेडियो का गठन किया गया है। इसकी कार्यप्रणाली भी आकाशवाणी के समान है। सामुदायिक रेडियो को इसके समुदाय के आधार पर वर्गीकृत किया गया है।

1.12.1 स्वरूप

सामुदायिक रेडियो अपने प्रकृति में गैर लाभकारी होते हैं तथा अराजनीतिक भी होते हैं क्योंकि कोई भी राजनीतिक दल सामुदायिक रेडियो के लाइसेंस के लिए पात्र नहीं है। सामुदायिक रेडियो की मुख्य भूमिका अपने समुदाय की अभिव्यक्ति का मंच बनना है ये अपने समुदाय को संबोधित करने की भूमिका का भी निर्वहन करते है ताकि स्थानीय समुदाय समाज की मुख्यधारा में शामिल हो सके।

1.12.2 प्रकार

सामुदायिक रेडियो को लाइसेंसिंग पात्रता के आधार पर तीन प्रकारों में वर्गीकृत कर सकते हैं। शैक्षणिक संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों को शैक्षणिक सामुदायिक रेडियो, कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों को कृषि सामुदायिक रेडियो तथा ग़ैर सरकारी संस्थाओं द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों को सामाजिक सामुदायिक रेडियो कहा जा सकता है।

1.13 सामुदायिक रेडियो : शक्ति एवं क्षमताएं

सामुदायिक रेडियो सूचना, ज्ञान व मनोरंजन के संबंध में मुख्यधारा के मीडिया का एक विश्वसनीय और व्यावहारिक विकल्प है। इसमें जहां सामुदायिक हित निहित हैं, वहीं सांस्कृतिक सजीवता भी है। यह शासन में पारदर्शिता लाने में तो सक्षम है ही, शिक्षा के प्रसार में भी अहम भमिका निभाता है। इससे सामाजिक न्याय की पहुंच तो बढ़ती ही है, यह सामाजिक समरसता का भी सूत्रपात करता है। इससे भाषाई वैविध्य को तो प्रोत्साहन मिलता ही है, साम्प्रदायिक सौहार्द भी स्थापित होता है। सामुदायिक रेडियो की विषय-वस्तु जनहित को प्रोत्साहित करने तथा सार्वजनिक लाभों को हिस्सेदारी देने की है।

फलतः इसमें ग्रामीण क्षेत्रों व दूर-दराज के इलाकों को भी प्रतिनिधित्व मिलता है। कम पढ़े-लिखे लोगों के लिए भी अभिव्यक्ति की दृष्टि से यह एक प्रभावी मंच साबित होता है। सामुदायिक रेडियो से जुड़े इन समस्त सकारात्मक पहलुओं को देश के विकास से भी जोड़कर देखा जा सकता है। स्थानीय होने के कारण जहां इसके अपने अलग लाभ हैं, वहीं कृषि जगत के लिए भी यह विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। स्वास्थ्य व स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाने, कौशल विकास, प्रबंधन व क्षमता विकास आदि संदर्भाें में भी इसकी उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता, साथ ही यह रोजगार के नये अवसर भी सृजित करता है। सामुदायिक रेडियो से जुड़ा यह प्रावधान भी लाभप्रद है कि यह रेडियो क्षेत्र कैबिनेट द्वारा अनुमोदित दिशा-निर्देशों द्वारा संचालित होता है और इसके लिए संसदीय अनुमोदन की जरूरत नहीं होती। सामुदायिक रेडियो केन्द्रों द्वारा कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, समाज कल्याण, सामुदायिक विकास, संस्कृति संबंधी कार्यक्रमों के प्रसारण के साथ-साथ समुदाय के लिए तात्कालिक प्रासंगिता के कार्यक्रमों का प्रसारण किया जा सकता है। भारत में सामुदायिक रेडियो एक संभावनाओं से भरा क्षेत्र है, जिसकी उपादेयता सामुदायिक विकास के क्षेत्र में अग्रणी है। भारत जैसे विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश के लिए यह विशेष रूप से प्रेरणाप्रद और रचनात्मक है। जब हम सामुदायिक रेडियो की शक्ति एवं क्षमताओं की बात करते हैं तो ये जानना जरूरी है कि हमारा अर्थ क्या है? क्या हमारा अर्थ सामुदायिक रेडियो के ट्रांसमीटर की शक्ति से है या फिर उसके प्रभाव से या उसमें छुपी हुई संभावनाओं से!

1.13.1 तकनीक

सामुदायिक रेडियो की तकनीक एफ.एफ. तकनीक पर आधारित है। भारत सरकार ने 100 वाट के रेडियो स्टेशन संचालित करने का अधिकार दिया है, जिसमें लगभग 10 से 12 किमी के दायरे का कवरेज क्षेत्र होता है। 30 मीटर की अधिकतम एंटीना ऊंचाई की अनुमति है। डब्ल्यूपीसी के पास एफएम बैंड में सामुदायिक रेडियो के लिए स्पेक्ट्रम आवंटन के संबंध में कोई आधिकारिक संचार या दिशानिर्देश नहीं है। भारत में 800 के चैनल पृथक्करण का अनुसरण करता है। इसका मतलब यह है कि यदि किसी दिए गए लाइसेंस क्षेत्र में एक रेडियो स्टेशन को 90.4 मेगाहर्ट्ज आवंटित किया जाता है, तो अगली उपलब्ध आवृत्ति 91.2 मेगाहर्ट्ज है। एक बार एक रेडियो स्टेशन को डब्ल्यूपीसी द्वारा एक आवृत्ति आवंटित की जाती है, तो उस विशेष आवृत्ति को 100 किलोमीटर के दायरे के लिए अवरुद्ध कर दिया जाता है।

1.13.2 पहुंच

भौगोलिक दृष्टि से देखा जाए तो सामुदायिक रेडियो का प्रसारण दस से बारह किलोमीटर के दायरे में होता है। लेकिन सामुदायिक रेडियो की ’पहुंच ’ को हमें दो दृष्टिकोण से देखना होगा। पहला, सामुदायिक रेडियो क्या सामग्री लेकर अपने समुदाय के पास पहुंच रहा है और दूसरा दृष्टिकोण ये होना चाहिए कि समुदाय द्वारा भेजी गई सामग्री को स्वयं सामुदायिक रेडियो कितना ग्रहण कर रहा है!

1.13.3 प्रभाव

यूं तो स्थानीय समुदाय के सशक्तिकरण एवं उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने में सामुदायिक रेडियो की भूमिका सिद्ध हो चुकी है लेकिन आपातकालीन समय में संचार की जीवनदायिनी के रूप में सामुदायिक रेडियो का योगदान अविस्मरणीय है। विशेष रूप से आर्थिक मंदी और प्राकृतिक आपदाओं के समय में सामुदायिक रेडियो सबसे विश्वसनीय संकेत और संचार का साधन बन कर उभरा है। आपातकालीन परिस्थितियों में जब मोबाइल नेटवर्क या लैंडलाइन निष्क्रीय हो जाते हैं उस समय सामुदायिक रेडियो एक वरदान के रूप में सामने आता है।

1.14 सामुदायिक रेडियो : कमजोरी एवं बाधाएँ

21वीं सदी के तीसरे दशक में भी भारत गांवों में बसता है और जिन गॉवों में बहुत कम दूरी पर लोगों की आवश्यकताएं , बोली, भाषा, साहित्य और संस्कृति बदल जाते है वहां यह संभव नहीं कि भारत के गॉवों की प्रसारण आवश्कताओं की पूर्ति बड़े प्रसारक कर सकें! ऐसे में सामुदायिक रेडियो सामुदायिक कल्याण, पर्यावरण जागरूकता, विविधता में एकता ओर समग्र विकास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकता है। यही नहीं पूरी स्वतंत्रता मिलने पर ये छोटे-छोटे स्थानीय प्रसारण केन्द्र प्रजातंत्र को उसका सही अर्थ प्रदान कर सकते हैं। लेकिन सामुदायिक रेडियो की विशेषताओं के साथ उसकी कुछ कमज़ोरियां भी हैं। उसकी राह निष्कंटक नहीं उसके राह में कुछ बाधाएँ भी हैं। जो सामुदायिक रेडियो के विस्तार में अवरोधक की भूमिका निभा रही हैं। उनकी तरफ ध्यान दिया जाना बहुत आवश्यक है, उन बाधकों एवं कारकों को तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है।

1.14.1 स्थापना संबंधी

सामुदायिक रेडियो के विस्तार एवं सुचारू रूप से संचालन के लिए जरूरत इस बात की है कि उन दिशा-निर्देशों की पुनः समीक्षा की जाए, जो भारत सरकार द्वारा सामुदायिक रेडियो के संचालन के लिए तैयार

किये गये हैं। इस क्षेत्र में अपेक्षित सुधार के लिए बाधक प्रक्रियाओं को ध्यान में रखकर संशोधन व नये उन दिशा-निर्देशों की आवश्यकता है। जहां पात्रता के लिए संतुलित, सटीक और पारदर्शी दिशा-निर्देशों की आवश्यकता है, वहीं तकनीकी पहलओं पर भी विशेष रूप से ध्यान दिये जाने की जरूरत है। भारत में 'कम्युनिटी रेडियो एसोसिएशन ' तथा 'कम्युनिटी रेडियो फोरम ऑफ इंडिया' ने सामुदायिक रेडियो को लोकप्रिय बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आवश्यकता इस बात की है कि ऐसी स्व-नियमन एजेंसियों को केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा प्रोत्साहन प्रदान किया जाए ताकि सामुदायिक रेडियो का अपेक्षित विस्तार हो सके।

1.14.2 संचालन संबंधी

भारत में सामुदायिक रेडियो के सुव्यवस्थित संचालन एवं स्थायित्व में सबसे बड़ी बाधा वित्त का प्रबंधन, प्रसारण की अनियमितता, उपयोगी सामग्री का अभाव एवं कार्मिकों की अकुशलता है। लगभग सभी सामुदायिक रेडियो केन्द्र इन समस्याओं से जूझ रहे हैं। जिसकी वजह से नियमित प्रसारण नहीं हो पाता। कार्मिकों की अकुशलता की वजह से कार्यक्रमों की गुणवत्ता प्रभावित होती है। इन सभी कारकों में सुधार किये बिना मौलिक एवं उपयोगी कार्यक्रमों का निर्माण कर पाना एक दुरुह कार्य है। कार्यक्रमों की गुणवत्ता, उपयोगिता एवं निरंतरता के बगैर बाजार से विज्ञापन प्राप्त कर अपने वित्तीय संकट से उबर पाना मुश्किल है।

1.14.3 शिकायत निवारण संबधी

भारत सरकार ने सामुदायिक रेडियो के संचालन के लिए सामुदायिक रेडियो नीति बना रखी है तथा समय-समय पर सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के सुचारू रूप से संचालन के लिए नीतिगत उपाय करती रहती है लेकिन समाचारों के प्रसारण की अनुमति देने के बहुप्रतीक्षित मांग पर सरकार ने कोई फैसला नहीं किया है। जिसकी वजह से अब तक सामुदायिक रेडियो पर समाचारों के प्रसारण की अनुमति नहीं हैं। एक घंटे के प्रसारण समय में सिर्फ सात मिनट के विज्ञापन बजाए जा सकते हैं जबकि तत्कालीन सूचना एवं प्रसारण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने इसे बढ़ाये जाने की बात कही थी। सामुदायिक रेडियो पर निजी क्षेत्र के प्रायोजित कार्यक्रमों के प्रसारण की अनुमति नहीं है जिसकी वजह से बाजार से वित्त के स्रोत तलाशने में सामुदायिक रेडियो को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। सिर्फ राज्य अथवा केन्द्र सरकार से प्रायोजित कार्यक्रम प्रसारित किए जा सकते हैं।

1.15 सामुदायिक रेडियो: भूमिका एवं उपयोगिता

ये सच है कि सामुदायिक रेडियो के कार्यक्रमों में विकासात्मक प्रोग्रामिंग पर जोर दिया गया है स्थानीय समस्याओं को रेखांकित करने एवं मनोरंजन पर कोई स्पष्ट प्रतिबंध नहीं है। भारत में सामुदायिक रेडियो पर समाचार कार्यक्रम प्रतिबंधित हैं हालांकि सरकार ने स्पष्ट किया है कि रेडियो पर समाचारों की कुछ श्रेणियों की अनुमति है, जिसमें खेल समाचार और कमेंट्री, यातायात और मौसम की स्थिति की जानकारी, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और त्योहारों की कवरेज, शैक्षणिक कार्यक्रमों की जानकारी, बिजली जैसी उपयोगिताओं से संबंधित सार्वजनिक घोषणाएं शामिल हैं। सामुदायिक रेडियो स्टेशनों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने कार्यक्रमों का कम से कम 50 प्रतिशत स्थानीय स्तर पर अथवा जितना संभव हो सके स्थानीय भाषा या बोली में प्रस्तुत करें।

1.15.1 सामाजिक विकास

सामुदायिक रेडियो पर स्थानीय बोली में जागरूकतापरक कार्यक्रमों को प्रसारित किया जाता है। इसकी खासियत यह है कि इसके कार्यक्रम स्थानीय लोग स्वयं बनाते हैं और स्वयं प्रसारित भी करते हैं। इससे स्थानीय समस्याओं को मंच मिल पाता है और लोगों को विषय विशेष की जानकारी आसानी से उपलब्ध हो जाती है। ग्रामीण स्तर पर कृषि स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगारपरक सूचनाओं का अभाव है। लोगों का जागरूकता स्तर कम होने से उनके सामाजिक और आर्थिक विकास में अनेक बाधाएं हैं। जागरूकता की कमी और सही मार्गदर्शन के अभाव में ग्रामीण क्षेत्रों में समग्र विकास के लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता है वर्तमान में देश की सबसे बड़ी जरूरत ग्रामीण अंचलों के सही और संतुलित विकास की है ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाली भारत की लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या आज भी संचार क्रांति का हिस्सा बनने की तलाश में है।

1.15.2 कृषि

ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार का मुख्य साधन कृषि है जिस पर देश की पूरी जनसंख्या को भोजन मुहैया करने का दारोमदार है। ऐसे में यदि सभी को भरपेट भोजन उपलब्ध करवाना हो तो कृषि उत्पादों का उत्पादन तेजी से बढ़ाना होगा। कृषि जो कि जीवकोपार्जन का एक साधन थी, आज व्यवसाय का रूप धारण करती जा रही है। इसमें आज नई-नई तकनीकों के प्रयोग का चलन बढ़ रहा है। चाहे वह बीज हो उर्वरक या फिर उपकरण सभी आधुनिकता और तकनीकी रूप से विकसित हुए हैं। हालांकि हरित क्रांति के बाद

उत्पादन बढ़ा है पर यदि सामुदायिक रेडियो के माध्यम से इसे बढ़ाने के लिये विशेष कार्यक्रमों को प्रसारित किया जाये और साथ ही साथ समय-समय पर लोगों को इस सम्बन्ध में जागरूक किया जाये तो उत्पादन और अधिक बढ़ाया जा सकता है।

1.15.3 स्वास्थ्य

सामुदायिक रेडियो का प्रसारण जागरूकता फैलाने के लिए किया जाता है। किसी भी व्यक्ति की लिए उसका स्वास्थ्य उसके जीवन की मुख्य धरोहर है। जब बात ग्रामीण क्षेत्रों की आती है तो स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता की कमी नजर आती है खास कर यदि बाद महिलाओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी हो तो इस विषय में तो ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता का स्तर काफी कम है। ऐसे में सामुदायिक रेडियो के माध्यम से स्वास्थ्य के प्रति लोगों को जागरूक बनाया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर यदि बात करें कि संचार मध्यमों की कमी से क्षेत्रों में सरकार द्वारा दी जा रही तमाम स्वास्थ्य सेवों की जानकारी का अभाव नजर आता है जिससे लोग इन सेवाओं का लाभ नहीं उठा पाते है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं में कई स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं को लेकर संकोच की स्थिति बनी रहती है। ऐसे में यदि उन्हें सामुदायिक रेडियो के माध्यम से जागरूक किया जाए तो वे अपने स्वास्थ्य को सही रखने के साथ ही साथ परिवार के स्वास्थ्य को भी सही करने की पहल में शामिल हो सकती है।

1.15.4 रोजजगार

रोजगार किसी भी व्यक्ति के भरण-पोषण के लिए मुख्य धुरी है। ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी की समस्या एक बड़ी समस्या के तौर पर है। एक तफ जहां रोजगार के अवसर-सीमित है वहीं दूसरी ओर उपलब्ध रोजगार के प्रति जागरूकता की कमी है। ऐसे में सामुदायिक रेडियो के माध्यम से रोजगार के अवसरों के बारे में जानकारी देकर लोगों को बनाया जा सकता है उदाहरण के तौर पर यदि ग्रामीणो को सरकार द्वारा लघु और कुटीर उद्योगों के विकास के लिए दी जा रही मदद के बारे में जानकारी मुहैया करा दी जाए तो वह इस तरह के कार्य को करके अपनी बेरोजगारी को कम कर सकते हैं। ग्रामीणों को रोजगारपरक बनाने के लिये कृषि के साथ-साथ मधुमक्खी पालन, मुर्गी पालन, मछली पालन जैसे अनेक कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता फैलाकर उनकी अतिरिक्त आय को बढ़ाया जा सकता है तथा गाँवों से हो रहे पलायन को भी कम किया जा सकता है।

1.15.5 साहित्य व संस्कृति

संस्कृति और साहित्य किसी भी क्षेत्र विशेष को उसकी अलग पहचान दिलाता है। नई पीढ़ी को समाज की संस्कृति और साहित्य से जोड़े रखने के लिए उनको इसके बारे जागरूक करना अवश्यक है ऐसे में सामुदायिक रेडियो के माध्यम से लोक कथाओं, लोक गायनों और संस्कृति विशेष आधारित कार्यक्रमों के माध्यम से इस विषय पर जागरूक बनाने के साथ ही साथ क्षेत्र विशेष की सांस्कृतिक और साहित्यिक धरोहर को आगे की पीढ़ी तक पहुंचाया जा सकता है। इन तमाम मुद्दों पर जागरूकता फैलाने में सामुदायिक रेडियो ग्रामीण अंचलों में एक विशेष उपकरण के तौर पर नजर आता है इसकी खूबियां और प्रभावशीलता इसकी उपयोगिता और महत्व को स्वयं विवेचित करते हैं।

1.16 सामुदायिक रेडियो : कार्यक्रम एवं विधाएँ

सामुदायिक रेडियो पर कार्यक्रमों के प्रस्तुतिकरण की विविध विधाएं हैं जैसे कहानी, वार्ता, परिचर्चा, रूपक और नाटक लोकप्रिय विधाएँ हैं । ये सन्देशों के सम्प्रेषण के प्रभावपूर्ण साधन है। रेडियो शिक्षा में विषय की माँग के अनुसार इन सभी विधाओं का प्रयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए छोटे बच्चे कहानियों के माध्यम से सन्देशों को आसानी से और शीघ्र समझ जाते हैं। शिक्षा देने में कहानियाँ हमेशा से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आयी है। दादी, नानी की कहानियों का महत्व हम सभी जानते हैं।

1.16.1 नाटक

रेडियो में नाटक का प्रयोग एक बहुत ही लोकप्रिय विधा है। सामाजिक समस्याओं, मानवीय सम्बन्धों, रीति रिवाजों, परम्पराओं, ग्रामीण और शहरी समस्याओं समाज को रूढ़ियों और अन्धविश्वासों से उबारने के लिए रेडियो नाटकों का प्रसारण किया जाता रहा है। पिछले कुछ समय से वैज्ञानिक शिक्षा से जुड़ी संस्थाओं द्वारा विज्ञान नाटकों का सफल व सशक्त प्रयोग किया जा रहा है। विज्ञान नाटक किशोरों में बहुत लोकप्रिय हुए हैं। विज्ञान का दैनिक जीवन में महत्व तथा जीवन और समस्याओं के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने में ये नाटक बहुत ही सक्षम हैं।

1.16.2 रूपक

शिक्षा के लिए रेडियो रूपक एक अच्छा माध्यम है। इसमें कल्पनाओं के स्थान पर वास्तविक ज्ञान के सम्प्रेषण की आवश्यकता होती जिसके लिए रूपक, वार्ताएँ, परिचर्चाएँ, गोष्ठियाँ ज्यादा प्रभावी होती हैं। सबसे पहले यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि नाटक और रूपक में क्या अंतर है?

नाटक में कल्पनाओं आदि का सहारा लेकर उसे मनोरंजक बनाया जाता है जबकि रूपक में एक या दो आवाजों/स्वरों के माध्यम से विषय बदलाव आदि के लिए संगीत का प्रयोग किया जाता है। बोरियत से बचने व एकरसता तोड़ने के लिए स्वर परिवर्तन और संगीत का प्रयोग किया जाता है।

1.16.3 वार्ता

सामुदायिक रेडियो के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने का यह सहज और सपाट किंतु प्रभावशाली और लोकप्रिय तरीका है। इसमें वार्ताकार एक आलेख तैयार कर लेता है और उसे पढ़ लेता है। पर इस प्रकार की पाठ तैयारी और प्रस्तुति में विशेष सावधानी रखने की जरूरत है।यह भी सावधानी रखनी चाहिए कि वार्ता का आलेख भाषण का रूप अख्तियार न कर ले। आलेख इस तरह का होना चाहिए कि यह प्रतीत हो कि वार्ताकार सीधे छात्रों से बातचीत कर रहा हो। भाषा सरल और सम्प्रेष्य होनी चाहिए। वार्ताकार की प्रस्तुति इस प्रकार की होनी चाहिए जिससे यह आभास हो कि वह छात्रों से, श्रोताओं से बात कर रहा है। पढ़ने का आभास होने से वार्ता की गंभीरता समाप्त हो जाएगी और छात्र उसे ग्रहण करने में अपने को एकाग्रचित नहीं कर पाएगा।

1.16.4 साक्षात्कार

किसी विशेषज्ञ से साक्षात्कार लेना रेडियो के लिए आम बात है। इसमें साक्षात्कार लेने वाले का यह दायित्व हो जाता है कि वह प्रश्नों को इस ढंग से रखे कि विशेषज्ञ उसका सटीक उत्तर दे सके। हमें यह ध्यान रखना होगा कि साक्षात्कार का आयोजन विद्यार्थियों के लिये किया जा रहा है। इसलिए इसका छात्रोपयोगी होना आवश्यक है।

1.16.5 परिचर्चा

रेडियो के अन्य प्रारुपों के अतिरिक्त ये प्रारुप अधिक लोकतांत्रिक एवं सहभागी होता है। इस प्रारुप में किसी एक विषय पर विभिन्न विचार रखने वाले कम से कम 2 से ज्यादा प्रतिभागियों को आमंत्रित किया जाता है। परिचर्चा को गुणवत्तायुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण बनाये रखने में संचालक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है वो प्रतिभागियों को समान अवसर देते हुए उन्हें मुद्दे पर बनाये रखता है। किसी विषय विशेष पर श्रोताओं का नैरेटिव बनाने में परिचर्चा की विशेष भूमिका होती है।

1.17 सामुदायिक रेडियो : शिक्षण एवं प्रशिक्षण

शिक्षा किसी भी समाज को जीवन जीने की कला सिखाने के साथ रोजगार के अवसर भी उपलब्ध कराती है। शिक्षा का मूलमंत्र किसी भी व्यक्ति को मूल रूप से जागरूक बनाना है। यदि बात ग्रामीण क्षेत्रों की करें तो वहां शिक्षा की दर बहुत कम है और इसकी उपयोगिता के प्रति भी लोगों में जागरूकता की कमी है। ऐसे में सामुदायिक रेडियो एक ऐसी प्रणाली है जो लोगों को शिक्षा के प्रति जागरूक कर सकता है। सामुदायिक रेडियो के माध्यम से लोगों को उनके जीवन में शिक्षा की आवश्यकता के प्रति सचेत कर उनको स्कूलों की तरफ कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है आज जब संविधान में संशोधन कर शिक्षा के अधिकार को शामिल किया गया है तथा प्रारंभिक शिक्षा सभी का मूल अधिकार बन गई है। ऐसे में लोगों को इस बारे में अवगत करा कर तथा उन्हें इसकी जरूरत और फायदों बताया जा सकता है। इस कार्य को करने में सामुदायिक रेडियो रामबाण की भांति कार्य कर सकता है। तथा लोगों को शिक्षा की जरूरत के बारे में अत्याधिक प्रभावी ढंग से समझा सकता है। सामुदायिक रेडियो का शिक्षा के उपयोग के विषय में बहुत से लोगों का तर्क है कि रेडियो द्वारा जिस तरह भाषा विज्ञान और कला विषयों की शिक्षा दी जा सकती उस तरह विज्ञान की शिक्षा नहीं दी जा सकती। परन्तु यह पूर्णतः सत्य नहीं हैं बल्कि सच तो यह है कि विज्ञान शिक्षा के प्रचार प्रसार में रेडियो ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अच्छे रेडियो शिक्षक इस माध्यम का उपयोग विज्ञान के अधिकांश विषयों की शिक्षा में बखूबी कर सकते हैं। उदाहरण के लिए जीवों के वर्गीकरण, जीवन की इकाई, अणु-परमाणु मौसम के परिवर्तन, वायु मिट्टी, पेड़-पौधे, पोषक आहार से लेकर विज्ञान से संबंधित कई प्रयोग आस-पास के उदाहरणों के जरिए बताए जा सकते हैं।

1.17.1 औपचारिक शिक्षा

शिक्षा का प्रयोजन व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास करना है। जिससे उसमें स्पष्ट सोच व तार्किकता का विकास हो सके, उसकी कल्पना क्षमताएँ बढ़ें, वह प्रत्येक स्थिति का सामना करने में सक्षम हो, उसे अपने साहित्य, संस्कृति और ज्ञान-विज्ञान की समझ हो। रेडियो शिक्षा का उद्देश्य वही है जो शिक्षा का मूल उद्देश्य है। अन्तर केवल माध्यम और तरीके का है। स्कूलों में जहाँ एक अध्यापक पचास-साठ छात्रों को एक साथ पढ़ा सकता है वही रेडियो लाखों करोड़ों छात्रों तक पहुँच सकता है। यह स्कूल जाने वाले छात्रों को कक्षाओं में प्राप्त विभिन्न विषयों को समझने में तो मदद देता ही है, साथ ही उन लाखों करोड़ों छात्रों के लिए बड़ा उपयोगी है जो किन्ही कारणों से स्कूली शिक्षा से वंचित रह गये हैं। रेडियो शिक्षा का

अन्य बड़ा लाभ उन छात्रों को है जो दूरस्थ शिक्षा के जरिए अध्ययन कर रहे हो अथवा जो किताबें पढ़ने में सक्षम न हो, ऐसे लोग सुनकर ही अपने ज्ञान में वृद्धि कर सकते है। कई लोगों को सुनकर समझना आसान लगता है तथा यह उन्हें आसानी से याद भी रह जाता है। अब प्रश्न उठता है कि सामुदायिक रेडियो के माध्यम से किन-किन विषयों की शिक्षा संभव है? मोटे तौर पर देखें तो समस्त विषयों की जानकारी रेडियो द्वारा सम्भव है। परन्तु कुछ विषयों में दृश्यों की आवश्यकता हो अथवा प्रयोग करके जिन्हें समझाना हो जैसे गणित और विज्ञान गणनाएँ आदि को छोड़कर प्रत्येक विषय की शिक्षा रेडियो माध्यम से सम्भव है। संगीत, भाषा और साहित्य, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान के दैनिक जीवन में प्रयोग, कृषि विज्ञान आदि का शिक्षण रेडियो के माध्यम से प्रभावपूर्ण तरीक से किया जा सकता है। रेडियो द्वारा भाषा संस्कार विकसित करना कोई नई बात नहीं है। बड़ी बड़ी साहित्यिक विभूतियाँ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से रेडियो से जुड़ी रही हैं। रेडियो द्वारा विभिन्न कक्षाओं के लिए भाषा पाठों का प्रसारण, प्रसारण का महत्वपूर्ण अंग रहा है। दूसरा महत्वूपर्ण उदाहरण भारत में कृषि क्षेत्र में आयी वैज्ञानिक क्रान्ति का है। कृषि शिक्षा में भारतीय किसानों को प्रशिक्षित करने का श्रेय रेडियो को जाता है। भारत में हरित व श्वेत क्रान्ति लाने के लिए वैज्ञानिक ज्ञान व शोध को रेडियो में ही जन जन तक पहुँचाया। संगीत एक समय में राजदरबारों तथा समाज के उच्च वर्गों के मनोरंजन तक ही सीमित था आज संगीत विशेषज्ञ रेडियो के माध्यम से संगीत की बारीकियों की जानकारी आम जन तक पहुँचा रहे हैं। इसके अतिरिक्त नैतिक शिक्षा, चरित्र निर्माण, स्वास्थ्य जागरूकता, भारतीय इतिहास के गौरव पूर्ण अतीत, राष्ट्रीय आन्दोलन, जनमत निर्माण, खेल जगत, राजनीतिक शिक्षा कानूनी जानकारी आदि अनेक ऐसे विषय और क्षेत्र है जिनके शिक्षण में रेडियो एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

1.17.2 अनौपचारिक शिक्षा

रेडियो का प्रसार आज देश की 99 प्रतिशत जनता तक हो चुका है। इसके कार्यक्रम आज लगभग सभी जगह सुने जा सकते है। क्षेत्रीय बोलियों सहित बोलचाल की आसान भाषा में कार्यक्रम तैयार किये जाते है। स्कूलों, कॉलेजो और शिक्षण संस्थानों में विधिवत प्रवेश लेकर निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार निश्चित आयु वर्ग जब क्रमबद्ध तरीके से शिक्षा प्राप्त करता है तो उसे औपचारिक शिक्षा कहा जाता है। परन्तु जब आर्थिक, सामाजिक या किसी अन्य कारण से समाज के कुछ लोग औपचारिक शिक्षा की योजनाओं का लाभ नहीं उठा पाते है तो अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से वे अपनी शैक्षणिक

आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकते हैं क्योंकि इस व्यवस्था में न तो औपचारिक शिक्षा का बन्धन है न ही प्रवेश की समस्या, न ही स्कूल कॉलेज आदि जाने की आवश्यकता पड़ती है। किसी भी उम्र का व्यक्ति शिक्षा ग्रहण कर सकता है। शिक्षण का मुख्य स्रोत शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच बातचीत ही होती है। यहाँ इस बात का उल्लेख आवश्यक कि अनौपचारिक शिक्षा को औपचारिक शिक्षा से कम स्तरीय नहीं आंका जाना चाहिए। सच तो यह है कि अनौपचारिक शिक्षा विद्यार्थी को औपचारिक शिक्षा के लिए प्रेरित करती है। दरअसल अनौपचारिक शिक्षा औपचारिक शिक्षा की पूरक है। प्रसारण तकनीकों में क्रान्तिकारी बदलाव आये हैं। ऐसे में रेडियो का उपयोग और भूमिका और भी प्रभावकारी हो गयी है। अनौपचारिक शिक्षा के प्रसारणों में भी समय के हिसाब से परिवर्तन आये है। यहाँ एक बात पूरी तरह स्पष्ट है कि अनौपचारिक शिक्षा समाज के एक बड़े हिस्से की आवश्यकता है। भले ही हमारे संविधान में 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों की मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान है पर यह सच है कि सबके लिए बुनियादी शिक्षा के उद्देश्य में हम आज भी सफल नहीं हो सके हैं। हमारी आबादी का एक बड़ा हिस्सा आज भी पढ़ने लिखने में असमर्थ है। इसके अनेक सामाजिक, आर्थिक और परिवेशगत कारण है जिनके कारण अनेक बच्चे औपचारिक शिक्षा के लिए न तो समय दे पाते हैं और न ही संसाधन इनकी पहुँच में होते हैं। इसलिए अनौपचारिक शिक्षा की प्रक्रिया में पहला कदम होता है ऐसे क्षेत्रों का चुनाव जहाँ बच्चे अधिक तादाद में शिक्षा को बीच में छोड़ देते हैं। ऐसे स्थानों में दूर दराज के इलाके पहाड़ी क्षेत्र ग्रामीण क्षेत्र कम आबादी वाले स्थान, गंदी बस्तियाँ आदि आते हैं। बच्चों के अतिरिक्त बहुत सारे ऐसे वयस्क भी अनौपचारिक शिक्षा के लिए उपयुक्त हैं जो समय पर शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाये और अपना काम करते हैं या कारखानों में काम करते है अथवा खेती बाड़ी करते हैं। इन्हें अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से तकनीकी ज्ञान दिया जा सकता है। इसलिए पाठ्यक्रम आधारित शिक्षा की सामग्री के अतिरिक्त अनौपचारिक शिक्षा के अन्तर्गत बिना पढ़े लिखे या कम पढ़े लिखे लोगों के लिए भी कार्यक्रम तैयार किये जा सकते हैं। इन कार्यक्रमों की पाठ्य सामग्री इस प्रकार तैयार की जानी चाहिए जिससे उनकी पढ़ाई लिखाई के साथ उनके समुदाय की भी उन्नति हो। इसके साथ क्षेत्रीय आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। इस तरह की शिक्षा का समाज को तुरन्त लाभ मिलता है क्योंकि प्रौढों की शिक्षा का असर तुरन्त पड़ता है। इसमें शैक्षणिक साक्षरता और तकनीकी ज्ञान रोजगारोन्मुख से जुड़े कार्यक्रम शामिल हो सकते है। इसी प्रकार कारखानों और उद्योग धंधों में काम कर रहे कर्मचारियों के लिए भी तकनीकी ज्ञान और

विशेषज्ञता बढ़ाने के कार्यक्रम तैयार किये जा सकते हैं गृहिणी महिलाओं के कार्यक्रम सामाजिक, सांस्कृतिक और जनस्वास्थ्य शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं। इस तरह से अनौपचारिक शिक्षा के अन्तर्गत कार्य और शिक्षा में तालमेल बढ़ाना महत्वपूर्ण है।

1.17.3 दूरस्थ शिक्षा

दूर शिक्षा प्रणाली शिक्षा प्रदान करने की आधुनिक प्रविधि है। इस प्रणाली में शिक्षक और विद्यार्थी एक-दूसरे के सामने नहीं होते। इसमें शिक्षक और विद्यार्थी के बीच एक दूरी होती है। अतः इस शिक्षा प्रणाली में अपनायी गयी प्रविधि को दूर-शिक्षा प्रविधि का नाम दिया गया है। शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच की दूरी विभिन्न संचार माध्यमो केसे पाटी जाती है। इसमें मुद्रित पाठ ऑडियो पाठ और वीडियो पाठ के से शिक्षक छात्र तक अपनी बात पहुँचाता है। इस कारण इस शिक्षा पद्धति में संचार माध्यमों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। दूर शिक्षा व्यवस्था उन सभी बाधाओं को तोड़ने हटाने का प्रयास है, जिसका सामना एक शिक्षार्थी को परंपरागत शिक्षा व्यवस्था में करना पड़ता है। नामांकन से लेकर विषय चुनने तक में विद्यार्थियों को एक हद तक स्वच्छंदता प्राप्त है। डिग्री हासिल करने में भी अवधि की दृष्टि से इस व्यवस्था में लचीलापन है। वस्तुतः इस मुक्त व्यवस्था का मूल उद्देश्य उन लोगों को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है, जो किन्हीं कारणों से स्कूल और कॉलेज नहीं जा सके। अगर कोई विद्यार्थी मुक्त शिक्षा के स्नातक उपाधि कार्यक्रम में शामिल होना चाहता है, और परंपरागत रूप से शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाया है उसके नामांकन का प्रावधान भी इस व्यवस्था में है। इस व्यवस्था में दोनों तरह के विद्यार्थी शामिल हो सकते हैं जिन्होंने परंपरागत शिक्षा प्राप्त की है और जो परंपरागत शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रह गए हैं।इस प्रणाली में विषय के चयन में भी स्वच्छंदता है। स्नातक उपाधि कार्यक्रम में एक ही विद्यार्थी एक साथ कई विषय पढ़ सकता है। इस तरह की छूट या स्वच्छंदता मुक्त शिक्षा व्यवस्था की विशेषता है। मुक्त शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक और छात्र का संबंध क्रमशः परामर्शदाता और शिक्षार्थी में बदल जाता है। इसमें शिक्षक छात्र के पास एक परामर्शदाता के रूप में विभिन्न माध्यमों का सहारा लेकर पहुँचता है। शिक्षक छात्र के सामने शारीरिक तौर पर उपस्थित नहीं रहता है। वह मुद्रण सामग्री, ऑडियो और वीडियो पाठों के माध्यम से छात्र के पास पहुँचता है। आपने एक कहावत सुनी होगी कि प्यासा कुँए के पास जाता है पर इस व्यवस्था में कुआँ प्यासों की प्यास अपनी जगह पर बैठे बैठे बुझा देता है।

1.17.4 उच्च शिक्षा

माध्यमिक शिक्षा की समाप्ति के उपरान्त उच्च शिक्षा प्रारम्भ होती है। उच्च शिक्षा महाविद्यालयों विश्वविद्यालयों तथा विशिष्ट शिक्षा संस्थानों में प्रदान की जाती है। प्राचीन तथा मध्य काल के कुछ उच्च शिक्षा केन्द्र विश्व प्रसिद्ध थे। जिनमें अध्ययन करने के लिए दूर दूर से छात्र आया करते थे। परन्तु दुर्भाग्य से कालान्तर में यह परम्परा नष्ट हो गई तथा आधुनिक विज्ञान व तकनीकों के विकास के साथ-साथ पाश्चात्य देश उच्च शिक्षा व अनुसंधान के क्षेत्र में अग्रणी हो गये। इसके परिणामस्वरूप भारत में आधुनिक विश्वविद्यालयों की स्थापना की आवश्यकता महसूस की गई। सन 1857 में आधुनिक भारतीय उच्च शिक्षा की आधारशिला रखी गई थी।

1.18 उच्च शिक्षा : आवश्यकता एवं उद्देश्य

सन् 1854 में वुड के घोषणापत्र में भारत में विश्वविद्यालय खोलने की सिफारिश की गयी थी जिसके परिणामस्वरूप सन् 1857 मे कलकत्ता, बम्बई व मद्रास में तीन विश्वविद्यालय खोले गये थे। यद्यपि सन् 1857 में देश में उच्च शिक्षा के लगभग 23 कालेज विद्यमान थे तथापि उच्च शिक्षा की वास्तविक आधार शिला इन तीन विश्वविद्यालयों के द्वारा ही रखी गई। स्वतन्त्रता प्राप्ति तक इलाहाबाद (1887), बनारस (1916), मैसूर (1916), पटना (1917), उस्मानिया (1918), अलीगढ़-1921) लखनऊ (1921), दिल्ली (1922), नागपुर (1923) आन्ध्र (1926), आगरा (1927), अन्नामलाई (1929), केरल (1937), उत्कल (1943) सागर (1946), राजस्थान (1947) तथा चण्डीगढ़ (1947) विश्वविद्यालय खोले जा चुके थे। इस प्रकार आजादी के समय सन् 1947 में भारत में कुल 20 विश्वविद्यालय थे। स्वतंत्रता के उपरान्त विश्वविद्यालय स्तर की उच्च शिक्षा का विस्तार काफी तेजी से हुआ। तब से लेकर आज तक अनेक विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालय स्थापित किये जा चुके हैं। एक मोटे अनुमान के अनुसार इस समय भारत में लगभग 1057 विश्वविद्यालय एवं उच्च शिक्षा संस्थान मौजूद हैं जिनसे लगभग पच्चीस हजार से ज्यादा महाविद्यालय सम्बन्धित हैं तथा इन विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों में लगभग दो करोड बीस लाख से ज्यादा विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के तत्काल बाद सन् 1947 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह के अवसर पर तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि विश्वविद्यालय का दायित्य मानवता सहनशीलता तर्क विचारों के विकास तथा सत्य की खोज करना है। प्रधानमंत्री नेहरू के इन शब्दों से विश्वविद्यालयी

शिक्षा के उद्देश्य परिलक्षित होते हैं। एच० हेवरिंगटन ने अपनी पुस्तक दि सोशल फंक्शन आफ दि यूनिवर्सिटी में विश्वविद्यालय का कार्य, ज्ञान के उस व्यापक रूप का अन्वेषण करना बताया है जो मानव संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में विकास तथा उन्नति में सहायक हो सके। स्पष्ट है कि उच्च शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य ज्ञान का संकलन करना, नवीन ज्ञान की खोज करना तथा ज्ञान का व्यापक प्रसार करना है।

1.18.1 उच्च शिक्षा के आयोग

भारत सरकार ने देश के युवाओं को गुणवत्ता पूर्ण उच्च शिक्षा प्रदान करने के लिए समय-समय पर शैक्षणिक आयोगों का गठन किया है। जिनमें राधाकृष्णन आयोग और कोठारी आयोग प्रमुख है।

- राधाकृष्णन आयोग - भारत के तत्कालीन उप राष्ट्रपति डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन की अध्यक्षता में गठित आयोग (1952-53) ने विश्वविद्यालयी शिक्षा के मुख्य उद्देश्य को परिभाषित करते हुए कहा प्रजातंत्र की सफलता के लिए कुशल नागरिक तैयार करना एवं विभिन्न व्यवसायों, वाणिज्य, कृषि, उद्योग, राजनीति, प्रशासन आदि के लिए छात्रों को प्रशिक्षण देना। डॉ0 एस0 राधाकृष्णन आयोग ने छात्रों के व्यक्तित्व का सर्वागीण विकास तथा छात्रों में नैतिकता, सदाचार व आदर्श नागरिकता विकसित करना भी विश्वविद्यालय शिक्षा का काम बताया तथा छात्रों में सभ्यता व संस्कृति का संरक्षण की भावनाओं को प्रबल करना। भी विश्वविद्यालयों की जिम्मेदारी बताया।

- कोठारी आयोग :- सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् प्रोफेसर कोठारी की अध्यक्षता में गठित आयोग (1964-66) ने भी उच्च शिक्षा के उद्देश्यों पर विचार विमर्श किया था। इस आयोग के अनुसार विश्वविद्यालय शिक्षा के उद्देश्यों में नवीन ज्ञान की खोज करना, सत्य की प्राप्ति के लिए निर्भय होकर कार्य करना तथा नवीन आवश्यकताओं व अन्वेषणों के सन्दर्भ में प्राचीन ज्ञान का विश्लेषण करना तथा जीवन के सभी क्षेत्रों में उचित नेतृत्व प्रदान करना। इसके लिए प्रतिभाशाली युवकों को खोजकर उनमें मानसिक शक्ति, अभिरुचि, सुप्रवृत्ति एवं नैतिकता विकसित करना साथ ही साथ कृषि, कला, चिकित्सा, विज्ञान व तकनीकी तथा अन्य व्यवसायों में निपुण व प्रशिक्षित नागरिक तैयार करना एवं शिक्षा के द्वारा समानता व सामाजिक न्याय को बढ़ावा देना तथा सांस्कृतिक व सामाजिक विभिन्नताओं को कम करना शामिल है।

ज्ञातव्य है कि भारत में विश्वविद्यालयों की स्थापना केन्द्र अथवा राज्य सरकार द्वारा पारित विधेयक के द्वारा होती है। अतः स्थापना की दृष्टि से विश्वविद्यालयों को दो भागों में बांटा जा सकता है। केन्द्र शासित विश्वविद्यालय (Central Universities) तथा राज्य शासित विश्वविद्यालय (State Universities)। जिन विश्वविद्यालयों की स्थापना व प्रबन्ध केन्द्र द्वारा पारित विधेयक से होती है। उन्हें केन्द्रीय विश्वविद्यालय कहते है। केन्द्रीय विश्वविद्यालयों पर केन्द्र सरकार का सीधा नियन्त्रण रहता है। केन्द्र सरकार कभी भी राज्यीय विश्वविद्यालयों या किसी भी उच्च शिक्षा केन्द्र का अधिकग्रहण करके उसे केन्द्रीय विश्वविद्यालय का स्तर दे सकती है। जैसे अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, उत्तरी पूर्वी पर्वतीय विश्वविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, केन्द्रीय विश्वविद्यालयों की श्रेणी में आते हैं । जिन विश्वविद्यालयों की स्थापना व प्रबन्धन राज्य द्वारा पारित विधेयक के द्वारा होती है उन्हें राज्यीय विश्वविद्यालय कहते है। जैसे लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ , दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय गोरखपुर, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ, महात्मा ज्योतिबा फूले विश्वविद्यालय बरेली, राज्यीय विश्वविद्यालय कहलाते है। राज्यीय विश्वविद्यालय के ऊपर राज्य सरकारों का सीधा नियंत्रण रहता है। हमारा विश्वविद्यालय वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा एक राज्य विश्वविद्यालय है।

- *नई शिक्षा नीति - देश के शिक्षाविद् प्रोफेसर के कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में गठित नई शिक्षा नीति 2020 में आमूलचूल परिवर्तन करते हुए मानव संसाधन मंत्रालय का नाम पुनः शिक्षा मंत्रालय करने का फैसला लिया गया है। इस नीति में समस्त उच्च शिक्षा (कानूनी एवं चिकित्सीय शिक्षा को छोड़कर) के लिए एक एकल निकाय के रूप में भारत उच्च शिक्षा आयोग का गठन करने का प्रावधान है। संगीत, खेल, योग आदि को सहायक पाठ्यक्रम या अतिरिक्त पाठ्यक्रम की बजाय मुख्य पाठ्यक्रम में ही जोड़ा जाएगा। शिक्षा तंत्र पर सकल घरेलू उत्पाद का कुल 6 प्रतिशत खर्च करने का लक्ष्य है जो इस समय 4.43ः है। एम०फिल० को समाप्त किया जायेगा। अब तक अनुसंधान में जाने के लिये तीन साल के स्नातक डिग्री के बाद दो साल स्नातकोत्तर करके पीएचडी में प्रवेश लिया जा सकता है। नई शिक्षा नीति 2020 में शिक्षकों के प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया गया है। व्यापक सुधार के लिए शिक्षण प्रशिक्षण और सभी शिक्षा कार्यक्रमों को विश्वविद्यालयों या कॉलेजों के स्तर पर शामिल करने की सिफारिश

की गई है। प्राइवेट स्कूलों में मनमाने ढंग से फीस रखने और बढ़ाने को भी रोकने का प्रयास किया जाएगा। पहले समूह के अनुसार विषय चुने जाते थे किन्तु अब उसमें भी बदलाव किया गया है। जो छात्र इंजीनियरिंग कर रहे हैं वह संगीत को भी अपने विषय के साथ पढ़ सकते हैं। नेशनल साइंस फाउंडेशन के तर्ज पर नेशनल रिसर्च फाउंडेशन लाई जाएगी जिससे पाठ्यक्रम में विज्ञान के साथ सामाजिक विज्ञान को भी शामिल किया जाएगा। नीति में पहले और दूसरे कक्षा में गणित और भाषा एवं चौथे और पांचवें कक्षा के विद्यार्थियों के लेखन पर जोर देने की बात कही गई है।

1.18. 2 विश्वविद्यालयों के प्रकार

भारत में उच्च शिक्षा मुख्यतः उच्च शैक्षिक संस्थानों तथा महाविद्यालयों में प्रदान की जाती है। परन्तु विश्वविद्यालय ही उच्च शिक्षा के वास्तविक केन्द्र होते है क्योंकि महाविद्यालय, विश्वविद्यालयों से ही सम्बन्धित होते है तथा विश्वविद्यालयों के निर्देशन में कार्य करते है। कोठारी आयोग के अनुसार ''विश्वविद्यालय वह स्थान है जहाँ पर अपने-अपने योगदान द्वारा सत्य की खोज करते हैं तथा अपनी शैक्षणिक उन्नति के द्वारा व्यक्तित्व का विकास करते हैं।'' पण्डित जवाहर लाल नेहरू के अनुसार ''विश्वविद्यालय का लक्ष्य मानवता, सहनशीलता, तर्फ विचारों के विकास तथा सत्य की खोज करना है।'' शिक्षण कार्य कराना महाविद्यालयों को मान्यता देना, परीक्षा लेना तथा शोध कराना विश्वविद्यालयों के प्रमुख कार्य माना जाता है।

- संगठन के आधार पर - भारतीय विश्वविद्यालयों को उनके संगठन के आधार पर तीन भागों में बाँटा जा सकता है-आवासीय विश्वविद्यालय, सम्बद्धक विश्वविद्यालय तथा आवासीय सम्बद्धक विश्वविद्यालय। आवासीय विश्वविद्यालय मं शिक्षण व अध्ययन कार्य विश्वविद्यालय प्रांगण में ही होता है। जबकि सम्बद्धक विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के लिये नियंत्रण केन्द्र का कार्य करते है। इस पैटर्न में शिक्षण कार्य विश्वविद्यालय से सम्बन्धित महाविद्यालयों में किया जाता है तथा विश्वविद्यालय शिक्षा नीति, पाठ्यक्रम, परीक्षा नियम बनाकर नियन्त्रण करते है। आवासीय-सम्बद्धक विश्वविद्यालयां में शिक्षण कार्य विश्वविद्यालय प्रांगण में तथा सम्बन्धित महाविद्यालयों दोनों में ही होता है। विश्वविद्यालय अपने यहाँ भी शिक्षण की व्यवस्था करता है तथा सम्बन्धित महाविद्यालयों पर नियन्त्रण भी रखता है।

- शिक्षा प्रक्रिया के आधार पर - विश्वविद्यालयों को उनकी शिक्षा प्रक्रिया के आधार पर भी दो भागों में बांटा जा सकता है परम्परागत विश्वविद्यालय तथा मुक्त विश्वविद्यालय। परम्परागत विश्वविद्यालयों का कार्यक्षेत्र, अध्ययन विधि व कार्य प्रणाली औपचारिक व पारम्परिक होती है। इसके विपरीत मुक्त विश्वविद्यालयों का कार्यक्षेत्र, अध्ययन विधि, प्रवेश नियम, कार्य प्रणाली अप्रेक्षाकृत उदार होती है। शोधकर्ता ने मुक्त विश्वविद्यालयो में प्रभावी शिक्षण के लिये सामुदायिक रेडियो के प्रयोग को आवश्यक बताया है। हमारा विश्वविद्यालय वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय मुक्त विश्वविद्यालयों की श्रेणी में आता है।

1.19 उच्च शिक्षा और सामुदायिक रेडियो

भारत में उच्च शिक्षा की व्यवस्था बहुत प्राचीन समय से है भले ही उसका स्वरूप आधुनिक उच्च शिक्षण संस्थानों से भिन्न रहा हो लेकिन शिक्षण व प्रशिक्षण में उनका उत्कृष्ट योगदान रहा है। वर्तमान समय में भारत में उच्च शिक्षा प्रदान करने वाले कुल 1057 विश्वविद्यालय हैं। अगर उन्हें वर्गीकृत कर के देखें तो 54 केन्द्रीय विश्वविद्यालय, 456 राज्य विश्वविद्यालय, 126 डीम्ड विश्वविद्यालय और 421 प्राइवेट विश्वविद्यालय हैं। अगर उत्तर प्रदेश के संदर्भ में उच्च शिक्षण संस्थानों का अवलोकन करें तो सूबे में कुल 80 विश्वविद्यालय हैं। वायु तरंगों पर राज्य के एकाधिकार को अमान्य करते हुए 1995 में सर्वोच्च न्यायालय के ऐतिहासिक फैसले के आलोक में 1 फरवरी 2004 को अन्ना विश्वविद्यालय ने अन्ना एफएम के नाम से पहला सामुदायिक रेडियो केन्द्र स्थापित किया। तब से लेकर अब तक 1998 आवेदकों को सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के संचालन का लाइसेंस मिल चुका है लेकिन उनमें केवल 356 सामुदायिक रेडियो केन्द्र ही पूर्ण रूप से संचालन में सक्रिय हैं जबकि 1642 सामुदायिक रेडियो केन्द्रों से या तो प्रसारण बंद हो चुका है या फिर वो निष्क्रिय हो चुके हैं। संतोषजनक तथ्य ये है कि कुल 356 सामुदायिक रेडियो केन्द्रों में शैक्षणिक संस्थानों द्वारा कुल 172 सामुदायिक रेडियो केन्द्रों का संचालन किया जा रहा है। जिनमें उत्तर प्रदेश में शैक्षणिक संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की संख्या 20 है तथा उत्तर प्रदेश के 8 प्रशासनिक मंडल मुख्यालयों पर स्थित 9 विश्वविद्यालयों द्वारा सामुदायिक रेडियो केन्द्रों का संचालन किया जा रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो की भूमिका दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि देश में कई विश्वविद्यालयों और शिक्षण संस्थानों ने शैक्षणिक प्रसारण के लिए रेडियो केन्द्रों की स्थापना की है और आकाशवाणी पर भी शैक्षणिक प्रसारणों

का समय लगातार बढ़ रहा है। इसके अलावा हाल ही में केन्द्र सरकार ने शैक्षणिक संस्थानों को सामुदायिक रेडियो शुरू करने के लिए उदारतापूर्वक लाइसेंस देना शुरू कर दिया है। यही नहीं, एफएम टेक्नालॉजी के आने के बाद श्रोताओं में रेडियो की लोकप्रियता बढ़ी है और शिक्षण संस्थान शिक्षा के प्रसार में इस टेक्नालॉजी का इस्तेमाल करने को उत्सुक दिख रहे हैं। लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो के बेहतर इस्तेमाल के लिए यह जरूरी है कि रेडियो की शक्ति और सीमाओं को समझा जाए। यह इसलिए भी जरूरी है ताकि शिक्षा जैसे संवेदनशील विषय को श्रोताओं तक सही तरीके से पहुंचाने के लिए उस माध्यम की शक्ति और कमियों को पहचाना जाए।

1.19.1 शैक्षणिक प्रसारण

रेडियो के माध्यम से शैक्षणिक प्रसारण की उपयोगिता दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। शैक्षणिक प्रसारण की मांग लगातार बढ़ रही है। इसकी वजह यह है कि शिक्षा के माध्यम के रूप रेडियो ने हर तरह की शिक्षा को श्रोताओं तक पहुंचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। विशेषज्ञों का मानना है कि रेडियो के जरिए चार प्रकार के शैक्षणिक प्रसारण हो सकते हैं।

- समृद्धि संबंधी - इसके तहत कक्षा आधारित शिक्षण को सहयोग दिया जा सकता है और उसकी गुणवत्ता के स्तर को ऊँचा उठाया जा सकता है। इस तरह के शैक्षणिक प्रसारण के जरिए छात्र को उन विषयों के विशेषज्ञों और श्रेष्ठ शिक्षकों की चर्चा और व्याख्यान सुनने का अवसर मिलता है।
- प्रशिक्षण संबंधी - शैक्षणिक प्रसारण का एक उद्देश्य शिक्षकों का प्रशिक्षण भी होता है। इस प्रसारण के तहत शिक्षकों को शिक्षण की नयी प्रविधियों से अवगत कराने के अलावा संबंधित विषयों के बारे में नयी जानकारियों से भी परिचित कराया जाता है।
- विस्तार संबंधी - इसके तहत समाज के अलग-अलग वर्गों को उनके कार्यों में सहयोग के लिए और उनकी कार्यकुशलता बढ़ाने के लिए नयी प्रविधियों से परिचित कराया जाता है। जैसे किसानों को किसी नए बीज के बारे में बताना और उसके उपयोग के तरीके से परिचित कराना।
- विकास संबंधी - रेडियो के जरिए लोगों को विकास कार्यक्रमों के बारे में शिक्षित किया जा सकता है। इस प्रसारण के जरिए उन्हें विकास प्रक्रिया का भागीदार बनाया जाता है। जैसे शिक्षा

के क्षेत्र में चल रही योजनाओं सर्व शिक्षा अभियान या दोपहर भोजन योजना के बारे श्रोताओं को जानकारी देकर उन्हें उसका अंग बनने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

1.19.2 विषय शिक्षण

भाषा एवं साहित्य के शिक्षण के लिए सामुदायिक रेडियो संभवतः सबसे बेहतरीन माध्यम है। दुनियाभर में भाषा शिक्षण के मामले में रेडियो की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। साहित्य की बारीकियों को समझने और समझाने के लिए रेडियो का खूब इस्तेमाल हुआ है। वस्तुतः अपनी प्रकृति में रेडियो भाषा और साहित्य का माध्यम है।

- *भाषा - श्रव्य माध्यम होने के कारण रेडियो भाषा शिक्षण के लिए एक उपयुक्त माध्यम है। शब्दों का उच्चारण किस तरह किया जा सकता है. यह रेडियो के जरिए विद्यार्थियों को बेहतर तरीके से बताया जा सकता है। इसी तरह याक्य संरचना और व्याकरण के बारे में भी रेडियो के माध्यम से शिक्षित किया जा सकता है। रेडियो के जरिए किसी भी भाषा के बोले जाने वाले रूप से विद्यार्थियों को परिचित कराया जा सकता है। इसके अलावा किसी भी भाषा के मुहावरों और उसके शब्द भंडार को रेडियो के माध्यम से श्रोताओं तक पहुंचाया जा सकता है। बीबीसी की हिंदी सेवा के माध्यम से न जाने कितने लोगों ने अंग्रेजी भाषा सीखी और आज उसका इस्तेमाल कर रहे हैं। इसी तरह से देश के अंदर विभिन्न भाषाओं को सिखाने का एक माध्यम रेडियो हो सकता है।
- *साहित्य - साहित्य के प्रसार के लिए रेडियो एक बेहतरीन माध्यम है। शैक्षणिक कार्यक्रमों के जरिए रेडियो से छात्रों को साहित्य की विभिन्न विधाओं से परिचित कराया जा सकता है। रेडियो के सृजनात्मक कार्यक्रमों के जरिए छात्रों में साहित्य के प्रति न सिर्फ रुचि पैदा की जा सकती है बल्कि उनके अंदर साहित्य में रस लेने की क्षमता भी पैदा की जा सकती है। रेडियो के जरिए साहित्य शिक्षण की एक सबसे बड़ी खूबी यह है कि उसके माध्यम से स्वयं साहित्यकारों को अपने गद्य या कविता की प्रस्तुति के लिए कहा जा सकता है और यह अनुभव साहित्य के हर छात्र के लिए बहुत रोमांचक हो सकता है। लेकिन उपन्यासों और लंबी कहानियों/कविताओं के के शिक्षण में पूरे उपन्यास या कहानी को दोहराने के बजाय उसके कुछ प्रमुख अशों का पाठ करते हुए विद्यार्थियों को उसके महत्व से अवगत कराया जा सकता है।

- विज्ञान व तकनीकी - विज्ञान शिक्षण के क्षेत्र में रेडियो की सबसे अहम भूमिका छात्रों में विज्ञान के प्रति रुचि पैदा करने में है। इसके अलावा रेडियो के माध्यम से छात्रों और बाकी श्रोताओं में एक वैज्ञानिक चेतना पैदा की जा सकती है। रेडियो पर विज्ञान संबंधी कार्यक्रमों की लोकप्रियता बताती है कि अगर विज्ञान को जीवन से जोड़कर पेश किया जाए तो लोगों की उसमे सहज ही दिलचस्पी पैदा हो जाती है। भारत जैसे देश में जहां अब भी अधविश्वासों और पोंगापंथी का काफी दबदबा है, वहां रेडियो के जरिए लोगों में वैज्ञानिक समझ पैदा की जा सकती है। इसके अलावा कृषि विज्ञान और पशुपालन जैसे क्षेत्रों में नई जानकारियों से श्रोताओं को अवगत कराया जा सकता है और उन्हें उनके इस्तेमाल के लिए प्रेरित किया जा सकता है। इसी तरह स्वास्थ्य और चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में हो रही प्रगति की भी जानकारी शैक्षणिक प्रसारणों के जरिए दी जा सकती है।
- कला व मानविकी - सामाजिक विज्ञान के विभिन्न अनुशासनों-इतिहास, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान आदि की शिक्षा के लिए रेडियो एक उपयोगी माध्यम है। इन सभी विषयों में परिचर्चा और व्याख्यान के माध्यम से छात्रों को न सिर्फ पाठ्यक्रम आधारित शिक्षा दी जा सकती है बल्कि अनौपचारिक शिक्षा के विद्यार्थियों को भी इतिहास और राजनीति विज्ञान के बारे में बताया सकता है। समाज विज्ञान के शिक्षण में इस बात का ध्यान जरूर रखा जाना चाहिए कि विभिन्न अवधारणाओं को वास्तविक जीवन के उदाहरणों के जरिए समझाया जाए। समाज विज्ञान के शिक्षण में भी यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि कार्यक्रम नीरस और उबाऊ न हो इसके लिए इतिहास से संबंधित शैक्षणिक कार्यक्रमों में रेडियो नाटक का सहारा लिया जा सकता है जबकि राजनीति विज्ञान से संबंधित कार्यक्रम में परिचर्चा और रेडियो रूपकों की मदद ली जा सकती है।

1.20 उत्तर प्रदेश : उच्च शिक्षा और सामुदायिक रेडियो

उत्तर प्रदेश में शिक्षा की एक पुरानी परम्परा रही है, हालांकि ऐतिहासिक रूप से यह मुख्य रूप से कुलीन वर्ग और धार्मिक विद्यालयों तक ही सीमित थी। संस्कृत आधारित शिक्षा वैदिक से गुप्त काल तक शिक्षा का प्रमुख हिस्सा थी। जैसे-जैसे विभिन्न संस्कृतियों के लोग इस क्षेत्र में आये, वे अपने-अपने ज्ञान को साथ लाए, और क्षेत्र में पाली, फारसी और अरबी की विद्व्त्ता आयी, जो ब्रिटिश उपनिवेशवाद के उदय

तक क्षेत्र में हिंदू-बौद्ध-मुस्लिम शिक्षा का मूल रही। देश के अन्य हिस्सों की ही तरह उत्तर प्रदेश में भी शिक्षा की वर्तमान स्कूल-टू-यूनिवर्सिटी प्रणाली की स्थापना और विकास का श्रेय विदेशी ईसाई मिशनरियों और ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रशासन को जाता है। उत्तर प्रदेश में 80 विश्वविद्यालय हैं, जिसमें केन्द्रीय विश्वविद्यालय, राज्य विश्वविद्यालय, मानित विश्वविद्यालय, वाराणसी और कानपुर में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गोरखपुर और रायबरेली में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ में भारतीय प्रबन्धन संस्थान, इलाहाबाद में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान तथा भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, लखनऊ में राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, चिकित्सा विश्वविद्यालय, प्राविधिक विश्वविद्यालय सहित कई पॉलिटेक्निक, इंजीनियरिंग कॉलेज और औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान शामिल हैं।

भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार उत्तर प्रदेश में शैक्षणिक संस्थानों, कृषि विज्ञान केन्द्रों एवं ग़ैर सरकारी संस्थाओं द्वारा संचालित कुल 38 सामुदायिक रेडियो केन्द्र प्रसारण में सक्रिय हैं। इनमें 20 सामुदायिक रेडियो केन्द्रों का संचालन शैक्षणिक संस्थाओं द्वारा किया जा रहा है। यह तथ्य रेखांकित करना जरूरी है कि अब तक उत्तर प्रदेश में सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के लिए 168 लाइसेंस प्राप्त होने के बावजूद सिर्फ 38 सामुदायिक रेडियो केन्द्रों का संचालन संतोषजनक नहीं कहा जा सकता। यही कहा जा सकता है लाइसेंस प्राप्त करने वालों द्वारा या तो लाइसेंस प्राप्त होने के बाद उनके संचालन में रुचि नहीं दिखाई गई या फिर शुरूआत के बाद चुनौतियों का सामना न कर पाने के कारण उनका संचालन बंद हो गया । वर्तमान में उत्तर प्रदेश के 8 प्रशासनिक मंडल मुख्यालयों पर स्थित 9 विश्वविद्यालयों द्वारा सामुदायिक रेडियो केन्द्रों का संचालन किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश के जिन मंडल मुख्यालयों पर स्थित विश्वविद्यालयों में सामुदायिक रेडियो स्थापित एवं उनके द्वारा संचालित है उनमें अलीगढ़ मंडल के मुख्यालय अलीगढ़ में मंगलायतन विश्वविद्यालय, अयोध्या मंडल के मुख्यालय अयोध्या में नरेंद्र देव कृषि एवं प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय, आगरा मंडल के मुख्यालय आगरा में डॉ भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, कानपुर मंडल के मुख्यालय कानपुर में रामा विश्वविद्यालय, प्रयागराज मंडल के मुख्यालय प्रयागराज में सैम हिगिम्बॉटम कृषि विश्वविद्यालय, लखनऊ मंडल के मुख्यालय लखनऊ में किंग जॉर्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय एवं बाबू बनारसी दास विश्वविद्यालय, मेरठ मंडल के मुख्यालय मेरठ में विश्वविद्यालय और मुरादाबाद मंडल के मुख्यालय मुरादाबाद में तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय शामिल हैं।

उत्तर प्रदेश में सामुदायिक रेडियो का विवरण

क्रम संख्या	श्रेणी	संख्या
1	शैक्षिक सामुदायिक रेडियो	20
2	अन्य सामुदायिक रेडियो	18
3	बंद सामुदायिक रेडियो	168
योग		**206**

तालिका संख्या 1.2 : उत्तर प्रदेश में सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के आंकड़े

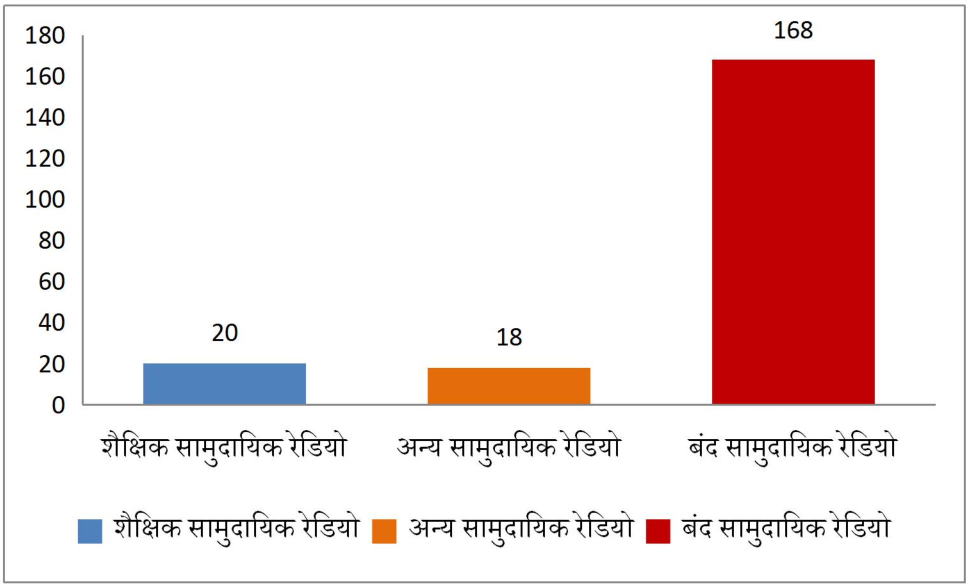

ग्राफ संख्या 1.2 : उत्तर प्रदेश में सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के आंकड़े

1.21 अध्ययन का औचित्य

वंचित एवं उपेक्षित समुदायों को सदैव से अपने अंतर्मन से भावों को दुनिया के सामने लाने में संचार माध्यमों की समस्या रही है। मुख्यधारा के संचार माध्यमों की अपनी बाध्यताऐ रही हैं। वंचित, शोषित एवं उपेक्षित समुदाय की कहानियों को कवर करने में कभी स्थान और समय की किल्लत है तो कभी अपनी टीआरपी को बनाये रखने के लिए मनमाफिक कहानी के चयन की चाहत रही है। विश्व के अलग अलग देशों के साथ साथ हमारे देश में भी समुदाय की कहानियों को समुदाय की भाषा में कहने के लिये एक सामुदायिक मंच की तलाश थी जिसके लिए लंबे समय से संघर्ष किया जा रहा था। जिसे सामुदायिक रेडियो आंदोलन के रूप में जाना जाता है। इस आंदोलन को ताकत तब मिली जब 1995 में सर्वोच्च न्यायालय ने एक ऐतिहासिक फैसला देते हुए कहा कि वायु तरंगे सार्वजनिक संपत्ति हैं। सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के बाद सरकार सक्रिय हुई। उसने 2002 के आखिर में सरकार ने समुदाय के लोगों

के लिए एफएम का दरवाजा खोला। सबसे पहले देश के 17 उच्च शैक्षणिक संस्थानों ने सामुदायिक रेडियो के लाइसेंस के लिए आवेदन किया। जिसमें अन्नामलाई विश्वविद्यालय से लेकर सत्यजीत रे टेलीविजन ऐंड फिल्म इंस्टीट्यूट और भारतीय जनसंचार संस्थान सहित जामिया मिलिया इस्लामिया तक शामिल हैं। 2003 के प्रारम्भ तक भारत सरकार ने सामुदायिक रेडियो का संचालन डॉ0 हरिओम श्रीवास्तव द्वारा तैयार किए गए सामुदायिक रेडियो नीति 2002 के अन्तर्गत किया बाद में उसे संशोधित कर सामुदायिक रेडियो नीति 2006 अधिसूचित की गयी।

जब शोधकर्ता ने सामुदायिक रेडियो से संबंधित शोध कार्य के बारे मेंगैर सरकारी संगठनों(NGO) एवंकृषि विज्ञान केन्द्रों (KVK)के लिए भी सामुदायिक रेडियो के लाइसेंस की अनुमति मिल चुकी थी। शोधकर्ता अपनी शोध समस्या के चयन के अंतिम निर्णय तक पहुंचने से पहले शैक्षणिक संस्थानों, गैरसरकारी संगठनों एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो पर आधारित पुस्तकों, शोधपत्रों, शोधकर्ताओं के शोध प्रबंधों एवं समाचारपत्र, पत्रिकाओं समेत इंटरनेट पर उपलब्ध साहित्य सामग्री का अवलोकन किया। सामुदायिक रेडियो पर साहित्य के अवलोकन के पश्चात शोधकर्ता को ज्ञात हुआ कि जिस शैक्षणिक क्षेत्र को भारत सरकार ने सामुदायिक रेडियो के लाइसेंस के लिए सबसे पहले अधिकृत किया था उस परिघटना के 12 वर्षो के बाद भी उस क्षेत्र में सामुदायिक रेडियो के चलन, उसकी उपयोगिता उसकी चुनौतियां एवं उसकी संभावनाओं पर केंद्रित कोई गहन अध्ययन नहीं हुआ है। इसलिये शोधकर्ता ने उच्च शिक्षा में सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की वस्तुस्थिति एवं उनके चलन की प्रकृति, उनके संचालन में चुनौतियां तथा उन चुनौतियों से निपटने की रणनीति एवं भविष्य के सामुदायिक रेडियो की संभावनाओं का पता लगाने के लिए इस शोध समस्या का चयन किया है।

1.22 समस्या का कथन

उपरोक्त पृष्ठभूमि के आलोक मं शोधकर्ता द्वारा चयनित शोध समस्या निम्नांकित है। सामुदायिक रेडिया : उच्च शिक्षा में चलन एवं संभानाएँ

1.23 संक्रियात्मक परिभाषाएँ

शोध समस्या में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों की संक्रियात्मक परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं।

सामुदायिक रेडियो : शोध में सामुदायिक रेडियो से तात्पर्य उन सामुदायिक रेडियो केंद्रों से है, जो उत्तर प्रदेश के विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित किये जा रहे हैं।

उच्च शिक्षा : शोध में उच्च शिक्षा से तात्पर्य उन छात्र एवं छात्राओं से है जो उत्तर प्रदेश के विश्वविद्यालयों में स्नातक एवं परास्नातक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत हैं।

चलन: शोध में चलन से तात्पर्य उन सामुदायिक रेडियो केंद्रों के संचालन एवं उनकी कार्यप्रणाली से है जो उत्तर प्रदेश के विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित किये जा रहे हैं।

संभावनाएं : शोध में संभावनाएं से तात्पर्य सामुदायिक रेडियो की उस मॉडल से है। जिसका उपयोग गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा में सार्थक भूमिका निभा सकता हैं।

1.24 प्रयुक्त संचार सिद्धान्त

प्रस्तुत शोध समस्या एक सामाजिक स्थिति का अध्ययन है। शोध समस्या के गहन अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने स्वनिर्मित प्रश्नावली, अर्ध संरचनात्मक साक्षात्कार एवं फोकस समूह चर्चा से प्राथमिक आंकड़ों को संग्रहित किया है। इस समस्या को समझने के लिए संचार के निम्नलिखित सिद्धांतों का अनुप्रयोग किया गया है।

संचार शास्त्री काट्ज़ एवं डेविसन के The Uses And Gratification Theory के साथ साथ Development Communication Theory एवं Democratic Participant Theory का प्रयोग किया गया है।

The Uses and Gratification Theory arose out of the studies which shifted their focus from what the media do to the people to what people do with the media. The question asked is, how do people use the mass media and why the term 'Uses' approach and assures that audiences are active and willingly expose themselves to media and the most potent of mass media content cannot influence. An individual who has 'no use' for it in the environment in which be lives. The uses of mass media are dependent on the perception, selectively and previously held belief, values and interest of the people. The Term 'Gratification' refers to the rewards and satisfaction experienced by Audiences After the use of media, it helps to explain motivations behind media useAnd habits of media use- Davison finding make more sense if communications are interpreted as a link between man and his environment.

He suggests that Communication effects can be explained in terms of the role they play in enabling people to bring about more satisfactory relations between them selves and the world around them.

Development Communication Theory has led to the birth of a new approach whereby communication is used to carry out development tasks in line with nationally established policy- The major thrust of development communication theories has been on the use of Media as A support to national development programme.

Democratic Participant Media Theory relates to the needs, interests and aspirations of the active receivers in a political society- It is concerned with the right to information, the right to answer back and the right to use the means of communication for interaction in the small scale settings of the community.

❖❖❖

साहित्य पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

साहित्य समीक्षा या साहित्य का पुनरावलोकन किसी भी शोध अध्ययन की नींव होती है। शोध कार्य क्षेत्र में शोध विषय से सम्बन्धित संपादित हो चुके शोध अध्ययनों को समझने का एक मात्र साधन साहित्य की समीक्षा यानी साहित्य का पुनरावलोकन ही है। शोध समस्या के चयन में साहित्य समीक्षा की मुख्य भूमिका रहती है। शोध कार्य मे तार्किकता एवं उद्देश्यपरकता को विकसित करने का मुख्य मार्ग सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन है, जो कि शोधार्थी को शोध हेतु मार्ग प्रदान करता है।

2.2 साहित्य का वर्गीकरण

सामुदायिक रेडियो एवं उच्च शिक्षा से सम्बन्धित साहित्य की गहनतम खोज के उपरान्त प्राप्त सामग्री यथा पुस्तकों, शोध-पत्रिकाओं,शोधपत्रों, शोध आलेखों, शोध प्रबंधों तथा वेबसाइटों को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है।

सामुदायिक रेडियो पर भारत में अध्ययन

सामुदायिक रेडियो पर विदेशों में अध्ययन

2.2.1 सामुदायिक रेडियो पर भारत में अध्ययन

- **Saini, Rachna. (2013)** ने अपने शोध पत्र Historic Perspective of Community Radio in India में बताया है कि भारत में सामुदायिक रेडियो आंदोलन, अन्नामलाई विश्वविद्यालय में पहले सामुदायिक रेडियो की स्थापना के साथ शुरू हुआ। हालांकि सामुदायिक रेडियो दुनिया भर में विकास संचार का स्थापित हिस्सा है। विशेष रूप से अल्प विकसित और विकासशील समाजमें हाशिए के लोगों की चिंताओं को आवाज देने में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण है। सर्वाच्च न्यायालय के फैसले के बाद भारत में सामुदायिक रेडियो के एजेंडे को तेजी से आगे बढ़ाया जा रहा है। यह शोध पत्र भारत में सामुदायिक रेडियो की यात्रा की पड़ताल करता है और भारत के लिए इसके प्रभावों पर संक्षेप में चर्चा करता है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Singha, Aravind Everett M. Rogers (1998)** ने अपने शोध पत्र Community Case Study of the Effects ofA Radio Soap Opera on Gender Equality, Family Size, And Individual/Collective Efficacy in India में बताया है कि एक अत्यधिक लोकप्रिय मनोरंजन शिक्षा सोप ओपेरा, तिनका तिनका सुख (हैप्पीनेस लाइज इन स्मॉल थिंग्स) का लैंगिक समानता, परिवार नियोजन पर क्या प्रभाव है, इस कार्यक्रम को लिंग समानता, परिवार नियोजन और व्यक्तिगत/सामूहिक प्रभावकारिता को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किया गया है। केस स्टडी में साक्षात्कार, फोकस समूह परिचर्चा एवं अवलोकन प्रत्यक्ष द्वारा डेटा एकत्रित किया गया था। अध्ययन के निष्कर्ष बताते है कि इस कार्यक्रम ने शिक्षको एवं श्रोताओं को रेडियो कार्यक्रमों की संरचना को समझने में मदद की। जिससे सामुदायिक रेडियो अपने श्रोताओं में प्रभाव पैदा करने में सफल हो सका। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **David, Frohlich. (2019)** ने अपने शोध पत्र Applying Digital Story telling Technology To Community Radio In India में बताया है कि स्टोरी बैंक परियोजना ने हाल ही में विकासशील देशों में सूचना साझा करने के लिए डिजिटल कहानी कहने की तकनीक के अनुप्रयोग का पता लगाना शुरू किया है। इंटरेक्शन डिजाइनरों, नृवंशविज्ञानियों और कंप्यूटर वैज्ञानिकों की एक बहु-विषयक टीम एक प्रणाली के डिजाइन के लिए उपयोगकर्ता-केंद्रित दृष्टिकोण अपना रही है जो कि दक्षिण भारत में एक विशिष्ट ग्रामीण समुदाय के लिए उपयोगी होना चाहिए। इसमें विकसित की जा रही तकनीक और इसे विकसित करने के तरीकों में कई चुनौतियां शामिल हैं।सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Bala, Lakhendra. (2015)** ने अपने शोध पत्र Community Radio in India:A Study of Its Effectiveness And Community Participation में बताया है कि यह अध्ययन सामुदायिक रेडियो की समुदाय के लिए प्रभावशीलता के बारे में चर्चा करता है। यह

भारत में सामुदायिक रेडियो के कार्यक्रमों में समुदाय की भागीदारी की पड़ताल करता है। तथा सामुदायिक रेडियो की प्रभावशीलता की समीक्षा करके प्रसारक और श्रोताओं के बीच सूचना के अंतर को दर्शाता है। शोध अध्ययन में समुदाय की जरूरतों और आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भविष्य के सामुदायिक रेडियो नीतियों की सिफारिशें भी करता है। चूंकि संचार, मानव जीवन के मौलिक आवश्यकताओं में से एक है। जिसे सामुदायिक रेडियो ने पहले से कहीं अधिक परिष्कृत और सुलभ बना दिया है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Kaushal, Nandita. (2018)** ने अपने शोध पत्र Community Radio in India: An Information And Communication Technology Tool for Participatory Development में बताया है कि, संचार के कई माध्यम हैं उनमें से रेडियो एक सशक्त माध्यम है। सामुदायिक रेडियो धीरे-धीरे समुदायों के सामाजिक जीवन को प्रभावित करने वाले एक प्रभावशाली माध्यम के रूप में उभरा है। सामुदायिक रेडियो एक गैर-लाभकारी तंत्र है जिसका व्यापक उद्देश्य सामुदायिक कल्याण और विकास को बढ़ावा देना है। सामुदायिक रेडियो सहभागी विकास के लिये व्यक्ति और समुदाय दोनों के लिए बेहद फायदेमंद हैं। सामुदायिक रेडियो सेवा दुनिया भर में लोकप्रिय है। भारत में सामुदायिक रेडियो सेवाओं का क्रमिक विकास हुआ है। वर्तमान में देश के विभिन्न राज्यों में लगभग 200 सामुदायिक रेडियो स्टेशन स्थापित हैं। कई सामुदायिक रेडियो स्टेशन सराहनीय कार्य कर रहे हैं। अध्ययन से पता चलता है कि सामुदायिक रेडियो सेवाएं अभी भी शैशवावस्था में हैं और इन्हें प्रभावी बनाने के लिये ईमानदार, सच्चे आशावादी इरादों और कार्यात्मक प्रयासों की आवश्यकता है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Dr. Nair, Pradeep. (2012)** ने अपने शोध पत्र Community Radio in India : Scripting a New Role for Development में बताया है कि भारत में सामुदायिक रेडियो दूर-दराज के क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिये वरदान है। यह शोध पत्र ऐतिहासिक तथ्यों के

साथ भारत में सामुदायिक प्रसारण के मौजूदा ढांचे की गहन जांच करता है। इस पत्र में सामुदायिक रेडियो की पृष्ठभूमि, कानूनी और वित्तीय पहलू, नीतिगत हस्तक्षेप, सरकार और कॉर्पाोरेट हित के बारे में चर्चा की गयी है। भारत में सामुदायिक रेडियो को सामुदायिक भागीदारी उपकरण के रूप में स्थापित करने के लिए सिफारिशंो की गयी हैं। अध्ययन में सामुदायिक रेडियो के कार्यक्रमों के डिजाइन, निर्माण एवं प्रसारण में समाज के वंचित वर्गों की भागीदारी और उनके हितों पर चर्चा की गयी है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Sethi, Debabrata. (2017)** ने अपने शोध पत्र Community Radio For Location Specific Knowledge Management In Rural India में बताया है कि, सामुदायिक रेडियो ने ग्रामीण भारत में विशिष्ट ज्ञान साझा करने के लिए एक आशाजनक मीडिया के रूप में अपनी क्षमता साबित की है। देश में देर से प्रवेश के बावजूद सामुदायिक रेडियो स्थानीयता और मनोरंजन के साथ ज्ञान की अपनी अंतर्निहित प्रकृति के कारण कम समय में बहुत लोकप्रिय हो गया है। भारत सरकार ने इसकी क्षमता को देखते हुए, एनजीओ, कृषि अनुसंधान संगठनों और कृषि विज्ञान केन्द्रों को सामुदायिक रेडियो केंद्र स्थापित करने की अनुमति देने के लिए अपनी नीति में संशोधन किया है। पहले केवल शैक्षणिक संस्थानों को अनुमति थी। यह शोधपत्र विभिन्न विकासशील और विकसित देशों में सामुदायिक रेडियो की पहल और अनुभवों, उनके संचालन के तरीकों और उन समुदायों के सशक्तिकरण पर चर्चा करता है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Khan, Sadullah. (2016)** ने अपने शोध पत्र Community Radio for ODL in KKHSOU में बताया है कि, सामुदायिक रेडियो लोकतांत्रिक समाज के निर्माण में एक उभरता हुआ संचार उपकरण है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपने और अपने समुदाय के लिए जगह पाता है। सामुदायिक रेडियो कई अनसुनी आवाजों के लिए एक मंच प्रदान करता है और सहभागी विकास को सक्षम बनाता है। दूरस्थ शिक्षा में सामुदायिक रेडियो का उदय एक हालिया घटना है।

दूरस्थ शिक्षा में सामुदायिक रेडियो के सामने चुनौतीपूर्ण संभावनाएं हैं, क्योंकि यह न केवल शिक्षार्थियों के लिए बल्कि समाज के सदस्यों के लिए भी लाभ देने वाला है। इस शोध पत्र का उद्देश्य असम में सामुदायिक रेडियो की बढ़ती भूमिका को समझना है एवं असम में राज्य मुक्त विश्वविद्यालय में उपयोग किए जाने वाले सामुदायिक रेडियो (ज्ञान तरंग) की भूमिका को देखना है। यह शोध पत्र सामुदायिक रेडियो की सशक्त क्षमता को उजागर करने की कोशिश करता है। जिसने असम जैसे समस्याग्रस्त समाज के विकास में भूमिका निभाई है। जो आंतरिक प्रयासों और संघर्षो से परेशान है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Thomas, P. Ninan, Pradip. (2020)** ने अपने शोध पत्र Conflict And Community Radio In India में बताया है कि वंचित समुदायों के सामने आने वाले संघर्षो के समाधान के लिए भारत में सामुदायिक रेडियो के उपयोग की संभावनाओं की पड़ताल करता है। यह शोध पत्र उन चुनौतियों पर केंद्रित है, जिन्होंने भारत में सामुदायिक रेडियो आंदोलन को प्रभावित किया है, धार्मिक और सांप्रदायिक एजेंडा वाले संगठनों को लाइसेंस देना एक बड़ी चुनौती है। यह अध्ययन दलितों द्वारा सामुदायिक रेडियो के उपयोग की संभावनाओं एवं चुनौतियों पर चर्चा करता है तथा स्थानीय मूल्यों और आजीविका को मजबूत करने वाले सिद्धांतों के आधार पर भारत में सामुदायिक रेडियो की भूमिका की पड़ताल करता है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Bhatt, Ramnath. (2018)** ने अपने शोध पत्र Critical Research Priorities: Community Radio In India में बताया है कि भारत में सामुदायिक रेडियो के 16 साल के निरंतर संचालन के बाद भी अकादमिक क्षेत्र में बहुत कम ध्यान दिया गया है। देश भर में फैले 200 से अधिक सामुदायिक रेडियो स्टेशनों के साथ अनुसंधान के लिए समृद्ध गुंजाइश है। यह शोध पत्र एक व्यापक ढांचे का सुझाव देता है जिसके भीतर सामुदायिक रेडियो पर एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण के साथ शोध किया जा सकता है। प्रसारण के एक विशिष्ट स्तर के रूप

में सामुदायिक रेडियो की घटना को ऐतिहासिक रूप से 1990 के दशक के मध्य में सुप्रीम कोर्ट के एक प्रसिद्ध फैसले के बाद एयरवेव्स को मुक्त करने के रूप् में देखा गया है। हालाँकि, वास्तविकता यह है कि सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की शुरुआत करना अधिक जटिल और बहुआयामी है, सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Suhaib, Riaz., Israr. (2017)** ने अपने शोध पत्र Emergence ofA New Institutional Logic: Shaping the Institutionally Complex Field of Community Radio in India में बताया है कि भारत में सामुदायिक रेडियो के उद्भव के पांच चरण है। इस अध्ययन में उनको चित्रित किया गया है। जो तर्कशास्त्र के समस्याकरण से शुरू होते हैं और एक संस्थागत रूप से जटिल क्षेत्र के गठन के साथ समाप्त होते हैं। शोध पत्र इस पर प्रकाश डालते हैं कि इस तरह की प्रक्रिया कैसे संगठनात्मक रूपों में परिणित होती है जो तर्क और उभरते तर्क के बीच चल रहे संघर्ष को दर्शाती है। सामाजिक वस्तुओं के उद्भव पर नव-संस्थागत अध्ययन योगदान करते हैं और सिद्धांतकारों का ध्यान उस तरीके की ओर भी आकर्षित करते हैं जो सामाजिक दुनिया में उद्भव होता है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Dhanraj A, Patil. (2019)** ने अपने शोध पत्र Exploring the Subaltern Voices:A Study of Community Radio Reporters in Rural India में बताया है कि भारत में मीडिया क्रांति के बावजूद ग्रामीण समुदाय बेखबर, अनसुना और बेसुध रहे है। कौन पूछता है प्रश्न ? किसका मीडिया ? किसकी आवाज? इन प्रश्नों के उत्तर में क्या सामुदायिक रेडियो ने समुदाय के लिये कोई जगह बनाई ? अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि सामुदायिक रेडियो को न केवल समानता के माध्यम के रूप में, बल्कि सक्रिय उत्पादकों, भागीदारों और प्रबंधक के रूप में देखा जा सकता है। सामुदायिक रेडियो का सामुदायिक जुड़ाव और जिम्मेदारी ने मुख्यधारा के मीडिया के लिए चुनौतियाँ पैदा की है। जो सबाल्टर्न की आवाज़ों को स्वर देता है, जो अंततः

स्थानीय मुद्दों पर सामुदायिक संवाद और विचार-विमर्श की सुविधा प्रदान करता है। सामुदायिक रेडियो अपनी सामुदायिक पहचान को अपने तरीके से परिभाषित करने के लिए और आगे ले जा सकता है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Dutta, Ankuran. (2005)** ने अपने शोध पत्र Innovations in Community Radio: With Special Reference to India में बताया है कि सामुदायिक रेडियो भारत में जमीनी स्तर पर आवाजहीनों को आवाज देने के लिए एक प्रभावी माध्यम के रूप में उभरा है। भारत के सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने लाइसेंस प्राप्त करने की प्रक्रिया को सरल बनाया है, जिससे सामुदायिक रेडियो स्टेशनों की संख्या में वृद्धि हुई है। यह शोध भारतीय सामुदायिक रेडियो स्टेशनों की नवीन प्रथाओं की जांच करता है और इस क्षेत्र में संभावित नवाचारों के लिए क्षेत्रों की पहचान करता है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Dogra, Vikas. (2018)** ने अपने शोध पत्र Need Assessment Study for Community Radio Station of Himachal Pradesh University में बताया है कि भारत सरकार थ्ड फ्रीक्वेंसी सहित संचार अवसंरचना का उपयोग करने के लिए उत्सुक है निम्न शक्ति के ट्रांसमीटरों के माध्यम से संचालित सामुदायिक रेडियो स्टेशनों का प्रयोग स्थानीय समुदाय के विकास में किया जा सकता है। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय की पैनल बनाने की योजना तथा विभिन्न समुदायों तक पहुंचने और एकीकृत करने के अपने प्रयासों में यह माध्यम महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह अध्ययन समुदाय के सर्वेक्षण पर आधारित है। जिसे विश्वविद्यालय का सामुदायिक रेडियो सेवा देना चाहता है। अपने मीडिया के साथ संभावित श्रोताओं की जनसांख्यिकी प्रोफ़ाइल, उपभोग प्राथमिकताएं और सामुदायिक रेडियो में भाग लेने की उनकी इच्छा का पता लगाया गया है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Backhaus, Bridget. (2008)** ने अपने शोध पत्र News ByAny Other Name: Community Radio Journalism In India में बताया है कि सामुदायिक रेडियो पत्रकारिता एक सांस्कृतिक संसाधन है जो स्थानीय समुदायों की पुकार को आवाज देता है और मीडिया को लोकतांत्रिक बनाने के लिए काम करता है। भारत में सामुदायिक रेडियो पत्रकारिता को चुनौतियों का सामना करना पड़ता है सबसे महत्वपूर्ण यह है कि आधिकारिक तौर पर सामुदायिक रेडियो पत्रकारिता अस्तित्व में नहीं है। सरकारी नीति के अनुसार सामुदायिक रेडियो स्टेशनों पर किसी भी समाचार और समसामयिक सामग्री के प्रसारण पर प्रतिबंध है। अपने श्रोताओं की सेवा करने के बजाय सामुदायिक रेडियो स्टेशनों को एक अस्पष्ट विकास एजेंडे के लिए देखा जाता है। ऐसी परिस्थितियों में भारत में सामुदायिक रेडियो पत्रकारिता अपेक्षाकृत बेरोज़गार है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह पता करना है कि भारत में सामुदायिक रेडियो अपने श्रोताओं को प्रासंगिक जानकारी प्रदान करने के लिए प्रतिबंधों के साथ कैसे काम करते हैं। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Verma, Amit. (2022)** ने अपने शोध पत्र Community Radio : Our Media, Our Principles में बताया है कि हमारा मीडिया है तो हमारा ही सिद्धान्त होना चाहिए। सामुदायिक रेडियो प्रसारण एक नया और अनूठा क्षेत्र है जो अब भारत में वाणिज्यिक और पेशेवर प्लेयर्स के साथ मिलकर काम कर रहा है। इसे तीन महत्वपूर्ण विशेषताओं-सामुदायिक भागीदारी, गैर-लाभकारी और सामुदायिक स्वामित्व एवं प्रबंधन द्वारा पहचाना जाता है। सामुदायिक रेडियो सामाजिक न्याय का एक उपकरण है और सामुदायिक आवाज़ों के लिए एक मंच है। सामुदायिक रेडियो मुख्यधारा के मीडिया के आधिपत्य का मुकाबला करने और मीडिया की वाणिज्य-संचालित नकारात्मक प्रवृत्तियों से दूर जाने का प्रयास करता है। इसलिए प्रसारण के इस तीसरे स्तर के लिए अभ्यास संहिता बनाना आवश्यक हो जाता है ताकि यह मुख्यधारा के मीडिया का क्लोन न बन जाए। निष्कर्ष है कि भारत में नागरिक समाज, पत्रकारिता प्रथाओं और लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए सामुदायिक रेडियो क्षेत्र को उपयोगी मानता है। सामुदायिक रेडियो

और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Rani, Dr. Padma. (2015)** ने अपने शोध पत्र Perceived Effects Of Developmental Functions Of Community Radio Among Listeners In South India में बताया है कि यह अध्ययन दक्षिण भारत में श्रोताओं के बीच सामुदायिक रेडियो के विकासात्मक कार्यों के प्रभाव, विकास कार्यों का विश्लेषण, प्रोग्रामिंग सामग्री की गुणवत्ता का आकलन और सामुदायिक भागीदारी की प्रकृति का मूल्यांकन करने के व्यापक उद्देश्य के साथ किया गया है। अध्ययन ने शैक्षिक संस्थान के सामुदायिक रेडियो और एनजीओ के सामुदायिक रेडियो के प्रभावशीलता की तुलनात्मक अध्ययन में सामुदायिक रेडियो श्रोताओं की जनसांख्यिकी विशेषताओं एवं स्थानीय समुदाय की भागीदारी का आकलन किया गया। ज्ञात हुआ कि शैक्षिक संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्र शिक्षा के प्रति ज्यादा समर्पित थे। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Koradia, Zahir. Seth,Aaditeshwar. (2012)** ने अपने शोध पत्र PhonePeti: exploring the role of Answering machine system in A community radio station in India में बताया है कि सामुदायिक रेडियो स्टेशन कम दूरी के रेडियो स्टेशन हैं जो अपने आसपास के समुदायों की स्थानीय मीडिया की जरूरतों को पूरा करते हैं। एजेंडे को निर्धारित करने, स्थानीय लोगों की आवाज़ों को प्रसारित करने और उन्हें एक स्थानीय संचार माध्यम प्रदान करने में सामुदायिक भागीदारी इसकी विशेषता है। लेकिन लॉजिस्टिक कठिनाइयों के कारण इस दर्शन को व्यवहार में लाना कठिन रहा है, स्टेशन के कर्मचारी दस किलोमीटर की परिधि में फैले श्रोता तक नहीं पहुंच पा रहे हैं। हालांकि, मोबाइल फोन की उच्च पहुंच ने श्रोताओं के लिए रेडियो स्टेशनों के संचालन में भाग लेना आसान बना दिया है, लेकिन टेलीफोनी और रेडियो एकीकरण की क्षमता का न्यूनतम उपयोग किया गया है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Sertseyonas, Negash. (2018)** ने अपने शोध पत्र Role of Community Radio in Development में बताया है कि किसी भी देश की विकास प्रक्रिया में संचार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एक माध्यम के रूप में रेडियो कम समय में आसानी से आम जन तक पहुंच सकता है। रेडियो का लाभ यह है कि उपयोगकर्ताओं को साक्षरता की आवश्यकता नहीं होती है जबकि निवेश लागत कम होती है। गरीब और अनपढ़ लोगों की आजीविका को बेहतर बनाने में सामुदायिक रेडियो की बड़ी भूमिका हो सकती है। भारत में अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है, यहाँ सामुदायिक रेडियो का अत्यधिक महत्व है। इसलिए, सरकार ने गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ), और शैक्षणिक संस्थानों द्वारा संचालित सैकड़ों सामुदायिक रेडियो को लाइसेंस जारी किया। आंध्र प्रदेश के मेडक जिले में डेक्कन डेवलपमेंट सोसाइटी द्वारा संचालित संगम रेडियो पहले सामुदायिक रेडियो में से एक है। अध्ययन बताते है कि संगम रेडियो विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से गरीब और हाशिए की महिलाओं को अपने जीवन में सुधार करने के लिए प्रेरित कर रहा है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Dhar, Ravi K. Sharma, Rashmi. (2020)** ने अपने शोध पत्र Role of Community Radio in Enhancing the Basic Mathematical Skills of Citizens in India में बताया है कि यह अध्ययन समुदाय के सदस्यों के गणितीय कौशल के वर्तमान स्तर और उनके रेडियो सुनने के व्यवहार के साथ किया गया है, ताकि समुदाय के सदस्यों के बीच प्रसारित होने वाले रेडियो कार्यक्रमों की प्रकृति के लिए सिफारिशें की जा सकें। अध्ययन से पता चला है कि जहां समुदाय के सदस्य सरल गणितीय योगों को हल करने और अपने वेतन की गणना करने में सहज थे, उन्होंने ब्याज, प्रतिशत और माप के रूपांतरण की गणना में गणितीय कौशल के उपयोग में कठिनाइयों का अनुभव नहीं किया। अध्ययन में पता चला कि समुदाय के सदस्य बड़े पैमाने पर रेडियो सुनते थे और न केवल गणितीय कौशल समझने के लिये रेडियो कार्यक्रमों को सुनने के लिए उत्सुक थे, बल्कि अपनी दक्षताओं के आधार पर कार्यक्रमों में भागीदारी के इच्छुक भी थे। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के

लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Hemmige, Dr. Bhargavi. (2014)** ने अपने शोध पत्र The Role Of Community Radio In Social Change, Education And Entertainment में बताया है कि सामुदायिक रेडियो एक प्रकार की रेडियो सेवा है जो एक निश्चित क्षेत्र के हितों को पूरा करती है तथा ऐसी सामग्री प्रसारित करती है जो स्थानीय दर्शकों में लोकप्रिय है। जिसे अक्सर वाणिज्यिक या मास-मीडिया प्रसारकों द्वारा अनदेखा किया जाता है। शोधकर्ता ने सामुदायिक रेडियो पर अध्ययन मौजूदा प्रकाशित कार्यों और इसके हर पहलू से परिचित होने के लिए किया है। यह अध्ययन तमिलनाडु में कोंगु सामुदायिक रेडियो के कार्यक्रमों सामाजिक परिवर्तन, शिक्षा, मनोरंजन और इसके विभिन्न विकासात्मक पहलुओं पर किए गए है। अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तरों पर सामुदायिक रेडियो के विभिन्न पहलुओं से संबंधित प्रमुख अध्ययनों का संदर्भ लिया गया है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Koradia, Zahir.Achal, Premi. (2019)** ने अपने शोध पत्र Using Icts To Meet The Operational Needs Of Community Radio Stations In India में बताया है कि सामुदायिक रेडियो स्टेशन कम दूरी के एफएम रेडियो स्टेशन हैं जो अपने आसपास स्थित समुदायों की सूचना संबंधी जरूरतों को पूरा करने का प्रयास करते हैं। हालांकि सामुदायिक रेडियो की अवधारणा नई नहीं है मोबाइल फोन के व्यापक प्रसार ने सामुदायिक जुड़ाव के लिए सामुदायिक रेडियो में नए सिरे से रुचि पैदा की है। हालांकि सरकार सामुदायिक रेडियो के लिए सामग्री प्रबंधन और स्थापना की कम लागत सहित कई अन्य आईसीटी चुनौतियों का समाधान कर रही हैं। कम लागत वाले कमोडिटी हार्डवेयर पर ऑडियो प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के लिए ळत्प्छै आर्किटेक्चर प्रयोगात्मक सेटअप पर अध्ययन किया गया है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Verma, Amit. (2015)** ने अपने शोध पत्र Case Study of Community Radio: As An Emerging Platform to Discuss Developmental Issues in Rajasthan में बताया है कि एक माध्यम के रूप में रेडियो न केवल सूचना के प्रसार में बल्कि संस्कृति और राष्ट्र-निर्माण के प्रचार-प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। सामुदायिक रेडियो कम लागत से दूरदराज और वंचित क्षेत्रों को सूचना एवं ज्ञान प्रदान करता है। निष्कर्ष बताते है कि सामुदायिक रेडियो को न केवल चलाया जाना चाहिए बल्कि समाज के कल्याण के लिए इसे समृद्ध करना चाहिए। इस पत्र में शोधकर्ता ने कुल चार सामुदायिक रेडियो केन्द्रों (सीआरएस) द्वारा इसकी उपयोगिता पर चर्चा की है। राजस्थान के जयपुर, झुंझुनू, अलवर और सिरोही जिले के एनजीओ श्रेणी के दो स्टेशन और शैक्षिक श्रेणी के दो स्टेशन केस स्टडी के रूप में शामिल किए गए हैं। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Singh, Dr. Archana R.** ने अपने शोध पत्र Community Participation On Campus Radio : A Case Study Of Vivek High School 90.4 Fm में बताया है कि जो छोटे मीडिया बड़ी वैश्विक संस्थाओं के समानांतर बढ़ रहे हैं उन्हें सतर्क रहना होगा और अधिकतम सामुदायिक भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी ताकि यह बड़े समूहों के हाथों की कठपुतली न बन जाएँ। नागरिक पत्रकारिता और जमीनी स्तर की पत्रकारिता को सामुदायिक रेडियो की सबसे करीब माना जाता है। इस केस स्टडी का उद्देश्य सामुदायिक रेडियो के भागीदारी संचार पहलू की पहचान करना और सामग्री निर्माण की प्रणाली का अध्ययन करना था। निष्कर्ष में यह पाया गया कि सामुदायिक रेडियो स्टेशन कुछ हद तक सहभागी और सत्तावादी व्यवस्था का संतुलन है। छात्र एवं स्थानीय समुदाय के श्रोताओं का एक निकाय है लेकिन सामग्री निर्माण में उनकी भागीदारी नहीं है। समुदाय से संसाधन उत्पन्न करने के लिए कोई प्रयास नहीं किया जा रहा है इसलिए कि रेडियो स्कूल की संपत्ति है न कि श्रोताओं की। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Kapoor, Archana. (2018)** ने अपने शोध पत्र Community Radio And its Prospects in Education में बताया है कि रेडियो एक शक्तिशाली जन माध्यम है जो सूचित करता है, शिक्षित करता है, समावेशी है तथा समुदायों की स्थानीय पहचान को संरक्षित करता है और समाज के हाशिए के वर्गों तक पहुंचने और उन्हें सशक्त बनाने में मदद करता है। यह विकासशील देशों में प्रभावी हो सकता है, खासकर उन क्षेत्रों में जहां सूचना, ज्ञान और प्रौद्योगिकी की अधिक कीमत चुकानी पड़ती है। सामुदायिक रेडियो में वंचित छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, व्यावसायिक और कौशल प्रशिक्षण प्रदान करके शिक्षण संस्थाओं में मौजूद अंतर को भरने की क्षमता है। यह अध्ययन भारत में राष्ट्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी संचार परिषद (एनसीएसटीसी) द्वारा सामुदायिक रेडियो के साथ शुरू की गई शैक्षिक पहल पर प्रकाश डालता है। यह इंटरएक्टिव रेडियो इंस्ट्रक्शन को भी संबोधित करता है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Sally, D Berman. (2008)** ने अपने शोध पत्र The Return of Educational Radio में बताया है कि यह शोध पत्र दूरस्थ शिक्षा एवं रेडियो की पारंपरिक तकनीकों की जांच करता है, यह एशिया और अफ्रीका में शैक्षिक और सामुदायिक रेडियो के उपयोग के बारे में बताता है। इस अध्ययन में बताया गया है कि विकासशील देशों में दूरस्थ शिक्षा के लिए केवल पश्चिमी दृष्टिकोण को स्थापित करने के बजाय देशी अप्रोच होना चाहिए। यह सुझाव दिया गया है कि, विकसित दुनिया भी विकासशील देशों में रेडियो के उपयोग से बहुत कुछ सीख सकती है। निष्कर्ष यह कि, सामुदायिक रेडियो दुनिया भर में ग्रामीण एवं दूर-दराज के लोगों को शैक्षिक अवसर देने के साधन के रूप में अधिक प्रभावी है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Kaifia, Ancer Laskar. Bhattacharya, Biswadeep. (2021)** ने अपने शोध पत्र Community Radio Stations Production Responses To Covid-19 Pandemic In India में बताया है कि ब्वटप्क्.19 महामारी और देशव्यापी लॉकडाउन ने सामुदायिक रेडियो

प्रसारण को पहले से अधिक महत्वपूर्ण बना दिया है। अध्ययन में बताया गया है कि महामारी के दौरान भारत में चयनित सामुदायिक रेडियो स्टेशनों द्वारा अपनाई गई प्रोग्रामिंग के प्रकार और नकली समाचारों से लड़ने के तरीके का पता लगाया गया। सीआर स्टेशनों द्वारा दोतरफा संचार का उपयोग करके Covid-19 में नकली समाचार और मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित अधिक समर्पित प्रोग्रामिंग सेवाओं की पहचान की गयी। देशव्यापी तालाबंदी के दौरान अपने प्रसारण में बढ़ती घरेलू हिंसा और मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दों को भी उजागर किया गया। ज्ञात हुआ कि नकली समाचार उन समुदायों में तेजी से फैलते हैं जहां अधिकांश सदस्य निरक्षर हैं और तथ्य-जांच की जानकारी तक उनकी पहुंच बहुत कम है। सीआर स्टेशन वास्तव में व्यक्तिगत कहानी कहने, लोक और पारंपरिक मीडिया का उपयोग करके, और जानकारी को प्रमाणित करने के लिए COVID-19 योद्धाओं को शामिल करके नकली समाचारों को सत्यापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Jayprakash, Shoesmith. (2015)** ने अपने शोध पत्र Community Radio:A Tool Of Development में ऊटी सामुदायिक रेडियो स्टेशन द्वारा किए जा रहे डेवलमेंट कम्युनिकेशन को शोध पत्र में रेखांकित किया गया है। शोध पत्र में चर्चा की गयी है कि कृषि, स्वास्थ्य और रोजगार के अवसरों के बारे में सामुदायिक रेडियो माध्यम से ट्रालबल्स से क्षेत्र में रहे लोगों को सूचना प्रदान की जा रही है। इस क्षेत्र में ट्राइबल्स के समावेशी विकास के लिए कम्युनिटी रेडियो को एक प्रभावी उपकरण के तौर पर किए जा रहे उपयोग को रेखांकित किया गया है कम्युनिटी मीडिया और कम्युनिटी रेडियो पर किए जा रहे शोधों में यह शोध पत्र एक महत्वपूर्ण साहित्य साबित हो सकता है। सामुदायिक रेडियोऔर शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Pandey, Vandana. Yadav, Krishna. (2012)** ने अपने शोध पत्र Comprehensive Discussion Of The History, Vision, PhilosophyAnd Status Of Community

Radio Is Given में बताया है कि सामुदायिक रेडियो का इतिहास क्या है, दृष्टि, दर्शन एवं वस्तु स्थिति क्या है तथा उच्च शिक्षा में उन्नयन एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए सरकार द्वारा भारत के प्रत्येक ब्लाक में कम से कम एक सामुदायिक रेडियो केन्द्र स्थापित करने की योजना की विवेचना की है। शोध पत्र में सरकार के प्रयासो की सराहना की गयी है और साथ ही यूरेस्कों के उस प्रयास को भी सराहा गया है। जिसमें बनस्थली विद्यापीठ राजस्थान में 150 कार्मिकों को प्रशिक्षित कर सामुदायिक रेडियो के लिए योग्य बनाना है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Sack, Abhijeev. (2012)** ने अपने शोध पत्र Media As A Catalyst for Higher Education में बताया है कि सामुदायिक रेडियो उच्च शिक्षा के लिए प्रभावी भूमिका निभा सकता है, भारतीय जनगणना 2011 के अनुसार लगभग 75 प्रतिशत लोग शिक्षित है। यहां शिक्षित से अर्थ उस व्यक्ति से है जो सिर्फ अपने नाम का हस्ताक्षर बना सकता है। अध्ययन में बताया गया है कि हमारी औपचारिक शिक्षा पद्धति असफल साबित हुई है। ऐसे में हमें उच्च शिक्षा में मुद्रित पाठ्यक्रम के साथ सामुदायिक रेडियो का उपयोग करना चाहिए ताकि उच्च शिक्षा की तस्वीर बेहतर हो सकें। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Barman, Saila D. (2008)** ने अपने शोध पत्र The Return of Education Radio में बताया है कि भारत जैसी विविधता भरी भौगोलिक परिस्थितियों में उच्च शिक्षा के केन्द्रों में शिक्षकों को भारी कमी है वहां सामुदायिक रेडियो के माध्यम से इस कमी को पूरा किया जा सकता है तथा विद्यार्थियों को मुद्रित सामग्री के साथ-साथ ऑडियों, लेक्चर्स, चर्चा, परिचर्चा के माध्यम से ज्ञान प्रदान कर भी शिक्षित किया जा सकता है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Khan, Sadullah. (2012)** ने अपने शोध पत्र Role of Community Radio in Rural Development में बताया है कि ग्रामीण विकास मे ें सामुदायिक रेडियो की भूमिका प्रभावी है। सामुदायिक रेडियो 'वायस ऑफ आजमगढ' कुंजाल पक्षी' कच्छ, 'चला हो गांव में' और 'मंदाकिनी की आवाज' का हवाला देते हुये बताया है कि सामुदायिक रेडियो, स्थानीय लोगो को उनके कर्तव्यों एवं अधिकारों के प्रति जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। अध्ययन में बताया गया है कि सामुदायिक रेडियो लोक तंत्र की सबसे बुनियादी इकाई के लिए संचार का सबसे सशक माध्यम है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Pawar, Disha. (2013)** ने अपने शोध पत्र Women's Community Radio for Power Reduction में बताया है कि भारत की आबादी में 50 प्रतिशत भागीदारी रखने वाली महिलायें आज भी इस पितृसत्तात्मक समाज में अन्याय और समानता की शिकार है। अगर उन्हें समाज में सम्मान और बराबरी चाहिए तो अभिव्यक्ति का सामुदायिक मंच मिलना चाहिए। सामुदायिक रेडियो संचार का एक सशक्त माध्यम हो सकता है जिसके माध्यम से शिक्षा का विकेन्द्रीकरण किया जा सकता है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Elise, Bonita. (2010)** ने अपने शोध पत्र Community Radio And Campaign में बताया है कि सामुदायिक रेडियो समाज में वंचित एवं उपेक्षित वर्गो को समाज की मुख्य धारा में लाने के लिए एक वरदान साबित हो सकता है। चाहे वो शिक्षा का मामला हो, नशामुक्ति हो, रोजगार या फिर प्राकृतिक आपदा। प्रत्येक भूमिका में सामुदायिक रेडियो उपयोगी है। अध्ययन में पश्चिम बंगाल के सामुदायिक रेडियो की उपयोगिता का हवाला भी दिया गया है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Bhanawat, Dr S. (2009)** ने अपनी पुस्तक Electronic Media में रेडियो के उद्भव विकास एवं उपयोगिता पर विस्तृत चर्चा की है पुस्तक में सतत् विकास और शिक्षा में ऑडियो एवं ऑडियो विजुअल और संचार की आवश्यकता को बखूबी रेखांकित किया गया है। इस पुस्तक में सामुदायिक रेडियो के इतिहास एवं विकास पर चर्चा की गई है। पुस्तक सामुदायिक रेडियो पर शोध कार्य कर रहे विद्यार्थियों के लिये उपयोगी है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह पुस्तक उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Nanda, Dr Vartika. (2009)** ने अपने शोध पत्र New Age Media में सामुदायिक रेडियो को नये जमाने का मीडिया नाम से सम्बोधित किया है साथ ही शिक्षा और जागरूकता में सामुदायिक रेडियो के योगदान पर एक केस स्टडी प्रस्तुत की है जिसमें समुदायिक रेडियो स्टेशनों द्वारा किये जा रहे उत्कृष्ट कार्यो को रेखांकित किया गया है। सामुदायिक रेडियो की समाज के विकास में भूमिका को रेखांकित किया गया है सामुदायिक रेडियो के विषय में जानकारी प्राप्त करने और शोध कार्य की प्रस्तवना निर्धारण मं़े यह शोध अध्ययन उपयोगी है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Mathur, Shyam. (2009)** ने अपने शोध पत्र Community Radio में सामुदायिक रेडियो के उद्भव, विकास एवं भारत में इसकी भूमिका पर प्रकाश डाला है। अध्ययन में उच्च शिक्षा एवं सामुदायिक विकास में सामुदायिक रेडियो की सार्थकता एवं उसके द्वारा किए जाने वाले विकासात्मक संचार की बात कही गयी है। तथा इसकी प्रभावी भूमिका के लिये इसे अत्यध्कि स्वतंत्र बनाने की सिफारिश की गयी है सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Pavarala, Vinod. Malik, Kanchan. (2007)** ने अपने शोध पत्र Other Voices: The Struggle for Community Radio in India में सामुदायिक रेडियो की विकास यात्रा

का वर्णन किया गया है साथ ही इसकी नीतियों और परिचालन में आने वाले विरोधाभास का भी वर्णन किया गया है। सामुदायिक रेडियो का बाइबिल माना जाता है। पुस्तक में सामुदायिक रेडियो के सामने उत्पन्न चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने के लिये समाधान भी सुझाया गया है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह पुस्तक उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Kumar, Kevel J. (2015)** ने अपने शोध पत्र Mass Comminication में बताया है कि सन् 2002 के आखिर में भारत सरकार ने समुदाय का, समुदाय के द्वारा एवं समुदाय के लिए एफ0एम0 का दरवाजा खोला, हालांकि शुरूआत में बहुत उत्साहवर्धक परिणाम सामने नहीं आये अलबत्ता देश के 17 उच्च शैक्षिक संस्थाओं ने सामुदायिक रेडियोके लिये आवेदन किया। जिसमें जामिया मिलिया इस्लामिया, इग्नू, अन्नामलाई विश्वविद्यालय, पूणे यूनिवर्सिटी और राष्ट्रीय महत्व के मीडिया संस्थान जैसे-FTII, SRFTI, IIMC शामिल थे। सरकार ने ग्यारहवीं पंच वर्षीय योजना में 4 हजार सामुदायिक रेडियो खोलने का लक्ष्य रखा है सरकार के इस कदम से उच्च शिक्षा की तस्वीर बेहतर हो सकती है। लेकिन अबतक यानि 2015 तक केवल 179 सामुदायिक रेडियो ही चलन में है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Jaiswal, B. (2010)** ने अपने शोध पत्र Study on Higher Education & Development में बताया है कि भारत में उच्च शिक्षा की स्थिति और उच्च शिक्षा के विकास पर विरोधाभास है नीतियों एवं व्यावहारिकता में अंतर है अध्ययन में इस अंतराल को रेखांकित किया गया है। भारत मं े उच्च शिक्षा की गुणवत्ता और उसमें सुधार के प्रयासों की चर्चा की गई है साथ ही उच्च शिक्षा के बेहतर मॉडल को लेकर विरोधाभासों को भी रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। मीडिया और उच्च शिक्षा प्रसार पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध उपयोगी है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Tarafdar, Supratit. (2015)** ने अपने शोध पत्र Role of Community Radio in India में बताया है कि वंचित एवं हाशिये पर खड़े सामुदायों के लिये सामुदायिक रेडियो एक चमत्कारिक मंच है। यह शोध पत्र भारत में विशेष रूप से छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में सामुदायिक रेडियो की भूमिका का अवलोकन करता है। भारत में सामुदायिक रेडियो सेवाएं प्रदान करने वाले गैर सरकारी संगठनों की भूमिका का भी वर्णन किया गया है। शोध पत्र में आकाशवाणी और एफएम पर सामुदायिक रेडियो की उपयोगिता का विश्लेषण किया गया है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Bhattacharya, Ritam. (2021)** ने अपने शोध पत्र The Role Of Community Radio Stations In Combating Covid-19 In India esa बताया है सामुदायिक रेडियो स्टेशनों ने कोविड-19 महामारी के दौरान वंचित समुदायों की किस प्रकार मदद की थी। विभिन्न समाचार पत्रों और पत्र-पत्रिकाओं द्वारा COVID-19 के समय प्रकाशित विभिन्न समाचारों का हवाला देते हुए, बताया है कि सामुदायिक रेडियो ने समाज के निम्न-आय वर्ग के लोगों को लॉकडाउन के कठिन दौर से निपटने में मदद की है। भारत के विभिन्न हिस्सों के सामुदायिक रेडियो स्टेशनों ने जनता के बीच जागरूकता फैलाने में मदद तथा समाज के विभिन्न मुद्दों को भी संबोधित किया है। यह अध्ययन यह पता लगाने की कोशिश करता है कि COVID-19 महामारी के दौरान उन मुद्दों को संबोधित करने में सामुदायिक रेडियो की भूमिका महत्वपूर्ण थी। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Jaisawal, B. (2010)** ने अपने शोध पत्र Indian Higher Educ11ation in India : A Paradox ने अपनी पुस्तक में भारत में उच्च शिक्षा की वस्तु स्थिति और उच्च शिक्षा की नीतियों में विरोधाभास को रेखांकित किया है। अध्ययन में भारत में उच्च्च शिक्षा की गुणवत्ता, उपलब्धता और उसमें सुधार के प्रयासों की चर्चा की गई है। साथ ही उच्च शिक्षा के लिये समग्र नीति की आवश्यकता पर बल दिया है। प्रस्तुत शोध पत्र उच्च शिक्षा में मीडिया को एक

उत्प्रेरकबल के रूप में मान्यता देता है, विशेषकर रेडियो को। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Dr. Pradhan, Pitabas. (2012)** ने अपने शोध पत्र Community Radio As An Alternative Tier of Broadcasting: The Challenges And Prospects in India में बताया है कि सामुदायिक रेडियो शब्द, भारतीय लोगों के मन में प्रतिक्रिया का मिश्रित भाव पैदा करता है। कभी-कभी प्रतिक्रियाएँ आशावादी होती हैं जैसे वो उन सामुदायिक रेडियो स्टेशनों को याद करता है, जिन्होंने शानदार सफलता हासिल की है। लेकिन कभी-कभी प्रतिक्रियाएं निराशाजनक होती हैं जब उसे दर्जनों अलोकप्रिय और उपेक्षित सामुदायिक रेडियो स्टेशनों के बारे में लोगों को पता चलता है। यह अध्ययन सामुदायिक रेडियो के विकास के लिए चुनौतियाँ एवं अवसर के अलावा यह भी पता लगाता है कि क्या सामुदायिक रेडियो का प्रयोग समुदाय में गरीबी में कमी, लोकतंत्र का सशक्तिकरण एवं सामुदाय के सर्वांगीण विकास में योगदान कर रही है ? इस शोध पत्र का निष्कर्ष यह है कि सामुदायिक रेडियो के भारत में सामाजिक-सांस्कृतिक और भाषाई विविधताओं में एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में विकसित होने की जबरदस्त संभावनाऐं है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **श्रीवास्तव, डॉ साधना. (2015)** ने अपने शोध प्रबंध भारत में सामुदायिक रेडियो की सामाजिक परिवर्तन में भूमिका एवं प्रभाव का अध्ययन में बताया है कि एक समुदाय में अनेक तरह के लोग होते हैं सभी को सामुदायिक रेडियो स्टेशन में आने की अनुमति होती है वे अपने-अपने हिस्से की जानकारी एक दूसरे से बाँट सकते हैं। महिलाओं को अपनी कहानी, अपनी आशाएँ, अपनी सफलताएं प्रसारित करने का मौका मिलता है। पिछड़े एवं वंचित वर्ग के लोगों को बोलने की, अपनी बात व्यक्त करने की आज़ादी होती है। शोध से पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में किसान अनेक जतन कर के से कृषि करते हैं, कहीं पानी कम तो कहीं पानी अधिक, कहीं सूखा तो कहीं बंजर ज़मीन, कहीं पौधों में कीड़े लगना तो कहीं मिटटी में क्षारीयता वा अम्लता। सामुदायिक रेडियो किसानों को उनके क्षेत्रों और ज़रूरतों के अनुसार समाधान और

परामर्श देता है। शोध से ये भी पता चला है कि समुदाय दूसरी भाषाओँ की तुलना में अपनी भाषा में जानकारी या तथ्यों को अच्छे तरह से ग्रहण करता हैं। दूरदर्शन नेटवर्क के कार्यक्रम कृषि दर्शन, डीडी किसान चैनल भले हीं काफी प्रयास करते है किन्तु छोटे क्षेत्रों के माफिक और सटीक जानकारी पहुंचा पाना अबतक संभव नहीं हो पाया है। सामुदायिक रेडियो स्थानीय बाज़ार, मंडी का भाव, कृषि सम्बन्धी स्कीम, बीजों की जानकारी भी देता है। दीपावली, होली, दुर्गापूजा और क्रिसमस जैसे बड़े त्योहारों को हमारी मेनस्ट्रीम मीडिया महीनो तक प्रसारित करती है। किन्तु वो मीडिया, छोटे-छोटे पर्व त्योहारों को नज़रअंदाज़ कर देती हैं। लेकिन सामुदायिक रेडियो स्टेशन उनके साथ उनके त्योहारों में हिस्सा लेता है वह उनका प्रसारण करता है। उनकी कहानियां, उनके गाने, आस पास के माहौल को लोगो तक पहुँचाकर उमंग और उत्साह उत्पन्न करता है। स्थानीय समुदायकी समस्याओं यथा, गाँव का रास्ता ख़राब होना, मवेशियों का खो जाना, फसल की समस्या, गाँव में जंगली जानवर घुस जाना, प्रवासियों को नए शहर की अधूरी जानकारी और अन्धविश्वास इत्यादि। एक सामुदायिक रेडियो मदद कर सकता है लोगों को आगे लाने में, मुद्दा उठाने में, विचार करने में सामुदायिक रेडियो की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिए यह शोध प्रबंध उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **अग्रवाल, डॉ राजेश. (2013)** ने अपने शोध प्रबंध राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में सामुदायिक रेडियो का आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर प्रभाव में बताया है कि, आकाशवाणी और दूरदर्शन के जरिए राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के दूरदराज क्षेत्रों में सरकार की आवाज तो पहुंच जाती थी लेकिन समुदाय की आवाज को अपनी बात रखने का प्लेटफार्म नहीं मिल पाता था। समुदाय को विकास योजनाओं से जोड़ने तथा योजनाओं में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करने तथा उनकी प्रमुख आवश्यकताओं के बारे में शासन-प्रशासन अनभिज्ञ रहता था।समय के साथ-साथ ग्रामीण समुदायों के जोड़ने की पहल हुई और पंचायतों को सशक्त बनाने के लिए अधिक अधिकार दिए गए ताकि पंचायतों के जरिए सरकारी योजनाओं का लाभ हर अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे लेकिन जानकारी एवं साक्षरता के अभाव में समाज के कई तबके पीछे छूट गए हैं। अध्ययन से पता चला कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाने और जागरूक तथा

शिक्षित बनाने के उद्देश्यों ने सामुदायिक रेडियो की परिकल्पना को साकार किया है। इनका सबसे बड़ा प्रभाव यह हुआ है कि यह समुदायों की सशक्त आवाज बनकर क्षेत्रीय विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।अखबारों, इलैक्ट्रॉनिक चैनलों और कमर्शियल गीत-संगीत एफ.एम. चैनलों की भरमार के बीच लोकप्रिय होते सामुदायिक रेडियो यह साबित करते हैं कि यह समाज के अंतिम छोर तक के समुदायों और शासन-प्रशासन तथा सरकार के बीच संवाद का सशक्त माध्यम बनकर उभरे हैं। यह समुदायों को आपस में जोड़ने तथा सामुदायिक भावना से सामूहिक निर्णय लेने समुदायों को प्रेरित कर रहे हैं। सामुदायिक रेडियो के माध्यम से राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के लोगों को स्थानीय भाषा में जानकारी मिल रही है। मोबाइल में सामुदायिक रेडियो मौजूद है जिससे अब यह हर व्यक्ति की पहुंच में है वे बड़े गर्व से अपने सामुदायिक रेडियो को सुनते हैं। उन्हें लगता है कि यह उनका अपना रेडियो है जहां वे अपनी बात अपनी भाषा में आसानी से रख सकते हैं। अक्सर देखा जाता है कि पारंपरिक मीडिया मसलन टी.वी. और अखबारों में क्षेत्रीय खबरों, समस्याओं और मुद्दों का अभाव रहता है। ऐसे में सामुदायिक रेडियो का प्रभाव महत्वपूर्ण है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिए यह शोध प्रबंध उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

2.2.2 सामुदायिक रेडियो पर विदेश में अध्ययन

- **Santos, S. C. (2019)** ने अपने शोध पत्र Learning for life:A Case Study On The Development Of Online Community Radio में बताया है कि, सामाजिक असंतोष और आर्थिक संकट के संदर्भ में रोजगार और योग्यता को बढ़ावा देने वाले कौशल हासिल करना आज की प्राथमिकता है। रेडियोएक्टिव यूरोप की एक परियोजना है जो इन मुद्दों को संबोधित करती है तथा इंटरनेट रेडियो के माध्यम से अनौपचारिक शिक्षा प्रदान करती है। यह अध्ययन युवाओं के बीच पुर्तगाल में परियोजना के कार्यान्वयन का विश्लेषण करता है। अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि सहभागी अनुसंधान और मीडिया शिक्षा युवाओं को सशक्त बनाने के मूल्यवान तरीके हैं, जो औपचारिक स्कूली शिक्षा की बाधाओं को दूर करते हैं। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Wilson David, Deborah. (2009)** ने अपने शोध पत्र Applying Principles To Practice: Developing Civic Journalism OnA University Based Community Radio Station में बताया है कि लिंकन स्कूल ऑफ जर्नलिज्म (एलएसजे) की यह परियोजना सामुदायिक रेडियो स्टेशन सायरन एफएम. और लिंकन क्षेत्र के समुदायों को एक साथ लाती है। जिसमें सामुदायिक रेडियो स्टेशन के लक्षित श्रोता शामिल हैं। यह परियोजना, पत्रकारिता कौशल के प्रभाविता की जांच करती है और छात्रों को सामुदायिक साझेदारी के रूप में शामिल करती है। शोध पत्र के निष्कर्षों से पता चलता है कि सामुदायिक रेडियो सामुदायिक समूहों और छात्रों को एक साथ काम करने से सामुदायिक पत्रकारिता की समझ विकसित होती है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Vuuren, Kitty Van. (2002)** ने अपने शोध पत्र Beyond the Studio:A Case Study of Community Radio And Social Capital में बताया है कि यह शोध पत्र सामुदायिक प्रसारण के द्वारा सामुदायिक विकास कार्यों की पड़ताल करता है। यह शोध पत्र 1998-99 में आयोजित तीन गैर-महानगरीय सामुदायिक रेडियो स्टेशनों के केस स्टडी का उपयोग करते हुए इस क्षेत्र में सामाजिक पूंजी की अवधारणा के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करता है। सामुदायिक रेडियो स्टेशनों पर किए गए शोध के निष्कर्ष बताते हैं कि सामाजिक पूंजी और सामुदायिक रेडियो एक दूसरे के पूरक है। अगर सामुदायिक रेडियो को समुदाय की चिन्ताओं को स्वर देना है तो उसे सामाजिक पूंजी की आवश्यकता पड़ेगी। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Christian C. (2012)** ने अपने शोध पत्र Community Radio And Nomadic Education in Northern Nigeria में बताया है कि यह अध्ययन अफ्रीका के घुमंतू आबादी पर केन्द्रित है। यह समुदाय, अफ्रीकी आबादी का लगभग 6 प्रतिशत है। यह शोध पत्र घूमंतू समुदाय पर सामुदायिक रेडियो की भूमिका की जांच करता है। सामुदायिक रेडियो स्टेशनों ने ओपन एवं डिस्टेंस एजुकेशन के माध्यम से खानाबदोश समुदायों को शिक्षित करने में विशेष

भूमिका निभाई है। निष्कर्षों से पता चलता है कि सामुदायिक रेडियो के उपयोग से घूमंतू जातियों की साक्षरता दर में समान रूप से 60 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Isabel, Lema Blanco. (2015)** ने अपने शोध पत्र Community Radio As Social Learning Instruments For Social Empowerment And Community Building: An Analysis Of Youth Participation On The Spanish Third Media Sector में बताया है कि सामुदायिक रेडियो के द्वारा अपेक्षाकृत कम लागत मंे दुनिया के कई क्षेत्रों तक पहुँचा सकता है। हाल के एक अध्ययन से संकेत मिलता है कि स्पेन में लगभग 300 सामुदायिक या शिक्षाप्रद (अलाभकारी) रेडियो मौजूद है। सामुदायिक रेडियो सांस्कृतिक एवं सामाजिक अभिव्यक्तियों को मजबूत करने के लिए एक महत्वपूर्ण तंत्र बन गया है। विशेष रूप से मीडिया के स्वयंसेवकों और प्रबंधकों के बीच सामुदायिक रेडियो की महत्वपूर्ण की पहचान है। सामाजिक सशक्तिकरण और नवाचार के शैक्षणिक उपकरण के रूप में सामुदायिक रेडियो उभरा है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Gatfield, McDonnell. (2004)** ने अपने शोध पत्र Community Radio Broadcasting And Positioning में बताया है कि ऑस्ट्रेलिया में सामुदायिक रेडियो के संचालन में 340 स्वतंत्र गैर-लाभकारी संगठन शामिल हैं। हालांकि, वे हाई प्रोफाइल मुख्यधारा के संगठनों के साथ प्रतिस्पर्धा करते है। लेकिन अपने कार्यक्रमों के निर्माण में दक्ष कार्मिकों की कमी, स्पष्ट बाजार की गैर उपलब्धता और अकुशल प्रबंधन प्रणाली में पिछड़ जाते है। शोध पत्र समुदाय की स्थिति की पड़ताल करता है एवं ऑस्ट्रेलिया में रेडियो संगठन द्वारा अपनाई गई बाजार अनुसंधान प्रक्रिया की जांच करता है। अध्ययन से पता चलता है कि सामुदायिक रेडियो प्रसारक को अपने घटक सदस्यों की संज्ञानात्मक समझ से अच्छी तरह से परिचित होना चाहिए। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Rahman, Mizanoor. Panda, Santosh. (2015)** ने अपने शोध पत्र Community Radio in Bangladesh: Emergence of A New School of Open Non-formal Education (ONFE) में बताया है कि बांग्लादेश के जनवादी गणराज्य की सरकार के सूचना मंत्रालय ने कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, आपदा एवं महिलाओं पर एक अध्ययन किया है। बाग्लादेश सरकार ने 14 सामुदायिक रेडियो केन्द्रों को मंजूरी दे दी है। बांग्लादेश में सामुदायिक रेडियो का उद्भव एक नया स्कूल ऑफ ओपन नॉन-फॉर्मल एजुकेशन (SONFE) है। एसओएनएफई स्कूल का प्रसारण स्थानीय एवं गैर सरकारी संगठनों के साथ पीपीपी मॉडल के तहत होता है। वह अपने क्षेत्रीय संसाधन केंद्रों (आरआरसी) से ओएनएफई के विस्तार के लिए सामुदायिक रेडियो का उपयोग करता है। यह शोध पत्र कम लागत और प्रभावी मीडिया के रूप में सामुदायिक रेडियो की ओएनएफई के विस्तार की सिफारिश करता है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Bart, Cammaerts. (2019)** ने अपने शोध पत्र Community Radio in the West : A Legacy of Struggle for Survival in A State And Capitalist Controlled Media Environment में पश्चिम में सामुदायिक रेडियो की विरासत का तुलनात्मक दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया है। विशेष रूप से फोकस सामुदायिक रेडियो के प्रति पश्चिमी मीडिया की नीतियों पर है। यह तर्क दिया जाता है कि विकासशील देशों में सामुदायिक रेडियो की नीतियाँ सिद्धांत की ओर उन्मुख हैं, वहीं पश्चिम में सामुदायिक रेडियो स्टेशनों को अक्सर हाशिये पर संचालित करने के लिए मजबूर किया जाता है। इस शोध पत्र में यूएस, यूके और बेल्जियम पर केस स्टडी प्रस्तुत की गई हैं। अलग-अलग नियामक प्रतिमानों के कुछ प्रभाव देखे जा सकते हैं। लेकिन कुल मिलाकर इनमें से प्रत्येक देश में सामुदायिक रेडियो स्टेशनों के अस्तित्व और अस्तित्व के लिए संघर्ष की विरासत है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Sabuj, Saifuddin. (2017)** ने अपने शोध पत्र Educating Grass Roots Girls And Women Through Community Learning Programme: CLP Using Community Radio In Bangladesh में बताया है कि बांग्लादेश में प्राथमिक शिक्षा प्रणाली दुनिया की सबसे बड़ी प्रणालियों में से एक है। यद्यपि देश ने अपनी स्वतंत्रता के बाद से प्राथमिक शिक्षा में सुधार के लिए कई उपाय किए हैं। शिक्षा मंत्रालय की हालिया सांख्यिकी रिपोर्ट से पता चलता है कि 51 प्रतिशत लड़कियां प्राथमिक विद्यालय में नामांकित होती हैं लेकिन पाठ्यक्रम पूरा नहीं करती हैं उनके स्कूल छोड़ने की दर 64 प्रतिशत है। इसी तरह, 59 प्रतिशत व्यस्क निरक्षर महिलाएं हैं। बांग्लादेश के ग्रामीण इलाकों में रहने वाले अनपढ़ और अर्ध-साक्षर श्रोता में महिलाओं और लड़कियों की संख्या अधिक है। अध्ययन में पाया कि सामुदायिक रेडियो अपने समुदाय के बीच सकारात्मक प्रभाव और रुचि पैदा कर रहा है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Maricris, Michael. (2017)** ने अपने शोध पत्र Elements of A Radio-Based Literacy Program: Towards A Community-Responsive Pre-Service Teacher Education में बताया है कि फ़िलीपीन्स विश्वविद्यालय में रेडियो-आधारित साक्षरता कार्यक्रम को एक शहरी गरीब समुदाय के ग्रेड दो विद्यार्थियों के माता-पिता की साक्षरता को बढ़ाने के लिये एक उपकरण है। यह शोध पत्र रेडियो-आधारित साक्षरता कार्यक्रम के डिजाइन और कार्यान्वयन पर केंद्रित है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि रेडियो कार्यक्रम सामाजिक परिवर्तन का एक प्रभावी साधन है। रेडियो आधारित साक्षरता कार्यक्रम शिक्षक और शिक्षा संस्थानों के लिए प्रोत्साहन के रूप में कार्य करता है ताकि वे गरीब समुदायों और परिवारों को सशक्त बनाने में मदद कर सकें, क्योंकि सामुदायिक रेडियो अकादमिक कार्यों और शिक्षक की भूमिकाओं को पूरा करने के लिए काम करते हैं। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Susan, Forde. (2015)** ने अपने शोध पत्र Experiencing Radio: Training, Education And the Community Radio Sector में बताया है कि यह अध्ययन विश्वविद्यालयों सहित सामुदायिक संस्थानों को प्रशिक्षण और शिक्षा प्रदान करने में सामुदायिक रेडियो द्वारा निभाई गई शैक्षिक भूमिका की पड़ताल करता है। शोध परियोजना से प्राप्त आंकड़ों का उपयोग करते हुए निष्कर्ष निकाला गया है कि लगभग सभी सामुदायिक रेडियो स्टेशन किसी न किसी प्रकार का प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं और पत्रकारिता शिक्षा इस में अंतर्निहित है। विश्वविद्यालय में पत्रकारिता कार्यक्रमों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा इंटर्नशिप और कार्य अनुभव के लिए सामुदायिक रेडियो पर निर्भर करता है क्योंकि यह लिखने से बोलने तक का प्रतिनिधित्व करता है। अध्ययनकर्ताओं का तर्क है कि यह सामुदायिक क्षेत्र की गतिविधि है जो सामुदायिक रेडियो की परिभाषा में योगदान करती है इसे सामुदायिक पत्रकारिता कहा जा सकता है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Muloongo, HA. (2020)** ने अपने शोध पत्र Exploring Community Radio Programming Practices to Inform Environmental EducationAt Livingstone Museum in Zambia में बताया है कि यह अध्ययन सामुदायिक रेडियो की प्रोग्रामिंग पर चर्चा करता है। क्या सामुदायिक रेडियो को पर्यावरण और सामुदायिक जुड़ाव को विस्तारित करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है ? क्या सामुदायिक रेडियो स्टेशन अपने कार्यक्रम निर्माण में श्रोताओं को शामिल करता है ? क्या समुदाय निर्मित शिक्षा कार्यक्रम श्रोताओं के सहयोगात्मक कार्य के माध्यम से तैयार किए जाते हैं ? इन सभी प्रश्नों के उत्तर में सामुदायिक रेडियो प्रोग्रामिंग पर शोध में निष्कर्ष निकाला गया है कि सामुदायिक रेडियो समुदाय के नेतृत्व वाली सामाजिक शिक्षा के विस्तार करने के लिए, अपने जुड़ाव को स्थानीय स्तर पर बरकरार रख सकता है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Olumide, Tai woand. Emmanuel, EkowAsmah. (2019)** ने अपने शोध पत्र Extending the Learning Community: Rural Radio, Social Learning And Farm Productivity in Ghana में बताया है कि ग्रामीण एवं कृषि सेक्टर की स्थानीय रेडियो के माध्यम से स्वदेशी ज्ञान साझा करने की संभावित भूमिका क्या है। यह सामुदायिक रेडियो के प्रभावों की पहचान करने के लिए, फसल उत्पादकता एवं प्रवृत्तियों की जांच करता हैं। विश्लेषण भागीदारी तीव्रता और गैर-नकदी फसलों के बीच मजबूत सशर्त सहसंबंध दिखाता है गैर-नकदी फसल किसान अधिक संभावना के रूप में देखते हैं। कृषि अनुसंधान एवं खेती को प्रभावी ढंग से करने के लिये सामुदायिक रेडियो के प्रयोग का सुझाव देते हैं सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Colombia, C. (2016)** ने अपने शोध पत्र Methodology for the Creation ofA Transmedia Training Model for Community Radio And Television in the Department of Tolima में बताया है कि ICT के प्रचार के लिए 2019 का कानून ऑडियो विज़ुअल उद्योग को प्रोत्साहित करने और कोलंबिया के दूरदराज के क्षेत्रों में 5ळ इंटरनेट लाने का प्रयास करते हैं। यदि वे इस व्यवसाय में प्रवेश करने का निर्णय लेते हैं तो सामुदायिक रेडियो और टेलीविजन ट्रांसमीडिया सामग्री का उत्पादन करने और इंटरनेट कनेक्टिविटी में सुधार करने के लिए प्रोत्साहनों का लाभ उठा सकते हैं। इस अध्ययन मं े टोलिमा विभाग के दस नगर पालिकाओं में सामुदायिक रेडियो और टेलीविजन का प्रयोग किया गया है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **LIU Xiao-ping. Shijiazhuang. (2018)** ने अपने शोध पत्र Mode Study of the Development of Community Education in Hebei Radio And TV University में बताया है कि सामुदायिक शिक्षा, आजीवन शिक्षा प्रणाली के एक महत्वपूर्ण तंत्र के रूप में समुदाय के निवासियों की सीखने की जरूरतों को पूरा कर सकती है। सामुदायिक शिक्षा आर्थिक उन्नति और सामाजिक विकास में तेजी लाने और बढ़ावा देने में हैबे की महत्वपूर्ण भूमिका है।

सामुदायिक शिक्षा के लिए ई सरकार, सामुदायिक शिक्षा की योजना और विकास के विचार को मजबूत बनाना है। अध्ययन में सुझाव दिया गया है कि सामुदायिक शिक्षा को बढ़ावा देने में सामुदायिक वर्तमान हितों और दीर्घकालिक विकास के बीच सरकार और त्ज्टन् के बीच समन्वय रहना चाहिए। निष्कर्ष ये है कि हेबेई साथ सामुदायिक शिक्षा का एक नया मॉडल बनाने के लिए एरिस्टिक्स का उपयोग लाभप्रद हो सकता है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Ouyang, Wu. (2018)** ने अपने शोध पत्र On the Building of the Community Platform for VocationalAnd Technical Education in TV And Radio Universities में बताया है कि टीवी और रेडियो विश्वविद्यालयों मंे स्थानीय समुदायों के लिये व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देना अभी भी एक नया क्षेत्र है, लेकिन सामाजिक विकास एक सामान्य प्रवृत्ति है। यह शोध पत्र अर्थ, समस्या और माप के रूप में इस मुद्दे की पड़ताल करता है। अध्ययन का लक्ष्य टीवी और रेडियो विश्वविद्यालयों को टेक्नीकल एवं वोकेशनल शिक्षा के प्लेटफार्म के रूप मे तैयार करना है तथा एक सामंजस्यपूर्ण समुदाय के निर्माण में योगदान के लिए नवाचार करना है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Mthombeni, T.C. Magare, K.D. (2006)** ने अपने शोध पत्र Pharmacy Students' Use Of Community Radio For Health PromotionAnd Education At the University Of Limpopo में बताया है कि इस परियोजना का उद्देश्य फार्मेसी के छात्रों को कक्षा से परे सामुदायिक रेडियो के द्वारा शिक्षण एवं प्रोत्साहन को बढ़ावा देना था। कैंपस रेडियो टर्फ एफएम का उपयोग करते हुए यूनिवर्सिटी ऑफ लिम्पोपो फार्मेसी स्टूडेंट्स एसोसिएशन ने फार्मासिस्ट की भूमिका, प्राथमिक चिकित्सा, दवाओं के पालन सहित विभिन्न विषयों पर एक साप्ताहिक स्वास्थ्य वार्ता प्रस्तुत की। लक्षित दर्शकों के लिए विषय की प्रासंगिकता, समुदाय के स्वास्थ्य के लिए महत्व और सामुदायिक जागरूकता में योगदान पर कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

अध्ययन से पता चला कि रेडियो टॉक शो से प्राप्त प्रतिक्रिया सकारात्मक रही है और अगले शैक्षणिक वर्ष में अन्य स्वास्थ्य विज्ञान के छात्रों, व्याख्याताओं और अन्य पेशेवरों को शामिल करने के लिए भागीदारी को व्यापक बनाने की योजना पर काम चल रहा है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Wang Yue, Ping. Liu Jian, Ping. (2015)** ने अपने शोध पत्र Pondering on the Functions of Radio And TV University in Community Education:—Probing of Connecting Credit Bank System in Academic Education में बताया है कि सामुदायिक शिक्षा, आजीवन शिक्षा प्रणाली और शिक्षण एवं प्रशिक्षण के पैटर्न वाले समाज की स्थापना के ऐतिहासिक मिशन को अंजाम देती है। सामुदायिक शिक्षा कई कठिनाइयों का सामना करती है। यह शोध पत्र थ्वींद रेडियो और टीवी विश्वविद्यालय में नवाचार की व्याख्या करता है यह अध्ययन सामुदायिक शिक्षा के भविष्य की भी जांच करता है और दावा करता है कि सामुदायिक शिक्षा को सीबीएस (क्रेडिट बैंक सिस्टम) पर आधारित शिक्षा प्रणाली से जुड़ना चाहिए। राष्ट्रीय एवं राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों में सामुदायिक रेडियो केन्द्र का संचालन आवश्यक होना चाहिए। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Wei Sheng, Qi. Qiao Xing, Mei.** ने अपने शोध पत्र Radio And TV Universities And Community Education में बताया है कि जीवनपर्यंत शिक्षा और सीखने वाले समाज में एक महत्वपूर्ण वाहक के रूप में सामुदायिक शिक्षा ने अधिक ध्यान आकर्षित किया है। रेडियो और टीवी विश्वविद्यालयों, को दूरस्थ शिक्षा और सतत शिक्षा के रूप में एक बड़ी भूमिका निभानी चाहिए। अध्ययन में सामुदायिक शिक्षा के सिद्धांत और व्यवहार में रेडियो और टीवी की आवश्यकता और व्यवहार्यता पर चर्चा की गई है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Yuannian, Zhou Qiang. (2019)** ने अपने शोध पत्र Research on Sustainable Development Mode of Community Education on Coordinating Urban-Rural Development में बताया है कि सामुदायिक शिक्षा राष्ट्र एवं समाज के निर्माण से संबंधित है इसे प्रांत डोमेन पर आधारित सामुदायिक शिक्षा के बुनियादी ढांचे के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। शहरी-ग्रामीण समन्वय, जनता सरकारी समन्वय में सामुदायिक शिक्षा प्रभावी होती है। सामुदायिक शिक्षा को शहरी-ग्रामीण समन्वय के लिए एक ऑपरेटिंग मोड के रूप में लिया जा सकता है।सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Zhong, Hongli. (2017)** ने अपने शोध पत्र Research on the Protection Mechanism of Carrying out Community Education in Radio & TV University में बताया है कि आजीवन शिक्षा और सामुदायिक शिक्षा का विकास सामाजिक प्रगति के लिए अपरिहार्य प्रवृत्ति है। रेडियो टी0वी0 विश्वविद्यालय में एक संपूर्ण और प्रभावी सुरक्षा तंत्र का निर्माण करना सामुदायिक शिक्षा को आगे बढ़ाने का महत्वपूर्ण आधार है। रेडियो और टीवी विश्वविद्यालय ने सामुदायिक शिक्षा के संचालन में कुछ उपलब्धियां हासिल की हैं। इसके अलावा सामुदायिक रेडियो को अभी भी शैक्षिक संस्थानों में मजबूत करने की आवश्यकता है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Li, Hejun. (2019)** ने अपने शोध पत्र Role Analysis of Radio And TV University in the Development of Community Education में बताया है कि सामुदायिक रेडियो आजीवन शिक्षा प्रणाली और ज्ञान आधारित समाज के निर्माण में संचार के मुख्य वाहक के रूप में तेजी से विकसित हो रहा है। अध्ययन बताता है कि रेडियो और टीवी विश्वविद्यालय सकारात्मक कार्य कर रहे हैं लेकिन शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लक्ष्य के लिए रेडियो और टीवी विश्वविद्यालयों की भूमिका की स्पष्ट समझ की आवश्यकता है। जिसके आधार पर रेडियो और टीवी विश्वविद्यालयों को कार्य की दिशा की पहचान करनी चाहिए।

सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Mofokeng, Kanya. (2018)** ने अपने शोध पत्र The influence of learning orientation And creative broadcasting techniques on small business sustainability में बताया है कि सामुदायिक विकास को आगे बढ़ाने, स्थानीय रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देने, हाशिए के समुदायों की सामूहिक आवाज को व्यक्त करने और दक्षिण अफ्रीका में बहुलवादी लोकतंत्र को आगे बढ़ाने में सामुदायिक रेडियो स्टेशनों का महत्व है। यह अध्ययन रचनात्मक प्रसारण तकनीकों (सीबीटी) के प्रभाव की पड़ताल करता है। अध्ययन के परिणामों से पता चलता है कि सीबीटी के कार्यान्वयन ने सामुदायिक रेडियो के संगठनात्मक, वित्तीय और सामाजिक उपभोगिता को प्रभावित किया। अध्ययन में सिफारिश की गई है कि प्रत्येक सामुदायिक रेडियो केन्द्र (सीआरएस) को एक संविधान तैयार करना चाहिए, जो उनकी लाइसेंस शर्तों, दृष्टि और लक्ष्यों के अनुरूप आचरण के कोड को निर्दिष्ट करता हो। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Saunders, John. (1976)** ने अपने शोध पत्र The Role of Local Radio in Community Education में बताया है कि स्थानीय रेडियो समुदाय की आवश्यकताओं के अनुरूप कार्यक्रमों का चयन और निर्माण करता है। बच्चों एवं बड़ों को शिक्षित करने के साथ-साथ सामुदायिक समस्याओं को उजागर करता है। वयस्कों के लिए मनोरंजन और अन्य जानकारी प्रदान करता है। अध्ययन से पता चला है सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों में कि कला एवं कला के विषय ज्यादा लोकप्रिय है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Wilson, David. (2018)** ने अपने शोध पत्र The Learning Curve: Distinctive Opportunities And Challenges Posed By University-Based Community Radio Stations में बताया है कि 'सायरन एफएम' इंग्लैण्ड के ईस्ट मिडलैंड्स स्थित लिंकन

विश्वविद्यालय द्वारा संचालित है। यह सामुदायिक रेडियो ब्रिटिश विश्वविद्यालय द्वारा स्थापित किए जाने वाले पहले पूर्णकालिक सामुदायिक रेडियो स्टेशनों में से एक है तथा पूरी तरह से विश्वविद्यालय के परिसर में स्थित है। सायरन एफएम पर अध्ययन एक सामुदायिक रेडियो स्टेशन के लिए संचालन में चुनौतियों और संभावित लाभों का दस्तावेजीकरण करेगा। यह उन तरीकों को देखेगा जिसमें सामुदायिक रेडियो स्टेशन को पाठ्यक्रम वितरण और पाठ्यक्रम मूल्यांकन के लिए एक तंत्र के रूप में इस्तेमाल किया गया है, और यह पता लगाएगा कि छात्र स्वयं सामुदायिक रेडियो स्टेशन के साथ कैसे जुड़ते हैं। निष्कर्ष ये है कि यूके में सामुदायिक रेडियो तीसरे स्तर के एक दिलचस्प मॉडल पेश करते हैं, सामुदायिक रेडियो सीखने का शानदार प्लेटफार्म है। यह युवाओं को सशक्त बनाता है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Rully, Charitas. Dody, Hartanto. (2020)** ने अपने शोध पत्र Community Radio-Based Blended Learning Model में बताया है कि COVID-19 महामारी दुनिया भर के लिए एक बड़ी चुनौती है क्योंकि COVID&19 के प्रसार को रोकने के लिए शिक्षा को आनलाइन किया गया है। यह पद्धति उन छात्रों के लिये समस्या हैं जो शहरों से दूर क्षेत्रों में रहते हैं। इंडोनेशिया में विविध भौगोलिक परिस्थितियों में पहाड़, तराई, उच्च भूमि और घाटियाँ और कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जो शहरों से बहुत दूर हैं, जहाँ से छात्रों को इंटरनेट से जुड़ना मुश्किल हो जाता है। यह शोध सामुदायिक रेडियो-आधारित मिश्रित शिक्षण मॉडल के बारे में एक सैद्धांतिक ढांचा तैयार करता है जो दूरस्थ क्षेत्रों में एक आशाजनक वैकल्पिक शिक्षण समाधान के रूप में योगदान देता है। यह अनुमान लगाया गया है कि महामारी के दौर में अप्रत्याशित परिस्थितियों के दौरान दूरस्थ क्षेत्रों के लिये एक आशाजनक शिक्षण मॉडल होगा। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Chaudhary, Dr. Muhammad Umair (2017)** ने अपने शोध पत्र Effectiveness Of Campus Fm Radios In Promotion Of Education And Awareness In

Pakistan में बताया है कि शिक्षा और जन जागरूकता को बढ़ावा देने में कैंपस एफएम रेडियो की प्रभावशीलता की जांच करता है। रेडियो की सामर्थ्य और आसान पहुंच के कारण पाकिस्तान में संचार का एक बहुत लोकप्रिय माध्यम है। आमतौर पर मनोरंजन और शिक्षा के उद्देश्यों के लिए जनता द्वारा इसका उपयोग किया जाता है। कैंपस आधारित एफएम रेडियो भी ज्ञान, शिक्षा और जन जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में कुशलता से काम कर रहे हैं। अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि कैम्पस रेडियो, छात्र समुदाय के बीच शिक्षा, ज्ञान और जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए एक बहुत ही उपयोगी और प्रभावी उपकरण है। यह अध्ययन सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के संस्थानों में कैंपस एफएम रेडियो की स्थापना की सिफारिश करता है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Abdulla, Nafiz. Rasheeda, Mohammed. (2008)** ने अपने शोध पत्र Reaching The Community Through Community Radio में बताया है कि सामुदायिक रेडियो को अक्सर एक ऐसे माध्यम के रूप में वर्णित किया जाता है जहां स्थानीय समुदाय के सदस्य स्वयं के कार्यक्रमों की योजना बनाते हैं, उनका निर्माण करते हैं और प्रस्तुत करते हैं। हालांकि, कई लोगों का मानना है कि रेडियो प्रबंधन नीतियां अब रेडियो के इस पहलू को तेजी से दरकिनार कर रही हैं। इस अध्ययन में तीन सामुदायिक रेडियो स्टेशनों का अध्ययन किया गया है। नेपाल में आरएस, श्रीलंका में केसीआर और न्यूजीलैंड में एससीआर अध्ययन का उद्देश्य यह जांच करना कि रेडियो प्रबंधन नीतियां सकारात्मक या नकारात्मक कैसे हैं ? यह सामुदायिक पहुंच और भागीदारी को कैसे प्रभावित करती हैं? अध्ययन से पता चलता है कि आर्थिक रूप से टिकाऊ रहने के अपने प्रयास में तीनों स्टेशन धीरे-धीरे हाइब्रिड के रूप में विकसित हो रहे हैं। ये कम्युनिटी और कमर्शियल रेडियो का मिश्रण है। नतीजतन, स्थानीय समुदाय द्वारा निर्मित कार्यक्रमों को अक्सर ऐसे कार्यक्रमों से बदल दिया जाता है जो पूर्णकालिक भुगतान वाले कर्मचारियों द्वारा निर्मित होते हैं; तथा प्रकृति में अधिक मनोरंजक हैं और अधिक विज्ञापनों को समायोजित करते हैं। रेडियो स्टेशन भी वित्त पोषित गैर सरकारी संगठनों को एयरटाइम की बिक्री

की मांग करते हैं तथा स्थानीय सामुदायिक कार्यक्रमों पर एजेंसी संचालित कार्यक्रमों को प्राथमिकता देते हैं। अर्थात् स्टेशन ऐसे वाहन बन गए हैं जो एजेंसी के उद्देश्यों में मदद करते हैं। इस अध्ययन से यह भी पता चलता है कि अधिक से अधिक वित्तीय स्थिरता के उद्देश्य ने स्थानीय समुदाय की पहुंच और भागीदारी पर प्रभाव डाला है, चूंकि यह प्लेटफॉर्म बिना किसी बाधा के स्थानीय समुदाय तक पहुंच और रेडियो में भागीदारी की सुविधा प्रदान करता है, इसलिए इसे एक ऐसे समाधान के रूप में भी देखा जाता है जो उन्हें राजस्व पैदा करने वाले कार्यक्रमों के लिए अपने ऑन-एयर समय का अधिक उपयोग करने में मदद करेगा। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।.

- **Madeleine, C. Glenrose, Veli Jiyane. (2012)** ने अपने शोध पत्र The Role Of Community Radios In Information Dissemination To Rural Women In South Africa में बताया है कि दक्षिण अफ्रीका में ग्रामीण महिलाएं सामुदायिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं; उनसे सूचनाएं रोकना ग्रामीण विकास की क्षमता को रोकना है। हालांकि, गरीबी, निरक्षरता, भय, सार्वजनिक एजेंसियों तक कम पहुंच और सूचना के अधिकार के बारे में जानकारी की कमी ने महिलाओं को सूचना तक पहुंच से वंचित कर दिया है। सामुदायिक रेडियो, ग्रामीण समुदाय के भीतर एकमात्र सुलभ और किफायती माध्यम है तथा महिलाओं के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह अध्ययन ग्रामीण विकास और महिला श्रोताओं को सूचना प्रसार के संबंध में दक्षिण अफ्रीका के क्वाज़ुलु-नताल प्रांत के दो सामुदायिक रेडियो स्टेशनों की उपयोगिता की जांच करता है। निष्कर्ष बताते हैं कि सामुदायिक रेडियो स्थानीय समुदायों में सूचना के प्रसार के लिए महत्वपूर्ण हैं लेकिन सूचना प्रसार और महिलाओं के सामुदायिक विकास में उनकी भूमिका का पूरी तरह से प्रयोग नहीं किया गया है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Seidu, Al Hassan. (2015)** ने अपने शोध पत्र The Role of Community Radio in Livelihood Improvement में बताया है कि घाना के उत्तरी क्षेत्र के तोलोन-कुंबुंगु जिले में

लोगों की आजीविका में सुधार के लिए सिमली रेडियो की भूमिका महत्वपूर्ण है। एक शैक्षिक उपकरण के रूप में सामुदायिक रेडियो के उपयोग, पारंपरिक संस्कृति को बढ़ावा देने, ज्ञान और सूचना साझा करने, मनोरंजन और आय संवर्धन पर डेटा एकत्र किया गया है। अध्ययन ने स्थापित किया कि सिमली रेडियो ने संस्कृति, ग्रामीण विकास, शिक्षा, स्वच्छता, कृषि से लेकर स्थानीय शासन तक सामुदायिक विकास समस्याओं के समाधान के बारे में जागरूकता और ज्ञान में सुधार करने के लिए काम किया है। सामुदायिक रेडियो ने कर्तव्य धारकों और अधिकार धारकों के बीच एक इंटरफेस की सुविधा प्रदान की है। इसने लघु और मध्यम उद्यम (एसएमई) ऑपरेटरों के लिए बाजार में अवसर पैदा करके छोटे और मध्यम उद्यम विकास को बढ़ावा दिया है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Mo, Raiter. (2009)** ने अपने शोध पत्र Impact Of Community Radio Programs In Rural Development में बताया है कि ग्रामीण विकास में सामुदायिक रेडियो भाषाई और जातीय विविधता को दूर करने और समाज में सामाजिक-आर्थिक और ग्रामीण-शहरी अंतरालों को दूर करने में मदद करता है। स्थानीय आवाजों (व्यक्तियों, समूहों और समुदायों) को अपनी कहानियों और अनुभवों को साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करता है तथा अपने जीवन से संबंधित मुद्दों के बारे में बात करती है जिन्हें मुख्यधारा के मीडिया द्वारा बड़े पैमाने पर अनदेखा किया जाता है। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चलता है कि सामुदायिक रेडियो के कार्यक्रम फसलों की उत्पादकता और उपज बढ़ाने में किसानों के लिए वरदान हैं। सामुदायिक रेडियो के शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से कोट्टमपट्टी के आसपास के छात्रों के बीच समाचार पत्र पढ़ने की चाहत में वृद्धि हुई है। स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रम अधिक लाभकारी थे। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Chowdhury, Badrul Haider. (2016)** ने अपने शोध पत्र Interactive Community Radio And Its Role in Distance Learning:Aspect in Bangladesh में बताया है कि ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग दुनिया भर में तेजी से विकास कर रहा है। 1992 में बांग्लादेश में

बांग्लादेश ओपन यूनिवर्सिटी (बीओयू) की स्थापना के बाद एकमात्र राष्ट्रीय सार्वजनिक विश्वविद्यालय के रूप में ओडीएल का उल्लेखनीय विस्तार हुआ है। बीओयू ने पूरे देश में 23 औपचारिक और 19 गैर-औपचारिक शैक्षणिक कार्यक्रम शुरू किए हैं। यह अपने औपचारिक और गैर-औपचारिक लक्ष्य समूहों को निर्देश देने के लिए कई प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का उपयोग करता है। बीओयू में उपयोग किए जाने वाले विभिन्न मीडिया मंचो में रेडियो, बांग्लादेश के दूरदराज के ग्रामीण इलाकों में रहने वाले निर्देश देने के लिए प्रभावी मीडिया में से एक है। रेडियो उन लोगों के लिए सबसे सस्ता और निर्बाध माध्यम है जो बिना टेलीफोन और बिजली वाले क्षेत्रों में रहते हैं। निष्कर्ष ये है कि रेडियो के वर्तमान स्वरूप को इंटरएक्टिव कम्युनिटी रेडियो (आईसीआर) में बदलकर इसकी प्रभावशीलता में उल्लेखनीय वृद्धि की जा सकती है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Fraser, Estrada. (2002)** ने अपने शोध पत्र Role Of Community Radio In Participating Communication में बताया है कि समुदाय द्वारा चलाए जा रहे रेडियो स्टेशन द्वारा संचार सहभागिता के प्रभाव में कम्युनिकेशन यानि संचार सामाजिक एवं आर्थिक विकास (सोशल और इकोनॉमिकल डेवलमेंट) का मुख्य आधार बना हुआ है। शोध पत्र में यह तथ्य भी उजागर हुए हैं कि सामुदायिक रेडियो सीधे लोगों की समस्याओं को एड्रेस कर रहा है जिससे स्थानीय प्रशासन गुड गवर्नेस और टांसपैरेंसी से कार्य करने के लिए बाध्य हो रहा है। शोध पत्र सामुदायिक रेडियो पर शोध कार्य कर रहे विद्यार्थियों के लिए लाभाभद्र सबित हो सकता है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Jun'ichi, Shaw. (2013)** ने अपने शोध पत्र Inpact of Community Radio in Participating Communication में बताया है कि डिजास्टर मैनेजमेंट में कम्युनिटी रेडियो एक प्रभावी उपकरण के तौर पर उभर सकता है। शोध पत्र में बताया गया है कि जापान में डिपस्टर मैनेजमेंट के लिए कम्युनिटी रेडियो का प्रयोग किया जा रहा है। समुद्र के किनारे निवास करने वाली जनता को मौसम विभाग द्वारा जारी चेतावनी को कम्युनिटी रेडियो के माध्यम से

प्रसारित किया जा रहा है साथ ही आपदा के समय बचाव की जानकारी लगातार मुहैया करवाई रही है। सामुदायिक रेडियो पर शोध कर रहे विद्यार्थियों के लिए यह शोध कार्य लाभपद्र साबित हो सकता है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध पत्र कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Collin, Fraser. Estrada, Sonia. (2002)** ने अपने शोध पत्र Community Radio for Change And Development में बताया है कि सामुदायिक रेडियो, सामाजिक परिवर्तन का एक ऐसा मंच है जहां सामुदायिक सहभागिता और जन संवाद के माध्यम से जरूरी परिवर्तन लाया जा सकता है। सामुदायिक रेडियो केन्द्र एक ऐसा फोरम है जहां समुदाय की समस्याओं को इंगित करते हुये स्थानीय स्तर पर उसके समाधानां की कोशिश की जाती है जिसमे शिक्षा से जुड़ी हुई जिज्ञासायें भी शामिल है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Stevenson's, P. (2012)** ने अपने शोध पत्र Senior Secondary in Media Literacy Project for Pre University ़जनकमदजे में सामुदायिक रेडियो की उपयोगिता पर बखूबी रौशनी डाली है। यह पुस्तक सीनियर सेकेन्ड्री के छात्रों को मीडिया शिक्षा के प्रति जागरूक करती है। इसकी शब्दावली से परिचित कराने के लिये बहुत उपयोगी है। साथ ही साथ यह पुस्तक औपचारिक एवं अनौपचारिक माध्यम से शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र एवं छात्राओं के लिये लाभप्रद है। विशेषकर ग्रामीण अंचल एवं दुर्गम क्षेत्रों में निवास करने वाले छात्र एवं छात्राओं के शिक्षा संबंधी जिज्ञासाओं का समाधान करने में उपयोगी है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Alphonse, Xavier. (2015)** ने अपने शोध पत्र Role of Community Radio And Degree colleges in Higher Institutions में ऑटोनामस कॉलेजों के बारे में चर्चा की है कि उच्च शिक्षा के प्रसार में महाविद्यालयों की भूमिका कैसे महत्वपूर्ण है। साथ ही ये चर्चा भी की गयी है कि गुणवत्तापरक उच्च शिक्षा की उपलब्धता के लिये डिग्री कॉलेजो और

सामुदायिक केन्द्रों का क्या योगदान है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि सामुदायिक रेडियो के चलन में आने के बाद उच्च शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों में ज्यादा उत्सुकता देखी गयी। सामुदायिक रेडियो और उच्च शिक्षा से संबंधित शोध कार्य के लिये शोध पत्र उपयोगी सिद्ध हो सकता है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Dunaway, David. (2010)** ने अपने शोध पत्र Commonunity Ratio: HistoryAnd Improtant में सामुदायिक रेडियो के इतिहास की रेखांकित किया है इस शोध पत्र में विश्व में सामुदायिक रेडियो की शुरूआत के विषय में चर्चा की गयी है। साथ ही कम्युनिटी रेडियो के उपयोग इसके प्रभाव की भी चर्चा की गई है। विश्व पटल पर सामुदायिक रेडियो के मंच की प्रभावशीलता और उसके सन्देश की पहंुच और क्षेत्रीय भाषा में संचार के प्रभाव का भी विश्लेषण किया गया है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Siva, Balan. Selvin, Jebaraj Norman. (2012)** ने अपने शोध पत्र Future Tool for Rural Women Development: Role of Community Radio में बताया है कि रेडियो को जमीनी स्तर के लोगों के लिए सबसे सुलभ जनसंचार उपकरण के रूप में पहचाना गया। एक माध्यम के रूप में रेडियो कम समय में आसानी से ग्रामीण जनता तक पहुंच सकता है। रेडियो का लाभ यह है कि उपयोगकर्ताओं को साक्षरता की आवश्यकता नहीं होती है, जबकि निवेश लागत कम होती है। सामुदायिक रेडियो (सीआर) की अवधारणा नई है तथा हाल के दिनों में गति पकड़ रही है। सामुदायिक रेडियो एक प्रक्रिया है। यह केवल रेडियो कार्यक्रम तैयार करने, प्रसारित करने के बारे में नहीं है। सामुदायिक रेडियो, समुदाय का समुदाय के द्वारा और समुदाय के लिए है। सामुदायिक केन्द्र विभिन्न जातीय, सामाजिक और धार्मिक पृष्ठभूमि और लिंग के लिए लोगों के प्रतिनिधित्व का अवसर दे रहा है। निष्कर्ष है कि सामुदायिक रेडियो ग्रामीण महिलाओं के विकास के लिए भविष्य के उपकरण के रूप में उभर सकता है। सामुदायिक रेडियो विकास प्रक्रिया की जवाबदेही लाने, प्रणाली को अधिक पारदर्शी बनाने

और सुशासन सुनिश्चित करने का एक मंच है। यह सामुदायिक स्वामित्व और नियंत्रण के साथ-साथ समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित करता है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Mwidima, Peter Charles. (2019)** ने अपने शोध पत्र The Contributions of Community Radios in Fostering Social Services in Tanzania:An Evaluation of "Maendeleo vijijini" Program by Radio SAUT FM in Misungwi District में बताया है कि तंजानिया के ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक सेवाओं की पहुंच अभी भी देश के सामने प्रमुख बाधाओं में से एक है। ग्रामीण तंजानिया क्षेत्रों में स्वच्छ पानी और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच उन क्षेत्रों के निवासियों के सामने प्रमुख चुनौतियों में से एक है। इसी तरह ग्रामीण तंजानिया क्षेत्रों में लगभग 85 प्रतिशत सड़कें या तो उबड़-खाबड़ हैं या नहीं हैं। इस अध्ययन का फोकस तंजानिया में सामाजिक सेवाओं के सुधार को बढ़ावा देने में सामुदायिक रेडियो की भूमिका का आकलन है। निष्कर्षों से पता चलता है कि मेन्डेलियो विजिजिनी कार्यक्रम के माध्यम से सामुदायिक रेडियो ने मिसुंगवी जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक सेवाओं के प्रचार और सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। तंजानिया में सामुदायिक रेडियो चलाने के लिए वित्तीय और मानव संसाधन के मामले में प्रयास किये जाने की आवश्यकता है। अप्रशिक्षित कर्मचारियों, वित्तीय कमी, कम कवरेज, बार-बार बिजली कटौती, खराब कार्यक्रमों के कारण सामुदायिक रेडियो को नुकसान होता है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- **Pisapat, Youkongpun. (2015)** ने अपने शोध पत्र The Role of Community-Based Media in Strengthening, Preserving and Promoting Identity And Culture में बताया है कि थाईलैण्ड के रिवरसाइड समुदाय में सूचना वितरण में समुदाय-आधारित मीडिया की भूमिका कैसे महत्वपूर्ण है। समुदाय ने अपना मीडिया बनाना शुरू कर दिया है तथा स्वयं के लिए सामाजिक नेटवर्क का उपयोग करना शुरू कर दिया। यह अध्ययन

हाइपरलोकल मीडिया के विचार को दर्शाता है। लगभग सौ घरों पर ध्यान केंद्रित करने के साथ हाइपरलोकल मीडिया के लिए स्थानीय समाचार प्रदान करके, स्थानीय राजनीति को कवर करके और स्थानीय लोगों को अपने क्षेत्र से संबंधित मामलों में स्थानीय लोगों तक पहुंचाना बहुत आसान है। निष्कर्ष है कि हाइपरलोकल संचार ने सामुदायिक संदर्भ में बहुत अधिक सक्रिय भूमिका निभाई है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Bridget, Backhaus. (2020)** ने अपने शोध पत्र Tuning In: Identity Formation in Community Radio for Social Change में बताया है कि सामुदायिक रेडियो, आत्म-अभिव्यक्ति, वैकल्पिक मंच और मीडिया पहुंच को लोकतांत्रिक बनाने का एक शक्तिशाली उपकरण है। दो सामुदायिक रेडियो पर किए गए शोध में पाया गया कि सामुदायिक रेडियो, उत्पादकों और स्वयंसेवकों के बीच सामुदायिक पहचान और व्यक्तिगत पहचान दोनों की अभिव्यक्ति की सुविधा प्रदान करता है। सामुदायिक रेडियो स्थानीय ज्ञान साझा करने, महिलाओं को सशक्त बनाने के संदर्भ में सामाजिक परिवर्तन के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण लाभ हो सकते हैं। हालांकि, हाशिए के समूह उन समान लाभों तक कैसे पहुंच सकते हैं। इस संदर्भ में चुप्पी है। लेकिन सामुदायिक रेडियो में भागीदारी से वंचित समूहों को तेजी से वैश्वीकृत और समरूप मीडिया परिदृश्य में पहचान दिलाने की संभावनाऐं है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Evaristus, Adesina. Olusola, Oyero. (2019)** ने अपने शोध पत्र Adopting Online Radio for Promoting Educational And Community Development में बताया है कि सरकार के स्वामित्व वाला ग्रामीण रेडियो स्टेशन शिक्षा, कृषि, अर्थव्यवस्था और स्वास्थ्य के क्षेत्रों में लोगों की आवश्यकताओं को पूरा कर रहा है। हालांकि, समुदाय के सदस्यों के पास स्टेशन तक मुफ्त पहुंच नहीं है, क्योंकि वे इसे सरकारी संपत्ति के रूप में देखते हैं जो गुणवत्ता एवं उनकी भागीदारी में बाधा डालता है। इसलिए अध्ययन में सिफारिश की गई है कि

सरकार को ग्रामीण समुदायों को अपने स्वयं के रेडियो स्टेशनों के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। या तो उन्हें अपने रेडियो स्टेशन स्थापित करने में मदद करनी चाहिये या उन्हें सरकारी सामुदायिक रेडियो स्टेशनों की पूरी जिम्मेदारी लेने के लिए छोड़ दिया जाना चाहिये। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Rahim, Abdul. Kuuteryiri, Chireh. (2021)** ने अपने शोध पत्र Engaging Diverse Audiences : The Role of Community Radio in Rural Climate Change Knowledge Translation में बताया है कि सामुदायिक रेडियो, ज्ञान प्रसार का एक महत्वपूर्ण उपकरण है, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में जहां यह भौगोलिक रूप से दूर श्रोताआंे के लिए स्थानीय बहस में शामिल होने के अवसर पैदा कर सकता है। इस अध्ययन में रेडियो के सामुदायिक-निर्माण कार्य पर विचार किया गया है। शोध पत्र कनाडा में रेडियो के इतिहास, ग्रामीण समुदायों में इसकी भूमिका पर विचार करता हैं तथा विषय पर चर्चा करने के लिए अन्य स्थानों में रेडियो-केंद्रित ज्ञान प्रसार के साथ अनुभवों की समीक्षा करता हैं। एक ऐसे युग में रेडियो की प्रासंगिकता के लिए तर्क देता हैं जब डिजिटल संचार अधिक आम हैं। शोध पत्र का निष्कर्ष है कि सामुदायिक रेडियो, जुड़ाव के लिए एक मंच प्रदान कर सकता है इसलिए यह जलवायु परिवर्तन पर ज्ञान हस्तांतरण के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Justina, Kathambi. Hellan, Mberia. (2021)** ने अपने शोध पत्र Community Radio Stations Messages And Promotion Of Family Planning Methods In Kibra Constituency में बताया है कि केन्या में सामुदायिक रेडियो स्टेशनों द्वारा प्रसारित संदेशों का प्रभाव परिवार नियोजन विधियों के प्रचार में क्या है? सामुदायिक रेडियो के संदेश, चर्चा अभियान और बहस के रूप में प्रसारित किया जिससे परिवार नियोजन विधियों को बढ़ावा मिला। अध्ययन में पाया गया कि परिवार नियोजन विधियों की प्रभावशीलता और अप्रभाविता में मुफ्त सरकारी सेवाओं के उपयोग और रेडियो में प्रसारित संदेशों से लाभ हुआ। अध्ययन ने

स्थापित किया कि अधिकांश उत्तरदाताओं के पास कॉलेज की शिक्षा नहीं थी जो एक संकेतक था कि गरीबी का स्तर झुग्गी-झोपड़ी क्षेत्रों में ज्यादा है। क्योंकि गरीबी और शिक्षा अत्यधिक सहसंबद्ध है। फैमली प्लानिंग के सम्बन्ध में महिलाओं ने रेडियो द्वारा प्रसारित विधि के बारे में सुना और परिवार नियोजन उपायों का भी उपयोग किया। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- Khan, Mohd Anowarul Arif. (2017) ने अपने शोध पत्र Role of Community Radio for Community Development in Bangladesh में बताया है कि सामुदायिक रेडियो मुख्य धारा की आबादी के साथ ग्रामीण, वंचित, कमजोर और दुर्गम आबादी के विचारों, समस्याओं और संभावनाओं को व्यक्त करने और साझा करने का एक माध्यम है। वंचित क्षेत्रों के लोगों के मीडिया के रूप में सामुदायिक रेडियो लोकप्रिय हो गया है। इसने नीति निर्माताओं के साथ-साथ जमीनी स्तर के लोगों को अपने समुदाय की विकास प्रक्रिया में शामिल होने के लिए एक नया क्षेत्र खोल दिया है। देश भर में लगभग 17 सामुदायिक रेडियो प्रतिदिन में 135 घंटे के कार्यक्रमों का प्रसारण कर रहे हैं। सामुदायिक रेडियो सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, स्वास्थ्य, पानी और स्वच्छता और आपदा से संबंधित मुद्दों को प्रभावी ढंग से और रणनीतिक रूप से संबोधित करने में हमारी मदद कर सकते है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- Mahanand, Timalsina. Prajwal, Man Pradhan.(2019) ने अपने शोध पत्र Role of Local/Community Radio on Rural Development में बताया है कि सामान्य रूप से ग्रामीण विकास और विशेष रूप से ग्रामीण सामुदायिक विकास प्रक्रिया पर स्थानीय/सामुदायिक रेडियो की भूमिका महत्वपूर्ण है। साहित्य समीक्षा के माध्यम से आवश्यक जानकारी उत्पन्न

होती है। यह पत्र इस बात पर प्रकाश डालता है कि सामुदायिक रेडियो ने विशेष रूप से सात विषयगत क्षेत्रों (उपयुक्तता, कृषि परिवर्तन, सहभागी लोकतंत्र को बढ़ावा देना, आवाजहीनों की आवाज, स्थानीय मुद्दों पर सूचना/चर्चा मंच, वंचित ग्रामीण लोगों को सशक्त बनाना और सुशासन) पर योगदान में सकारात्मक प्रभाव लाया है। इस प्रकार सामान्य रूप से ग्रामीण विकास प्रक्रिया और विशेष रूप से ग्रामीण सामुदायिक विकास प्रक्रिया को मजबूत करने के लिए ऐसे विषयगत क्षेत्रों में स्थानीय स्तर के अधिकारियों द्वारा रेडियो कार्यक्रमों को प्रस्तुत करना बेहतर है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- Catherine, Wilkinson. (2015) ने अपने शोध पत्र Young People, Community Radio And Urban Life में बताया है कि युवाओं की दैनिक दिनचर्या विभिन्न मीडिया प्लेटफार्मों से घिरी हुई है, जो उनका ध्यान आकर्षित करने के लिये प्रतिस्पर्धा कर रहे है। सामुदायिक रेडियो ऐसा ही एक मंच है हालांकि, सामुदायिक रेडियो का आउटपुट अन्य मीडिया की तरह नहीं है। यद्यपि अधिकांश युवाओं का रूझान सामुदायिक रेडियो पर नहीं है। अधिकांश रेडियो स्टेशन अपने कार्यक्रमों में शहरी जीवन का विवरण प्रदान करते है। सामुदायिक रेडियो युवाओं की भागीदारी के माध्यम से युवा केन्द्रित कार्यक्रम तैयार करता है। निष्कर्ष है कि सामुदायिक रेडियो स्टेशन, पारंपरिक एफएम और ऑनलाइन के इतर युवाओं की पहचान और उनके विकास के लिये महत्वपूर्ण मंच हैं तथा छात्रों के लिये स्कूल से बाहर रचनात्मकता का मंच है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।
- Juni'chi, Shaw. (2013) ने अपने शोध पत्र Role of Community Radio in Disaster Management : Reflection from Japan ने बताया है कि डिजास्टर मैनेजमेंट में कम्युनिटी रेडियो एक प्रभावी उपकरण के तौर पर सामने आया है। जापान में डिजास्टर मैनेजमेंट के लिए कम्युनिटी रेडियो का प्रयोग किया जा रहा है। समुद्र के किनारे निवास करने वाली जनता को मौसम विभाग द्वारा जारी चेतावनी को कम्युनिटी रेडियो के माध्यम से सूचित किया जा रहा है। साथ ही आपदा के समय बचाव की भी जानकरी लगातार मुहैया करवाई जा रही है। कम्युनिटी

रेडियो के उपयोग पर कार्य कर रहे विद्यार्थियों के लिए है शोध कार्य लाभप्रद साबित हो सकता है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- Africanus & Naaikaur. (2015) ने अपने शोध पत्र Who is the Community in community Radio : A case Study of Radio Progress in the Upper West Region, Ghana में सामुदायिक रेडिया के सन्दर्भ में समुदाय को परिभाषित किया है। घाना के अपर वेस्ट रीजन में सामुदायिक रेडियो के प्रोसेस पर केस स्टडी की गई है। इस केस स्टडी में सामुदायिक रेडियो के जरिए साम्प्रदायिक सद्भाव, महिला विकास, डेमोक्रेसी में डायलाग और पार्टिसिपेशन के लिए कम्युनिटी रेडियो द्वारा किए जा रहे संचार से प्राप्त हो रहे सकारात्मक परिवर्तनों से संबन्धित तथ्यों को उजागर किया गया है कम्युनिटी रेडियो का समाज पर प्रभाव से संबन्धित शोध अध्ययनों के लिए यह शोध पत्र उपयोगी साबित हो सकता है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- Alphonse, Xavier. (2010) ने अपने शोध पत्र Role of Autonomous College In Strengthening The Quality Of Higher Education में ऑटोनामस कॉलेजों के बारे में चर्चा की है कि किस तरह उच्च शिक्षा के प्रसार में ये महाविद्यालय अपनी भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। साथ ही गुणवत्तापरक उच्च शिक्षा की उपलब्धता के लिए इन कॉलेजों का क्या योगदान है। मीडिया और उच्च शिक्षा से संबन्धित शोध कार्य के लिए यह शोध पत्र उपयोगी सिद्ध हो सकता है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Dunaway, David. (2010)** ने अपने शोध पत्र Community Radio At the Beginning of the 21st Century में सामुदायिक रेडियो के इतिहास को रेखांकित किया है शोध पत्र में विश्व में सामुदायिक रेडियो की शुरुआत के विषय में चर्चा की गई है। साथ ही सामुदायिक रेडियो के उपयोग और प्रभाव की भी चर्चा की गई है। विश्व पटल पर सामुदायिक

रेडियो के मंच की प्रभावशीलता और उसके सन्देश की पहुंच और क्षेत्रीय भाषा में उसके संचार के प्रभाव का भी विश्लेषण किया गया है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

- **Thomas, J. (2001)** ने अपने शोध पत्र Using Community Radio for Non Formal Education ने अपने शोध पत्र में सामुदायिक रेडियो के अनौपचारिक शिक्षा में प्रयोग पर चर्चा की है। सामुदायिक रेडियो के द्वारा अनौपचारिक शिक्षा के लिए प्रभावशाली संचार के विषय में गहन अध्ययन किया गया है। क्षेत्रीय भाषा के इस संचार उपकरण को अनौचारिक शिक्षा का सबसे प्रभावी उपकरण बताया गया है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे विद्यार्थियों के लिए यह शोध पत्र उपयोगी है। सामुदायिक रेडियो और शिक्षा पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिये यह शोध पत्र उपयोगी है। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध अध्ययन गुणवत्तापूर्ण एवं सराहनीय है।

2.3 शोध अंतराल

साहित्य पुनरावलोकन से ज्ञात हुआ है कि उच्च शिक्षा में सामुदायिक रेडियो के चलन एवं संभावनाएं विषय पर यह प्रस्तुत अध्ययन प्रथम शोध है। ना सिर्फ उत्तर प्रदेश, ना सिर्फ भारत बल्कि पूरी दुनिया में उक्त विषय पर प्रत्यक्ष रूप से कोई शोध सामने नहीं आया है। सामुदायिक रेडियो प्रभाव, उपयोगिता, चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ के अध्ययन विश्लेषण के लिए अब तक जो भी कार्य हुए हैं प्रस्तुत शोध कार्य उनसे भिन्न प्रकृति का है।

साहित्य पुनरावलोकन की प्रक्रिया में अनसुनी आवाजों को आवाज़ देने के उपकरण के रूप में, शिक्षा एवं ज्ञान के एक अदृश्य शिक्षक के रूप में, विश्वविद्यालय की छवि निर्माण के रूप में, विद्यार्थियों को प्रायोगिक ज्ञान देने के एक उपकरण के रूप में, विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा में उत्साह एवं उत्सुकता बढ़ाने वाले उत्प्रेरक के रूप में और शिक्षा के लोकतंत्रीकरण के महत्वपूर्ण साधन के रूप में सामुदायिक रेडियो की भूमिका स्पष्ट हुई है।

सामुदायिक रेडियो के प्रयोग से संबंधित कई शोध पत्रों में समुदाय के सशक्तिकरण के तथ्य दिखाई पड़ते हैं साथ ही साथ सरकार द्वारा प्रायोजित नशा मुक्ति एवं सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों को

जनता तक पहुंचाने के उपकरण के रूप में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण दिखाई देती है कहीं कहीं शिक्षा में भी इसकी उपयोगिता का वर्णन है लेकिन उच्च शिक्षा में सामुदायिक रेडियो की भूमिका, उसका संचालन, उसकी चुनौतियां एवं भविष्य के लिए उसकी उपयोगिता पर कोई सामान्य अथवा गहन अध्ययन नहीं हुआ है। इस प्रकार शोधकर्ता ने अपने शोध अध्ययन के लिए शोध रिक्तता यानी Research Gap का अन्वेषण किया है।

❖❖❖

शोध अभिकल्प

3.1 प्रस्तावना

कोई अध्ययन तभी एक शोध कहलाता है जब वह विश्वसनीय, वैध, वस्तुनिष्ठ एवं मानकीकृत हो। ऐसे में किसी भी अध्ययन को इन समस्त मानकों पर खरा उतरने के लिए कुछ वैज्ञानिक विधियों एवं उपकरणों की आवश्यकता होती है। इन विधियों एवं उपकरणों के प्रयोग से ही किसी भी शोध अध्ययन को गति प्रदान की जा सकती है तथा अभीष्ट परिणामों को प्राप्त किया जा सकता है। इन विधियों एवं उपकरणों की व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध रूपरेखा को शोध अभिकल्प/शोध प्रारूप/शोध प्रविधि कहते हैं।

3.2 अर्थ एवं परिभाषाएँ

"शोध अध्ययन को न्यूनतम समय, न्यूनतम लागत एवं न्यूनतम ऊर्जा लगाकर अधिकतम प्रभावी एवं क्रमबद्ध प्रक्रिया से तैयार करने के लिए शोध की योजना एवं उसकी रूपरेखा का निर्माण किया जाता है। शोध की इसी योजना एवं उसकी रूपरेखा को शोध प्रारचना करते हैं।"

(दयाल, 2010, पृ. 55)

पीवी यंग के अनुसार, " शोध प्रारूप एक तार्किक एवं क्रमबद्ध योजना है। अर्थात शोध विधि तंत्र अर्थात शोध प्रारचना, शोधकार्य को क्रमबद्ध तरीके से करने का एक वैज्ञानिक उपकरण है। शोध कार्य के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न विधियों एवं उपकरणों की आवश्यकता होती है। इन विधियों एवं उपकरणों का निर्धारण शोध प्रारचना कहलाता है।"

" शोध विधि तंत्र (शोध प्रारचना) से आशय शोध कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व निर्मित एक ऐसी योजनाबद्ध रूपरेखा है जो कुछ विशिष्ट एवं निश्चित उद्देश्यों के सम्बन्ध में शोध अध्ययन के विभिन्न पक्षों पर वैज्ञानिक विधियों और उपकरणों के प्रयोग को स्पष्ट करती है।"

(कोली, 2010 पृ. 27)

विमल शाह के अनुसार, " शोध प्रारूप शोध अध्ययन की एक योजना है। अतः इसे प्रत्येक अध्ययन में योजित किया जाता है, चाहे वह अध्ययन अनियंत्रित हो या नियंत्रित, विषय परक हो या उद्देश्य परक।"

आरएल ऐकॉफ कहते हैं कि, " निर्णय प्रवृत्त करने की स्थिति उत्पन्न होने के पूर्व निर्णय निर्धारित करने की प्रक्रिया को शोध विधि तंत्र कहते हैं। अर्थात यह वह प्रक्रिया है, जो शोध अध्ययन के परिणामों को प्राप्त करने के लिए एक निर्धारित मार्ग प्रदान करती है। "

अल्फ्रेड जे. कॉहन के अनुसार, " शोध प्रारूप की सर्वश्रेष्ठ परिभाषा अध्ययन की तार्किक योजना के रूप में की जाती है। यह एक प्रश्न का उत्तर जानने, परिस्थिति का वर्णन करने या परिकल्पना का निरीक्षण करने से सम्बंधित है।"

एफएन कलिंजर के अनुसार, " शोध प्रारूप एक योजना, संरचना एवं व्यूह रचना है, जिसका प्रयोग शोध से सम्बंधित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने एवं उनके विचारों पर नियंत्रण रखने के लिए किया जाता है। विभिन्न वैज्ञानिकों के मत के अनुसार किसी भी शोध अध्ययन को मूर्त रूप प्रदान करने में शोध प्रारचना की भूमिका प्रधान रहती है। साथ ही साथ यह, वह मानकीकृत मार्ग है जो परिणामों में वैधता, उद्देश्यपरकता एवं विश्वसनीयता को विकसित करता है।"

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि, यदि कोई शोध कार्य करना है तो उसके लिए कुछ मानक विधियों एवं उपकरणों का प्रयोग करना अनिवार्य हो जाता है क्योंकि यदि शोध परिणामों को उद्देश्यपरक एवं वस्तुनिष्ठ बनाना है तो उसे मानकीकृत विधि एवं उपकरण के प्रयोग से विश्लेषित करना होता है। यही कारण है कि किसी भी शोध अध्ययन की आत्मा उसमें प्रयुक्त की गयी शोध प्रारचना होती है।

3.3 वैज्ञानिक पद्धति

जाने-माने शोध प्रविधि विशेषज्ञ कार्ल पियर्सन के अनुसार, "सत्य के लिए कोई संक्षिप्त मार्ग नहीं है। विश्व का ज्ञान प्राप्त करने के लिए वैज्ञानिक विधि के द्वार से ही गुजरना पड़ता है। सामाजिक घटनाओं एवं व्यवहारों का वास्तविक ज्ञान अर्जित करने के लिए वैज्ञानिक पद्धति का उपयोग किया जाना अति आवश्यक है।"

"शोध अध्ययन में तथ्यों के क्रमानुसार परीक्षण, वर्गीकरण एवं विश्लेषण के लिए वैज्ञानिक शोध विधि का प्रयोग आवश्यक हो जाता है।"

(कोली, 2010, पृ. 8)

" वैज्ञानिक पद्धति को परिभाषित करते हुए सामान्य शब्दों में यह कहा जाता है कि कोई भी वह पद्धति वैज्ञानिक पद्धति है, जिसे एक पक्षपात रहित अध्ययनकर्ता किसी विषय के अध्ययन में प्रयुक्त

करता है। यह एक ऐसी पद्धति है जो भावना, दर्शन अथवा तत्वज्ञान से सम्बंधित न होकर वस्तुनिष्ठ अवलोकन, परीक्षण, प्रयोग एवं वर्गीकरण की एक व्यवस्थित कार्य प्रणाली पर आधारित होती है। "

(तोमर, 2012, पृ. 3)

3.4 शोध के उद्देश्य

किसी भी समस्या का व्यवहारिक समाधान प्राप्त करने के लिए ही शोध कार्य किया जाता है समस्या के समाधान हेतु शोध के कुछ उद्देश्य निर्धारित किए जाते हैं उन उद्देश्यों को प्राप्त करके ही शोध समस्या का समाधान किया जाता है शोध अध्ययन में उद्देश्यों का निरर्धारण करना अत्यन्त आवश्यक कार्य है, क्योंकि उद्देश्य विहीन शोधकर्ता उस यात्री के समान होता है जिसे अपनी मंजिल का पता नही होता है।

बी०डी० भाटिया के अनुसार, "उद्देश्यों के ज्ञान के बिना शिक्षक उस आविक के समान है जिसे अपने लक्ष्य का ज्ञान नहीं होता है तथा शिक्षार्थी उस पतवार विहीन नौका के समान होता है जो समुद्र की लहरों के थपेड़े खाते तट की ओर बढ़ती जा रही है।"

उद्देश्य के महत्व को स्पष्ट करते हुए जान डयूवी ने कहा है कि, " जो कार्य लक्ष्य का ज्ञान करके किया जाता है वह सार्थक होता है। उन्हीं अर्थों के आधार पर शोधकर्ता अन्य वस्तुओं में अर्थ खोजता है। पूर्व लक्षित उद्देश्य क्रिया को उचित दिशा में ले जाते है तथा उसे सफल बनाते हैं।"

जॉन डयूवी ने अपनी पुस्तक 'डेमोक्रेसी एण्ड एजूकेशन' में अच्छे उद्देश्यों की तीन विशेषताएं बतायी हैं।

1- अच्छे उद्देश्य वह होते हैं जो जीवन की वास्तविक परिस्थितियों से सम्बन्धित होते हैं।

2- अच्छे उद्देश्य गतिशील होते हैं ताकि वह जीवन की बदली हुई परिस्थितियों के अनुकूल हो सकें।

3- अच्छे उद्देश्य वह हैं जो हमारे समक्ष किया करने के विभिन्न अवसर प्रदान करे एवं क्रियाशील बनायें।

उपरोक्त विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं।

1- उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की वस्तुस्थिति का अध्ययन।

2- उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों से प्रसारित कार्यक्रमों की उपयोगिता का अध्ययन।

3- उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की चुनौतियों का अध्ययन।
4- उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के वित्तीय प्रबन्धन का अध्ययन।
5- उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के लिये उपयुक्त मॉडल पर अध्ययन।

3.5 शोध के प्रश्न

उपरोक्त उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित प्रश्नों का निर्माण किया गया है।

1- उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की वर्तमान स्थिति क्या है?
2- उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के कार्यक्रमों की विद्यार्थियों के लिये उपयोगिता क्या है?
3- उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के समक्ष चुनौतियों क्या है?
4- उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की आमदनी के स्त्रोत क्या है?
5- उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के लिये उपयुक्त मॉडल क्या हो?

3.6 शोध की परिकल्पनाऐं

किसी भी शोध अध्ययन में परिकल्पनाऐं शोधकर्ता को दिशा निर्देश प्रदान करती है तथा परिकल्पनाओं का परीक्षण करके ही अध्ययन के निष्कर्ष प्राप्त किये जाते हैं। परिकल्पनाओं के निर्माण से शोधकर्ता को समस्या से सम्बन्धित तर्क संगत तथा उपयोगी आँकड़ों के संकलन में निर्धारित दिशा मिलती है। परिकल्पनाओं की रचना उपयुक्त वैध तथा शुद्ध निष्कर्षा के अनुमान के लिए अति आवश्यक है। परिकल्पनाओं के अभाव मे सम्बन्धित चरों तथा तथ्यों का स्पष्ट ज्ञान नहीं हो पाता, जिसके कारण शोधकर्ता को आँकडों के संकलन के लिए इधर-उधर भटकना पड़ता है।ऐसी परिस्थितियों में शोधकर्ता कभी-कभी आवश्यक आँकड़े भी एकत्रित नहीं कर पाता है।

परिकल्पना को परिभाषित करते हुए 'टाउनसेण्ड' ने कहा है कि, "परिकल्पना एक समस्या का प्रस्तावित उत्तर होती है। इसी प्रकार करलिंगर ने परिकल्पना को परिभाषित करते हुए लिखा है कि, एक परिकल्पना दो या दो से अधिक चरों के सम्बन्ध में एक कल्पनात्मक कथन होता है।"

जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार, "परिकल्पना एक विचार युक्त कथन है जिसका प्रतिपादन किया जाता है और अस्थायी रूप से सही मान लिया जाता है और निरीक्षण द्वारा प्रदत्तों के आधार पर तथ्यों तथा परिस्थितियों के आधार पर व्याख्या की जाती है जो आगे शोध कार्य को निर्देशन देती है।"

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि, परिकल्पना, सम्बन्धित समस्या का एक ऐसा सम्भाव्य तथा परीक्षण योग्य समाधान का प्रस्ताव होता है जिसके आधार पर सम्बन्धित चरों अथवा घटनाओं का अध्ययन अनुभविक आधार पर किया जा सके तथा समस्या का पर्याप्त एवं वैध समाधान प्राप्त किया जा सके।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने उद्देश्यों को ध्यान में रखकर निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया है।

1- उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की वस्तुस्थिति के सन्दर्भ में विभिन्न प्रकार के विद्यार्थियों एवं विशेषज्ञों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2- उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों से प्रसारित कार्यक्रमों की उपयोगिता के सन्दर्भ में विभिन्न प्रकार के विद्यार्थियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3- उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की चुनौतियों के सन्दर्भ में विभिन्न प्रकार के विद्यार्थियों एवं विशेषज्ञों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4- उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के वित्तीय प्रबन्धन के सन्दर्भ में विभिन्न प्रकार के विशेषज्ञों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5- उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के उपयुक्त मॉडल के सन्दर्भ में विभिन्न प्रकार के विद्यार्थियों एवं विशेषज्ञों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उपरोक्त परिकल्पनाओं का परीक्षण प्रश्नावली पर प्राप्त ऑकड़ों के अनुसार उपपरिकल्पनाओं का निर्माण करके किया जाएगा जो कि उपकरण (CRUQ) के प्रश्नों पर आधारित होगी।

3.7 शोध प्रारूप

शोध अध्ययन की तार्किकता, उद्देश्यपरकता एवं विश्वसनीयता शोध की प्रकृति के अनुरूप उचित वैज्ञानिक शोध विधि के प्रयोग पर निर्भर करती है। इसलिए प्रस्तुत शोध अध्ययन 'सामुदायिक रेडियो : उच्च शिक्षा में चलन एवं संभावनाएं' में एक मानकीकृत शोध अभिकल्प का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत

शोध की प्रवृत्ति परिमाणात्मक एवं गुणात्मक दोनों तरह की है। इसलिए शोध अध्ययन के विषय की आवश्यकता के आधार पर मिश्रित शोध प्रविधि (Mixed Research Method) के अंतर्गत अनुक्रमिक व्याख्यात्मक प्रविधि (Sequential Explanatory Design) का चयन किया गया है जिसमें परिमाणात्मक (Quantitative) और गुणात्मक (Qualitative) दोनों विविधों के प्रयोग से शोध समस्या को हल किया गया है।

मिश्रित शोध प्रविधि का प्रतिपादन क्रॉसवेल जे0 ने किया है। सामाजिक विज्ञान में संबंधित शोध अध्ययनों में इस विधि का प्रयोग तीव्रता से बढ़ रहा है। उक्त विधि के प्रयोग से सामाजिक स्थितियों, सामाजिक प्रणालियों, सामाजिक व्यवहारों तथा सामाजिक संरचनाओं का अध्ययन किया जाता है। परिमाणात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रकार की विधियों के प्रयोग से प्राप्त निष्कर्षों की सम्मिलित व्याख्या से शोध अध्ययन के परिणामों की उद्देश्यपरकता बढ़ जाती है।

अनुक्रमिक व्याख्यात्मक प्रविधि एक मिश्रित शोध प्रविधि है। इस विधि में दो चरण होते हैं पहला चरण परिमाणात्मक तथा दूसरा चरण गुणात्मक होता है। यह प्रविधि, अध्ययन के प्रश्नों के समाधान की प्राथमिकता के आधार पर पहले चरण में परिमाणात्मक आकड़ों के संग्रहण एवं विश्लेषण से प्रारंभ होती है। पहले चरण के अनुक्रम के आधार पर ही दूसरे चरण में गुणात्मक आंकड़ों का संग्रहण और विश्लेषण किया जाता है। प्रथम चरण के परिणाम के आधार पर ही गुणात्मक चरण का अध्ययन किया जाता है। इसके पश्चात ही शोधकर्ता यह विवेचना करता है कि कैसे गुणात्मक आंकड़ों के परिणाम परिमाणात्मक आंकड़ों के निष्कर्षों की सही व्याख्या करने में सहायक होते हैं।

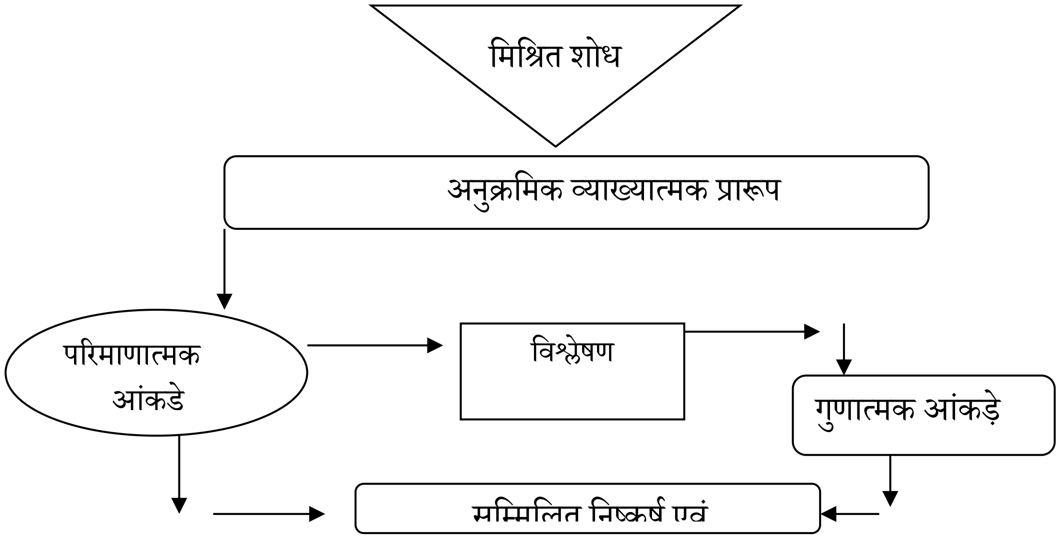

चित्र संख्या 3.1: शोध अध्ययन में प्रयुक्त शोध प्रारूप

प्रस्तुत शोध कार्य में परिमाणात्मक विधि के अंतर्गत प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण, विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि (Descriptive Survey Method) के द्वारा किया गया है। इसमें स्वनिर्मित प्रश्नावली (Questionnaire) के माध्यम से संग्रहित किए गए आकड़ों को प्रतिशत विश्लेषण (Percentage Analysis) एवं काई वर्ग परीक्षण (Chi-Square Test) के द्वारा विश्लेषित किया गया है। जबकि गुणात्मक विधि के अंतर्गत प्राप्त आंकड़ों की व्याख्या का आधार विषयवस्तु विश्लेषण (Content Analysis) है।

विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि में चरों के वर्तमान स्तर का निर्धारण किया जाता है तथा उनके वर्तमान स्तर और मान्य स्तर में तुलना की जाती है। यह दो या दो से अधिक चरों के पारस्परिक संबंधों से संबंधित अध्ययन है।

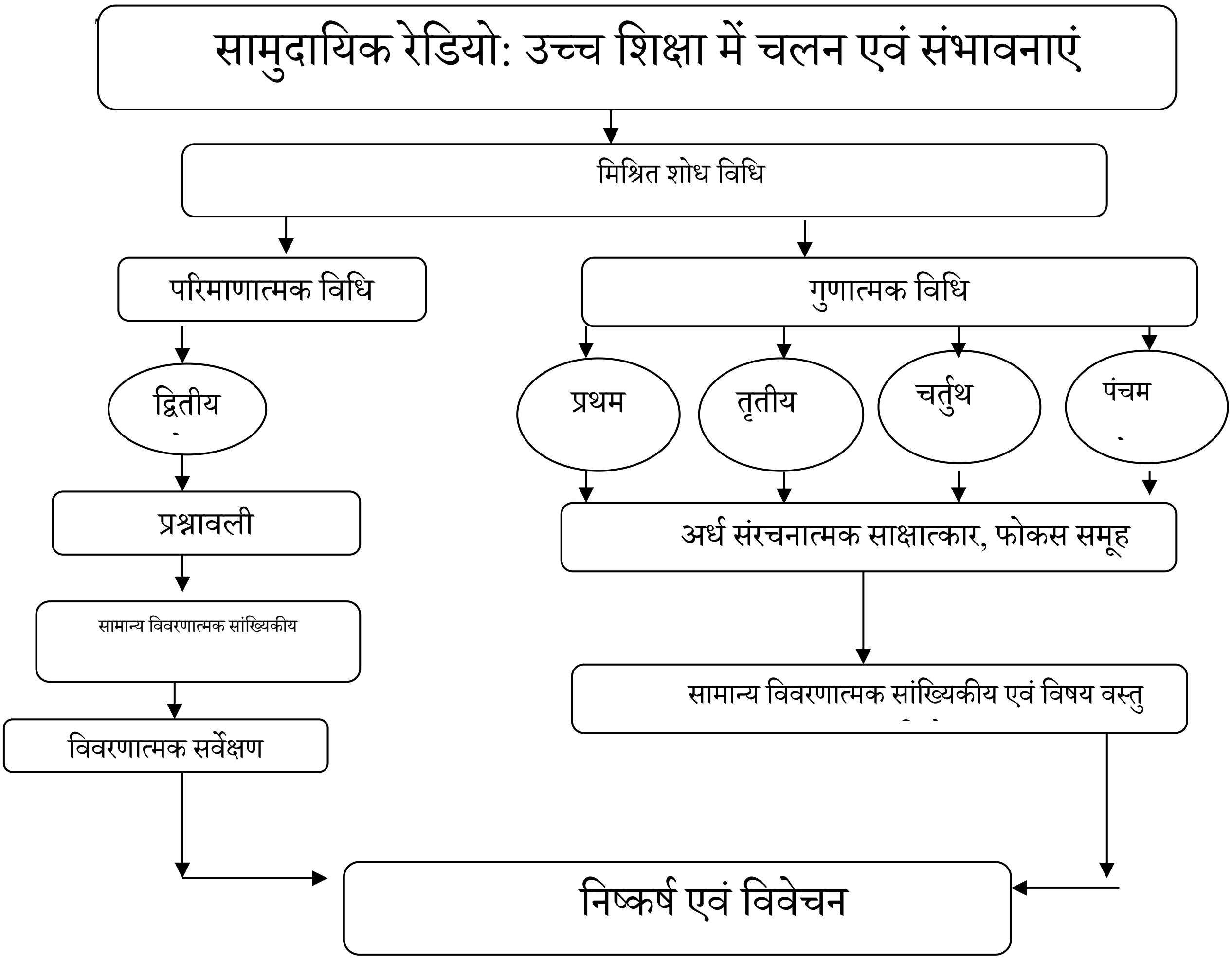

चित्र संख्या 3.2: शोध अध्ययन के निष्कर्ष एवं विवेचन की प्रक्रिया

क्र0 सं0	**शोध उद्देश्य**	**न्यादर्श**	**उपकरण**	**सांख्यिकीय**
1	उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की वस्तुस्थिति का अध्ययन।	यू0जी0,पी0जी0 के 200 विद्यार्थी, 20 मीडिया शिक्षक एवं रेडियो, सामुदायिक रेडियो विशेषज्ञ/प्रबन्धन	प्रश्नावली, अर्ध संरचनात्मक, साक्षात्कार, फोकस समूह परिचर्चा	सामान्य विवरणात्मक सांख्यिकी एवं विषयवस्तु विश्लेषण
2	उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों से प्रसारित कार्यक्रमों की उपयोगिता का अध्ययन।	यू0जी0,पी0जी0 के 200 विद्यार्थीयों	प्रश्नावली	सामान्य विवरणात्मक सांख्यिकीय
3	उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की चुनौतियों का अध्ययन।	यू0जी0,पी0जी0 के 200 विद्यार्थी, 20 मीडिया शिक्षक एवं रेडियो, सामुदायिक रेडियो विशेषज्ञ/प्रबन्धन	प्रश्नावली, अर्ध संरचनात्मक, साक्षात्कार, फोकस समूह परिचर्चा	सामान्य विवरणात्मक सांख्यिकी एवं विषयवस्तु विश्लेषण
4	उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के वित्तीय प्रबन्धन का अध्ययन।	20 मीडिया शिक्षक एवं रेडियो, सामुदायिक रेडियो विशेषज्ञ/प्रबन्धन	अर्ध संरचनात्मक, साक्षात्कार, फोकस समूह परिचर्चा	विषयवस्तु विश्लेषण
5	उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के लिये उपयुक्त मॉडल पर अध्ययन।	यू0जी0,पी0जी0 के 200 विद्याथी, 20 मीडिया शिक्षक एवं रेडियो, सामुदायिक रेडियो विशेषज्ञ/प्रबन्धन	प्रश्नावली, अर्ध संरचनात्मक, साक्षात्कार, फोकस समूह परिचर्चा	सामान्य विवरणात्मक सांख्यिकी एवं विषयवस्तु विश्लेषण

तालिका सं.3.1 अध्ययन के उद्देश्य, न्यादर्श, उपकरण एवं सांख्यिकी

3.7.1 शोध अध्ययन की जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन भारत गणराज्य के उत्तर प्रदेश राज्य में मंडल मुख्यालयों (Division Headquarters) पर पूर्ण किया गया है। शोध अध्ययन में प्रदेश के सभी मंडल मुख्यालयों को सम्मलित किया गया है लेकिन शोध अध्ययन की जनसंख्या में वे मंडल मुख्यालय शामिल हैं जहाँ पर स्थित विश्वविद्यालयों द्वारा सामुदायिक रेडियो केन्द्रों का संचालन किया जा रहा है। इस प्रकार उत्तर प्रदेश राज्य में सामुदायिक रेडियो केन्द्र संचालित करने वाले समस्त विश्वविद्यालयों के स्नातक एवं परास्नातक कक्षाओं के विद्यार्थी शोध अध्ययन की जनसंख्या हैं।

3.7.2 भौगोलिक कार्य क्षेत्र का परिचय

प्रस्तुत शोध अध्ययन भारत के जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में किया गया है। उत्तर प्रदेश महज़ एक भौगोलिक इकाई नहीं बल्कि मिश्रित सकृतियों का संगम है तथा गंगा-जमुनी तहज़ीब का एक अनूठा प्रतीक है। इसीलिए वह एक विशिष्ट जीवन शैली, व्यवहार, चिंतन, परंपरा, ऐतिहासिक, सहिष्णुता, सार्थक सकारात्मक प्रतिद्वन्द्विता, विचार-विनिमय व मनुष्य के हक की लड़ाई का केन्द्र भी है। विविधता में एकता तथा 'जियो और जीने दो' का व्यावहारिक स्वरूप यहाँ की पहचान है।

चित्र संख्याः 3.3: उत्तर प्रदेश का मानचित्र

देश के स्वाधीनता की पहली लड़ाई यहीं की जनता ने लड़ी और स्वाधीनता के बाद उत्तर प्रदेश का नाम हासिल किया। इससे पहले इस क्षेत्र के अनेक नाम रहे। ईसा से छह शताब्दी पहले भारत के 16 महाजनपद थे। जिनमें आठ-काशी, कोशल, मल्ल, चेदि, वत्स, कुरू, पांचाल और शूरसेन इसी क्षेत्र में थे, वे अब उत्तर प्रदेश में है। कोशलों की पहली राजधानी अयोध्या थी फिर श्रावस्ती हुई, कपिलवस्तु इसी जनपद में था। बाद के समय में कुछ क्षेत्र अवध, कान्यकुब्ज, काशी आदि नाम से जाने जाते रहे और कभी रूहेलखण्ड, बुन्देलखण्ड, अवध आदि। अंग्रेजों की अमलदारी में इसका नाम संयुक्त प्रान्त आगरा व अवध रखा गया। यह संयुक्त ही इसका सही नाम लगता है यानी मिला-जुला, सबका शामिल प्रान्त, संयुक्त संस्कृतियों का क्षेत्र, अपना उत्तर प्रदेश। सन् 1857 के स्वाधीनता संग्राम के बाद अंग्रेजों ने जिस प्रकार के दमन और अत्याचार किए उससे चंगेज़ खाँ और नादिरशाह भी शरमा जाते। सैकड़ों लोगों को फाँसी पर लटका दिया गया तथा हजारों लोगों का कत्ल कर दिया गया, गाँव के गाँव फूँक दिये गये, शहरों और कस्बों में कहर ढाए गये पर मातृभूमि के दीवानों में स्वाधीनता की ललक और संकल्प में कोई अन्तर नहीं आया।

उत्तर प्रदेश का इतिहास वास्तव में राष्ट्रीय एकीकरण और शांति पूर्ण सह-अस्तित्व का इतिहास है। यहाँ बौद्ध, जैन, इस्लाम, सिख एवं सनातन सभी धर्मों के अनुयायी एक साथ रहे और एक-दूसरे के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व धार्मिक जीवन को प्रभावित तथा समृद्ध करते रहे। यहाँ हिन्दू कवियों ने कर्बला पर मर्सिये लिखे तो मुसलमान कवियों ने राम और कृष्ण के गीत गाये। उत्तर प्रदेश भारत का सबसे बड़ा राज्य और क्षेत्रफल की दृष्टि से दूसरा सबसे बड़ा राज्य है। प्रदेश की प्रशासनिक व विधायी राजधानी लखनऊ है जबकि प्रयागराज न्यायिक राजधानी है। अयोध्या, अलीगढ़, आगरा, कानपुर, झाँसी, बरेली, मेरठ, वाराणसी, गोरखपुर, मथुरा, मुरादाबाद तथा आज़मगढ़ प्रदेश के अन्य महत्त्वपूर्ण शहर हैं। राज्य के उत्तर में उत्तराखण्ड तथा हिमाचल प्रदेश, पश्चिम में हरियाणा, दिल्ली तथा राजस्थान, दक्षिण में मध्य प्रदेश तथा छत्तीसगढ़ और पूर्व में बिहार तथा झारखंड राज्य स्थित हैं। इनके अतिरिक्त राज्य के पूर्वात्तर दिशा में नेपाल देश है। उत्तर प्रदेश राज्य, भारत के उत्तर में स्थित है। यह 2,38,566 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में फैला हुआ है। यहाँ की जनसंख्या-199,812,341 है। उत्तर प्रदेश को प्रशासनिक सुविधाओं के हिसाब से 18 मण्डलों में विभाजित किया गया है। यहाँ 75 राजस्व जनपद हैं।

क्र.सं.	मण्डल	जनपद
1	सहारनपुर	मुजफ्फरनगर शामली
2	मुरादाबाद	सहारनपुर अमरोहा, बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर
3	बरेली	अमरोहा, बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर
4	लखनऊ	हरदोई, लखीमपुर खीरी, लखनऊ, रायबरेली, सीतापुर, उन्नाव
5	देवीपाटन	बहराइच, बलरामपुर, गोण्डा, श्रावस्ती
6	बस्ती	बस्ती संतकबीर नगर सिद्धार्थ नगर
7	गोरखपुर	देवरिया, गोरखपुर, कुशीनगर, महाराजगंज मेरठ, बागपत,
8	मेरठ	बुलन्दशहर, गौतमबुद्धनगर, गाजियाबाद, हापुड़]
9	अलीगढ़	अलीगढ़, एटा, हाथरस,कासगंज
10	आगरा	आगरा, फिरोजाबाद, मैनपुरी, मथुरा
11	कानपुर	औरैया, फर्रूखाबाद, इटावा, कन्नौज, कानपुर देहात, कानपुर नगर
12	अयोध्या	अमेठी, अम्बेडकरनगर बाराबंकी, अयोध्या
13	आजमगढ़	आजमगढ़, बालिया, मऊ
14	झांसी	जालौन, झांसी, ललितपुर
15	चित्रकूट	बांदा, चित्रकूट, हमीरपुर, महोबा
16	प्रयागराज	प्रयागराज, प्रतापगढ़,कौशाम्बी, फतेहपुर
17		चन्दौली, गाजीपुर, जौनपुर, वाराणसी
18	वाराणसी	मिर्जापुर, भदोही, सोनभद्र

तालिका 3.2: उत्तर प्रदेश का मण्डलवार विवरण

3.8 निदर्शन विधि

गुडे एवं हट्ट के अनुसार ‘‘निदर्शन किसी विशाल समग्र का छोटा प्रतिनिधि है।’’ अर्थात किसी बड़े समूह का छोटा सा हिस्सा जो उस समूह का प्रतिनिधित्व करता है।

"जब किसी अध्ययन में वैज्ञानिक विधि से समग्र की कुछ चुनी हुई इकाइयों के द्वारा सूचना प्राप्त करके उस सूचना से समग्र के विषय में निर्णय किया जाए, तो उसे ही निदर्शन विधि कहते हैं।''

(जैन, 2009, पृ. 306)

''निदर्शन एक ऐसी पद्धति है, जिसके द्वारा शोधकर्ता संपूर्ण इकाइयों में से कुछ इकाइयों का चयन विभिन्न सर्वमान्य प्रविधियों एवं सिद्धांतों के आधार पर करता है, जिससे कि चयनित इकाइयां संपूर्ण समग्र के गुणों का प्रतिनिधित्व कर सकें। प्रतिदर्श का चुनाव करके उनका गहन अध्ययन किया जाता है और इससे उपलब्ध निष्कर्ष संपूर्ण इकाइयों के निष्कर्ष माने जाते हैं।''

(कोली, 2010, पृ. 121)

"समग्र का अध्ययन न करके, उसके एक चुने हुए भाग का अध्ययन करना निदर्शन पद्धति के द्वारा अध्ययन करना कहलाता है।"

(दयाल, 2010, पृ. 70)

प्रस्तुत शोध अध्ययन की आवश्यकता के अनुरूप परिमाणात्मक एवं गुणात्मक आंकड़ों के अध्ययन के लिए निदर्शन की वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग किया गया है। शोधकर्ता ने परिमाणात्मक एवं गुणात्मक दोनों ही प्रकार के अध्ययन के लिए उद्देश्यपरक निदर्शन पद्धति (Purposive and Convenient Sampling Technique) का प्रयोग किया है।

परिमाणात्मक अध्ययन के लिए चयनित विश्वविद्यालयों से स्नातक एवं परास्नातक कक्षाओं के 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। जिनसे स्वनिर्मित मिश्रित प्रश्नावली उपकरण के माध्यम से परिमाणात्मक आंकड़ों का संकलन किया गया है जिसे सामुदायिक रेडियो उपयोगिता प्रश्नावली Community Radio Utility Questionnaire (CRUQ) का नाम दिया गया है। जबकि गुणात्मक अध्ययन के लिए मीडिया शिक्षा तथा रेडियो एवं सामुदायिक रेडियो से संबंधित 20 विशेषज्ञों का चयन किया गया है। जिनसे अर्ध संरचनात्मक साक्षात्कार एवं फोकस समूह परिचर्चा के माध्यम से गुणात्मक आंकड़ों का संकलन किया गया है।

3.8.1 परिमाणात्मक आंकड़ों के लिए निदर्शन पद्धति

जैन के अनुसार, "उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति में शोधकर्ता जांच के उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए अपने विवेक द्वारा समग्र से ऐसे मदों का चुनाव करता है जो उसके विचार से समग्र का सर्वाेत्तम प्रतिनिधित्व करते हैं।"

(जैन, 2009. पृ 308)

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आवश्यकता के अनुरूप परिमाणात्मक अध्ययन के लिए उद्देश्यपूर्ण निदर्शन तकनीक (Purposive and Convenient Sampling Technique) का प्रयोग किया गया है।

3.8.2 परिमाणात्मक आंकड़ों का निदर्शन आधार

प्रस्तुत शोध अध्ययन में परिमाणात्मक आंकड़ों के संकलन एवं अध्ययन के लिए उद्देश्यपूर्ण निदर्शन तकनीकd (Purposive and Convenient Sampling Technique) का प्रयोग किया गया है। चयनित विश्वविद्यालयों से स्नातक एवं परास्नातक कक्षाओं के 200 विद्यार्थियों को चयनित किया गया है। जिनमें छात्र एवं छात्राएँ सम्मिलित हैं जो कला तथा विज्ञान विषय वर्ग से संबंधित हैं। यहां इस तथ्य को रेखांकित करना आवश्यक है कि कला विषय वर्ग में कला के विशुद्ध विषयों के साथ साथ कला, सामाजिक विज्ञान, नर्सिंग, सामुदायिक स्वास्थ्य, प्रबंधन, नृविज्ञान एवं सामुदायिक चिकित्सा शास्त्र को शामिल किया गया है तथा विज्ञान विषय वर्ग में विज्ञान के विशुद्ध विषयों के साथ तकनीकी एवं चिकित्सा विज्ञान को शामिल किया गया है। न्यादर्श के लिए उन्हीं विद्यार्थियों का चयन किया गया है जिन्होंने अपने विश्वविद्यालय द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो को प्रतिदिन ट्यून इन करने तथा उस पर न्यूनतम एक घंटे का कार्यक्रम सुनने की स्वीकारोक्ति दी है।

3.8.3 परिमाणात्मक आंकड़ों की निदर्शन प्रक्रिया

प्रस्तुत शोध कार्य में सामुदायिक रेडियो पर अध्ययन के लिए उद्देश्यपूर्ण निदर्शन तकनीक से दो स्तरों पर न्यादर्श के चयन की प्रक्रिया को अपनाया गया है। प्रथम स्तर पर उत्तर प्रदेश के मंडल मुख्यालयों पर स्थित उन विश्वविद्यालयों का चयन किया गया है जो सामुदायिक रेडियो केन्द्र का संचालन करते हैं। तत्पश्चात उन विश्वविद्यालयों से विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

विद्यार्थियों का चयन करने के लिए सर्वप्रथम प्रत्येक विश्वविद्यालय के प्रशासन से कला तथा विज्ञान विषय वर्ग के स्नातक एवं परास्नातक कक्षाओं के विद्यार्थियों की सूची प्राप्त की गई। उक्त सूची के

आधार पर स्नातक एवं परास्नातक कक्षाओं में अध्ययनरत 25 विद्यार्थियों का चयन किया जाना था जिस के लिए एक स्क्रीनिंग फार्म बनाया गया था। उक्त स्क्रीनिंग फार्म में विद्यार्थियों से उनका नाम, लिंग, कक्षा, आवासीय पृष्ठभूमि तथा सामुदायिक रेडियो ट्यून इन संबंधी जानकारी भरवाई गई थी। जिन विद्यार्थियों ने अपने विश्वविद्यालय द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो को 24 घंटे में एक बार ट्यून इन करने तथा न्यूनतम एक घंटे के प्रसारण को सुनने की बात स्क्रीनिंग फार्म में स्वीकार की है उसी स्वीकारोक्ति के आधार पर उन्हें न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है। निदर्शन की उक्त प्रक्रिया सभी आठ विश्वविद्यालयों में अपनाई गई है जिसके द्वारा न्यादर्श का चयन किया गया है।

3.8.4 गुणात्मक आंकड़ों के लिए निदर्शन पद्धति

दयाल के अनुसार, "जब शोधकर्ता मीडिया या संचार का वैज्ञानिक विधि से अध्ययन करते हुए किसी विशेष उद्देश्य को सामने रखकर समग्र में से कुछ इकाईयों का चुनाव करता है तो उसे उद्देश्यपूर्ण या सविचार निदर्शन कहते हैं।" चुनाव का आधार अध्ययन का उद्देश्य होता है तथा उद्देश्य को सामने रखते हुए उसी के अनुरूप शोधकर्ता संपूर्ण क्षेत्र से सर्वाधिक प्रतिनिधित्वपूर्ण इकाइयों का ही चयन करता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में गुणात्मक अध्ययन के लिए उद्देश्यपूर्ण निदर्शन तकनीक (Purposive and Convenient Sampling Technique) का प्रयोग किया गया है। अध्ययन की आवश्यकता के अनुरूप इस के लिए 20 विशेषज्ञों का चुनाव किया गया है। इनमें प्रत्येक से अर्ध संरचनात्मक साक्षात्कार किया गया है तथा इन्हीं विशेषज्ञों में से 5 को फोकस समूह परिचर्चा में सम्मिलित कर के गुणात्मक आंकड़ों का संकलन किया गया है।

3.8.5. गुणात्मक आंकड़ों का निदर्शन आधार

प्रस्तुत शोध अध्ययन में गुणात्मक अध्ययन के लिए 20 विशेषज्ञों को उद्देश्यपूर्ण निदर्शन तकनीक (Purposive and Convenient Sampling Technique) से चयनित किया गया है। अध्ययन में 10 उन विशेषज्ञों का चुनाव किया गया है जिनकी शैक्षिक योग्यता पत्रकारिता एवं जनसंचार विषय में पीएच. डी. है तथा मीडिया शिक्षक के रूप में 5 वर्ष के अध्यापन का अनुभव है। विशेषज्ञों में से 10 उन विशेषज्ञों का चयन किया गया है जो पिछले 10 वर्षों से मीडिया इंडस्ट्री से संबंधित हैं तथा जिन्हें रेडियो एवं सामुदायिक रेडियो के संचालन, प्रबंधन एवं नीति निर्माण के क्षेत्र में विशेष अनुभव प्राप्त रहा है।

3.9 न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए शोधार्थी ने दो स्तरों पर न्यादर्श का चयन किया है प्रथम स्तर पर सामुदायिक रेडियो संचालित करने वाले विश्वविद्यालयों का चयन किया गया है। तत्पश्चात् उन विश्वविद्यालयों से विद्यार्थियों का चयन किया गया है। विश्वविद्यालयों के चयन के लिये शोधार्थी ने उद्देश्य परक न्यादर्श तकनीक (Purposive & Convinient Sampling Technique) का उपयोग करके उत्तर प्रदेश के कुल 18 मंडल मुख्यालयों से 08 मंडल मुख्यालयों पर स्थित 9 विश्वविद्यालयों में से 8 विश्वविद्यालयों का चयन किया है, जिनमें सामुदायिक रेडियो स्थापित हैं एवं संचालन में सक्रिय हैं। 7 मंडल मुख्यालयों पर स्थित विश्वविद्यालयों में सिर्फ एक एक विश्वविद्यालय द्वारा ही सामुदायिक रेडियो केन्द्र का संचालन किया जा रहा है जबकि लखनऊ मंडल मुख्यालय पर दो विश्वविद्यालयों द्वारा सामुदायिक रेडियो का संचालन किया जा रहा है। शोधकर्ता ने अपने शोध अध्ययन के लिए किंग जॉर्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय का चयन किया है।

उक्त आठ विश्वविद्यालयों के स्नातक एवं परास्नातक कक्षाओं में अध्ययनरत 25-25 (कुल 200) विद्यार्थियों को उद्देश्य परक विधि से स्क्रीनिंग प्रपत्र को उपयोग में लाते हुये प्रतिनिधि इकाई के रूप में चयनित किया गया है।

3.9.1 चयनित विश्वविद्यालय: एक दृष्टि

डॉ बी0आर0 अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा

सन् 1927 में उत्तर प्रदेश के आगरा जिले में रेव कैनन, एडब्ल्यू डेविस, मुंशी नारायण प्रसाद अस्थाना, डॉ एल.पी. माथुर, लाला दीवान चंद, राय बहादुर आनंद स्वरूप और डॉ ब्रजेंद्र स्वरूप ने आगरा विश्वविद्यालय की स्थापना की। 1995 में यूपी सरकार ने इसका नाम बदलकर डॉ भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय (DBRAU) कर दिया। यह विश्वविद्यालय आगरा, अलीगढ़, मैनपुरी, हाथरस, फिरोजाबाद, एटा और मथुरा के सात जिलों की शैक्षणिक जरूरतों को पूरा करता है। इस विश्वविद्यालय में

सरोजिनी नायडू मेडिकल कॉलेज के साथ विश्वविद्यालय के चार आवासीय परिसरों में फैले लगभग 200 संबद्ध कॉलेज और 15 आवासीय संस्थान सम्बद्ध हैं।

आगरा की आवाज

आगरा मंडल के आगरा मुख्यालय पर स्थित डॉ बी आर अंबेडकर विश्वविद्यालय में सामुदायिक रेडियो की शुरुआत 2010 में की गयी थी। विश्वविद्यालय के रेडियो स्टेशन का नाम आगरा की आवाज़ है। इसकी फ्रीक्वेंसी 90.4 है। ये रेडियो आगरा व सीमावर्ती क्षेत्रों में सुना जा सकता है। रेडियो आगरा की आवाज पर शिक्षा के अलावा कृषि, स्वास्थ्य आदि से जुड़े कार्यक्रमों का प्रसारण किया जा रहा है। सामुदायिक रेडियो संचालकों का कहना है कि आसपास के लोगों के भविष्य को संवारने के लिए रेडियो पर विविध कार्यक्रमों का प्रसारण किया जा रहा है।

नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, अयोध्या

1975 में उत्तर प्रदेश के अयोध्या जनपद में नरेंद्र देव कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय(ANDUAT) की स्थापना की गयी। इसका नाम महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी व राजनेता और शिक्षक आचार्य नरेंद्र देव के नाम पर रखा गया है। आचार्य नरेन्द्र देव ने लखनऊ विश्वविद्यालय और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में कार्य किया। यह विश्वविद्यालय कृषि एवं प्रौद्योगिकी विषय का एक उत्कृष्ट संस्थान है।

रेडियो आचार्या

अयोध्या मंडल के अयोध्या मुख्यालय पर स्थित नरेंद्र देव कृषि एवं प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय में सामुदायिक रेडियो की शुरुआत 2006 में की गयी थी। विश्वविद्यालय के रेडियो स्टेशन का नाम रेडियो आचार्या है। इसकी फ्रीक्वेंसी 90.4 है। ये रेडियो अयोध्या व सीमावर्ती क्षेत्रों में सुना जा सकता है। रेडियो आचार्या पर शिक्षा के अलावा कृषि, स्वास्थ्य आदि से जुड़े कार्यक्रमों का प्रसारण किया जा रहा है। सामुदायिक रेडियो संचालकों का कहना है कि आसपास के लोगों के भविष्य को संवारने के लिए रेडियो पर विविध कार्यक्रमों का प्रसारण किया जा रहा है।

मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़

सन् 2006 में उत्तर प्रदेश के तालानगरी के रूप में सुप्रसिद्ध अलीगढ़ जिले में मंगलायतन विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी। यह एक निजी विश्वविद्यालय है। यह विश्वविद्यालय UGC अर्थात विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त है। इस विश्वविद्यालय का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को गुणवत्ता पूर्ण उच्च शिक्षा प्रदान कर उनमें सक्षम नेतृत्व का विकास करना है।

रेडियो नारद

अलीगढ़ मंडल के अलीगढ़ मुख्यालय पर स्थित मंगलायतन विश्वविद्यालय में सामुदायिक रेडियो की शुरुआत 2020 में की गई थी। विश्वविद्यालय के रेडियो स्टेशन का नाम रेडियो नारद है। इसकी फ्रीक्वेंसी 90.4 है। ये रेडियो अलीगढ़, हाथरस व मथुरा के सीमावर्ती क्षेत्रों में सुना जा सकता है। रेडियो नारद पर शिक्षा, रोजगार के अलावा कृषि, स्वास्थ्य आदि से जुड़े कार्यक्रमों का प्रसारण किया जा रहा है। सामुदायिक रेडियो संचालकों का कहना है कि आसपास के लोगों के भविष्य को संवारने के लिए रेडियो पर विविध कार्यक्रमों का प्रसारण किया जा रहा है।

रामा विश्वविद्यालय, कानपुर

सन् 2014 में उत्तर प्रदेश के कानपुर में रामा विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी। रामा समूह के मार्ग दर्शक डॉ. बी.एस. कुशवाह का दृढ़ विश्वास था कि केवल स्वस्थ लोग ही एक स्वस्थ और मजबूत राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं तथा शिक्षा एक महत्वपूर्ण उपकरण है जो आम लोगों को जिम्मेदार नागरिको में बदल सकता है। रामा समूह अपने छात्रों को समूह की कंपनियों में प्रशिक्षण और कार्य प्रदर्शन प्रदान करके सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करता है।

रेडियो रामा

कानपुर मंडल के कानपुर मुख्यालय पर स्थित रामा विश्वविद्यालय में सामुदायिक रेडियो की शुरुआत 2019 में की गयी थी। विश्वविद्यालय के रेडियो स्टेशन का नाम रेडियो रामा है। इसकी फ्रीक्वेंसी 90.4 है। ये रेडियो कानपुर शहर, कानपुर देहात व सीमावर्ती क्षेत्रों में सुना जा सकता है। रेडियो रामा पर शिक्षा के अलावा कृषि, स्वास्थ्य आदि से जुड़े कार्यक्रमों का प्रसारण किया जा रहा है। सामुदायिक रेडियो संचालकों का कहना है कि आसपास के लोगों के भविष्य को संवारने के लिए रेडियो पर विविध कार्यक्रमों का प्रसारण किया जा रहा है।

सैम हिगिनबॉटम कृषि प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज

सन् 1910 में उत्तर प्रदेश के प्रयागराज (इलाहाबाद) जनपद में सैम हिगिनबॉटम ने कृषि, प्रौद्योगिकी और विज्ञान विश्वविद्यालय की स्थापना की। यह एक सरकारी सहायता प्राप्त कृषि विश्वविद्यालय है। यह विश्वविद्यालय सैम हिगिनबॉटम एजुकेशनल एंड चौरिटेबल सोसाइटी के तहत एक स्वायत्त ईसाई अल्पसंख्यक संस्थान के रूप में कार्य करता है। डॉ. सैम हिगिनबॉटम ने इसकी स्थापना ग्रामीण आबादी की आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए की थी। 29 दिसंबर 2016 को इसे डीम्ड विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया।

रेडियो अदन

प्रयागराज मंडल के प्रयागराज मुख्यालय पर स्थित सैम हिगिन्बॉटम कृषि एवं प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय में सामुदायिक रेडियो की शुरुआत 2008 में की गयी थी। विश्वविद्यालय के रेडियो स्टेशन का नाम रेडियो अदन है। इसकी फ्रीक्वेंसी 90.4 है। ये रेडियो प्रयागराज व सीमावर्ती क्षेत्रों में सुना जा सकता है। रेडियो अदन पर शिक्षा के अलावा कृषि, स्वास्थ्य आदि से जुड़े कार्यक्रमों का प्रसारण किया जा रहा है। सामुदायिक रेडियो संचालकों का कहना है कि आसपास के लोगों के भविष्य को संवारने के लिए रेडियो पर विविध कार्यक्रमों का प्रसारण किया जा रहा है।

किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय, लखनऊ

सन् 1906 में तत्कालीन संयुक्त प्रान्त (उ0प्र0) के लखनऊ में किंग जॉर्ज मेडिकल कॉलेज की स्थापना की गयी। यह अस्पताल और चिकित्सा विश्वविद्यालय है। 16 सितंबर 2002 को उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पारित एक अधिनियम द्वारा मेडिकल कॉलेज को एक चिकित्सा विश्वविद्यालय में बदल दिया गया। विश्वविद्यालय में लगभग 1250 स्नातक छात्र (280 दंत छात्रों सहित) और 450 स्नातकोत्तर छात्र पढ़ते हैं। प्रत्येक वर्ष एम.बी.बी.एस की डिग्री के अध्ययन के लिये साढ़े चार वर्षीय पाठ्यक्रम में एक वर्ष में लगभग 250 छात्रों को प्रवेश दिया जाता है।

के0जी0एम0यू0 गूंज

लखनऊ मंडल के लखनऊ मुख्यालय पर स्थित किंग जॉर्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय में सामुदायिक रेडियो की शुरुआत 2021 में की गयी थी। विश्वविद्यालय के रेडियो स्टेशन का नाम केजीएमयू गूंज है। इसकी फ्रीक्वेंसी 90.4 है। ये रेडियो लखनऊ व सीमावर्ती क्षेत्रों में सुना जा सकता है। केजीएमयू गूंज पर चिकित्सा शिक्षा, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य के अलावा कृषि आदि से जुड़े कार्यक्रमों का प्रसारण किया जा रहा है। सामुदायिक रेडियो संचालकों का कहना है कि आसपास के लोगों के भविष्य को संवारने के लिए रेडियो पर विविध कार्यक्रमों का प्रसारण किया जा रहा है।

आई0आई0एम0टी0 विश्वविद्यालय, मेरठ

सन् 2016 में उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में प्प्डज् विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी। 2016 के उत्तर प्रदेश अधिनियम संख्या 32 के तहत यह एक राज्य निजी विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय अपने अत्याधुनिक बुनियादी ढांचे, अनुभवी संकाय, उद्योग-उन्मुख पाठ्यक्रम और मजबूत भारतीय मूल्यों के साथ करियर परिवर्तन और विकास के लिए एक आदर्श स्थान है। आई0आई0एम0टी0यू0 का उपलब्धियों और विकास के सिद्ध रिकॉर्ड के साथ शिक्षा के क्षेत्र में 23 वर्षों का अनुभव है।

रेडियो आई0आई0एम0टी0

मेरठ मंडल के मेरठ मुख्यालय पर स्थित आईआईएमटी विश्वविद्यालय में सामुदायिक रेडियो की शुरुआत 2007 में की गयी थी। विश्वविद्यालय के रेडियो स्टेशन का नाम रेडियो आईआईएमटी है। इसकी फ्रीक्वेंसी 90.4 है। ये रेडियो मेरठ व सीमावर्ती क्षेत्रों में सुना जा सकता है। रेडियो आईआईएमटी पर शिक्षा के अलावा कृषि, स्वास्थ्य आदि से जुड़े कार्यक्रमों का प्रसारण किया जा रहा है। सामुदायिक रेडियो संचालकों का कहना है कि आसपास के लोगों के भविष्य को संवारने के लिए रेडियो पर विविध कार्यक्रमों का प्रसारण किया जा रहा है।

3.10 आंकड़ों के संकलन की विधि

"किसी सामाजिक या आर्थिक समस्या अथवा घटना के संबंध में ज्ञान प्राप्त करने के लिए तथ्यों अथवा आंकड़ों का संकलन किया जाता है। तथ्यों के संकलन के बगैर अनुसंधान का कार्य आगे की ओर एक कदम भी प्रगति नहीं कर सकता है।"

(जैन, 2009, पृ. 166)

शोध अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों ही प्रकार के आंकड़ों की आवश्यकता होती है। नियोजित एवं सुव्यवस्थित तरीके से आंकड़ों का संग्रहण शोध अध्ययन की प्रासंगिकता के लिए एक महत्वपूर्ण कार्य है। आंकड़ों को सुव्यवस्थित तरीके से एकत्रित करने के लिए मानकीकृत वैज्ञानिक उपकरणों की आवश्यकता होती है तभी शोध के परिणाम सार्थक होते हैं। सामाजिक विज्ञान के शोध अध्ययनों में आंकड़ों के संग्रहण के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के वैज्ञानिक उपकरण विकसित किए गए हैं जिनके द्वारा क्रमबद्ध विधि से आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में उपकरणों का प्रयोग आंकड़ों की प्रवृत्ति के अनुरूप किया गया है। सामाजिक विज्ञान शोध अध्ययनों में आंकड़ों की प्रवृत्ति से आशय मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों से है। प्रस्तुत शोध कार्य में मात्रात्मक एवं गुणात्मक आंकड़ों के संग्रहण हेतु प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं फोकस समूह परिचर्चा का प्रयोग किया गया है।

3.11 प्राथमिक आंकड़े

पी0वी0 यंग के अनुसार, "प्राथमिक आंकड़े वे हैं जो पहले स्तर पर एकत्रित किये जाते हैं।" "प्राथमिक आंकड़े वे मौलिक आंकड़े अथवा सूचनाएं होती है जिन्हें शोधकर्ता वास्तविक अध्ययन स्थल में जाकर विषय या समस्या से सम्बन्धित व्यक्तियों से साक्षात्कार या प्रत्यक्ष निरीक्षण के माध्यम से या प्रश्नावली एवं अनुसूची की सहायता से संकलित करता है। "

(जैन, 2009, पृ-174)

प्राथमिक आंकड़ो की प्रवृत्ति परिमाणात्मक (मात्रात्मक) एवं गुणात्मक, दोनों तरह की हो सकती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति के अनुरूप मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों ही प्रकार के आंकड़ों का संग्रहण किया गया है।

3.11.1 परिमाणात्मक आंकड़े

‘‘परिमाणात्मक आंकड़े वे आंकड़े होते हैं, जिनका संबंध संख्या पक्ष से संबंधित होता है। मात्रात्मक आंकड़े संख्यात्मक प्रकृति के होते हैं’’

(जैन,2009, पू. 171)

3.11.2 परिमाणात्मक अकड़ों के संग्रहण के लिए प्रयुक्त उपकरण

लुण्डबर्ग के अनुसार, "प्रश्नावली प्रश्नों के उन युग्मों को कहते हैं, जिनका उपयोग साक्षर व्यक्तियों के लिए किया जाता है, ताकि दी हुई स्थिति में उनके व्यवहार का अध्ययन किया जा सके।"

प्रस्तुत शोध अध्ययन में परिमाणात्मक (मात्रात्मक) आंकड़ों के संग्रहण के लिए प्रश्नावली (CRUQ) का प्रयोग किया गया है। सामाजिक विज्ञान से सम्बंधित शोध अध्ययनों में प्राथमिक आंकड़ों के संग्रहण के लिए प्रश्नावली एक मानकीकृत उपकरण माना जाता है। शोध अध्ययन की आवश्यकता के अनुरूप ही प्रश्नावली के माध्यम से मात्रात्मक आकड़ों का संग्रहण किया गया है जो कि एक मिश्रित प्रश्नावली है।

प्रश्नावली

"मिश्रित प्रश्नावली ऐसी प्रश्नावली होती है’ जिसमें साधारणतया बंद एवं खुले दोनों प्रकार के प्रश्न शामिल होते हैं।"

(कोली, 2010, पु. 79)

शोध अध्ययन में स्वनिर्मित मिश्रित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। शोध अध्ययन की आवश्यकता के अनुरूप 25 बंद प्रश्नों एवं 01 खुले प्रश्न पर आधारित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। इस उपकरण का नाम सामुदायिक रेडियो उपयोगिता प्रश्नावली Community Radio Utility Questionnaire (CRUQ) रखा गया है। प्रश्नावली में बंद प्रश्नों का निर्माण लिकर्ट स्केल अर्थात पांच रेटिंग की स्केल (पैमाने) पर किया गया है।

3.11.3 गुणात्मक आंकड़े

''गुणात्मक आंकड़े वे आंकड़े होते हैं, जिनका आंकड़ों के गुण सम्बंधी पक्ष से निकट संबंध होता है तथा जो किसी विशेषता को व्यक्त करते हैं। गुणात्मक आंकड़े तथ्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक होते हैं।''

(जैन, 2009, पृ. 171)

प्रस्तुत शोध अध्ययन में गुणात्मक आंकड़ों के संग्रहण के लिए साक्षात्कार एवं फोकस समूह परिचर्चा उपकरण का प्रयोग किया गया है। ज्ञातव्य है कि सामाजिक विज्ञान शोध अध्ययनों में साक्षात्कार एवं फोकस समूह चर्चा गुणात्मक आंकड़े संग्रहण करने के लिए एक मानकीकृत उपकरण माने जाते हैं। शोध अध्ययन की आवश्यकता के अनुरूप साक्षात्कार एवं फोकस समूह परिचर्चा को संचालित कर गुणात्मक आंकड़ों का संग्रहण किया गया है।

3.11.4. गुणात्मक आंकड़ों के संग्रहण के लिए प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आवश्यकता के अनुरूप साक्षात्कार, फोकस समूह परिचर्चा के माध्यम से गुणात्मक आंकड़ों का संकलन किया गया है।

साक्षात्कार

बीएम पामर के अनुसार, "साक्षात्कार दो व्यक्तियों के मध्य एक सामाजिक परिस्थित उत्पन्न करता है जिसमें मनोवैज्ञानिक प्रणाली के लिए दोनों व्यक्ति परस्पर प्रश्न करते और उत्तर देते हैं।"

''साक्षात्कार प्राथमिक तथ्य संकलन की वह मौखिक प्रणाली है, जिसमें एक शोधकर्ता शोध अध्ययन क्षेत्र से संबन्धित व्यक्तियों से संपर्क करके उन व्यक्तियों की मनोवृत्तियों, अभिरुचियों, प्रवृत्तियों, अनुभवों एवं विचारों को आपसी वार्तालाप के द्वारा देखने और समझने का प्रयास करता है।''

(कोली, 2010, पृ. 97)

प्रस्तुत शोध कार्य में अध्ययन की आवश्यकता के अनुरूप अर्ध संरचनात्मक साक्षात्कार उपकरण का प्रयोग किया गया है। चयनित 20 विशेषज्ञों में प्रत्येक से पूर्व निर्धारित प्रश्नों के आधार पर गुणात्मक आंकड़े प्राप्त किए गए है।

फोकस समूह परिचर्चा

''फोकस समूह परिचर्चा में एक समय में, एक ही साथ एक से अधिक व्यक्तियों का साक्षात्कार लिया जाता है। साक्षात्कारकर्ता व्यक्तियों के समूह से कुछ प्रश्न बारी-बारी से पूछता है। समूह के व्यक्ति उस प्रश्न पर अपना-अपना मत व्यक्त करते हैं साथ ही साथ तर्क वितर्क भी करते हैं। व्यक्तिगत साक्षात्कार की अपेक्षा इसमें वस्तुनिष्ठता अधिक होती है।''

(दयाल 2010 पृ. 109)

शोध कार्य में अध्ययन की आवश्यकता के अनुरूप गुणात्मक आंकड़ों में तार्किकता का पुट बढ़ाने के लिए 5 विशेषज्ञों के समूह से पूर्व निर्धारित प्रश्नों पर परिचर्चा का संचालन करके फोकस समूह परिचर्चा के द्वारा भी गुणात्मक आंकड़ों का संग्रहण किया गया है।

फोकस समूह परिचर्चा का विवरण

प्रस्तुत शोध कार्य की आवश्यकता के अनुसार गुणात्मक अध्ययन के लिये 20 विशेषज्ञों को उद्देश्यपरक निदर्शन तकनीक से चुना गया था। इन्हीं 20 में से 05 विशेषज्ञों को फोकस समूह परिचर्चा के लिये चयनित करके परिचर्चा का संचालन किया गया तथा गुणात्मक ऑकड़ें जुटाये गये।

3.12. द्वितीयक आंकड़े

पीवी यंग के अनुसार, "द्वितीयक आंकड़े वे होते हैं जिन्हें मौलिक स्रोतों से एक बार प्राप्त कर लेने के पश्चात काम में लाया गया हो एवं जिनका प्रसारण अधिकारी इस व्यक्ति से भिन्न होता है, जिसने प्राथमिक आंकड़ा संकलन को नियंत्रित किया हो। अर्थात वे आंकड़े जो पूर्व में संग्रहित कर प्रकाशित किए जा चुके हों, वो द्वितीयक आंकड़े कहलाते हैं।"

''द्वितीयक आंकड़ों से आशय उन समस्त सूचनाओं तथा आंकड़ों से होता है, जिन्हें एक शोधकर्ता स्वयं के प्रत्यक्ष अवलोकन द्वारा संकलित नहीं करता है, अपितु वे उसे प्रकाशित-अप्रकाशित प्रलेखों, लेखों, डायरियों पत्र-पत्रिकाओं, आत्मकथाओं, शोध ग्रंथों तथा सरकारी प्रतिवेदनों आदि से स्वतः प्राप्त हो या सायास प्राप्त होते हैं। ये आंकड़े किसी विशेष स्थान अथवा कार्यालय में पहले से ही

सुरक्षित होते है। शोधकर्ता का मुख्य कार्य केवल इन स्त्रोतों की खोज करके उन्हें शोध अध्ययन की उपयोगिता एवं आवश्यकतानुसार एकत्र करना है। "

(कोली, 2010, पृ. 56)

प्रस्तुत शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं उपयोगिता के अनुरूप द्वितीयक आंकड़ों की सामग्री का चयन किया गया है। शोधकर्ता ने भारत सरकार के सूचना व प्रसारण मंत्रालय की वेबसाईट, प्रसार भारती की वेबसाइट, चयनित विश्वविद्यालयों की वेबसाइट तथा शोध पुस्तकों, शोधपत्रों, पत्र पत्रिकाओं, इंटरनेट एवं शोध अध्ययन के लिए प्रासंगिक सरकारी एवं गैर सरकारी विभागों के वेबसाइट से द्वितीयक आंकड़ों का संग्रहण किया है। विशेषकर उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रकाशित "उत्तर प्रदेश 2020" एवं भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय (Ministry of Information and Broadcasting) के साथ-साथ सामुदायिक रेडियो संघ (Community Radio Association) की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

3.13. उपकरण का मानकीकरण

यह उपकरण को वैज्ञानिक पैमाने पर विकसित किए जाने के लिए शोध अध्ययन की सांख्यिकी तकनीक है। इस तकनीक मे उपकरण को वैज्ञानिक मानकों पर विकसित किया जाता है तथा उस पर उक्त क्षेत्र के विशेषज्ञों की सहमति प्राप्त की जाती है। प्रस्तुत शोध कार्य में उपकरण के मानकीकरण को परखने के लिए स्वनिर्मित उपकरण "सामुदायिक रेडियो उपयोगिता प्रश्नावली" Community Radio Utility Questionnaire (CRUQ) का द्विस्तरीय परीक्षण किया गया है। प्रथम स्तर पर उपकरण का वैधता परीक्षण तदुपरांत द्वितीय स्तर पर उपकरण का विश्वसनीयता परीक्षण किया गया है।

3.13.1 वैधता परीक्षण

उपकरण " सामुदायिक रेडियो उपयोगिता प्रश्नावली" Community Radio Utility Questionnaire (CRUQ) की वैधता परीक्षण के लिए उसे 20 मीडिया विशेषज्ञों (पत्रकारिता एवं जनसंचार के शिक्षकों समेत रेडियो, सामुदायिक रेडियो क्षेत्र के प्रबंधकों, संचालकों एवं नीति निर्माताओं) को भेजा गया था। विशेषज्ञों द्वारा प्राप्त टिप्पणियों एवं सुझावों के आधार पर उपकरण की कंटेंट वैलिडिटी (Content Validity) एवं फेस वैलिडिटी (Face Validity) स्थापित की गयी है।

3.13.2 विश्वसनीयता परीक्षण

उपकरण "सामुदायिक रेडियो उपयोगिता प्रश्नावली" Community Radio Utility Questionnaire (CRUQ) की विश्वसनीयता (Reliability) परीक्षण के लिए, परीक्षण पुनर्परीक्षण विधि (Test & Re Test Method) तथा आंतरिक संगति (Internal Consistency) के लिए विभक्ताकार विश्वसनीयता (Split Half Reliability) का प्रयोग किया गया है।

परीक्षण पुनर्परीक्षण विधि (Test-Retest Method½) परीक्षण पुनर्परीक्षण विधि से संपूर्ण उपकरण की विश्वसनीयता ज्ञात की गई है। परीक्षण- पुनर्परीक्षण विधि से मापन के उपरांत उपकरण की विश्वसनीयता का मान 0.78 प्राप्त हुआ है अर्थात उपकरण विश्वसनीय है।

विभक्तार्द्ध विश्वसनीयता विधि (Split Half Reliability Method) विभक्तार्द्ध विश्वसनीयता विधि से उपकरण को सम और विषम दो भागों में विभाजित कर उपकरण की आतंरिक संगति (Internal Consistency) ज्ञात की गई है। उपकरण के एक भाग की आतंरिक स्थिरता 0.38 प्राप्त हुई जिसे 2 से गुणा कर संपूर्ण उपकरण की आतंरिक स्थिरता का आकलन किया गया, जिसका मान 0.76 प्राप्त हुआ है अर्थात उपकरण में आतंरिक संगति (Internal Consistency) व्याप्त है।

3.14 शोध अध्ययन की सीमाएं

किसी भी कार्य को सफलता, कुशलता और अर्थपूर्ण रुप से संपादित करने के लिए हमें कार्य की सीमाएं निर्धारित करनी होती हैं। इन सीमाओं में कार्य की समय सीमा, क्षेत्र सीमा, कार्यप्रणाली सीमा, आर्थिक सीमा, सामाजिक सीमा, राजनीतिक सीमा एवं गोपनीयता तथा सुरक्षा सम्बंधी सीमाएं आदि शामिल हो सकती हैं । इस प्रकार की सीमाएं शोध कार्य में भी लागू होती हैं। क्योंकि शोध अध्ययन, तथ्यों पर आधारित वैज्ञानिक विधियों से किया जाने वाला अन्वेषण है।

3.14.1 शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए "सामुदायिक रेडियो: उच्च शिक्षा में चलन एवं संभावनाएं" के अतिरिक्त कोई अन्य समस्या भी उपयुक्त हो सकती थी। लेकिन समस्या को संबोधित करने की आवश्यकता एवं उक्त समस्या के आसपास किसी अन्य शोध की रिक्तता को देखते हुए केवल उच्च शिक्षा में सामुदायिक रेडियो की वस्तुस्थिति उपयोगिता, चुनौतियाँ एवं भविष्य के लिए सामुदायिक रेडियो का उपयुक्त मॉडल के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया जाना प्रासंगिक था।

3.14.2. शोध अध्ययन का सीमांकन

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए भारत गणराज्य के उत्तर प्रदेश राज्य के मंडल मुख्यालयों का चयन किया गया है। यह शोध कार्य दुनिया के किसी भी देश में संपादित किया जा सकता था, उस देश के किसी भी प्रदेश में संपादित किया जा सकता था। इसके अतिरिक्त अपने देश के किसी भी प्रदेश में संपादित किया जा सकता था। लेकिन समय, संसाधन और सहूलियत की सीमाओं को दृष्टिगत रखते हुए शोधकर्ता के लिए संभव नहीं था।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए मंडल मुख्यालयों पर स्थित उन 8 विश्वविद्यालयों को चुना गया है जिनके द्वारा सामुदायिक रेडियो केन्द्रों का संचालन किया जा रहा है। अध्ययन के प्रतिनिधि इकाई के रूप में स्नातक एवं परास्नातक कक्षाओं के 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। इससे अधिक संख्या के न्यादर्श पर भी शोध कार्य किया जा सकता था किंतु समय, संसाधन और सहूलियत की सीमाओं को दृष्टिगत रखते हुए शोधकर्ता के लिए संभव नहीं था।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए प्रतिनिधि इकाई के रूप में 200 विद्यार्थियों का लिंग, शैक्षिक योग्यता, विषय वर्ग एवं आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर श्रेणीकरण किया गया है। अध्ययन की आवश्यकता के अनुरूप विषय वर्ग में सभी विषयों को दो वर्गों कला एवं विज्ञान विषय वर्ग में वर्गीकृत किया गया है जिसमें संबद्ध विषयों (Allied Subjects) के अतिरिक्त भी अन्य विषयों को सम्मिलित किया गया है।

3.15. प्रयुक्त सांख्यिकी विधियाँ

आंकड़ों के संकलन एवं प्रदतों की गणना के उपरांत अगला चरण उचित सांख्यिकी विधियों का प्रयोग कर के परिमाणात्मक प्रदतों का विश्लेषण करना होता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्च शिक्षा के संदर्भ में उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की वस्तुस्थिति, उसके द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों की उपयोगिता, उसके संचालन में चुनौतियाँ एवं सामुदायिक रेडियो के उपयुक्त मॉडल के संभावनाओं के परीक्षण के लिए काई - वर्ग (x^2)एवं प्रतिशत विश्लेषण (Percentage Analysis)का प्रयोग किया गया है।

यह परीक्षण अप्राचल विधियों (छवद चं्रंउमजतपब डमजीवके) के अंतर्गत आता है। काई - वर्ग (x^2) के द्वारा सार्थकता ज्ञात करने के लिए निरीक्षित आवृतियों से प्रत्याशित आवृतियों की गणना की जाती

है। प्रत्याशित आवृतियों को ज्ञात करने के लिए तीन प्रकार की परिकल्पनाओं का सहारा लिया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में समान वितरण की परिकल्पना (Hypothesis of Equal Distribution) का प्रयोग किया गया है।

$$\text{काई वर्ग}(x^2) = \left[\sum \frac{(f_o - f_e)^2}{fe}\right]$$

यहाँ $\sum = sum$ (योग)

$$f_0 = frequencies\ observed$$

(निरीक्षित आवृत्तियाँ)

$$f_e = \frac{N}{No.of\ Cells}$$

जहाँ, $f_e = \ frequencies\ expected$) प्रत्याशित आवृत्तियाँ

$N = \ Number$ ¼la[;k)

$Cells =$ izfrdks"B

प्रतिशत प्राप्तांक रुपांतरित प्राप्तांकों का सर्वाधिक सरल एवं सुगम रुप प्रतिशत प्राप्तांक है।

प्रतिशत विश्लेषण का सूत्र -

प्रतिशत प्राप्तांक = मूल प्राप्तांक / पूर्णांक * 100

❖❖❖

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1. प्रस्तावना

आँकड़ों का अपने आप में कोई अर्थ नहीं होता जब तक कि इनका विश्लेषण और विवेचन न किया जये। ऑकडो का विश्लेषण एवं विवेचन सांख्यिकी के आधार पर किया जाता है। सांख्यिकी गणितीय प्रविधियों अथवा प्रक्रियों का नाम है जिसके अन्तर्गत आंकिक प्रदत्तों का संकलन, संगठन, विवरण तथा व्याख्या की जाती है। अतः सांख्यिकी मापन एवं शोध का मुख्य उपकरण है। सांख्यिकी विधियाँ विश्लेषण की प्रक्रिया का आधार होती है।

4.2 अर्थ एवं आवश्यकता

अनुसंधान प्रक्रिया के अन्तर्गत प्राप्त मूल आँकड़ों (Raw Scores) के विश्लेषण का अर्थ है आंकड़ों में निहित तथ्यों को निश्चित करने के लिए सामग्री का सारणीयन कर अध्ययन करना। इसके अन्तर्गत जटिल कारकों को छोटे- छोटे हिस्सो में बांट लेते हैं एवं व्याख्या के उद्देश्य से उनको एक साथ एक नवीन कम में व्यवस्थित कर लेते हैं।

शोध परीक्षणों के प्रशासन एवं अंकन के पश्चात आंकड़ों का संकलन एवं व्यवस्थापन किया जाता है। संकलित आंकडे अपरिपक्व आकडों के रूप में जाने जाते है। अपरिपक्व आंकड़े तब तक अर्थपूर्ण नहीं होते जब तक कि उनका साख्यिकीय विश्लेषण नहीं किया जाता। सार्थक परिणामों को प्राप्त करने के लिए प्राप्त ऑकड़ों के विश्लेषण की सहायता से परिकल्पना का परीक्षण किया जाता है।

इस प्रकार ऑकड़ों के विश्लेषण की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से पड़ती है-

- आंकड़ों को अर्थपूर्ण बनाने के लिए।
- शून्य परिकल्पना का परीक्षण करने के लिए।
- सार्थक परिणाम प्राप्त करने के लिए।
- अनुमान लगाने तथा सामान्यीकरण करने के लिए।
- प्राचल के सम्बन्ध में अनुमान लगाने के लिए।

4.3 आँकड़ों का अर्थापन या विवेचन -

अनुसंधान से सम्बंन्धित आँकड़ों के विश्लेषण के साथ ही साथ विवेचन की प्रक्रिया भी आरम्भ हो जाती है। शोधकर्ता अपने अनुसंधान के परिणामों के परिप्रेक्ष्य ही विवेचन के द्वारा अनुसंधान से सम्बन्धित समस्याओं के उत्तर प्राप्त करता है। करलिंगर (1954) के शब्दों में, विवेचन के अन्तर्गत विश्लेषण के परिणामों को किया जाता है, इसके द्वारा अनुसन्धान के अन्तर्गत प्राप्त सम्बन्धों के तर्कसंगत आधार पर अनुमान लगाये जाते हैं, और अध्ययन से सम्बन्धित सम्बन्धों के प्रति बिज्ञात किये जाते हैं।

किसी भी शोध कार्य में मात्र आँकड़ों का संकलन कर लेने से ही अभीष्ठ लक्ष्यों की प्राप्ति नहीं हो सकती है। इसके लिये आवश्यक है कि प्राप्त आँकड़ों को समस्या के संदर्भ में विश्लेषित करके उनकी अर्थपूर्ण व्याख्या प्रस्तुत की जाए। विश्लेषण के आधार पर ही शोध उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिये आवश्यक है कि आँकड़ों को शोध समस्या के संदर्भ में विश्लेषित किया जाए।

विश्लेषण से तात्पर्य है आँकड़ों को व्यवस्थित कर उन्हें तालिका का रूप देना तथा इन तथ्यों के नये निष्कर्ष प्रस्तुत करना, जिससे प्रस्तुत समंकों का विभाजन कर सरलतम भागों में नवीन व्यवस्था के अनुसार व्याख्या को प्रस्तुत किया जा सके। अतः इस अध्याय में संकलित समंकों का विभिन्न दृष्टिकोणों से विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए आंकड़ों को भिन्न-भिन्न सारणियों में व्यवस्थित करके एवं उनका संख्यात्मक एवं गुणात्मक विश्लेषण करके व्याख्या प्रस्तुत की गई है। विभिन्न सांख्यिकी परिकलित मानों को निम्न सारणियों में प्रदर्शित किया गया है।

उपकरण	प्रश्नावली
न्यादर्श	193 छात्र छात्राएं
सांख्यिकीय	प्रतिशत विश्लेषण, काईवर्ग मान एवं सार्थकता परीक्षण

तालिका सं0 4.1 : न्यादर्श एवं सांख्यिकी परीक्षण विधि का परिचय प्रदर्शित करती तालिका

4.4 परिमाणात्मक आंकड़े

परिमाणात्मक आंकड़ों का संग्रहण प्रश्नावली के माध्यम से किया गया है। परिमाणात्मक आंकड़ों के संग्रहण के लिए 200 छात्र-छात्राओं को न्यादर्श (Sample) के रूप में चयनित किया गया था, जिन्हें स्क्रीनिंग फार्म के माध्यम से चयनित कर उन्हे प्रश्नावली वितरित कर उत्तर प्राप्त किए गए हैं। इन 200 विद्यार्थियों में से 193 ने ही उत्तर देकर शोधकर्ता को प्रश्नावली सुरक्षित वापस की, उन्हीं आंकड़ों के आधार पर प्राप्त 193 विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नवत किया गया है।

उत्तरदाताओं का लिंग के आधार पर परिचय

लिंग	संख्या	प्रतिशत
छात्र	98	50.8
छात्राएं	95	49.2
कुल	193	100

तालिका संख्या - 4.2

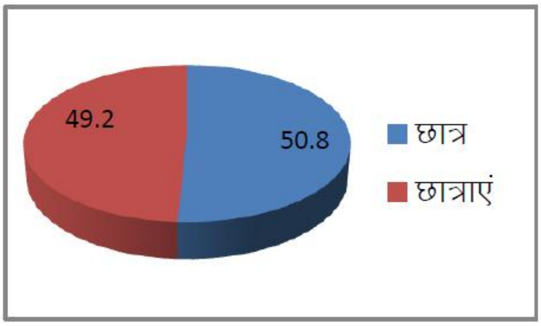

ग्राफ संख्या - 4.1

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से स्पष्ट है कि संग्रहित आंकड़ों में उत्तरदाताओं का लिंग के आधार पर वर्गीकरण में 50.8 प्रतिशत छात्र एवं 49.2 प्रतिशत छात्राएं उत्तरदाता सम्मिलित है।

उत्तरदाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर परिचय

शैक्षिक योग्यता	**संख्या**	**प्रतिशत**
स्नातक	94	48.7
परास्नातक	99	51.3
कुल	193	100

तालिका संख्या - 4.3

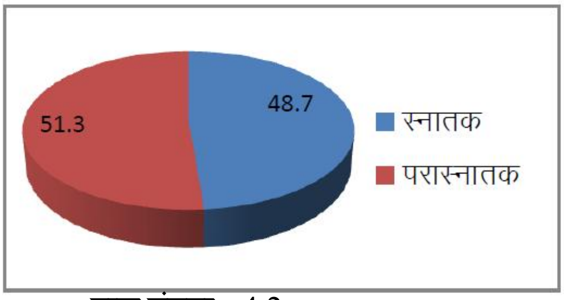

ग्राफ संख्या - 4.2

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से स्पष्ट है कि संग्रहित आंकड़ों में उत्तरदाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर वर्गीकरण में 48.7 प्रतिशत स्नातक एवं 51.3 प्रतिशत परास्नातक केन्द्र उत्तरदाता सम्मिलित है।

उत्तरदाताओं का विषय वर्ग के आधार पर परिचय

विषय वर्ग	संख्या	प्रतिशत
कला	98	50.8
विज्ञान	95	49.2
कुल	193	100

तालिका संख्या - 4.4

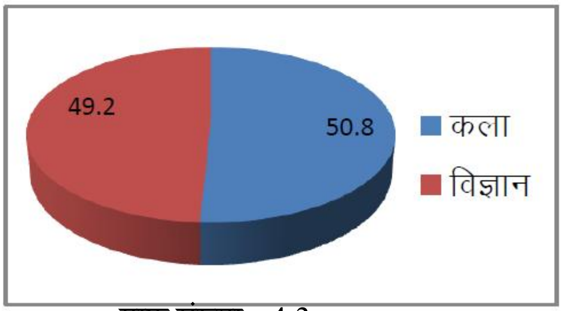

ग्राफ संख्या - 4.3

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से स्पष्ट है कि संग्रहित आंकड़ों में उत्तरदाताओं का विषय वर्ग के आधार पर वर्गीकरण में 50.8 प्रतिशत कला एवं 49.2 प्रतिशत विज्ञान विषय वर्ग के उत्तरदाता सम्मिलित है।

उत्तरदाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर परिचय

आवासीय पृष्ठभूमि	संख्या	प्रतिशत
ग्रामीण	55	28.5
शहरी	138	71.5
कुल	193	100

तालिका संख्या - 4.5

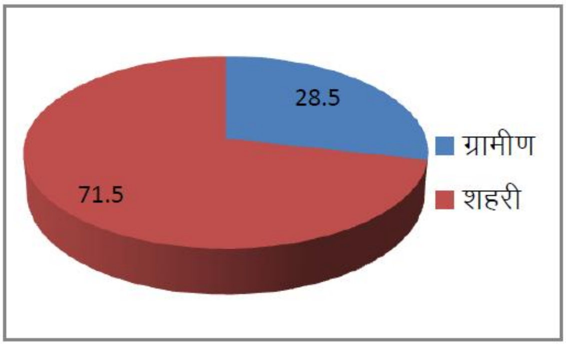

ग्राफ संख्या - 4.4

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से स्पष्ट है कि संग्रहित आंकड़ों में उत्तरदाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार में 28.5 प्रतिशत ग्रामीण एवं 71.5 प्रतिशत शहरी उत्तरदाता सम्मिलित है।

उत्तरदाताओं से प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण क्रमवार निम्नवत किया गया है, जिसमें प्रश्नसंख्या से लेकर 25 तक क्रमवार प्राप्त प्रतिक्रिया को प्रतिशत विश्लेषण, काई वर्ग मान तथा सार्थकता द्वारा विश्लेषित किया गया है, जिसका विवरण निम्नवत है।

प्रस्तुत शोध कार्य में आँकड़ों का उद्देश्य के अनुसार विश्लेषण और विवेचन किया गया जो निम्न प्रकार है।

प्रश्न-1 क्या आप अपने शैक्षणिक संस्थान का सामुदायिक रेडियो सुनना पंसद करते है?

प्रस्तुत प्रश्न के संदर्भ में विद्यार्थियों द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नांकित तालिका एवं ग्राफ के अनुसार प्रस्तुत है-

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर					योग	कुल योग
		बहुत अधिक	**अधिक**	**सामान्य**	**सामान्य से कम**	**बिल्कुल नही**		
लिंग	छात्र	15	26	54	2	1	98	193
	छात्रा	8	14	42	18	13	95	
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	12	17	46	11	8	94	193
	परास्नातक	11	23	50	9	6	99	
विषय वर्ग	कला	13	24	52	5	4	98	193
	विज्ञान	10	16	44	15	10	95	
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	6	9	23	9	8	55	193
	शहरी	17	31	73	11	6	138	
आवृत्ति		23	40	96	20	14	193	193
प्रतिशत		11.9	20.8	49.7	10.4	7.2	100	100

तालिका सं0 4.6 : प्रश्न सं0 1 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

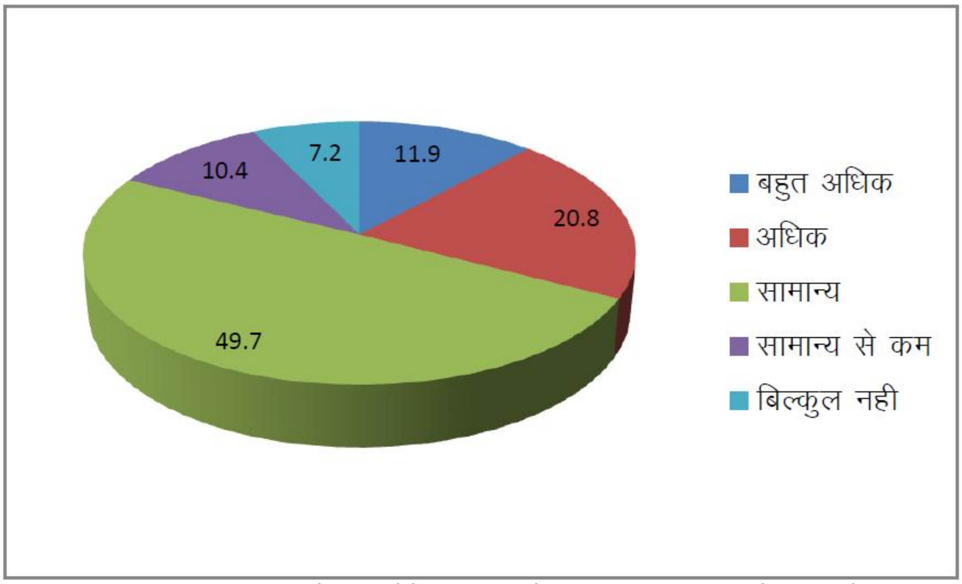

ग्राफ सं0 4.5 : प्रश्न सं0 1 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रश्न में उत्तरदाताओं की कुल संख्या के 11.9 प्रतिशत ने बहुत अधिक, 20.8 प्रतिशत ने अधिक, 49.7 प्रतिशत ने सामान्य, 10.4 प्रतिशत ने सामान्य से कम तथा 7.2 प्रतिशत ने बिल्कुल नहीं पर अपना मत व्यक्त किया है। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि अधिकतर विद्यार्थी अपने संस्थान का सामुदायिक रेडियो सुनना पसंद करते है।

लिंग के आधार पर

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	15 (7.8)	26 (13.5)	54 (28.0)	2 (1.0)	1 (0.5)	98 (50.8)	1.78 (0.05)
	छात्रा	8 (4.1)	14 (7.2)	42 (21.8)	18 (9.3)	13 (6.8)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.7 : प्रश्न संख्या 1 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

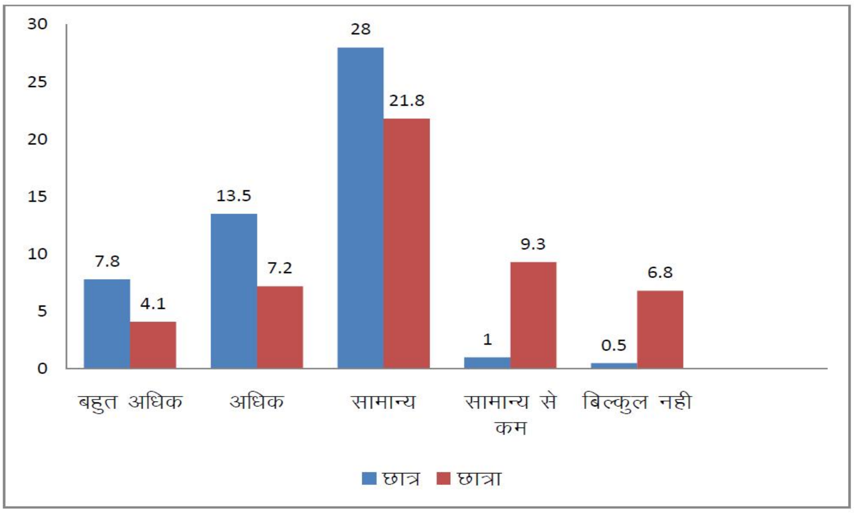

ग्राफ सं0 4.6 : प्रश्न संख्या 1 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

लिंग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल 50.8 प्रतिशत छात्रों में से 7.8 प्रतिशत छात्रो ने बहुत अधिक, 13.5 प्रतिशत छात्रों ने अधिक, 28 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य, 1.03 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य से कम तथा 0.52 प्रतिशत छात्रों ने बिल्कुल नही मे उत्तर दिया है अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्र अपने संस्थान का सामुदायिक रेडियो सुनना पसंद करते है। इसी प्रकार कुल 49.2 प्रतिशत छात्राओं में से 4.1 प्रतिशत छात्राओं ने बहुत अधिक, 7.2 प्रतिशत छात्राओं ने अधिक, 21.8 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य, 9.3 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य से कम तथा 6.3 प्रतिशत छात्राओं ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्राएं अपने संस्थान का सामुदायिक रेडियो सुनना पसंद करती है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 1.78 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं के द्वारा अपने संस्थान के सामुदायिक रेडियो को सुनना पसंद करने में कोई सार्थक अंतर नही है।

शैक्षिक योग्यता के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	12 (6.1)	17 (8.8)	46 (23.8)	11 (5.7)	8 (4.3)	94 (48.7)	1.36 (0.05)
	परास्नातक	11 (5.7)	23 (11.9)	50 (25.9)	9 (4.7)	6 (3.1)	99 (51.3)	

तालिका सं0 4.8 : प्रश्न संख्या 1 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

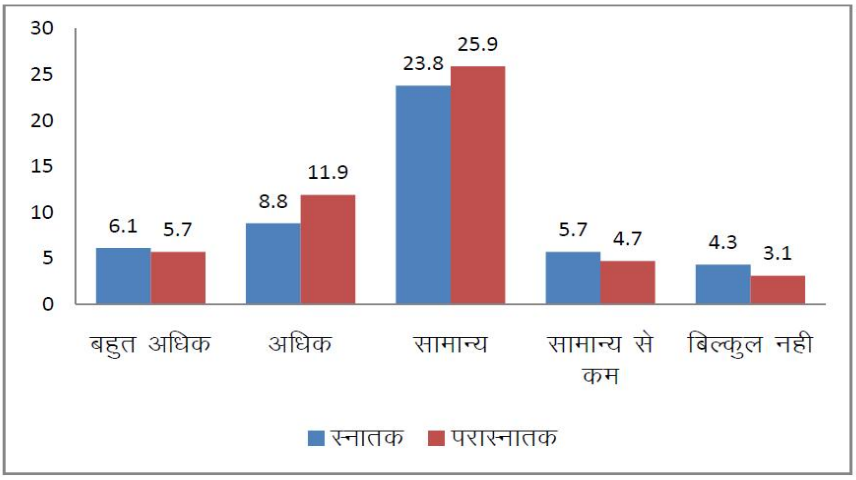

ग्राफ सं0 4.7 : प्रश्न संख्या 1 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

शैक्षिक योग्यता के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 48.7 प्रतिशत स्नातक विद्यार्थियों में से 6.2 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बहुत अधिक, 8.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 23.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 5.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि स्नातक कक्षाओं के अधिकतर विद्यार्थी अपने संस्थान का सामुदायिक रेडियो सुनना पसंद करते है। इसी प्रकार कुल 51.3 प्रतिशत परास्नातक विद्यार्थियो में से 5.7 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बहुत अधिक, 11.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 25.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि परास्नातक कक्षाओं के अधिकतर विद्यार्थी अपने संस्थान को रेडियो सुनना पसंद करते है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 1.36 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् स्नातक एंव परास्नातक विद्यार्थियों के द्वारा अपने संस्थान के सामुदायिक रेडियो को सुनना पसंद करने में कोई सार्थक अंतर नही है।

विषय वर्ग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
विषय वर्ग	कला	13 (6.7)	24 (12.4)	52 (26.9)	5 (2.6)	4 (2.1)	98 (50.8)	1.75 (0.05)
	विज्ञान	10 (5.2)	16 (8.3)	44 (22.8)	15 (7.7)	10 (5.2)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.9 : प्रश्न संख्या 1 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

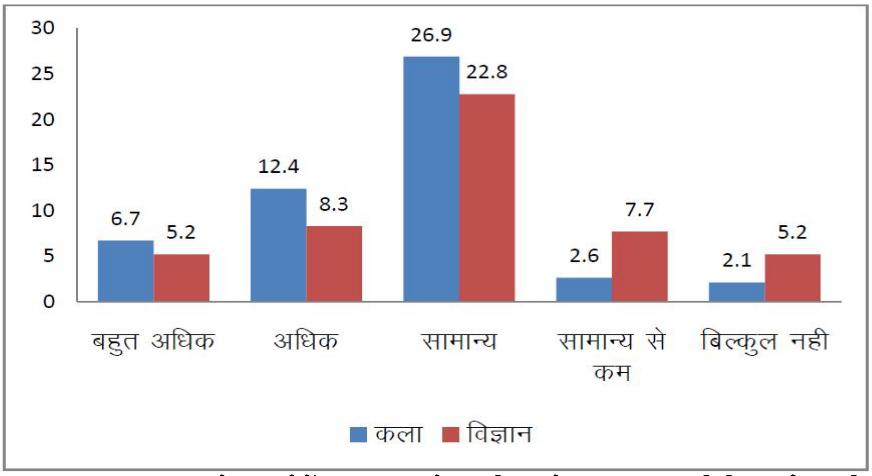

ग्राफ सं0 4.8 : प्रश्न संख्या 1 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

विषय वर्ग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कला विषय वर्ग के कुल 50.8 प्रतिशत में से 6.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 12.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 26.9 प्रतित विद्यार्थियों ने सामान्य, 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नही में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि कला विषय वर्ग के अधिकतर विद्यार्थी अपने संस्थान का रेडियो सुनना पसंद करते है। इसी प्रकार विज्ञान विषय वर्ग के कुल 49.2 प्रतिशत में से 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 8.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 22.8 प्रतित विद्यार्थियों ने सामान्य, 7.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नही में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि विज्ञान विषय वर्ग के अधिकतर विद्यार्थी अपने संस्थान का रेडियो सुनना पसंद करते है।

साख्यकीय विश्लेषण से काई वर्ग का मान 1.74 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् कला एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के द्वारा अपने संस्थान के सामुदायिक रेडियो को सुनना पसदं करने में कोई सार्थक अंतर नही हैं।

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	6 (3.1)	9 (4.7)	23 (11.9)	9 (4.7)	8 (4.1)	55 (28.5)	2.08 (0.05)
	शहरी	17 (8.8)	31 (16.1)	73 (37.8)	11 (5.7)	6 (3.1)	138 (71.5)	

तालिका सं0 4.10 : प्रश्न संख्या 1 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

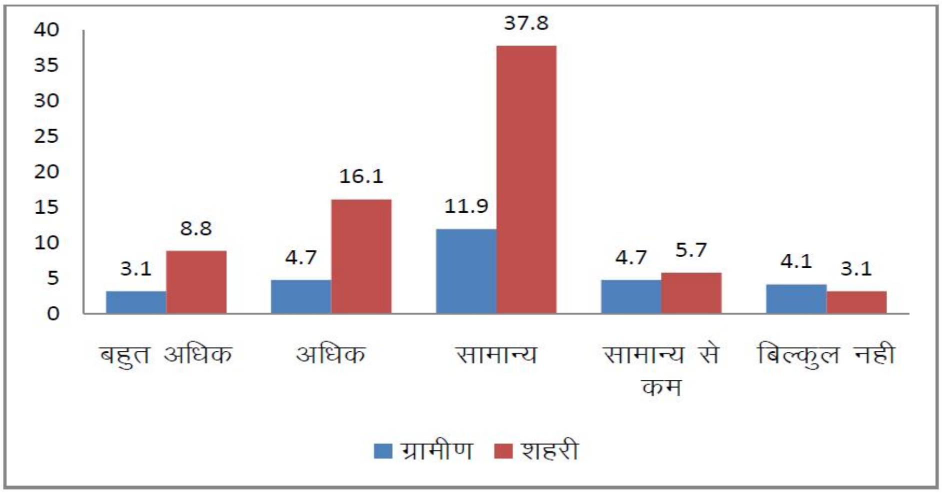

ग्राफ सं0 4.9 : प्रश्न संख्या 1 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि ग्रामीण पृष्ठभूमि के कुल 28.5 प्रतिशत में से 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 11.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण पृष्ठभूमि के अधिकतर विद्यार्थियों को अपने संस्थान का सामुदायिक रेडियो सुनना पसंद है। इसी प्रकार कुल 71.5 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों में से 8.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 16.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 37.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 5.7 प्रतिशत विद्यार्थियो ने सामान्य से कम तथा 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर नही दिया है। अतः स्पष्ट हे कि शहरी पृष्ठभूमि के अधिकतर विद्यार्थियों को अपने संस्थान का सामुदायिक रेडियो सुनना पसंद है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.08 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर अपने संस्थान के सामुदायिक रेडियो को सुनना पसंद करने में कोई सार्थक अंतर नही है।

प्रश्न -2 क्या आप सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों को सुनना पंसद करते है?

प्रस्तुत प्रश्न के संदर्भ मं विद्यार्थियों द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नांकित तालिका एवं ग्राफ के अनुसार प्रस्तुत है-

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर					योग	कुलयोग
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	16	34	34	10	4	98	193
	छात्रा	13	16	40	14	12	95	
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	15	22	35	13	9	94	193
	परास्नातक	14	28	39	11	7	99	
विषय वर्ग	कला	19	30	32	12	5	98	193
	विज्ञान	10	20	42	12	11	95	
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	8	11	23	7	6	55	193
	शहरी	21	39	51	17	10	138	
आवृत्ति		29	50	74	24	16	193	193
प्रतिशत		15	25.9	38.3	12.4	8.4	10..	10.0

तालिका सं0 4.11: प्रश्न सं0 2 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

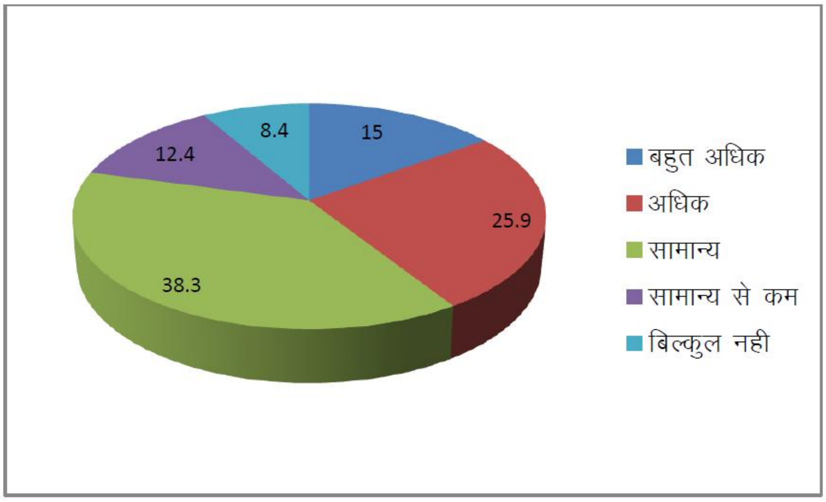

ग्राफ सं0 4.10: प्रश्न सं0 2 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रश्न में उत्तरदाताओं की कुल संख्या के 15 प्रतिशत ने बहुत अधिक, 25.9 प्रतिशत ने अधिक, 38.3 प्रतिशत ने सामान्य, 12.4 प्रतिशत ने सामान्य से कम तथा 8.4 प्रतिशत ने बिल्कुल नहीं पर अपना मत व्यस्त किया है। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि अधिकतर विद्यार्थी अपने संस्थान के सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले शैक्षिक कार्यकमो को सुनना पसंद करते है।

लिंग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्याएवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	16 (8.3)	34 (17.6)	34 (17.6)	10 (5.2)	4 (2.1)	98 (50.8)	1.36 (0.05)
	छात्रा	13 (6.7)	16 (8.3)	40 (20.7)	14 (7.2)	12 (6.2)	95 (49.2)	

ग्राफ सं0 4.12 : प्रश्न संख्या 2 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

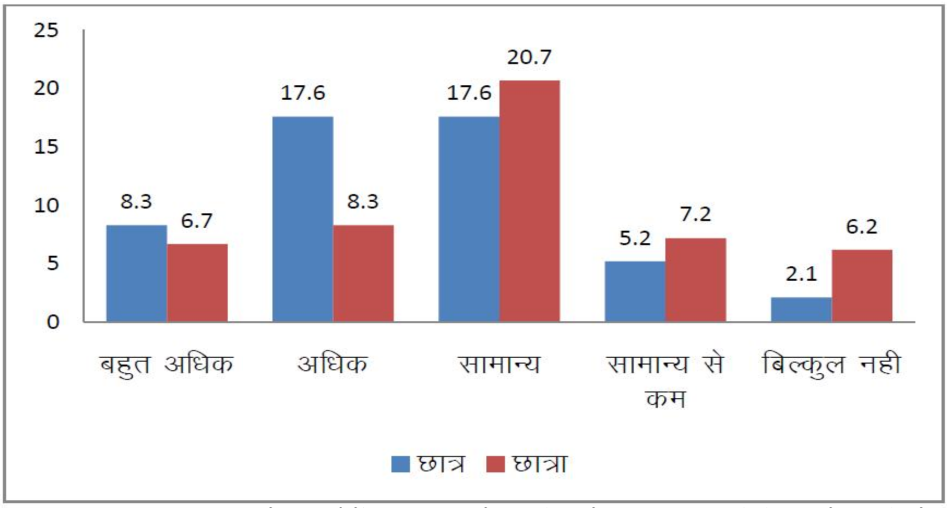

ग्राफ सं0 4.11 : प्रश्न संख्या 2 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

लिंग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल 50.8 प्रतिशत छात्रों में से 8.3 प्रतिशत छात्रो ने बहुत अधिक, 17.6 प्रतिशत छात्रों ने अधिक, 17.6 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य, 5.2 प्रतिशत छात्रो ने सामान्य से कम तथा 2.1 प्रतिशतछात्रों ने बिल्कुल नही मे उत्तर दिया है अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्र अपने संस्थान के सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों को सुनना पसंद करते है। इसी प्रकार कुल 49.2 प्रतिशत छात्राओं में से 6.7 प्रतिशत छात्राओं ने बहुत अधिक, 8.3 प्रतिशत छात्राओं ने अधिक, 20.7 प्रतिशत छात्राओं में सामान्य, 7.2 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य से कम तथा 6.2 प्रतिशत छात्राओं ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्राएं अपने संस्थान के सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों को सुनना पसंद करती है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 1.36 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं के द्वारा अपने संस्थान के सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों को सुनना पसंद करने में कोई सार्थक अंतर नही है।

शैक्षिक योग्यता के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्याएवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	15 (7.7)	22 (11.4)	35 (18.2)	13 (6.7)	9 (4.7)	94 (48.7)	1.28 (0.05)
	परास्नातक	14 (7.2)	28 (14.5)	39 (20.1)	11 (5.7)	7 (3.6)	99 (51.3)	

तालिका सं0 4.13 : प्रश्न संख्या 2 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

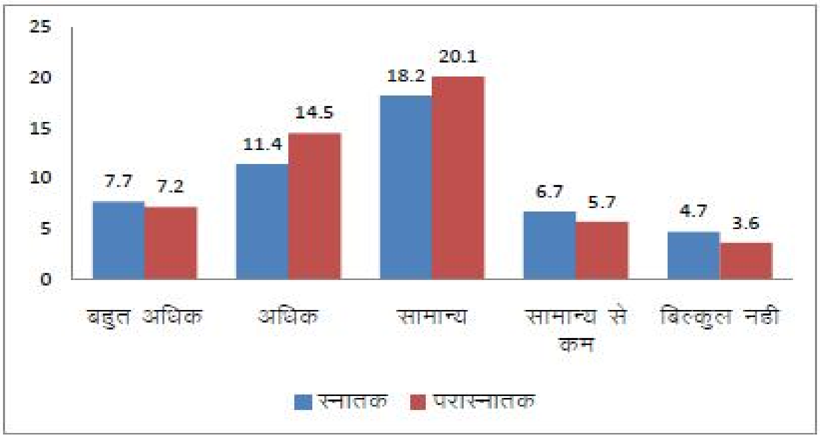

ग्राफ सं0 4.12 : प्रश्न संख्या 2 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

शैक्षिक योग्यता के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 48.7 प्रतिशत स्नातक विद्यार्थियों में से 7.2 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बहुत अधिक, 11.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 18.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 6.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि स्नातक कक्षाओं के अधिकतर विद्यार्थी अपने संस्थान के सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों को सुनना पसंद करते है। इसी प्रकार कुल 51.3 प्रतिशत परास्नातक विद्यार्थियो में से 7.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 14.5 प्रतिशत विद्यार्थियो ने अधिक, 20.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 5.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि परास्नातक कक्षाओं के अधिकतर विद्यार्थी अपने संस्थान के सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों को सुनना पसंद करते है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 1.28 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् स्नातक एंव परास्नातक विद्यार्थियों के द्वारा अपने संस्थान के सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों को सुनना पसंद करने में कोई सार्थक अंतर नही है।

विषय वर्ग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्याएवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
विषय वर्ग	कला	19 (9.9)	30 (15.5)	32 (16.6)	12 (6.2)	5 (2.6)	98 (50.8)	1.44 (0.05)
	विज्ञान	10 (5.2)	20 (10.4)	42 (21.8)	12 (6.2)	11 (5.7)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.14 : प्रश्न संख्या 2 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

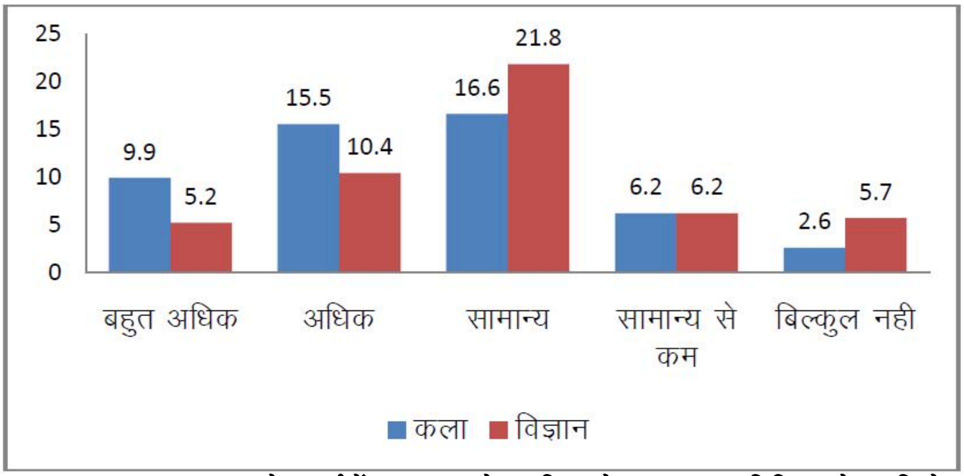

ग्राफ सं0 4.13 : प्रश्न संख्या 2 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

विषय वर्ग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कला विषय वर्ग के कुल 50.8 प्रतिशत में से 9.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 15.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 16.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 6.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नही में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि कला विषय वर्ग के अधिकतर विद्यार्थी अपने संस्थान के सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों को सुनना पसंद करते है। इसी प्रकार विज्ञान विषय वर्ग के कुल 49.2 प्रतिशत में से 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 10.4 विद्यार्थियों ने अधिक, 21.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 6.2 विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 5.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि विज्ञान विषय वर्ग के अधिकतर विद्यार्थी अपने संस्थान के सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों को सुनना पसंद करते है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 1.44 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् कलाएंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के द्वारा अपने संस्थान के सामुदायिक के सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों को सुनना पसंद करने में कोई सार्थक अंतर नही है।

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्याएवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	8 (4.2)	11 (5.7)	23 (11.9)	7 (3.6)	6 (3.1)	55 (28.5)	3.14 (0.05)
	शहरी	21 (10.8)	39 (20.2)	51 (26.5)	17 (8.8)	10 (5.2)	138 (71.5)	

तालिका सं0 4.15 : प्रश्न संख्या 2 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

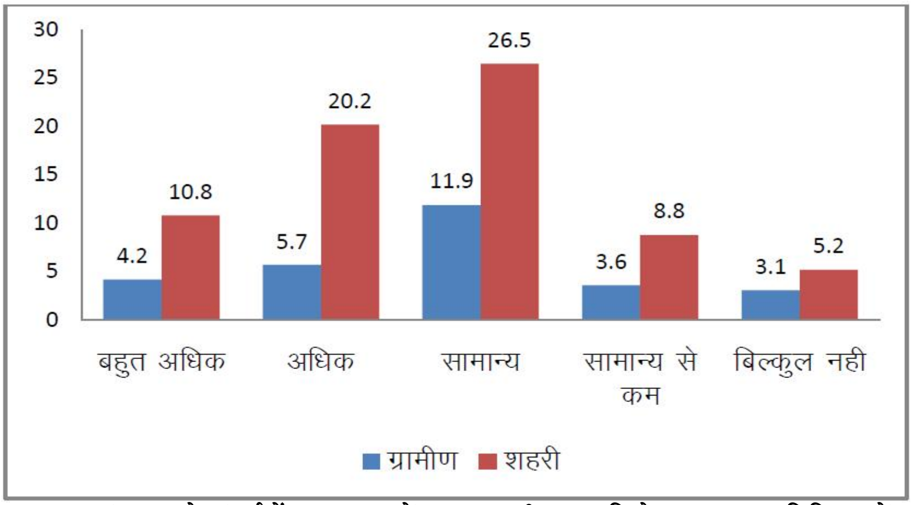

ग्राफ सं0 4.14 : प्रश्न संख्या 2 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 28.5 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों मे से 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 5.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 11.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण पृष्ठभूमि के अधिकतर विद्यार्थी अपने संस्थान के सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों को सुनना पसंद करते है।इसी प्रकार कुल 71.5 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों में से 10.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 20.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 26.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 8.8 प्रतिशत विद्यार्थियो ने सामान्य से कम तथा 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि शहरी पृष्ठभूमि के अधिकतर विद्यार्थी अपने संस्थान के सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों को सुनना पसंद करते है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 3.14 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर विद्यार्थियो में अपने सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों को सुनना पसंद करने में सार्थक अंतर नही है।

प्रश्न -3 क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का प्रसारण समय आपके लिए उपयुक्त होता है ?

प्रस्तुत प्रश्न के संदर्भ में विद्यार्थियों द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नांकित तालिका एवं ग्राफ के अनुसार प्रस्तुत है।

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर					योग	कुल योग
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	12	22	59	3	2	98	193
	छात्रा	5	10	47	19	14	95	
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	9	13	51	12	9	94	193
	परास्नातक	8	19	55	10	7	99	
विषय वर्ग	कला	10	20	57	6	5	98	193
	विज्ञान	7	12	49	16	11	95	
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	3	5	28	10	9	55	193
	शहरी	14	27	78	12	7	138	
आवृत्ति		17	32	106	22	16	193	193
प्रतिशत		8.8	16.6	54.9	11.4	8.3	100	100

तालिका सं0 4.16: प्रश्न सं0 3 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

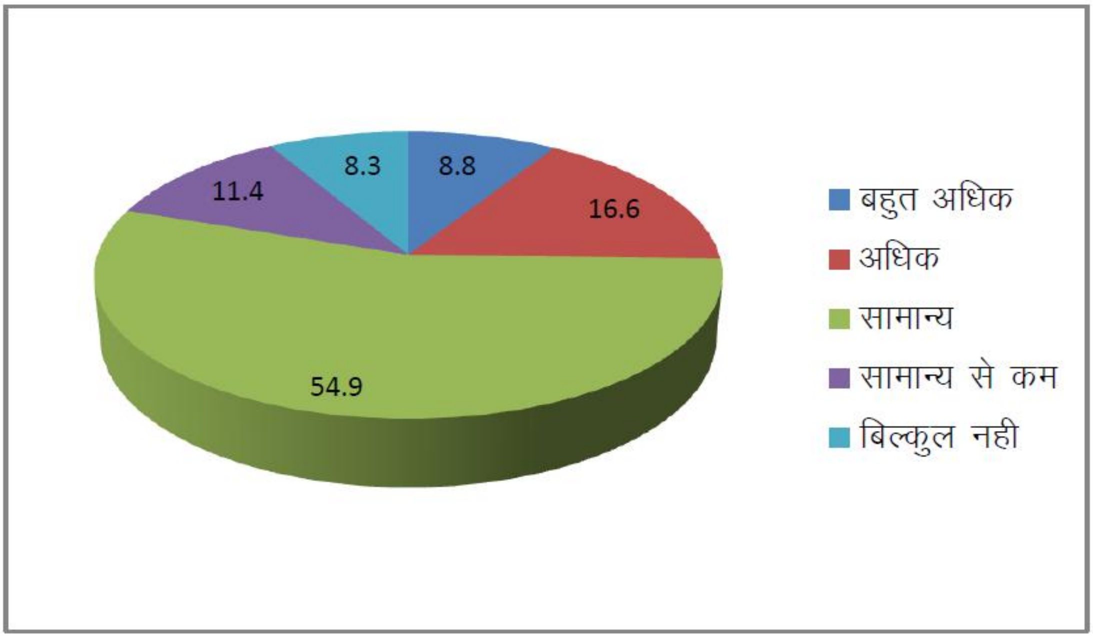

ग्राफ सं0 4.15: प्रश्न सं0 3 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रश्न में उत्तरदाताओं की कुल संख्या के 8.8 प्रतिशत ने बहुत अधिक, 16.6 प्रतिशत ने अधिक, 54.9 प्रतिशत ने सामान्य, 11.4 प्रतिशत ने सामान्य से कम तथा 8.2 प्रतिशत ने बिल्कुल नहीं पर अपना मत व्यक्त किया है। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का प्रसारण समय उनके लिए उपयुक्त होता है।

लिंग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	12 (6.2)	22 (11.4)	59 (30.6)	3 (1.6)	2 (1.03)	98 (50.8)	7.86 (0.05)
	छात्रा	5 (2.6)	10 (5.2)	47 (24.3)	19 (9.9)	14 (7.2)	95 (49.2)	

ग्राफ सं0 4.17 : प्रश्न संख्या 3 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

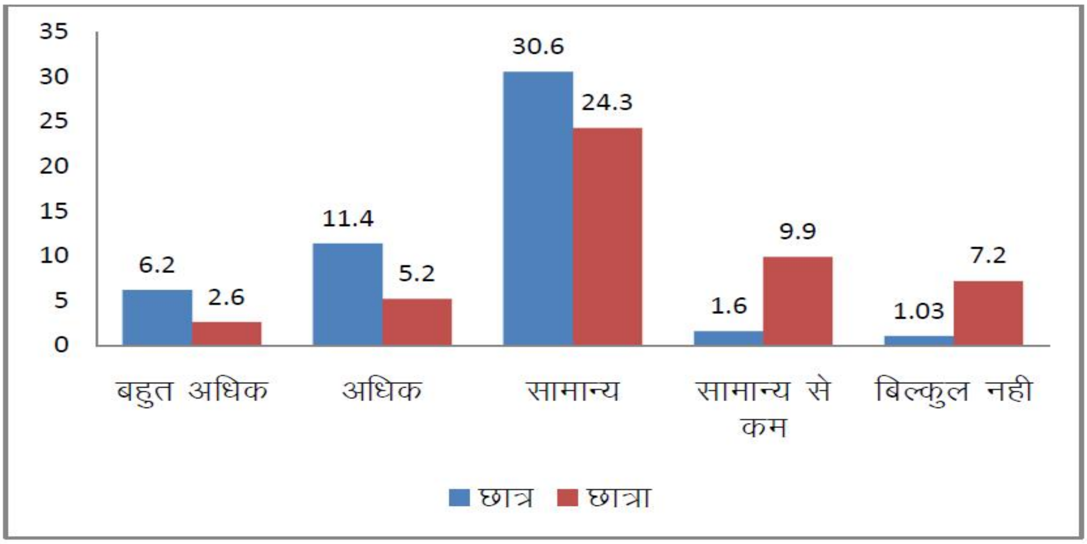

ग्राफ सं0 4.16 : प्रश्न संख्या 3 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

लिंग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल 50.8 प्रतिशत छात्रों में से 6.2 प्रतिशत छात्रो ने बहुत अधिक, 11.4 प्रतिशत छात्रों ने अधिक, 30.6 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य, 1.6 प्रतिशत छात्रो ने सामान्य से कम तथा 1.03 प्रतिशत छात्रों ने बिल्कुल नही मे उत्तर दिया है अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्रों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का प्रसारण समय उनके लिए उपयुक्त होता है। इसी प्रकार कुल 49.2 प्रतिशत छात्राओं में से 2.6 प्रतिशत छात्राओं ने बहुत अधिक, 5.2 प्रतिशत छात्राओं ने अधिक, 24.3 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य, 9.9 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य से कम तथा 7.2 प्रतिशत छात्राओं ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकांश छात्राओं के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का प्रसारण समय उनके लिए उपयुक्त होता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 7.86 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के प्रसारण समय के उपयुक्तता के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शैक्षिक योग्यता के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	9 (4.7)	13 (6.7)	51 (26.4)	12 (6.2)	9 (4.7)	94 (48.7)	2.28 (0.05)
	परास्नातक	8 (4.1)	19 (9.9)	55 (28.5)	10 (5.2)	7 (3.6)	99 (51.3)	

तालिका सं0 4.18 : प्रश्न संख्या 3 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

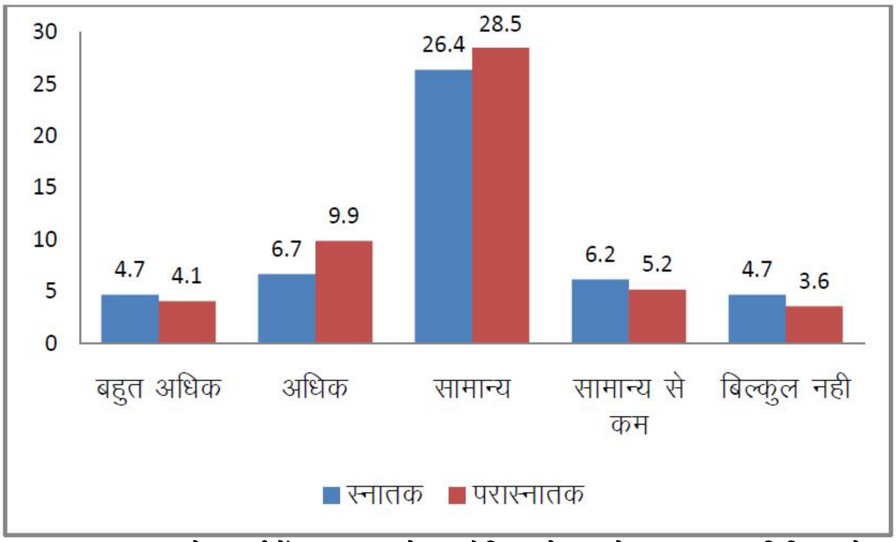

ग्राफ सं0 4.17 : प्रश्न संख्या 3 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

शैक्षिक योग्यता के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 48.7 प्रतिशत स्नातक विद्यार्थियों मे से 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बहुत अधिक, 6.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 26.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 6.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि स्नातक वर्ग के अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का प्रसारण समय उनके लिए उपयुक्त होता है। इसी प्रकार कुल 51.3 प्रतिशत परास्नातक विद्यार्थियो में से 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 9.9 प्रतिशत विद्यार्थियो ने अधिक, 28.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि परास्नातक वर्ग के अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का प्रसारण समय उनके लिए उपयुक्त होता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.28 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् स्नातक एंव परास्नातक वर्ग के विद्यार्थियो में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के प्रसारण समय के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

विषय वर्ग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
विषय वर्ग	कला	10 (5.2)	20 (10.4)	57 (29.5)	6 (3.1)	5 (2.6)	98 (50.8)	2.14 (0.05)
	विज्ञान	7 (3.6)	12 (6.2)	49 (25.4)	16 (8.3)	11 (5.7)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.19 : प्रश्न संख्या 3 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

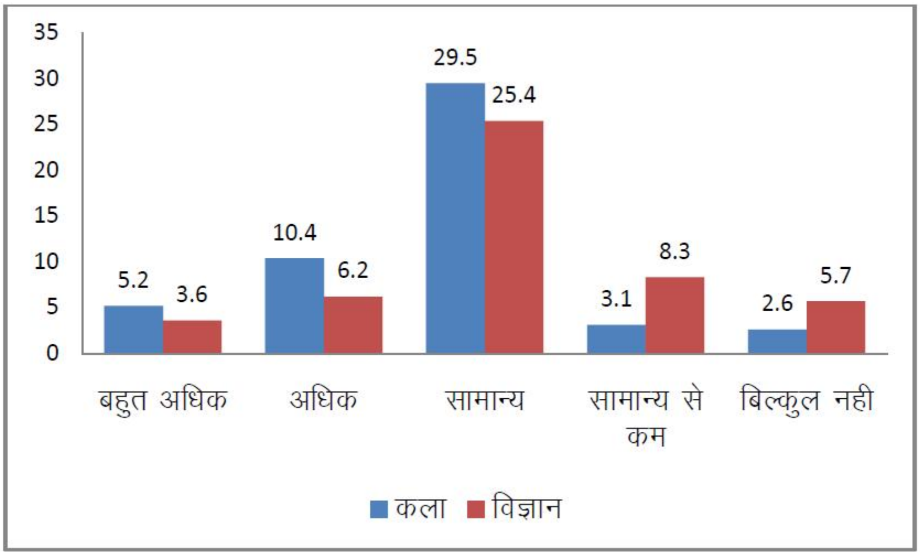

ग्राफ सं0 4.18 : प्रश्न संख्या 3 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

विषय वर्ग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कला विषय के कुल 50.8 प्रतिशत विद्यार्थियों में से 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 10.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 29.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नही में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि कला विषय वर्ग के अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का प्रसारण समय उनके लिए उपयुक्त होता है। इसी प्रकार विज्ञान विषय वर्ग के कुल 49.2 प्रतिशत विद्यार्थियोंमें से 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 6.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 25.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 8.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 5.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि विज्ञान वर्ग के अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार कार्यक्रमों के प्रसारण का समय उनके लिए उपयुक्त होता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.14 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् कला एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों मे सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के प्रसारण समय के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	3 (1.6)	5 (2.6)	28 (14.5)	10 (5.2)	9 (4.7)	55 (28.5)	5.24 (0.05)
	शहरी	14 (7.2)	27 (14.0)	78 (40.3)	12 (6.2)	7 (3.6)	138 (71.5)	

तालिका सं0 4.20 : प्रश्न संख्या 3 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

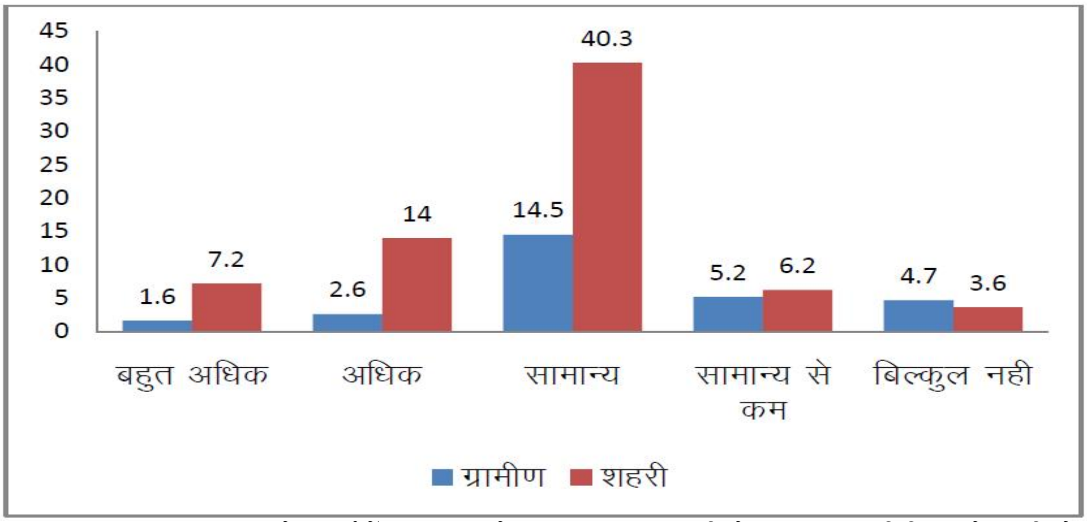

ग्राफ सं0 4.19 : प्रश्न संख्या 3 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 28.5 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों मे से 1.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 14.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण पृष्ठभूमि के अधिकंश विद्यार्थियों के अनुसार कार्यक्रमों का प्रसारण समय उनके लिए उपयुक्त होता है। इसी प्रकार कुल 71.5 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों में से 7.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 14.0 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 40.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 6.2 प्रतिशत विद्यार्थियो ने सामान्य से कम तथा 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर नही दिया है। अतः स्पष्ट है कि शहरी पृष्ठभूमि के अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का प्रसारण समय उनके लिए उपयुक्त होता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 5.24 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों मे सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के प्रसारण समय की उपयुक्तता केसम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

प्रश्न -4 क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित कार्यक्रमों में शिक्षा आधारित कार्यक्रमों की सख्या 50 प्रतिशत या उससे अधिक रहती है ?

प्रस्तुत प्रश्न के संदर्भ मं विद्यार्थियां द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नांकित तालिका एवं ग्राफ के अनुसार प्रस्तुत है।

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर					योग	कुल योग
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	14	25	56	1	2	98	193
	छात्रा	7	13	44	17	14	95	
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	11	16	48	10	9+	94	193
	परास्नातक	10	22	52	8	7	99	
विषय वर्ग	कला	12	23	54	4	5	98	193
	विज्ञान	9	15	46	14	11	95	
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	5	8	25	8	9	55	193
	शहरी	16	30	75	10	7	138	
आवृत्ति		21	38	100	18	16	193	193
प्रतिशत		10.9	19.7	51.8	9.3	8.3	10.0	10.0

तालिका सं0 4.21: प्रश्न सं0 4 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

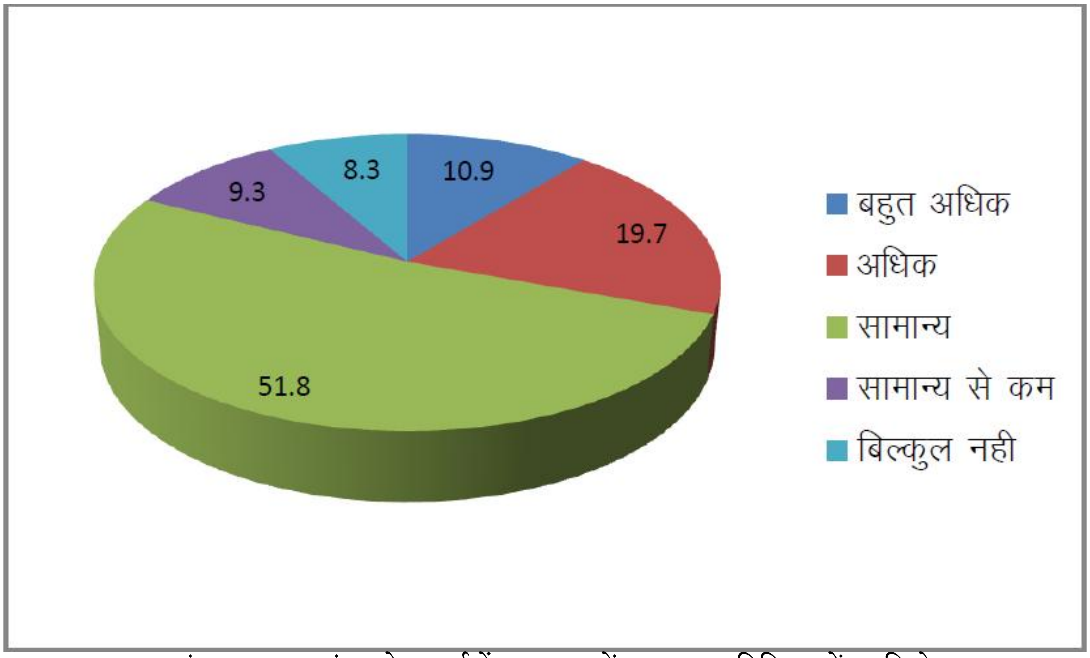

ग्राफ सं0 4.20: प्रश्न सं0 4 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रश्न में उत्तरदाताओं की कुल संख्या के 10.9 प्रतिशत ने बहुत अधिक, 19.7 प्रतिशत ने अधिक, 51.8 प्रतिशत ने सामान्य, 9.3 प्रतिशत ने सामान्य से कम तथा 8.3 प्रतिशत ने बिल्कुल नहीं पर अपना मत व्यस्त किया है। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में शिक्षा आधारित कार्यक्रमों की संख्या 50 प्रतिशत या उससे अधिक रहती है।

लिंग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	14 (7.2)	25 (12.9)	56 (29.0)	1 (0.56)	2 (1.03)	98 (50.8)	2.84 (0.05)
	छात्रा	7 (3.6)	13 (6.7)	44 (22.8)	17 (8.8)	14 (7.2)	95 (49.2)	

ग्राफ सं0 4.22 : प्रश्न संख्या 4 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

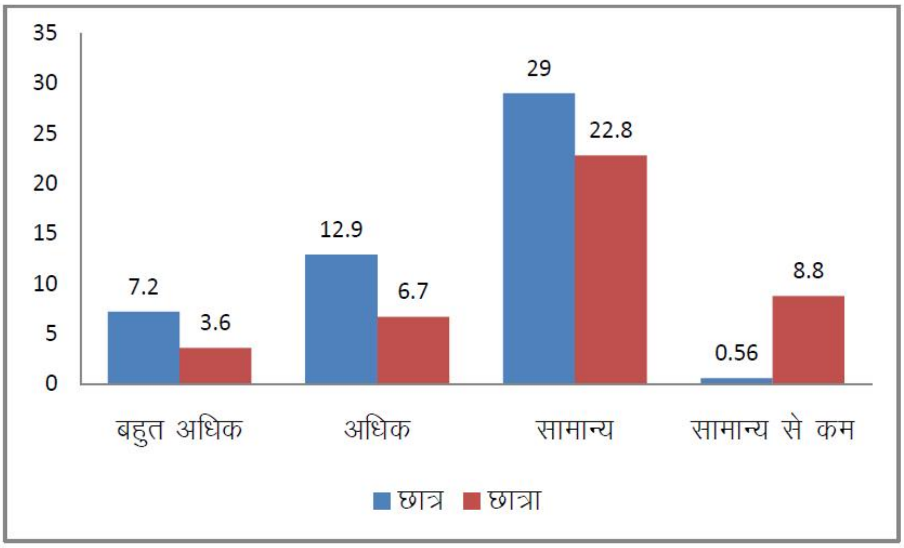

ग्राफ सं0 4.21 : प्रश्न संख्या 4 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

लिंग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल 50.8 प्रतिशत छात्रों में से 7.2 प्रतिशत छात्रो ने बहुत अधिक, 12.9 प्रतिशत छात्रों ने अधिक, 29.0 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य, 0.5 प्रतिशत छात्रो ने सामान्य से कम तथा 1.03 प्रतिशत छात्रों ने बिल्कुल नही मे उत्तर दिया है अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्रों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में शिक्षा आधारित कार्यक्रमों की संख्या 50 प्रतिशत या उससे अधिक रहती है। इसी प्रकार कुल 49.2 प्रतिशत छात्राओं में से 3.6 प्रतिशत छात्राओं ने बहुत अधिक, 6.7 प्रतिशत छात्राओं ने अधिक, 22.8 प्रतिशत छात्राओं में सामान्य, 8.8 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य से कम तथा 7.2 प्रतिशत छात्राओं ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्राओं के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में शिक्षा आधारित कार्यक्रमों की संख्या 50 प्रतिशत या उससे अधिक रहती है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.84 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में शिक्षा आधारित कार्यक्रमों की संख्या के प्रसारण के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शैक्षिक योग्यता के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	11 (5.7)	16 (8.3)	48 (24.9)	10 (5.2)	9 (4.7)	94 (48.7)	1.96 (0.05)
	परास्नातक	10 (5.2)	22 (11.4)	52 (26.9)	8 (4.1)	7 (3.6)	99 (51.3)	

तालिका सं0 4.23 : प्रश्न संख्या 4 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

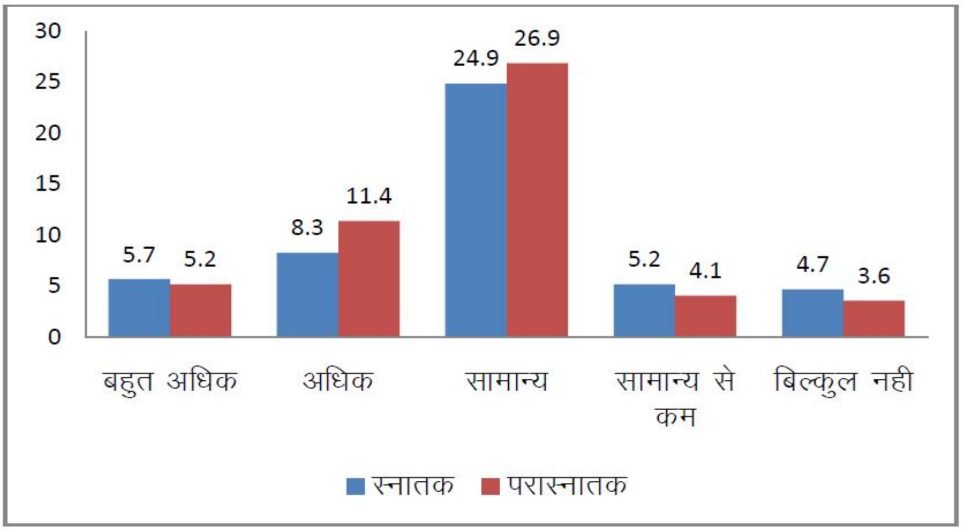

ग्राफ सं0 4.22 : प्रश्न संख्या 4 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

शैक्षिक योग्यता के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 48.7 प्रतिशत स्नातक के विद्यार्थियों मे से 5.7 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बहुत अधिक, 8.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 24.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि स्नातक के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में शिक्षा आधारित कार्यक्रमों की संख्या 50 प्रतिशत या उससे अधिक रहती है। इसी प्रकार कुल 51.3 प्रतिशत परास्नातक विद्यार्थियो में से 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 11.4 प्रतिशत विद्यार्थियो ने अधिक, 26.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि परास्नातक वर्ग के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में शिक्षा आधारित कार्यक्रमों की संख्या 50 प्रतिशत या उससे अधिक रहती है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 1.96 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् स्नातक वर्ग के विद्यार्थियो एंव परास्नातक वर्ग के विद्यार्थियों में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित कार्यक्रमों में शिक्षा आधारित कार्यक्रमों की संख्या के प्रसारण के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

विषय वर्ग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
विषय वर्ग	कला	12 (6.2)	23 (11.9)	54 (28.0)	4 (2.1)	5 (2.6)	98 (50.8)	1.84 (0.05)
	विज्ञान	9 (4.7)	15 (7.8)	46 (23.8)	14 (7.2)	11 (5.7)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.24 : प्रश्न संख्या 4 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

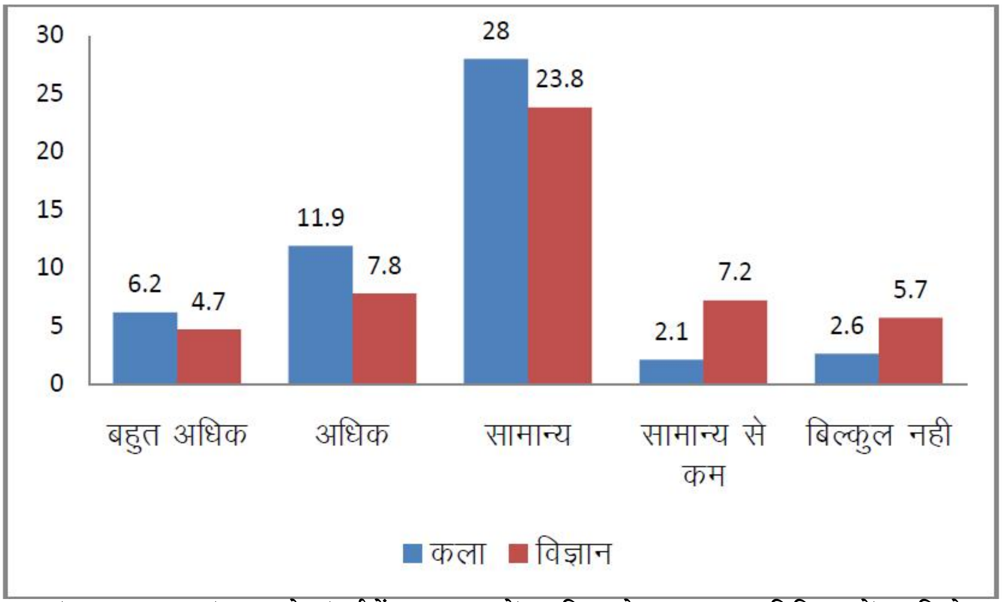

ग्राफ सं0 4.23 : प्रश्न संख्या 4 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

विषय वर्ग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कला विषय वर्ग के कुल 50.8 प्रतिशत में से 6.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 11.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 28.0 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नही में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि कला विषय वर्ग के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित कार्यक्रमों में शिक्षा आधारित कार्यक्रमों की संख्या 50 प्रतिशत या उससे अधिक रहती है। इसी प्रकार विज्ञान विषय वर्ग के कुल 49.2 प्रतिशत विद्यार्थियों में से 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 7.8 विद्यार्थियों ने अधिक, 23.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 7.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 5.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि विज्ञान विषय वर्ग के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित कार्यक्रमों में शिक्षा आधारित कार्यक्रमों की संख्या 50 प्रतिशत या उससे अधिक रहती है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 1.84 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् कला एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में शिक्षा आधारित कार्यक्रमों की संख्या के प्रसारण के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	5 (2.6)	8 (4.1)	25 (12.9)	8 (4.1)	9 (4.7)	55 (28.5)	3.86 (0.05)
	शहरी	16 (8.3)	30 (15.5)	75 (38.9)	10 (5.2)	7 (3.6)	138 (71.5)	

तालिका सं0 4.25 : प्रश्न संख्या 4 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

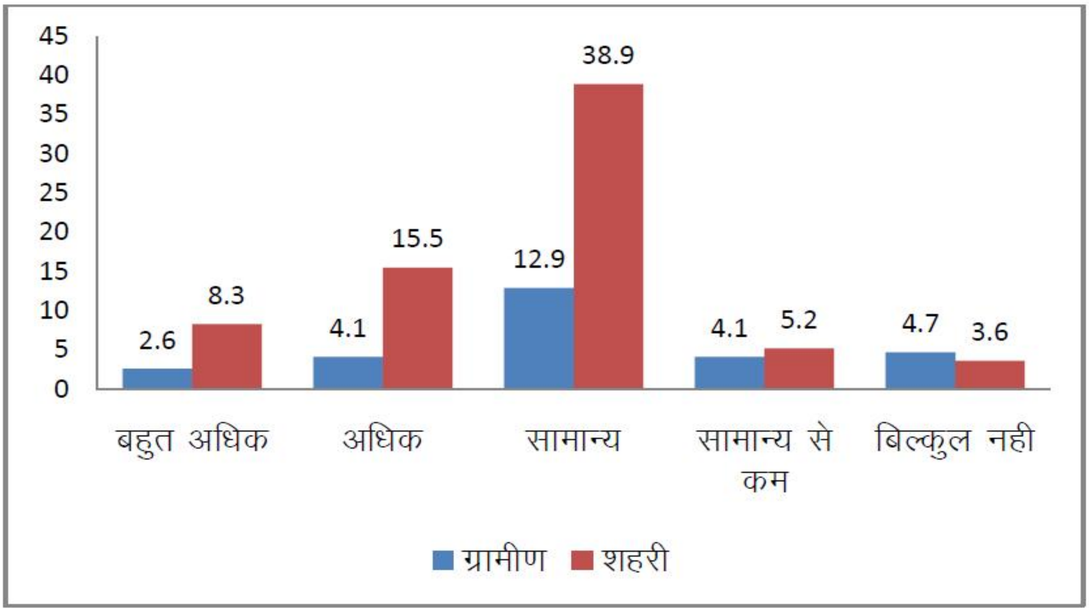

ग्राफ सं0 4.24 : प्रश्न संख्या 4 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 28.5 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों मे से 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 12.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित कार्यक्रमों में शिक्षा आधारित कार्यक्रमों की संख्या 50 प्रतिशत या उससे अधिक रहती है। इसी प्रकार कुल 71.5 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों में से 8.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 15.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 38.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियोंने सामान्य से कम तथा 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर नही दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में शिक्षा आधारित कार्यक्रमों की संख्या 50 प्रतिशत या उससे अधिक रहती है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 3.64 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियो में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में शिक्षा आधारित कार्यक्रमों की संख्या के प्रसारण के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रश्न - 5 क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रतिदिन शिक्षा आधारित नये कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है?

प्रस्तुत प्रश्न के संदर्भ में विद्यार्थियों द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नांकित तालिका एवं ग्राफ के अनुसार प्रस्तुत है।

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर					योग	कुल योग
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	7	7	18	24	42	98	193
	छात्रा	2	6	31	14	42	95	
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	4	7	21	18	44	94	193
	परास्नातक	5	6	28	20	40	99	
विषय वर्ग	कला	6	8	20	21	43	98	193
	विज्ञान	3	5	29	17	41	95	
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	3	3	8	7	34	55	193
	शहरी	6	10	41	31	50	138	
आवृत्ति		9	13	49	38	84	193	193
प्रतिशत		4.7	6.7	25.4	19.7	43.5	100	100

तालिका सं0 4.26: प्रश्न संख्या 5 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

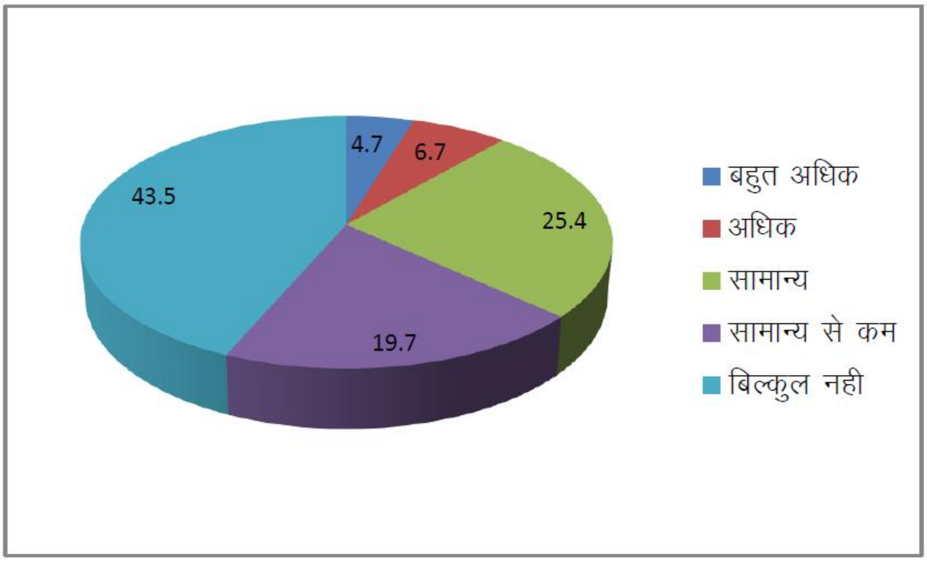

ग्राफ सं0 4.25: प्रश्न संख्या 4 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रश्न में उत्तरदाताओं की कुल संख्या के 4.7 प्रतिशत ने बहुत अधिक, 6.7 प्रतिशत ने अधिक, 25.4 प्रतिशत ने सामान्य, 19.7 प्रतिशत ने सामान्य से कम तथा 43.5 प्रतिशत ने बिल्कुल नहीं पर अपना मत व्यस्त किया है। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि सामुदायिक रेडियो पर शिक्षा आधारित नये कार्यक्रमों का प्रसारण न करके कार्यक्रमों की पुनरावृत्ति ही की जाती है।

लिंग के आधार पर -

चर	श्रेणी	बहुत अधिक					अधिक बहुत अधिक	सामान्य
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	7 (3.6)	7 (3.6)	18 (9.3)	24 (12.4)	42 (21.8)	98 (50.8)	3.36 (0.05)
	छात्रा	2 (1.03)	6 (3.1)	31 (16.1)	14 (7.2)	42 (21.8)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.27 : प्रश्न संख्या 4 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

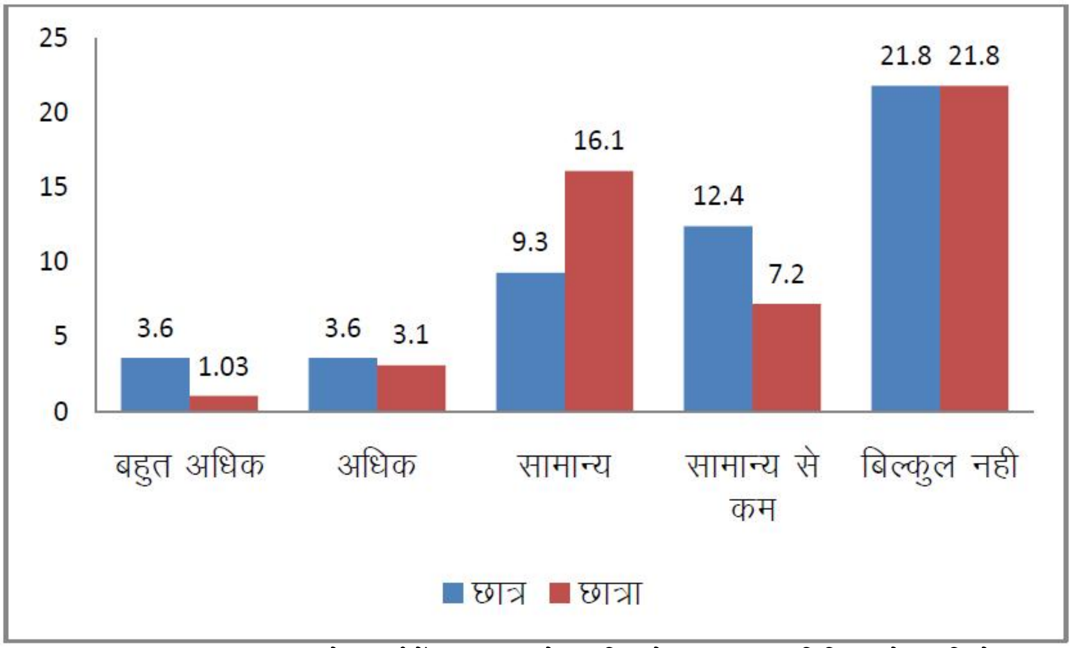

ग्राफ सं0 4.26 : प्रश्न संख्या 5 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

लिंग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल 50.8 प्रतिशत छात्रों में से 3.6 प्रतिशत छात्रो ने बहुत अधिक, 3.6 प्रतिशत छात्रों ने अधिक, 9.3 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य, 12.4 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य से कम तथा 21.8 प्रतिशत छात्रों ने बिल्कुल नही मे उत्तर दिया है अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्रों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर शिक्षा पर आधारित नये कार्यक्रमों का प्रसारण बहुत कम होता है। इसी प्रकार कुल 49.2 प्रतिशत छात्राओं में से 1.03 प्रतिशत छात्राओं ने बहुत अधिक, 3.1 प्रतिशत छात्राओं ने अधिक, 16.1 प्रतिशत छात्राओ नें सामान्य, 7.2 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य से कम तथा 21.8 प्रतिशत छात्राओं ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्राओं के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर शिक्षा पर आधारित नये कार्यक्रमों का प्रसारण बहुत कम होता है।

साख्यकीय विश्लेषण से काई वर्ग का मान 3.14 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं में सामुदायिक रेडियो पर शिक्षा पर आधारित नये कार्यक्रमों के प्रसारण के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शैक्षिक योग्यता के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	4 (2.1)	7 (3.6)	21 (11.9)	18 (9.3)	44 (22.8)	94 (48.7)	1.56 (0.05)
	परास्नातक	5 (2.6)	6 (3.1)	28 (14.5)	20 (10.4)	40 (20.8)	99 (51.3)	

तालिका सं0 4.28 : प्रश्न संख्या 5 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

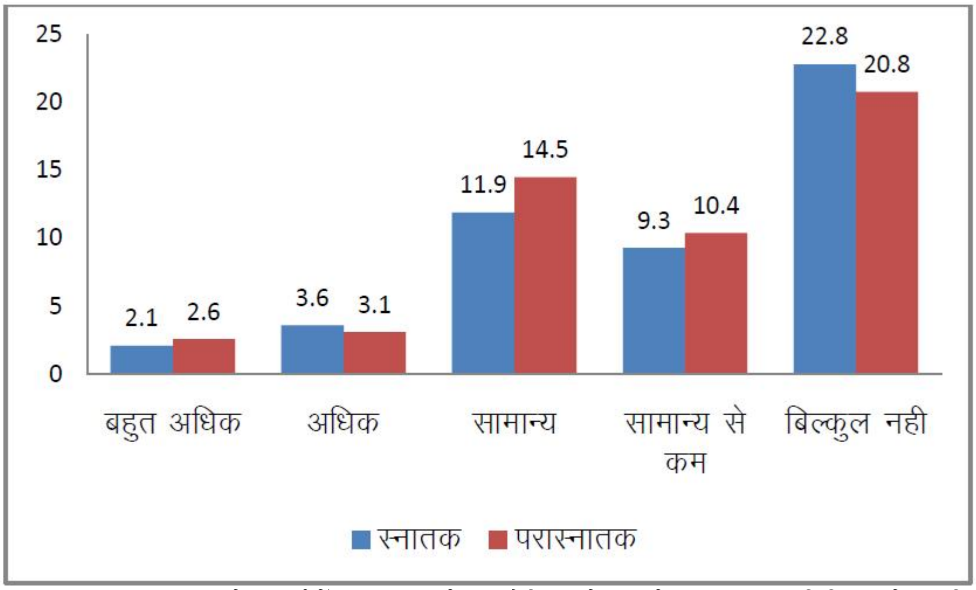

ग्राफ सं0 4.27 : प्रश्न संख्या 4 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

शैक्षिक योग्यता के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 48.7 प्रतिशत स्नातक विद्यार्थियों में से 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बहुत अधिक, 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 10.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 9.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 22.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि स्नातक वर्ग के अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार शिक्षा पर आधारित नये कार्यक्रमों का प्रसारण बहुत कम होता है। इसी प्रकार कुल 51.3 प्रतिशत परास्नातक विद्यार्थियो में से 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों में से बहुत अधिक, 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियो ने अधिक, 14.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 10.4 प्रतिशत विद्यार्थियों सामान्य से कम तथा 20.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि परास्नातक वर्ग के विद्यार्थीयों के अनुसार शिक्षा पर आधारित नये कार्यक्रमों का प्रसारण बहुत कम मात्रा में किया जाता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 1.56 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् शिक्षा पर आधारित नये कार्यक्रमों का प्रसारण के सम्बन्ध में स्नातक एवं परास्नातक वर्ग के विद्यार्थियों में कोई अंतर नही है।

विषय वर्ग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
विषय वर्ग	कला	6 (3.1)	8 (4.1)	20 (10.4)	21 (10.9)	43 (22.3)	98 (50.8)	2.27 (0.05)
	विज्ञान	3 (1.6)	5 (2.6)	29 (15.0)	17 (8.8)	41 (21.3)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.29 : प्रश्न संख्या 5 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

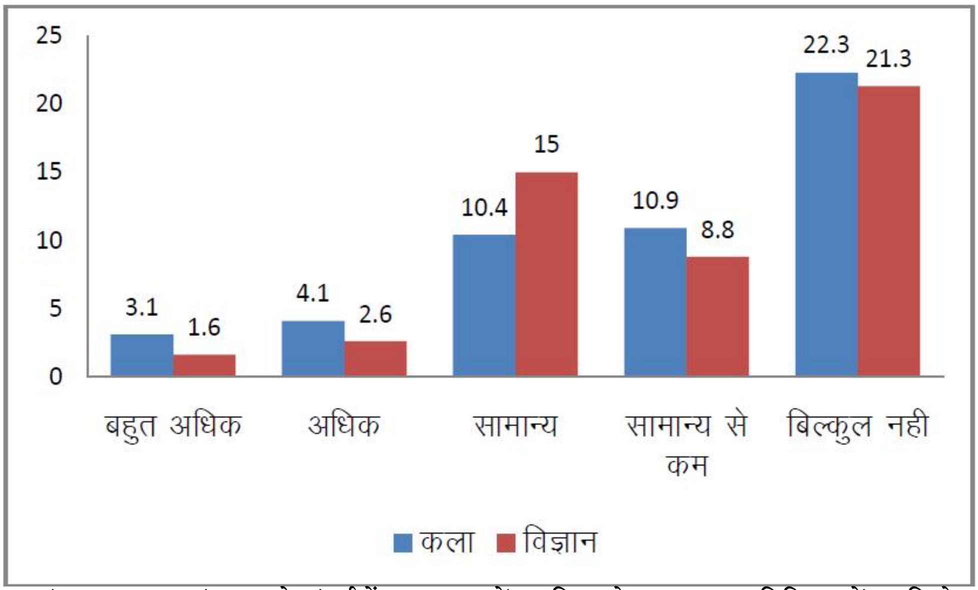

ग्राफ सं0 4.28 : प्रश्न संख्या 4 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

विषय वर्ग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कला विषय के कुल 50.8 प्रतिशत में से 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 10.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 10.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 22.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नही में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि कला विषय वर्ग के अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार शिक्षा पर आधारित नये कार्यक्रमों का प्रसारण बहुत कम होता है। इसी प्रकार विज्ञान विषय वर्ग के कुल 49.2 प्रतिशत में से 1.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 2.6 विद्यार्थियों ने अधिक, 15.0 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 8.8 विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 21.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि विज्ञान विषय वर्ग के विद्यार्थियों के अनुसार शिक्षा पर आधारित नये कार्यक्रमों का प्रसारण बहुत कम होता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.27 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् कला एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के अनुसार शिक्षा पर आधारित नये कार्यक्रमों के प्रसारण के सम्बन्ध में कोई अन्तर नही है।

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	3 (1.6)	3 (1.6)	8 (4.1)	7 (3.6)	34 (17.6)	55 (28.5)	3.36 (0.05)
	शहरी	6 (3.1)	10 (5.2)	41 (21.3)	31 (16.1)	50 (25.9)	138 (71.5)	

तालिका सं0 4.30 : प्रश्न संख्या 5 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

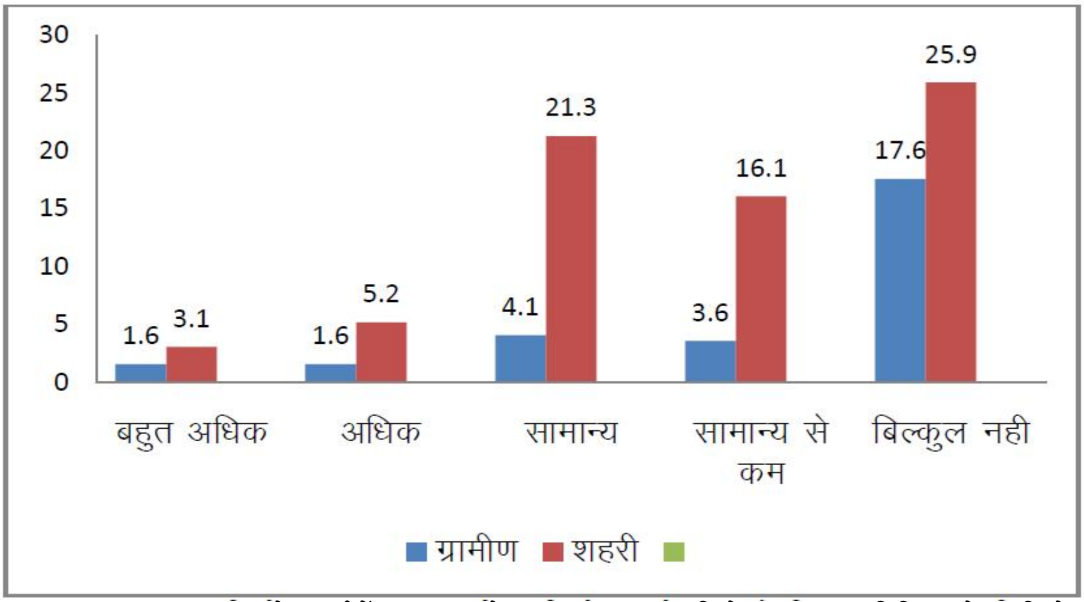

ग्राफ सं0 4.29 : प्रश्न संख्या 5 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 28.5 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों में से 1.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 1.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 17.6 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण विद्यार्थी यह मानते है कि सामुदायिक रेडियो पर शिक्षा पर आधारित नये कार्यक्रमों का प्रसारण बहुत कम होता है।

इसी प्रकार कुल 71.5 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों में से 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 21.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 16.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 25.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर शहरी विद्यार्थी यह मानते है कि सामुदायिक रेडियो पर शिक्षा पर आधारित नये कार्यक्रमों का प्रसारण बहुत कम होता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 3.36 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियो में सामुदायिक रेडियो पर शिक्षा पर आधारित नये कार्यक्रमों के प्रसारण के सम्बन्ध में कोई सार्थक अंतर नही है।

प्रश्न -6 क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रतिदिन शिक्षा आधारित लाइव फोन इन कार्यक्रम प्रसारित किए जाते है ?

प्रस्तुत प्रश्न के संदर्भ में विद्यार्थियों द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नांकित तालिका एवं ग्राफ के अनुसार प्रस्तुत है।

चर	**श्रेणी**	**प्रत्युत्तर**					**योग**	**कुलयोग**
		बहुत अधिक	**अधिक**	**सामान्य**	**सामान्य से कम**	**बिल्कुल नही**		
लिंग	छात्र	6	6	12	23	51	98	193
	छात्रा	1	5	25	13	51	95	
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	3	6	15	17	53	94	193
	परास्नातक	4	5	22	19	49	99	
विषय वर्ग	कला	5	7	14	20	52	98	193
	विज्ञान	2	4	23	16	56	95	
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	2	2	2	6	43	55	193
	शहरी	5	9	35	30	59	138	
आवृत्ति		7	11	37	36	102	193	193
प्रतिशत		3.6	5.7	19.2	18.7	52.8	100	100

तालिका सं0 4.31: प्रश्न संख्या 6 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

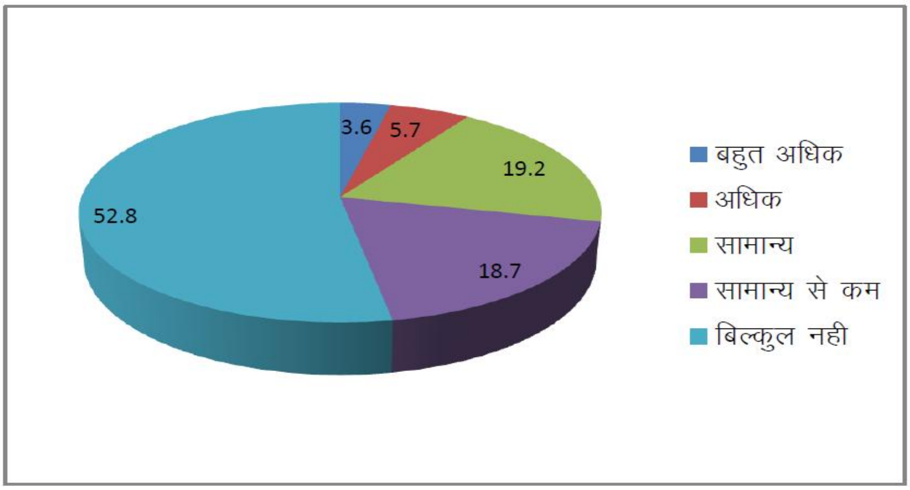

ग्राफ सं0 4.30: प्रश्न संख्या 6 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रश्न में उत्तरदाताओं की कुल संख्या के 3.6 प्रतिशत ने बहुत अधिक, 5.7 प्रतिशत ने अधिक, 19.2 प्रतिशत ने सामान्य, 18.7 प्रतिशत ने सामान्य से कम तथा 52.8 प्रतिशत ने बिल्कुल नहीं पर अपना मत व्यस्त किया है। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि सामुदायिक रेडियो पर प्रतिदिन लाइव फोन इन कार्यक्रम का प्रसारण बहुत कम होता है।

लिंग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	6 (3.1)	6 (3.1)	12 (6.2)	23 (11.9)	51 (26.5)	98 (50.8)	1.84 (0.05)
	छात्रा	1 (0.56)	5 (2.6)	25 (12.9)	13 (6.7)	51 (26.4)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.32 : प्रश्न संख्या 6 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

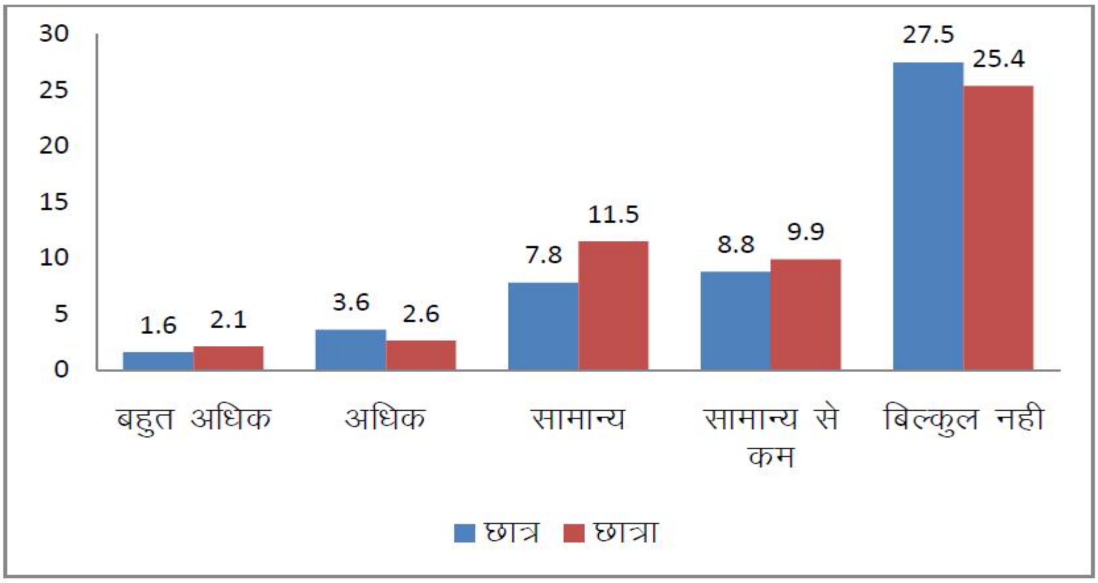

ग्राफ सं0 4.31 : प्रश्न संख्या 6 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

लिंग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल 50.8 प्रतिशत छात्रों में से 3.1 प्रतिशत छात्रो ने बहुत अधिक, 3.1 प्रतिशत छात्रों ने अधिक, 6.2 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य, 11.9 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य से कम तथा 26.4 प्रतिशत छात्रों ने बिल्कुल नही मे उत्तर दिया है अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्रों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रतिदिन लाइव फोन इन कार्यक्रम का प्रसारण बहुत कम होता है। इसी प्रकार कुल 49.2 प्रतिशत छात्राओं में से 0.5 प्रतिशत छात्राओं ने बहुत अधिक, 2.6 प्रतिशत छात्राओं ने अधिक, 12.9 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य, 6.7 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य से कम तथा 26.4 प्रतिशत छात्राओं ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्राओं के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर लाइव फोन इन कार्यक्रम का प्रसारण बहुत कम होता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 1.84 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं में सामुदायिक रेडियो पर प्रतिदिन लाइव फोन इन कार्यक्रम के प्रसारण के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शैक्षिक योग्यता के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	3 (1.6)	6 (3.6)	15 (7.8)	17 (8.8)	53 (27.5)	94 (48.7)	3.28 (0.05)
	परास्नातक	4 (2.1)	5 (2.6)	22 (11.5)	19 (9.9)	49 (25.4)	99 (51.3)	

तालिका सं0 4.33 : प्रश्न संख्या 6 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

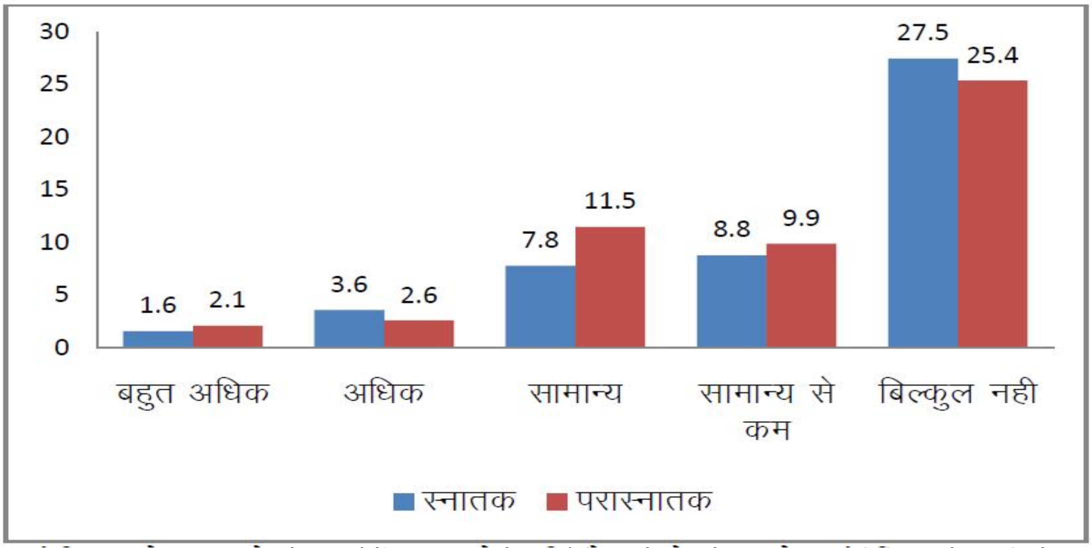

ग्राफ सं0 4.32 : प्रश्न संख्या 6 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

शैक्षिक योग्यता के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 48.7 प्रतिशत स्नातक विद्यार्थियों मे से 1.6 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बहुत अधिक, 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 7.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 8.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 27.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि स्नातक वर्ग के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रतिदिन लाइव फोन इन कार्यक्रम का प्रसारण बहुत कम होता है। इसी प्रकार कुल 51.3 प्रतिशत परास्नातक विद्यार्थियों में से 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियो ने अधिक, 11.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 9.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 25.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि परास्नातक वर्ग के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रतिदिन लाइव फोन इन कार्यक्रम का प्रसारण बहुत कम होता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 3.28 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् स्नातक वर्ग के एंव परास्नातक वर्ग के विद्यार्थियो में लाइव फोन इन कार्यक्रमों के प्रसारण के सम्बन्ध में कोई सार्थक अंतर नही है।

विषय वर्ग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
विषय वर्ग	कला	5 (2.5)	7 (3.6)	14 (7.2)	20 (10.4)	52 (26.9)	98 (50.8)	2.14 (0.05)
	विज्ञान	2 (1.03)	4 (2.1)	23 (11.9)	16 (8.3)	56 (25.9)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.34 : प्रश्न संख्या 6 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

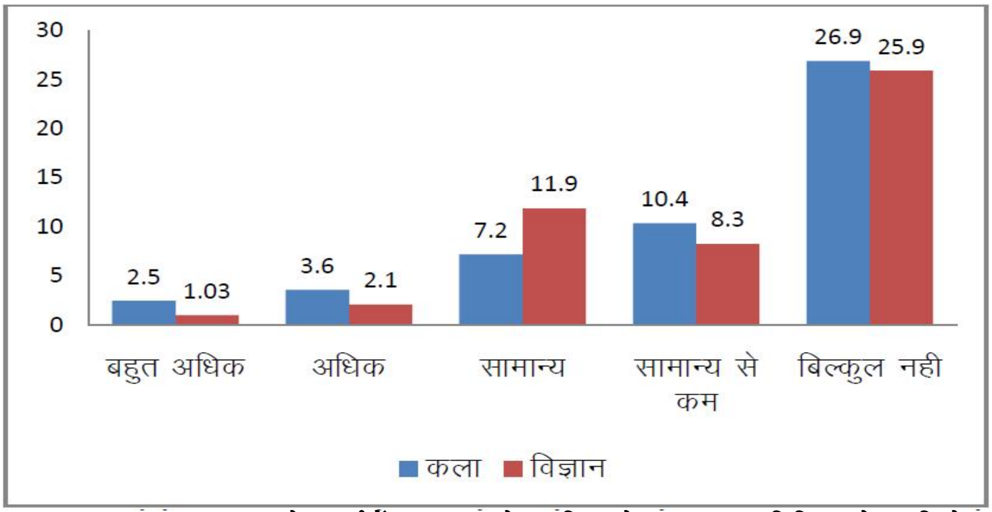

ग्राफ सं0 4.33 : प्रश्न संख्या 6 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

विषय वर्ग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कला विषय के कुल 50.8 प्रतिशत में से 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 7.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 10.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 26.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नही में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि कला विषय वर्ग के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रतिदिन लाइव फोन इन कार्यक्रम का प्रसारण बहुत कम होता है। इसी प्रकार विज्ञान विषय वर्ग के कुल 49.2 प्रतिशत में से 1.03 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 2.1 विद्यार्थियों नें अधिक, 11.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 8.3 विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 25.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि विज्ञान विषय वर्ग के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रतिदिन लाइव फोन इन कार्यक्रम का प्रसारण बहुत कम होता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.14 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् कला एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में सामुदायिक रेडियो पर प्रतिदिन लाइव फोन इन कार्यक्रमों के प्रसारण के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	2 (1.03)	2 (1.03)	2 (1.03)	6 (3.1)	43 (22.3)	55 (28.5)	3.64 (0.05)
	शहरी	5 (2.6)	9 (4.7)	35 (18.2)	30 (15.5)	59 (30.6)	138 (71.5)	

तालिका सं0 4.35 : प्रश्न संख्या 6 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

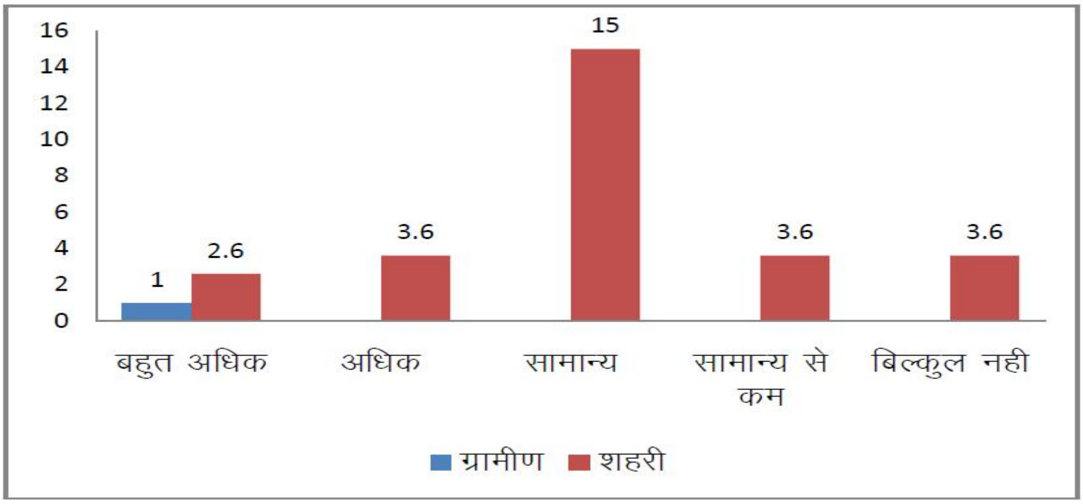

ग्राफ सं0 4.34 : प्रश्न संख्या 6 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 28.5 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों मे से 1.03 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 1.03 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 1.03 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 22.3 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर लाइव फोन इन कार्यक्रम का प्रसारण बहुत कम होता है। इसी प्रकार कुल 71.5 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों में से 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 18.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 15.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 30.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर नही दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर लाइव फोन इन कार्यक्रम का प्रसारण बहुत कम होता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 3.64 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियो में सामुदायिक रेडियो पर प्रतिदिन लाइव फोन इन कार्यक्रमों के प्रसारण के सम्बन्ध में कोई सार्थक अंतर नही है।

प्रश्न -7 क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित कार्यक्रमों की प्रतिपुष्टि (फीडबैक) से आपको संतुष्टि प्राप्त होती है?

प्रस्तुत प्रश्न के संदर्भ में विद्यार्थियों द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नांकित तालिका एवं ग्राफ के अनुसार प्रस्तुत है।

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर					योग	कुल योग
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	14	24	60	0	0	98	193
	छात्रा	7	12	48	16	12	95	
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	11	15	52	9	7	94	193
	परास्नातक	10	21	56	7	5	99	
विषय वर्ग	कला	12	22	58	3	3	98	193
	विज्ञान	9	14	50	13	9	95	
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	5	7	29	7	7	55	193
	शहरी	16	29	79	9	5	138	
आवृत्ति		21	36	108	16	12	193	193
प्रतिशत		10.7	18.7	55.9	8.3	6.2	100	100

तालिका सं0 4.36: प्रश्न संख्या 7 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

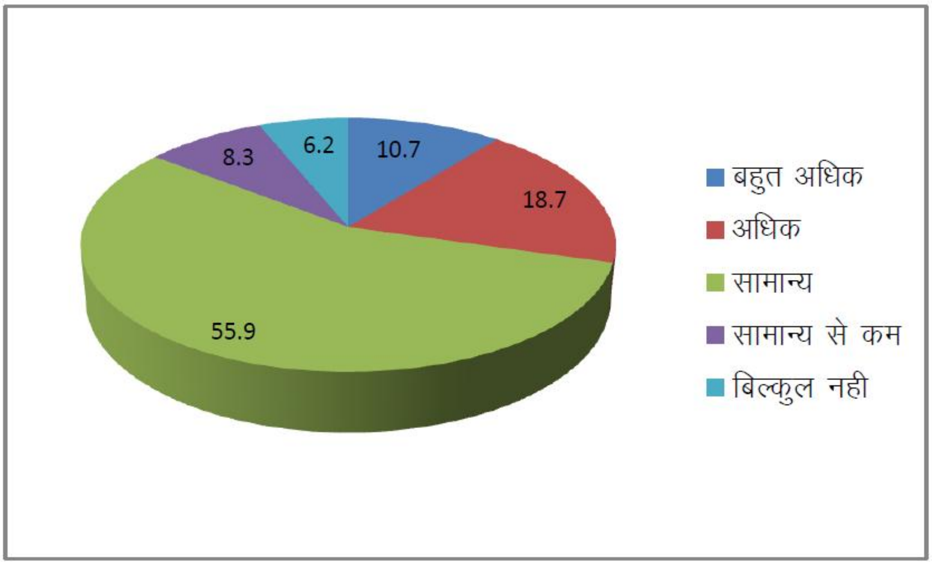

ग्राफ सं0 4.35: प्रश्न संख्या 7 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रश्न में उत्तरदाताओं की कुल संख्या के 10.7 प्रतिशत ने बहुत अधिक, 18.7 प्रतिशत ने अधिक, 55.9 प्रतिशत ने सामान्य, 8.3 प्रतिशत ने सामान्य से कम तथा 6.2 प्रतिशत ने बिल्कुल नहीं पर अपना मत व्यक्त किया है। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि सामुदायिक रेडियो पर प्रस्तुत कार्यक्रमों की प्रतिपुष्टि से अधिकांश विद्यार्थियों को संतुष्टि प्राप्त होती है।

लिंग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	14 (7.2)	24 (12.4)	60 (31.1)	0 (0.0)	0 (0.0)	98 (50.8)	2.35 (0.05)
	छात्रा	7 (3.6)	12 (6.2)	48 (24.9)	16 (8.3)	12 (6.2)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.37 : प्रश्न संख्या 7 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

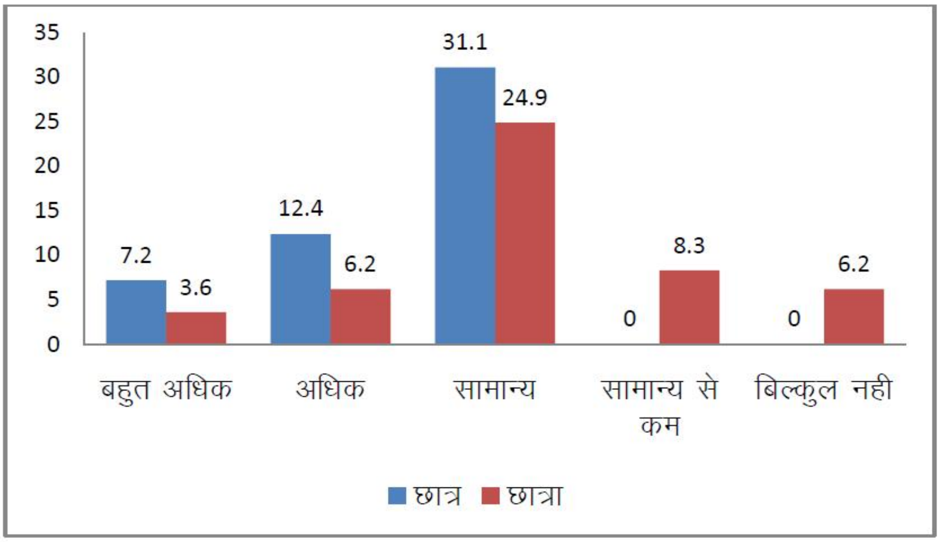

ग्राफ सं0 4.36 : प्रश्न संख्या 7 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

लिंग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल 50.8 प्रतिशत छात्रों में से 7.2 प्रतिशत छात्रो ने बहुत अधिक, 12.4 प्रतिशत छात्रों ने अधिक, 31.1 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य, 0 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य से कम तथा 0 प्रतिशत छात्रों ने बिल्कुल नही मे उत्तर दिया है अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्रों को सामुदायिक रेडियो पर प्रस्तुत कार्यक्रमों की प्रतिपुष्टि से संतुष्टि प्राप्त होती है। इसी प्रकार कुल 49.2 प्रतिशत छात्राओं में से 3.6 प्रतिशत छात्राओं ने बहुत अधिक, 6.2 प्रतिशत छात्राओं ने अधिक, 24.9 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य, 0 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य से कम तथा 0 प्रतिशत छात्राओं ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकांश छात्राओं को सामुदायिक रेडियो पर प्रस्तुत कार्यक्रमों की प्रतिपुष्टि से संतुष्टि प्राप्त होती है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.34 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं में सामुदायिक रेडियो पर प्रस्तुत कार्यक्रमों की प्रतिपुष्टि से संतुष्टि के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शैक्षिक योग्यता के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	11 (5.7)	15 (7.8)	52 (26.9)	9 (4.7)	7 (3.6)	94 (48.7)	2.14 (0.05)
	परास्नातक	10 (5.2)	21 (10.9)	56 (29.0)	7 (3.6)	5 (2.6)	99 (51.3)	

तालिका सं0 4.38 : प्रश्न संख्या 7 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

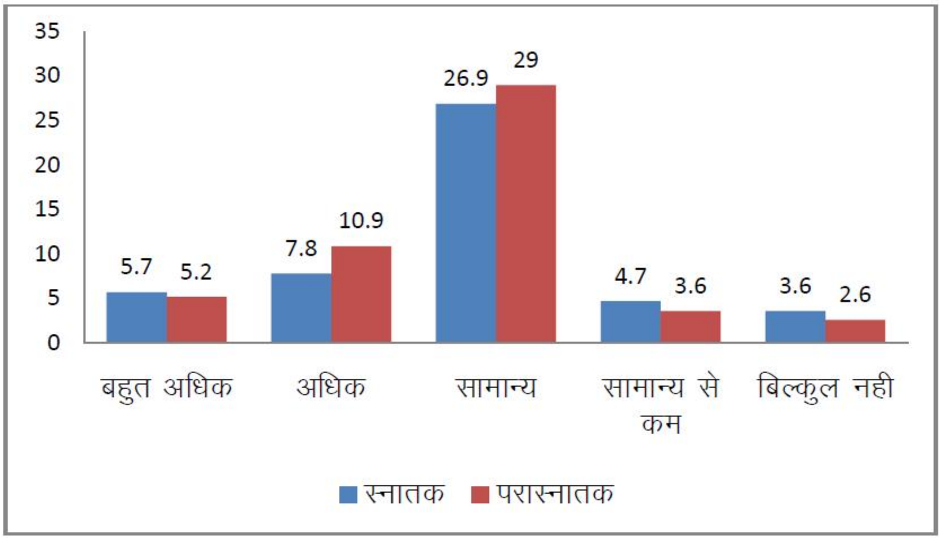

ग्राफ सं0 4.37 : प्रश्न संख्या 7 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

शैक्षिक योग्यता के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 48.7 प्रतिशत स्नातक विद्यार्थियों मे से 5.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 7.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 26.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि स्नातक वर्ग के अधिकांश विद्यार्थीयों को सामुदायिक रेडियो पर प्रस्तुत कार्यक्रमों की प्रतिपुष्टि से संतुष्टि प्राप्त होती है। इसी प्रकार कुल 51.3 प्रतिशत परास्नातक विद्यार्थियों में से 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों में बहुत अधिक, 10.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 29 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि परास्नातक वर्ग के अधिकतर विद्यार्थियों को सामुदायिक रेडियो पर प्रस्तुत कार्यक्रमों की प्रतिपुष्टि से संतुष्टि प्राप्त होती है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.14 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् स्नातक एंव परास्नातक वर्ग के विद्यार्थियों में सामुदायिक रेडियो पर प्रस्तुत कार्यक्रमों की प्रतिपुष्टि से प्राप्त संतुष्टि के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

विषय वर्ग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
विषय वर्ग	कला	12 (6.2)	22 (11.4)	58 (30.1)	3 (1.6)	3 (1.6)	98 (50.8)	1.98 (0.05)
	विज्ञान	9 (4.7)	14 (7.2)	50 (25.9)	13 (6.7)	9 (4.7)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.39 : प्रश्न संख्या 7 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

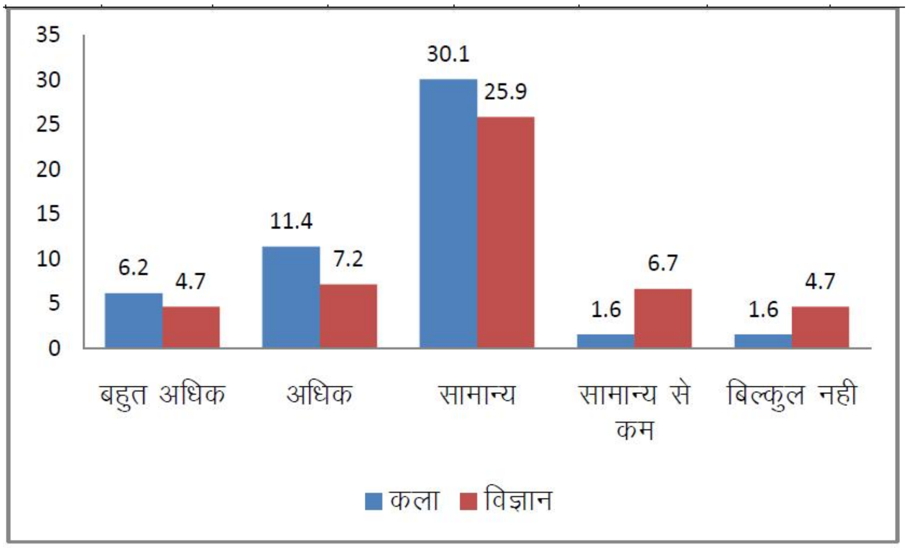

ग्राफ सं0 4.38 : प्रश्न संख्या 7 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

विषय वर्ग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कला विषय वर्ग के कुल 50.8 प्रतिशत विद्यार्थियों में से 6.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 11.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 30.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 1.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 1.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नही में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि कला विषय वर्ग के अधिकंश विद्यार्थियों को सामुदायिक रेडियो पर प्रस्तुत कार्यक्रमों की प्रतिपुष्टि से संतुष्टि प्राप्त होती है। इसी प्रकार विज्ञान विषय वर्ग के कुल 49.2 प्रतिशत विद्यार्थियों में से 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 7.2 विद्यार्थियों ने अधिक, 25.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 6.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि विज्ञान विषय वर्ग के अधिकांश विद्यार्थियों को सामुदायिक रेडियो पर प्रस्तुत कार्यक्रमों की प्रतिपुष्टि से संतुष्टि प्राप्त होती है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 1.98 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् कला एंव विज्ञान विषय वर्ग के विद्यार्थियों में सामुदायिक रेडियो पर प्रस्तुत कार्यक्रमों की प्रतिपुष्टि से संतुष्टि के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	5 (2.6)	7 (3.6)	29 (15.0)	7 (3.6)	7 (3.6)	55 (28.5)	5.42 (0.05)
	शहरी	16 (8.3)	29 (15.0)	79 (40.9)	9 (4.7)	5 (2.6)	138 (71.5)	

तालिका सं0 4.40 : प्रश्न संख्या 7 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

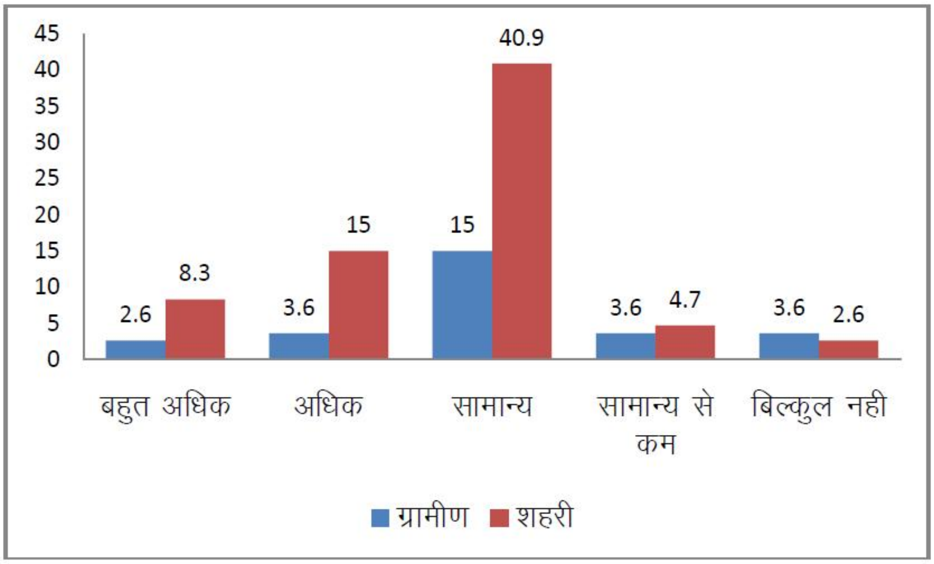

ग्राफ सं0 4.39 : प्रश्न संख्या 7 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 28.5 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों मे से 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 15.0 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण पृष्ठभूमि के अधिकतर विद्यार्थियों को सामुदायिक रेडियो पर प्रस्तुत कार्यक्रमों की प्रतिपुष्टि से संतुष्टि प्राप्त होती है। इसी प्रकार कुल 71.5 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों में से 8.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 15.0 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 40.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियो ने सामान्य से कम तथा 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर नही दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकांश शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों को सामुदायिक रेडियो पर प्रस्तुत कार्यक्रमों की प्रतिपुष्टि से संतुष्टि प्राप्त होती है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 5.42 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियो में सामुदायिक रेडियो पर प्रस्तुत कार्यक्रमों की प्रतिपुष्टि से संतुष्टि के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

प्रश्न-8 क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर सेवा देने के लिए आपको प्रमाण पत्र/ प्रोत्साहन राशि दिया जाता है?

प्रस्तुत प्रश्न के संदर्भ में विद्यार्थियों द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नांकित तालिका एवं ग्राफ के अनुसार प्रस्तुत है।

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर					योग	कुल योग
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	5	4	6	13	70	98	193
	छात्रा	0	3	15	4	73	95	
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	2	4	9	7	72	94	193
	परास्नातक	3	3	12	10	71	99	
विषय वर्ग	कला	4	5	8	10	71	98	193
	विज्ञान	1	2	13	7	72	95	
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	1	0	1	4	49	55	193
	शहरी	4	7	20	13	94	138	
आवृत्ति		5	7	21	17	143	193	193
प्रतिशत		2.6	3.6	10.9	8.8	74.1	100	100

तालिका सं0 4.41: प्रश्न संख्या 8 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

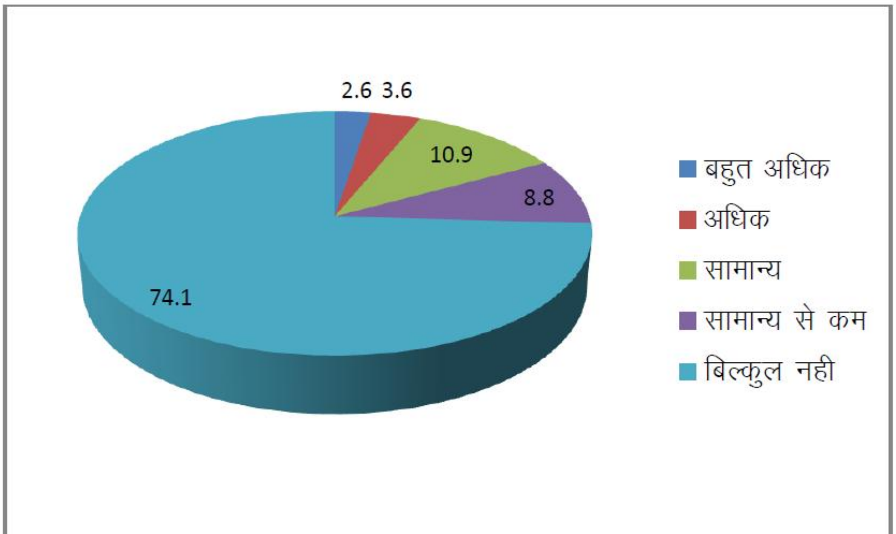

ग्राफ सं0 4.40: प्रश्न संख्या 8 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रश्न में उत्तरदाताओं की कुल संख्या के 2.6 प्रतिशत ने बहुत अधिक, 3.6 प्रतिशत ने अधिक, 10.9 प्रतिशत ने सामान्य, 8.8 प्रतिशत ने सामान्य से कम तथा 74.1 प्रतिशत ने बिल्कुल नहीं पर अपना मत व्यस्त किया है। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि सामुदायिक रेडियो पर सेवा देने के लिए अधिकतर विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र या प्रोत्साहन राशि नही दी जाती है।

लिंग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	5 (2.6)	4 (2.1)	6 (3.1)	13 (6.7)	70 (36.3)	98 (50.8)	2.64 (0.05)
	छात्रा	0 (0.0)	3 (1.6)	15 (7.8)	4 (2.1)	73 (37.8)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.42 : प्रश्न संख्या 8 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

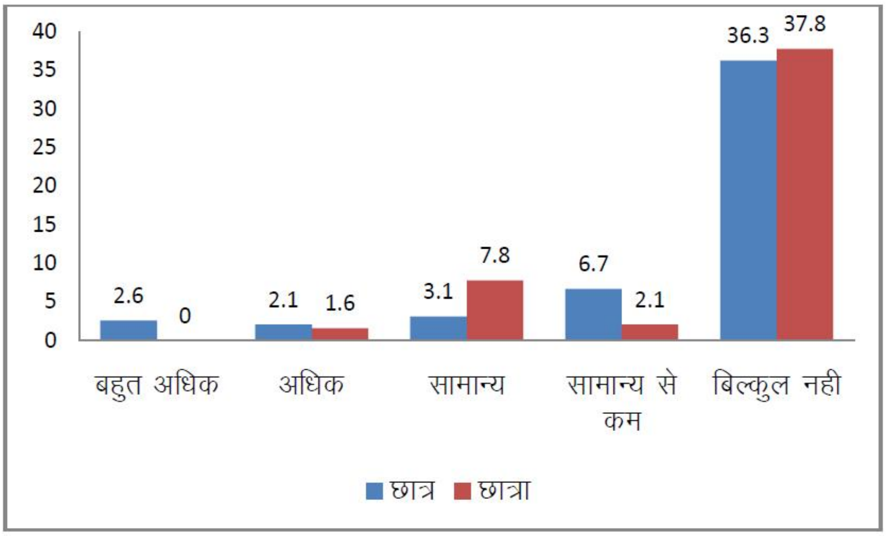

ग्राफ सं0 4.41 : प्रश्न संख्या 8 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

लिंग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल 50.8 प्रतिशत छात्रों में से 2.6 प्रतिशत छात्रो ने बहुत अधिक, 2.1 प्रतिशत छात्रों ने अधिक, 3.1 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य, 6.7 प्रतिशत छात्रो ने सामान्य से कम तथा 36.3 प्रतिशत छात्रों ने बिल्कुल नही मे उत्तर दिया है अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्रों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर सेवा देने के लिए अधिकतर विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र या प्रोत्साहन राशि नही दी जाती है। इसी प्रकार कुल 49.2 प्रतिशत छात्राओं में से 0 प्रतिशत छात्राओं ने बहुत अधिक, 1.6 प्रतिशत छात्राओं ने अधिक, 7.8 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य, 2.1 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य से कम तथा 37.8 प्रतिशत छात्राओं ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर सेवा देने के लिए अधिकतर विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र या प्रोत्साहन राशि नही दी जाती है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.64 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं में सामुदायिक रेडियो पर सेवा देने के लिए प्रमाण पत्र या प्रोत्साहन राशि देने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शैक्षिक योग्यता के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	2 (1.03)	4 (2.1)	9 (4.7)	7 (3.6)	72 (37.8)	94 (48.7)	2.28 (0.05)
	परास्नातक	3 (1.6)	3 (1.6)	12 (6.2)	10 (5.2)	71 (37.3)	99 (51.3)	

तालिका सं0 4.43 : प्रश्न संख्या 8 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

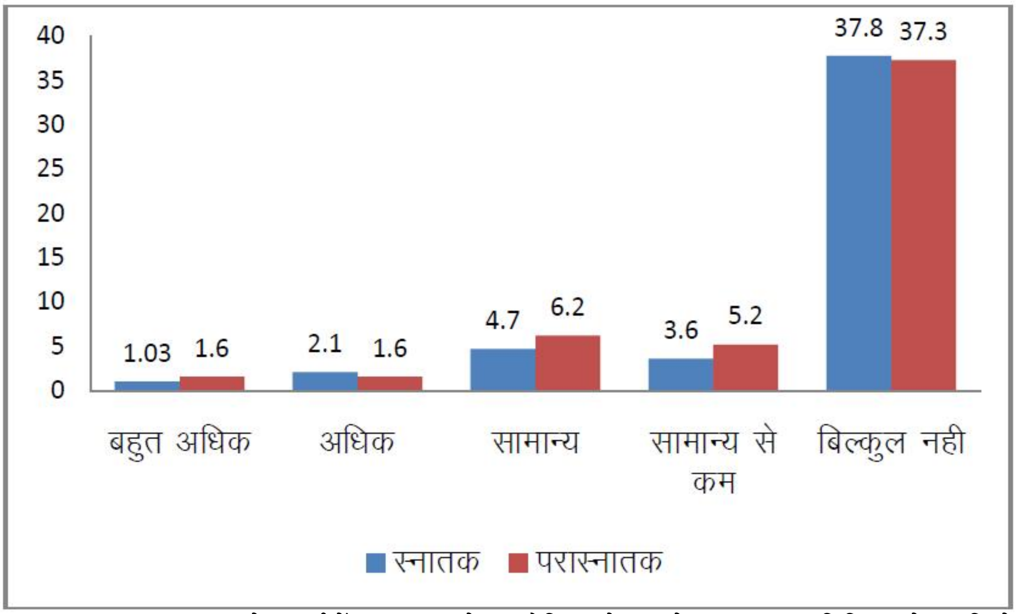

ग्राफ सं0 4.42 : प्रश्न संख्या 8 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

शैक्षिक योग्यता के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 48.7 प्रतिशत स्नातक विद्यार्थियों मे से 1.03 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बहुत अधिक, 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 37.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि स्नातक वर्ग के अधिकतर विद्यार्थियो को सामुदायिक रेडियो पर सेवा देने के लिए प्रमाण पत्र या प्रोत्साहन राशि नही दी जाती है। इसी प्रकार कुल 51.3 प्रतिशत परास्नातक विद्यार्थियो में से 1.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 1.6 प्रतिशत विद्यार्थियो ने अधिक, 6.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 37.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि परास्नातक वर्ग के अधिकतर विद्यार्थियों को सामुदायिक रेडियो पर सेवा देने के लिए प्रमाण पत्र या प्रोत्साहन राशि नही दी जाती है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.28 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् स्नातकएंव परास्नातक वर्ग के विद्यार्थियो को सामुदायिक रेडियो पर सेवा देने के लिए प्रमाण पत्र या प्रोत्साहन राशि देने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

विषय वर्ग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
विषय वर्ग	कला	4 (2.1)	5 (2.6)	8 (4.1)	10 (5.2)	71 (36.8)	98 (50.8)	2.18 (0.05)
	विज्ञान	1 (0.56)	2 (1.03)	13 (6.7)	7 (3.6)	72 (37.3)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.44 : प्रश्न संख्या 8 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

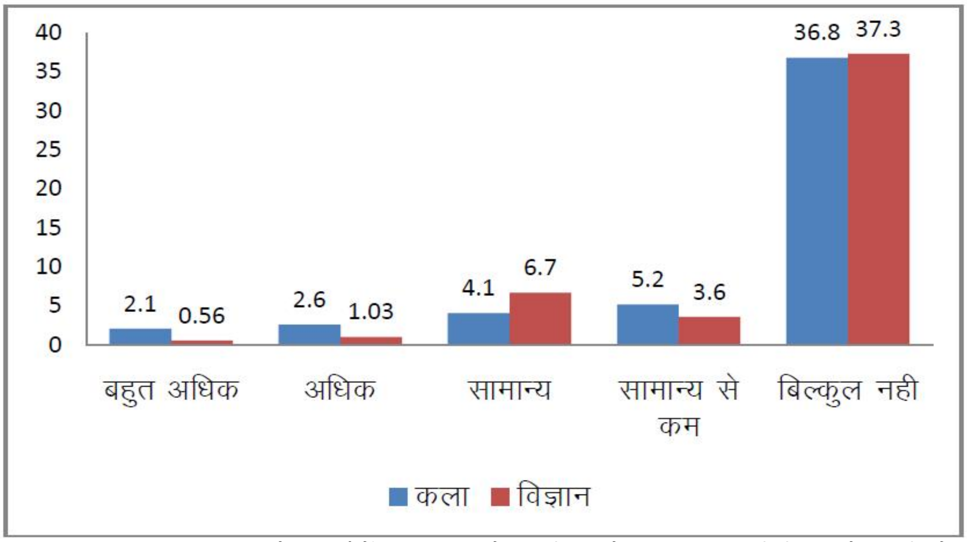

ग्राफ सं0 4.43 : प्रश्न संख्या 8 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

विषय वर्ग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कला विषय के कुल 50.8 प्रतिशत में से 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 36.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नही में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि कला विषय वर्ग के विद्यार्थियों को सामुदायिक रेडियो पर सेवा देने के लिए प्रमाण पत्र या प्रोत्साहन राशि नही दी जाती है। इसी प्रकार विज्ञान विषय वर्ग के कुल 49.2 प्रतिशत में से 0.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 1.03 विद्यार्थियों ने अधिक, 6.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 3.6 विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 37.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि विज्ञान विषय वर्ग के अधिकतर विद्यार्थियों को सामुदायिक रेडियो पर सेवा देने के लिए प्रमाण पत्र या प्रोत्साहन राशि नही दी जाती है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.18 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् कला एंव विज्ञान विषय वर्ग के विद्यार्थियों में सामुदायिक रेडियो पर सेवा देने के लिए प्रमाण पत्र या प्रोत्साहन राशि देने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	1 (0.56)	0 (0.0)	1 (0.56)	4 (2.1)	49 (25.4)	55 (28.5)	4.18 (0.05)
	शहरी	4 (2.1)	7 (3.6)	20 (10.4)	13 (6.7)	94 (48.7)	138 (71.5)	

तालिका सं0 4.45 : प्रश्न संख्या 8 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

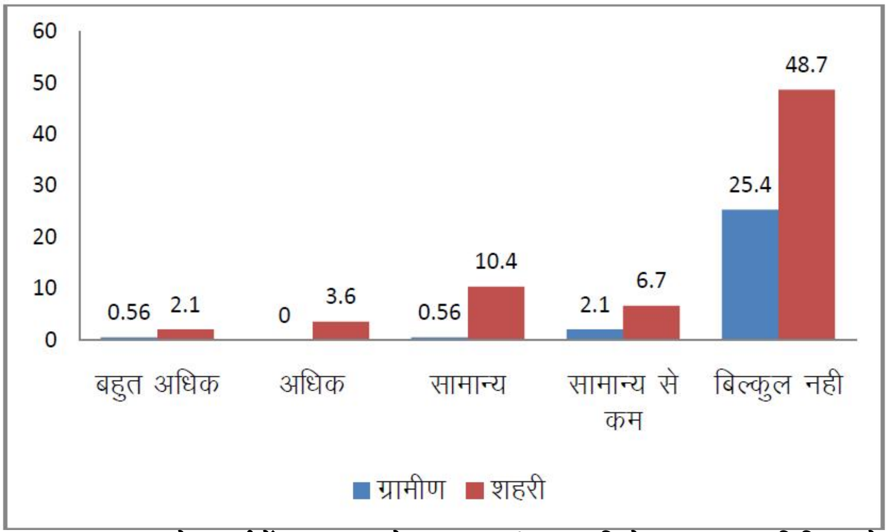

ग्राफ सं0 4.44 : प्रश्न संख्या 8 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 28.5 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों मे से 0.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 0 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 0.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 25.4 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण पृष्ठभूमि के अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर सेवा देने के लिए को प्रमाण पत्र या प्रोत्साहन राशि नही दी जाती है। इसी प्रकार कुल 71.5 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों में से 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 1.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 6.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 48.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि सामुदायिक रेडियो पर सेवा देने के लिए शहरी पृष्ठभूमि के अधिकतर विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र या प्रोत्साहन राशि नही दी जाती है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 4.18 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियो में सामुदायिक रेडियो पर सेवा देने के लिए प्रमाण पत्र या प्रोत्साहन राशि देने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

प्रश्न -9 क्या आप अपने सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों की निरंतरता से संतुष्ट है?

प्रस्तुत प्रश्न के संदर्भ मं विद्यार्थियां द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नांकित तालिका एवं ग्राफ के अनुसार प्रस्तुत है-

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर					योग	कुल योग
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	18	31	38	7	4	98	193
	छात्रा	11	19	26	23	16	95	
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	15	22	30	16	11	94	193
	परास्नातक	14	28	34	14	9	99	
विषय वर्ग	कला	16	29	36	10	7	98	193
	विज्ञान	13	21	28	20	13	95	
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	8	11	15	11	10	55	193
	शहरी	21	39	49	19	10	138	
आवृत्ति		29	50	64	30	20	193	193
प्रतिशत		15.0	25.9	33.2	15.5	10.4	100	100

तालिका सं0 4.46: प्रश्न संख्या 9 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

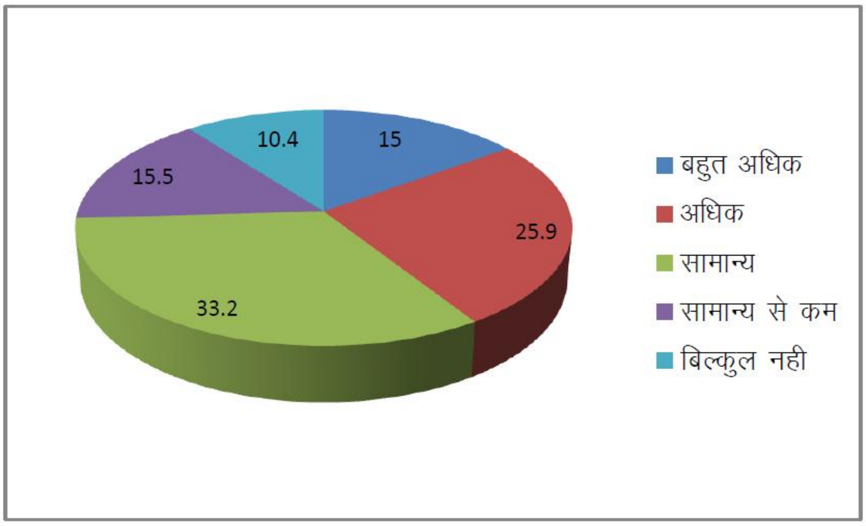

ग्राफ सं0 4.45: प्रश्न संख्या 9 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रश्न में उत्तरदाताओं की कुल संख्या के 15.0 प्रतिशत ने बहुत अधिक, 25.9 प्रतिशत ने अधिक, 33.2 प्रतिशत ने सामान्य, 15.5 प्रतिशत ने सामान्य से कम तथा 10.4 प्रतिशत ने बिल्कुल नहीं पर अपना मत व्यस्त किया है। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की निरंतरता से विद्यार्थी पर्याप्त संतुष्ट हैं।

लिंग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	18 (9.3)	31 (16.1)	38 (19.7)	7 (3.6)	4 (2.1)	98 (50.8)	2.08 (0.05)
	छात्रा	11 (5.7)	19 (9.9)	26 (13.5)	23 (11.9)	16 (8.3)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.47 : प्रश्न संख्या 9 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

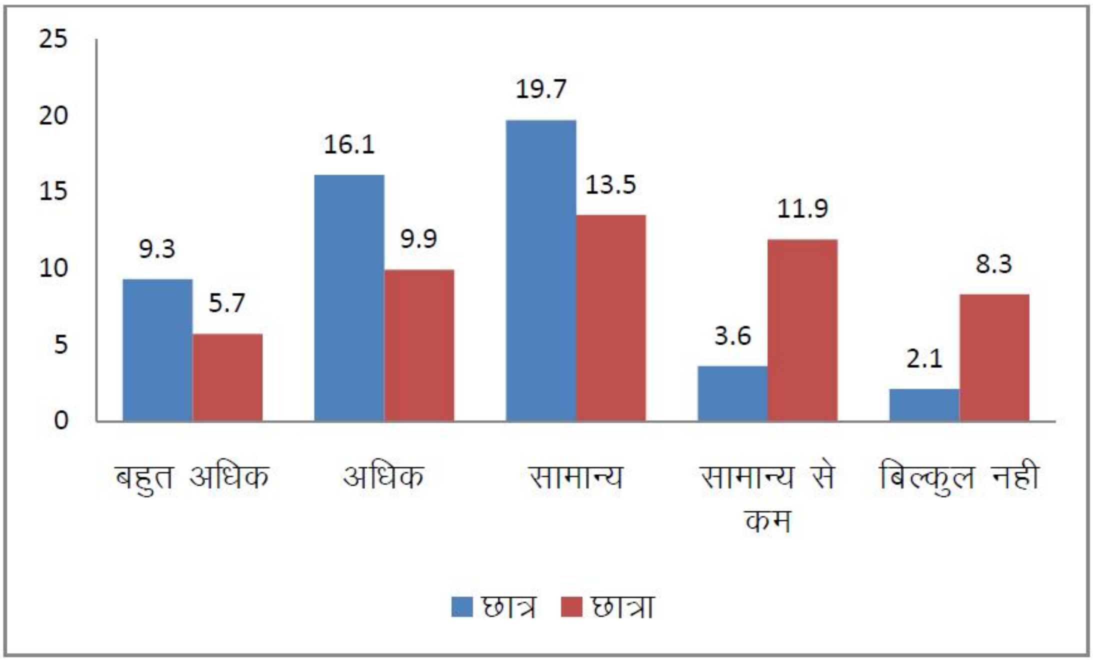

ग्राफ सं0 4.46 : प्रश्न संख्या 9 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

लिंग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल 50.8 प्रतिशत छात्रों में से 9.3 प्रतिशत छात्रो ने बहुत अधिक, 16.1 प्रतिशत छात्रों ने अधिक, 19.7 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य, 3.6 प्रतिशत छात्रो ने सामान्य से कम तथा 2.1 प्रतिशत छात्रों ने बिल्कुल नही मे उत्तर दिया है अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्र सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की निरंतरता से पर्याप्त संतुष्ट है। इसी प्रकार कुल 49.2 प्रतिशत छात्राओं में से 5.7 प्रतिशत छात्राओं ने बहुत अधिक, 9.9 प्रतिशत छात्राओं ने अधिक, 13.5 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य, 11.9 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य से कम तथा 8.3 प्रतिशत छात्राओं ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्राएं सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की निरंतरता से पर्याप्त संतुष्ट हैं।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.08 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं में कार्यक्रमों की निरंतरता के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शैक्षिक योग्यता के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	15 (7.8)	22 (11.4)	30 (15.5)	16 (8.3)	11 (5.7)	94 (48.7)	1.26 (0.05)
	परास्नातक	14 (7.2)	28 (14.5)	34 (17.6)	14 (7.2)	9 (4.7)	99 (51.3)	

तालिका सं0 4.48 : प्रश्न संख्या 9 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

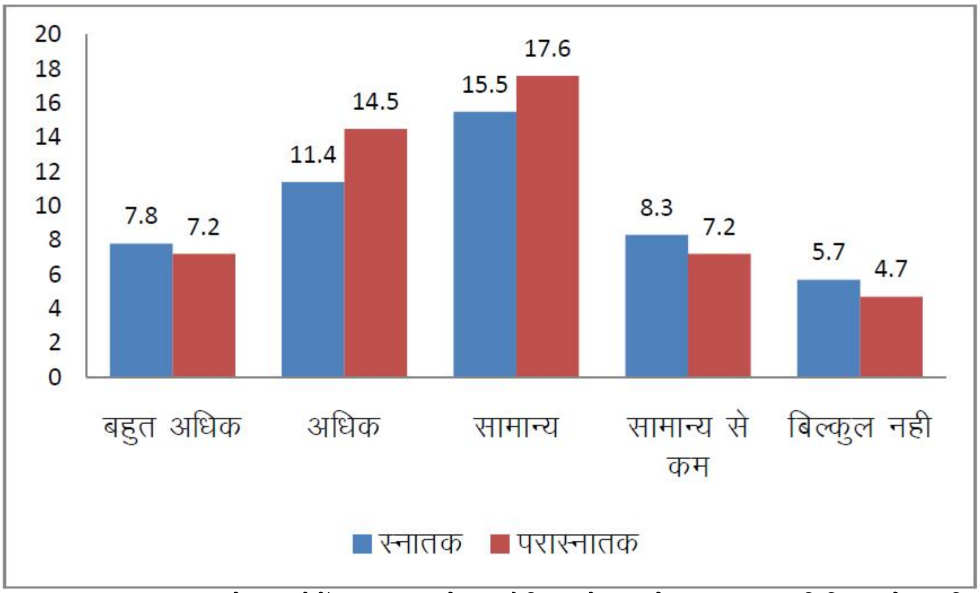

ग्राफ सं0 4.47 : प्रश्न संख्या 9 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

शैक्षिक योग्यता के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 48.7 प्रतिशत स्नातक विद्यार्थियों मे से 7.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 11.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 15.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 8.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 5.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि स्नातक वर्ग के विद्यार्थी सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की निरंतरता से पर्याप्त संतुष्ट हैं। इसी प्रकार कुल 51.3 प्रतिशत परास्नातक विद्यार्थियो में से 7.20 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 14.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 17.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 7.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि परास्नातक वर्ग के विद्यार्थी सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की निरंतरता से पर्याप्त संतुष्ट हैं।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 1.26 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् स्नातक एंव परास्नातक वर्ग के विद्यार्थियों में कार्यक्रमों के प्रसारण की निरंतरता के सम्बन्धमें कोई सार्थक अन्तर नही है।

विषय वर्ग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
विषय वर्ग	कला	16 (8.2)	29 (15.0)	36 (18.7)	10 (5.2)	7 (3.6)	98 (50.8)	1.82 (0.05)
	विज्ञान	13 (6.7)	21 (10.9)	28 (14.5)	20 (10.4)	13 (6.7)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.49 : प्रश्न संख्या 9 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

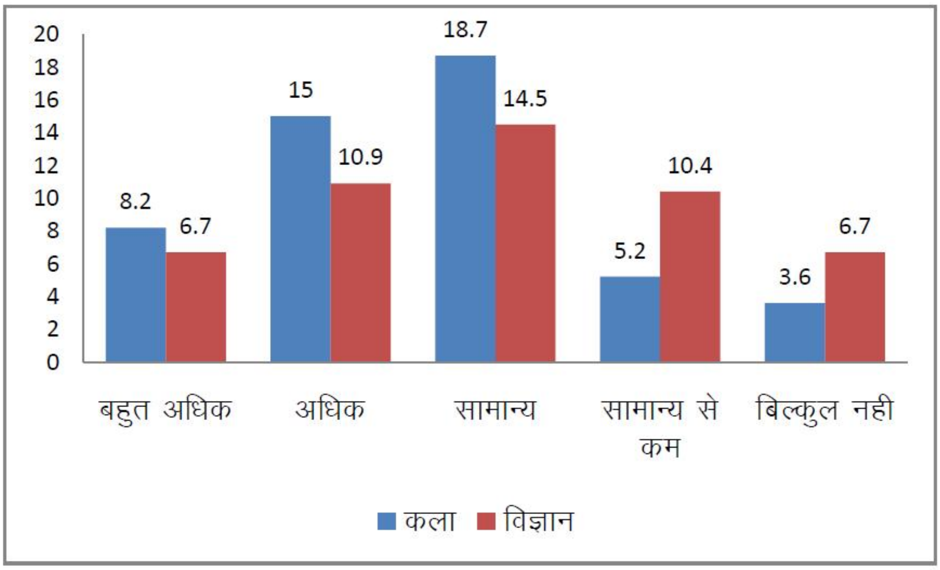

ग्राफ सं0 4.48 : प्रश्न संख्या 9 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

विषय वर्ग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कला विषय के कुल 50.8 प्रतिशत में से 6.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 15.0 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 18.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नही में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि कला वर्ग के विद्यार्थी सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की निरंतरता से पर्याप्त संतुष्ट हैं।इसी प्रकार विज्ञान विषय वर्ग के कुल 49.2 प्रतिशत में से 6.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 10.9 विद्यार्थियों ने अधिक, 14.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 10.4 विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 6.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि विज्ञान विषय वर्ग के विद्यार्थी सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की निरंतरता से पर्याप्त संतुष्ट हैं।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 1.82 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् कला एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की निरंतरता होने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	8 (4.1)	11 (5.7)	15 (7.8)	11 (5.7)	10 (5.2)	55 (28.5)	3.14 (0.05)
	शहरी	21 (10.9)	39 (20.1)	49 (25.4)	19 (7.8)	10 (7.2)	138 (71.5)	

तालिका सं0 4.50 : प्रश्न संख्या 9 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

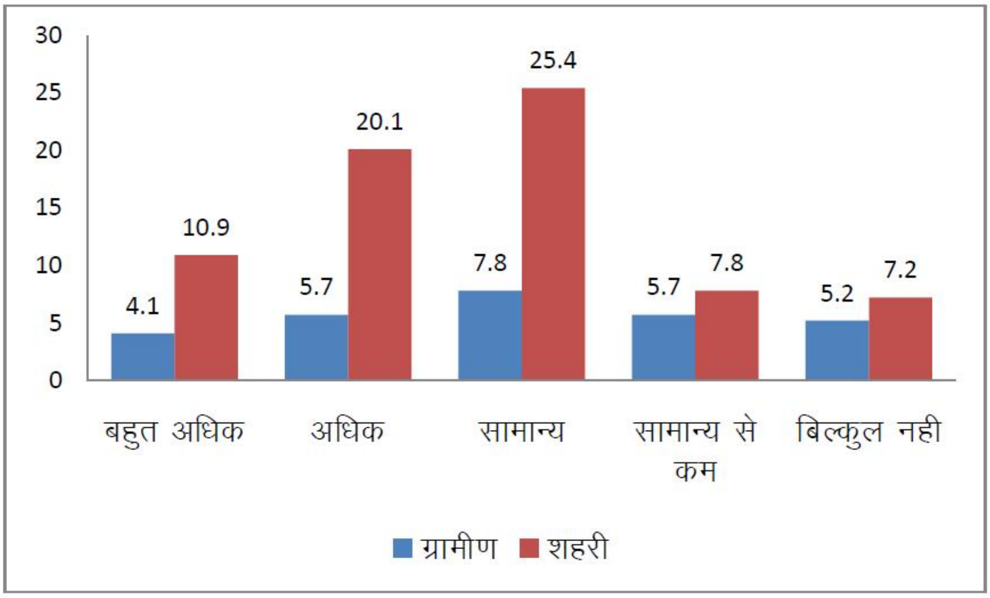

ग्राफ सं0 4.49 : प्रश्न संख्या 9 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 28.5 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों मे से 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 5.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 7.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 5.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थी सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की निरंतरता से पर्याप्त संतुष्ट है। इसी प्रकार कुल 71.5 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों में से 10.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 20.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 25.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 7.8 प्रतिशत विद्यार्थियो ने सामान्य से कम तथा 7.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर नही दिया है। अतः स्पष्ट है कि शहरी पृष्ठभूमि के अधिकांश विद्यार्थी सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की निरंतरता से पर्याप्त संतुष्ट है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 3.14 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियो में कार्यक्रमों के प्रसारण की निरंतरता के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

प्रश्न -10 क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम आपके पाठ्यक्रम से सम्बन्धित होते है?

प्रस्तुत प्रश्न के संदर्भ में विद्यार्थियों द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नांकित तालिका एवं ग्राफ के अनुसार प्रस्तुत है।

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर					योग	कुल योग
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	70	13	6	4	5	98	193
	छात्रा	73	4	15	3	0	95	
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	72	7	9	4	2	94	193
	परास्नातक	71	10	12	3	3	99	
विषय वर्ग	कला	71	10	8	5	4	98	193
	विज्ञान	72	7	13	2	1	95	
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	49	4	1	0	1	55	193
	शहरी	94	13	20	7	4	138	
आवृत्ति		143	17	21	7	5	193	193
प्रतिशत		74.1	8.8	10.9	3.6	2.6	100	100

तालिका सं0 4.51: प्रश्न संख्या 10 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

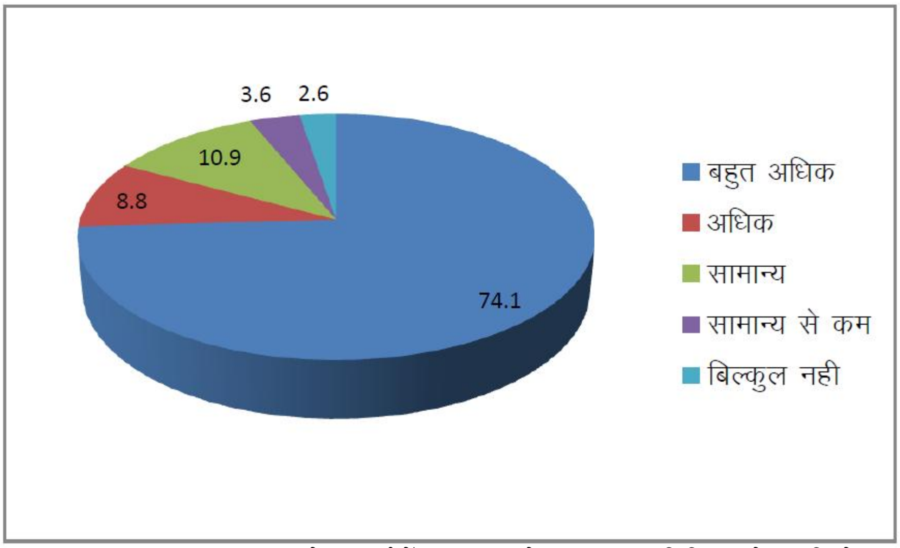

ग्राफ सं0 4.50: प्रश्न संख्या 10 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रश्न में उत्तरदाताओं की कुल संख्या के 74.1 प्रतिशत ने बहुत अधिक, 8.8 प्रतिशत ने अधिक, 10.9 प्रतिशत ने सामान्य, 3.6 प्रतिशत ने सामान्य से कम तथा 2.6 प्रतिशत ने बिल्कुल नहीं पर अपना मत व्यक्त किया है। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम से संबंधित होते है।

लिंग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	70 (36.3)	13 (6.7)	6 (3.1)	4 (2.1)	5 (2.6)	98 (50.8)	4.82 (0.05)
	छात्रा	73 (37.8)	4 (2.1)	15 (7.8)	3 (1.6)	0 (0.0)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.52 : प्रश्न संख्या 10 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

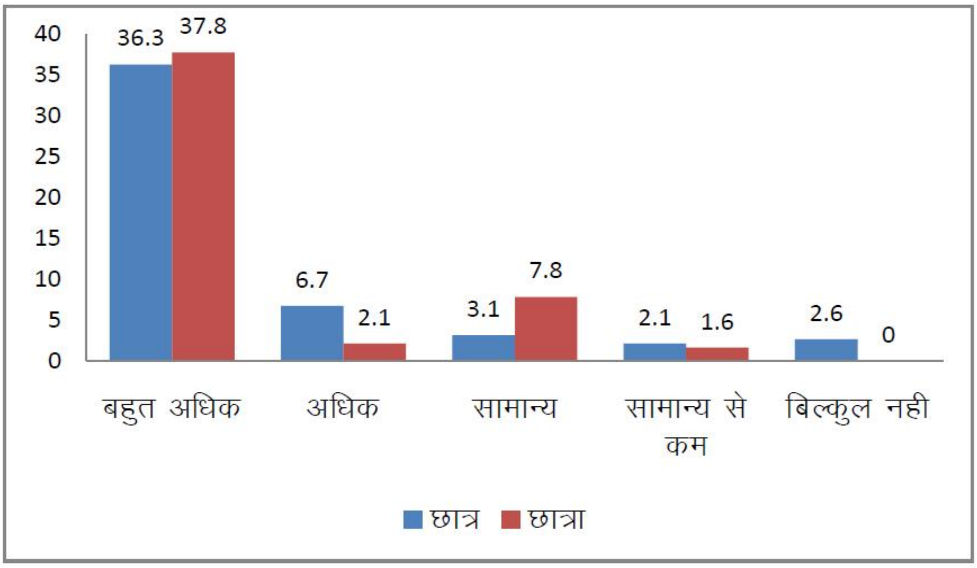

ग्राफ सं0 4.51 : प्रश्न संख्या 10 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

लिंग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल 50.8 प्रतिशत छात्रों में से 36.3 प्रतिशत छात्रो ने बहुत अधिक, 6.7 प्रतिशत छात्रों ने अधिक, 3.1 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य, 2.1 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य से कम तथा 2.6 प्रतिशत छात्रों ने बिल्कुल नही मे उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्रों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम पाठ्यक्रम से संबंधित होते हैं । इसी प्रकार कुल 49.2 प्रतिशत छात्राओं में से 37.8 प्रतिशत छात्राओं ने बहुत अधिक, 2.1 प्रतिशत छात्राओं ने अधिक, 7.8 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य, 1.6 प्रतिशत छात्राओं सामान्य से कम तथा 0 प्रतिशत छात्राओं ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकांश छात्राओं के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम पाठ्यक्रम से संबंधित होते हैं।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 4.82 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के पाठ्यक्रम से संबंधित होने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शैक्षिक योग्यता के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	72 (37.3)	7 (3.6)	9 (4.7)	4 (2.1)	2 (1.03)	94 (48.7)	5.14 (0.05)
	परास्नातक	71 (36.8)	10 (5.2)	12 (6.2)	3 (1.6)	3 (1.6)	99 (51.3)	

तालिका सं0 4.53 : प्रश्न संख्या 10 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

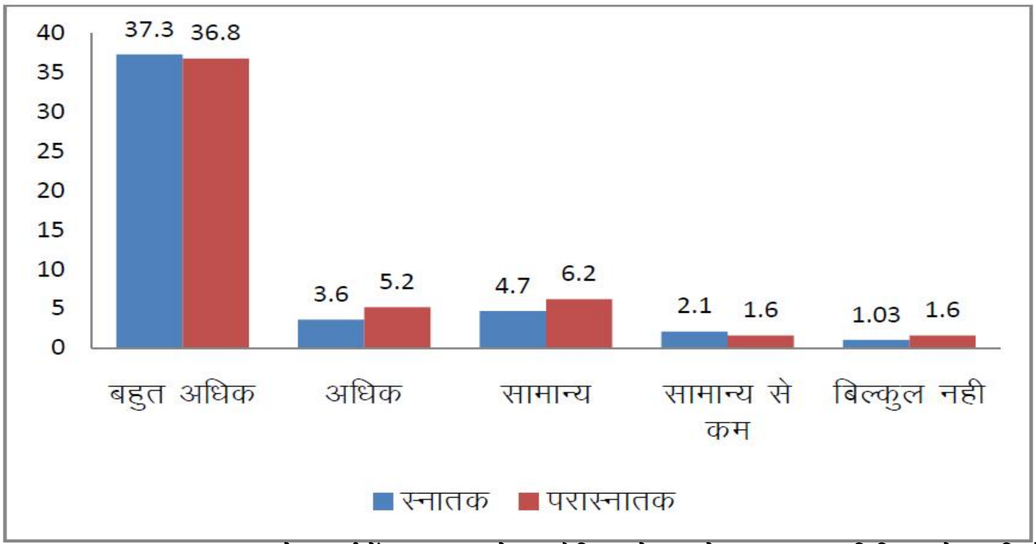

ग्राफ सं0 4.52 : प्रश्न संख्या 10 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

शैक्षिक योग्यता के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 48.7 प्रतिशत स्नातक विद्यार्थियों मे से 37.3 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बहुत अधिक, 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 1.03 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि स्नातक वर्ग के अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम पाठ्यक्रम से संबंधित होते हैं। इसी प्रकार कुल 51.3 प्रतिशत परास्नातक विद्यार्थियों में से 36.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 6.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 1.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 1.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि परास्नातक वर्ग के अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम पाठ्यक्रम से संबंधित होते है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 5.14 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् स्नातक एंव परास्नातक वर्ग के विद्यार्थियो में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के पाठ्यक्रम से संबंधित होने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

विषय वर्ग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
विषय वर्ग	कला	71 (36.8)	10 (5.2)	8 (4.1)	5 (2.6)	4 (2.1)	98 (50.8)	4.96 (0.05)
	विज्ञान	72 (37.3)	7 (3.6)	13 (6.7)	2 (1.03)	1 (0.56)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.54 : प्रश्न संख्या 10 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

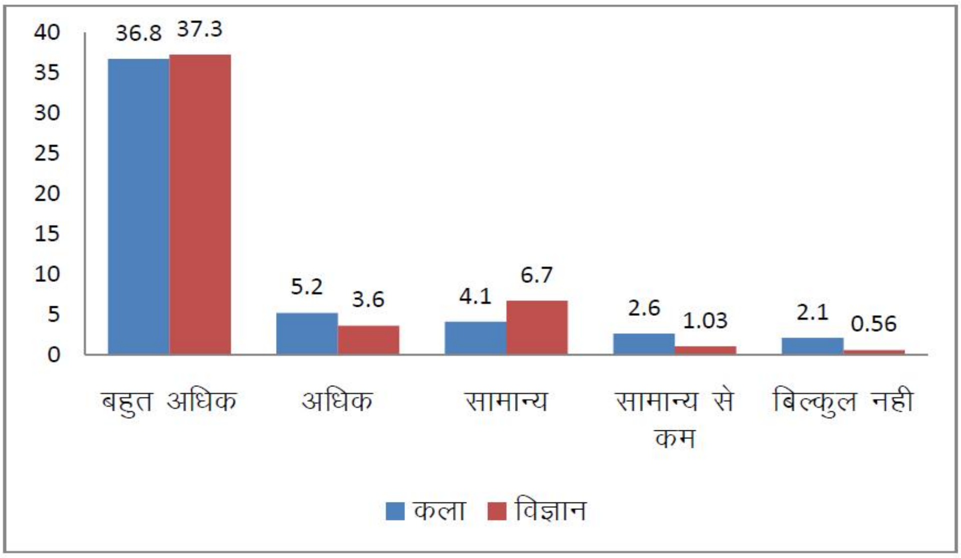

ग्राफ सं0 4.53 : प्रश्न संख्या 10 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

विषय वर्ग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कला विषय के कुल 50.8 प्रतिशत विद्यार्थियों में से 36.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नही में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि कला विषय वर्ग के अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम पाठ्यक्रम से संबंधित होते है। इसी प्रकार विज्ञान विषय वर्ग के कुल 49.2 प्रतिशत विद्यार्थियों में से 37.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 3.6 विद्यार्थियों ने अधिक, 6.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 1.03 विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 0.56 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि विज्ञान विषय वर्ग के अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम पाठ्यक्रम से संबंधित होते है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 4.96 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् कला एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के पाठ्यक्रम से संबंधित होने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	49 (25.4)	4 (2.1)	1 (0.56)	0 (0.0)	1 (0.56)	55 (28.5)	6.18 (0.05)
	शहरी	94 (48.7)	13 (6.7)	20 (10.4)	7 (3.6)	4 (2.1)	138 (71.5)	

तालिका सं0 4.55 : प्रश्न संख्या 10 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

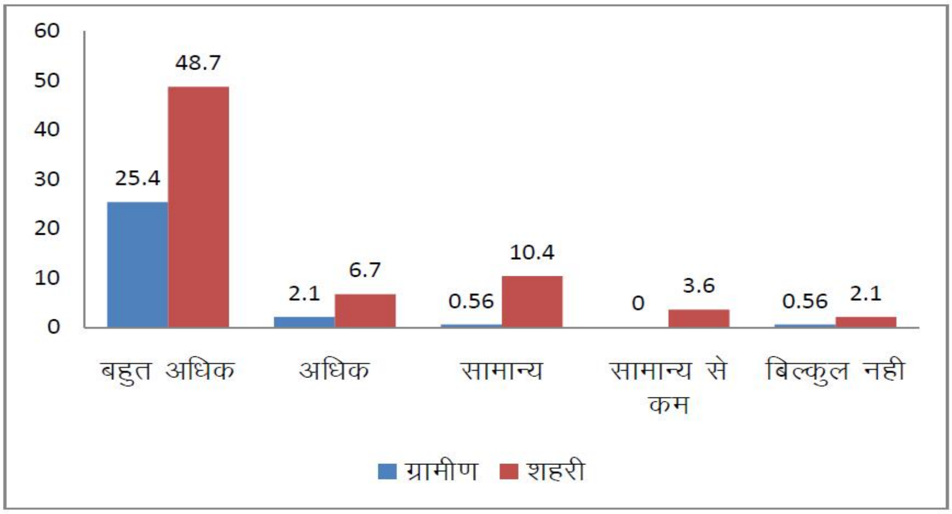

ग्राफ सं0 4.54 : प्रश्न संख्या 10 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 28.5 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों मे से 25.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 0.56 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 0 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 0.56 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम पाठ्यक्रम से संबंधित होते है। इसी प्रकार कुल 71.5 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों में से 48.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 6.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 10.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 3.6. प्रतिशत विद्यार्थियो ने सामान्य से कम तथा 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकांश शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियो के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम पाठ्यक्रम से संबंधित होते है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 5.42 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियो में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के पाठ्यक्रम से संबंधित होने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

प्रश्न -11 क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम कला एवं मानविकी विषयों से सम्बन्धित होते है?

प्रस्तुत प्रश्न के संदर्भ में विद्यार्थियों द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नांकित तालिका एवं ग्राफ के अनुसार प्रस्तुत है-

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर					योग	कुल योग
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	51	23	12	6	6	98	193
	छात्रा	51	13	25	5	1	95	
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	53	17	15	6	3	94	193
	परास्नातक	49	19	22	5	4	99	
विषय वर्ग	कला	52	20	14	7	5	98	193
	विज्ञान	50	16	23	4	2	95	
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	43	6	2	2	2	55	193
	शहरी	59	30	35	9	5	138	
आवृत्ति		102	36	37	11	7	193	193
प्रतिशत		52.8	18.7	19.1	5.7	3.6	100	100

तालिका सं0 4.56: प्रश्न संख्या 11 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

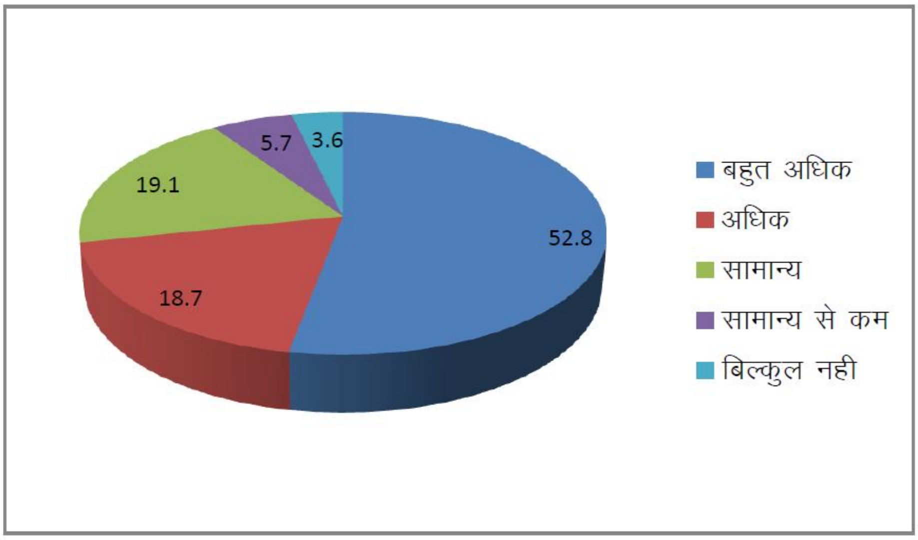

ग्राफ सं0 4.55: प्रश्न संख्या 11 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रश्न में उत्तरदाताओं की कुल संख्या के 52.8 प्रतिशत ने बहुत अधिक, 18.7 प्रतिशत ने अधिक, 19.1 प्रतिशत ने सामान्य, 5.7 प्रतिशत ने सामान्य से कम तथा 3.6 प्रतिशत ने बिल्कुल नहीं पर अपना मत व्यक्त किया है। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम कला एवं मानविकी विषयों से पर्याप्त सम्बन्धित होते है।

लिंग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	51 (26.4)	23 (11.9)	12 (6.2)	6 (3.1)	6 (3.1)	98 (50.8)	2.48 (0.05)
	छात्रा	51 (26.4)	13 (6.7)	25 (12.9)	5 (2.6)	1 (0.56)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.57 : प्रश्न संख्या 11 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

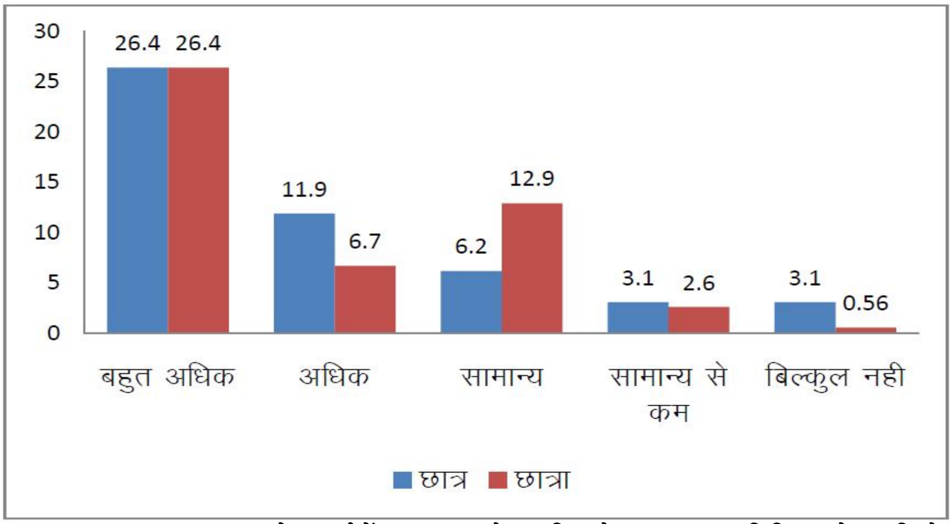

ग्राफ सं0 4.56 : प्रश्न संख्या 11 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

लिंग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल 50.8 प्रतिशत छात्रों में से 26.4 प्रतिशत छात्रो ने बहुत अधिक, 11.9 प्रतिशत छात्रों ने अधिक, 6.2 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य, 3.1 प्रतिशत छात्रो ने सामान्य से कम तथा 0.56 प्रतिशत छात्रों ने बिल्कुल नही मे उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्रों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम कला एवं मानविकी विषयों से पर्याप्त सम्बन्धित होते हैं। इसी प्रकार कुल 49.2 प्रतिशत छात्राओं में से 26.4 प्रतिशत छात्राओं ने बहुत अधिक, 6.7 प्रतिशत छात्राओं ने अधिक, 12.9 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य, 2.6 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य से कम तथा 0.56 प्रतिशत छात्राओं ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्राओं के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम कला एवं मानविकी विषयों से पर्याप्त सम्बन्धित होते हैं।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.48 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम कला एवं मानविकी विषयों से पर्याप्त सम्बन्धित होने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शैक्षिक योग्यता के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	53 (27.5)	17 (8.8)	15 (7.8)	6 (3.1)	3 (1.6)	94 (48.7)	2.14 (0.05)
	परास्नातक	49 (25.4)	19 (9.9)	22 (11.4)	5 (2.6)	4 (2.1)	99 (51.3)	

तालिका सं0 4.58 : प्रश्न संख्या 11 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

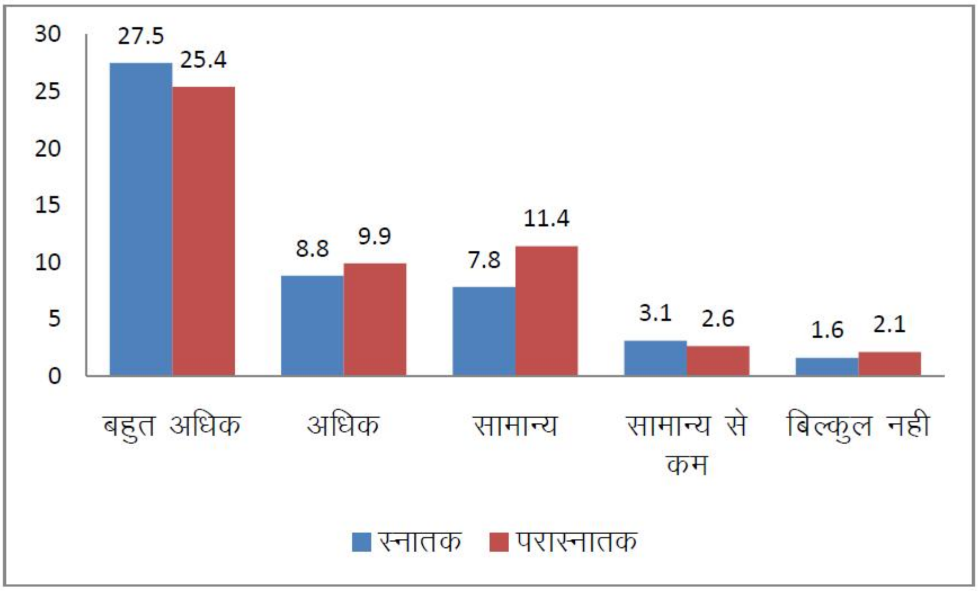

ग्राफ सं0 4.57 : प्रश्न संख्या 11 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

शैक्षिक योग्यता के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 48.7 प्रतिशत स्नातक विद्यार्थियों मे से 27.5 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बहुत अधिक, 8.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 7.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 1.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि स्नातक वर्ग के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम कला एवं मानविकी विषयों से पर्याप्त सम्बन्धित होते हैं। इसी प्रकार कुल 51.3 प्रतिशत परास्नातक विद्यार्थियो में से 25.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 9.9 प्रतिशत विद्यार्थियो ने अधिक, 11.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 1.03 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि परास्नातक वर्ग के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम कला एवं मानविकी विषयों से पर्याप्त सम्बन्धित होते हैं।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.14 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अर्थात् स्नातक एंव परास्नातक वर्ग के विद्यार्थियो में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम कला एवं मानविकी विषयों से पर्याप्त सम्बन्धित होने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

विषय वर्ग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
विषय वर्ग	कला	52 (26.9)	20 (10.4)	14 (7.2)	7 (3.6)	5 (2.6)	98 (50.8)	2.2 (0.05)
	विज्ञान	50 (25.9)	16 (8.3)	23 (11.9)	4 (2.1)	2 (1.03)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.59 : प्रश्न संख्या 11 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

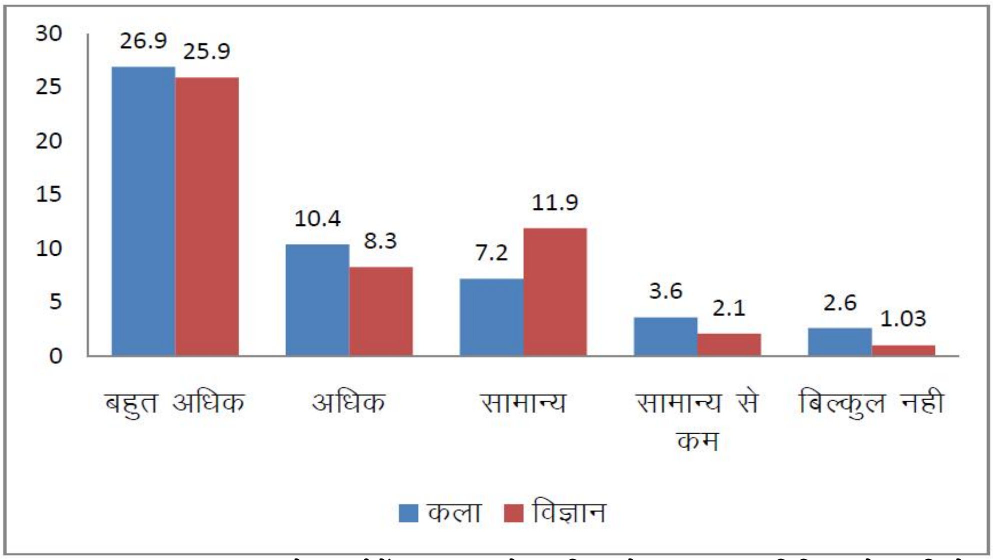

ग्राफ सं0 4.58 : प्रश्न संख्या 11 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

विषय वर्ग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कला विषय के कुल 50.8 प्रतिशत विद्यार्थियों में से 26.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 10.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 7.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नही में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि कला वर्ग के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम कला एवं मानविकी विषयों से पर्याप्त सम्बन्धित होते है। इसी प्रकार विज्ञान विषय वर्ग के कुल 49.2 प्रतिशत विद्यार्थियों में से 25.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 8.3 विद्यार्थियों ने अधिक, 11.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 2.1 विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 1.03 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि विज्ञान विषय वर्ग के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम कला एवं मानविकी विषयों से पर्याप्त सम्बन्धित होते है।

संख्यकीय विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.26 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् कला एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम कला एवं कला विषयों से पर्याप्त सम्बन्धित होने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	43 (22.3)	6 (3.1)	2 (1.03)	2 (1.03)	2 (1.03)	55 (28.5)	4.16 (0.05)
	शहरी	59 (30.6)	30 (15.5)	35 (18.2)	9 (4.7)	5 (2.6)	138 (71.5)	

तालिका सं0 4.60 : प्रश्न संख्या 11 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

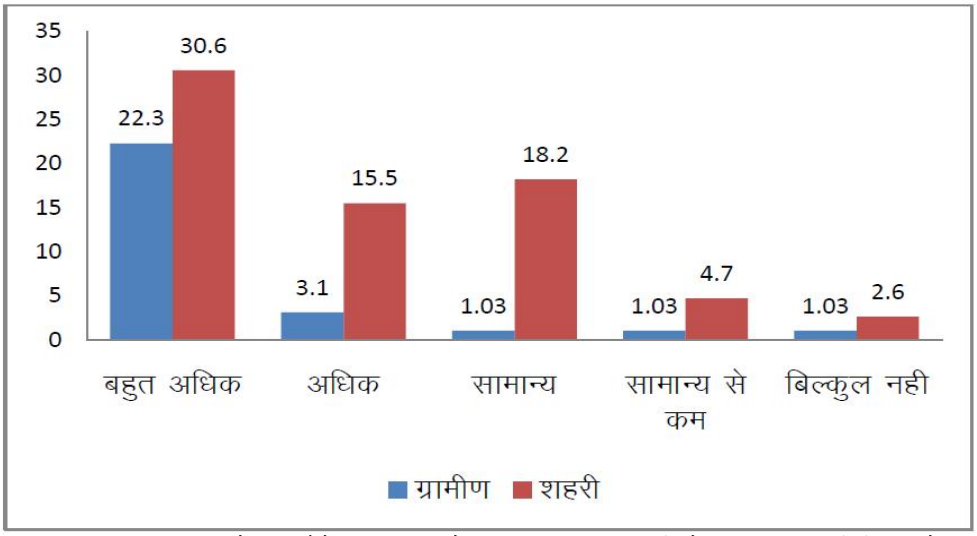

ग्राफ सं0 4.59 : प्रश्न संख्या 11 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 28.5 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों मे से 22.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 1.03 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 1.03 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 1.03 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर ग्रामीण विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम कला एवं मानविकी विषयों से पर्याप्त सम्बन्धित होते है। इसी प्रकार कुल 71.5 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों में से 30.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 15.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 18.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर नही दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर शहरी विद्यार्थियो के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम कला एवं मानविकी विषयों से पर्याप्त सम्बन्धित होते है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 4.16 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियो में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम कला एवं मानविकी विषयों से पर्याप्त सम्बन्धित होने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

प्रश्न -12 क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम विज्ञान एंव तकनीकी विषयो से सम्बन्धित होते है?

प्रस्तुत प्रश्न के संदर्भ में विद्यार्थियों द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नांकित तालिका एवं ग्राफ के अनुसार प्रस्तुत है-

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर					योग	कुल योग
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	11	9	20	26	32	98	193
	छात्रा	6	8	33	16	32	95	
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	8	9	23	20	34	94	193
	परास्नातक	9	8	30	22	30	99	
विषय वर्ग	कला	10	10	22	23	33	98	193
	विज्ञान	7	7	31	19	31	95	
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	7	5	10	9	24	55	193
	शहरी	10	12	43	33	40	138	
आवृत्ति		17	17	53	42	64	193	193
प्रतिशत		8.8	8.8	27.5	21.8	33.1	100	100

तालिका सं0 4.61: प्रश्न संख्या 12 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

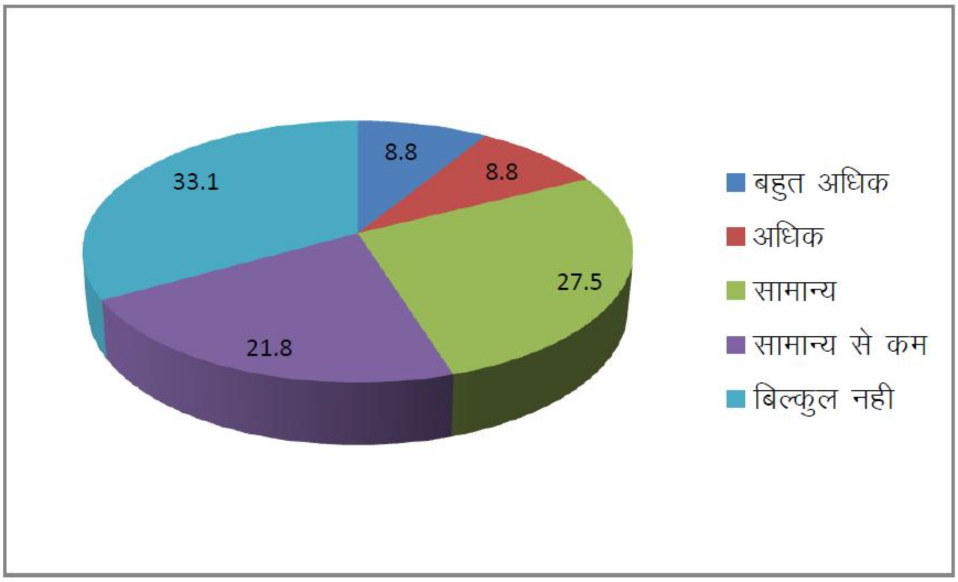

ग्राफ सं0 4.60: प्रश्न संख्या 12 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रश्न में उत्तरदाताओं की कुल संख्या के 8.8 प्रतिशत ने बहुत अधिक, 8.8 प्रतिशत ने अधिक, 27.5 प्रतिशत ने सामान्य, 21.8 प्रतिशत ने सामान्य से कम तथा 33.1 प्रतिशत ने बिल्कुल नहीं पर अपना मत व्यक्त किया है। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम विज्ञान एवं तकनीकी विषयों से सम्बन्धित नही होते है।

लिंग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	11 (5.7)	9 (4.7)	20 (10.4)	26 (13.5)	32 (16.6)	98 (50.8)	3.16 (0.05)
	छात्रा	6 (3.1)	8 (4.1)	33 (17.1)	16 (8.3)	32 (16.6)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.62 : प्रश्न संख्या 12 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

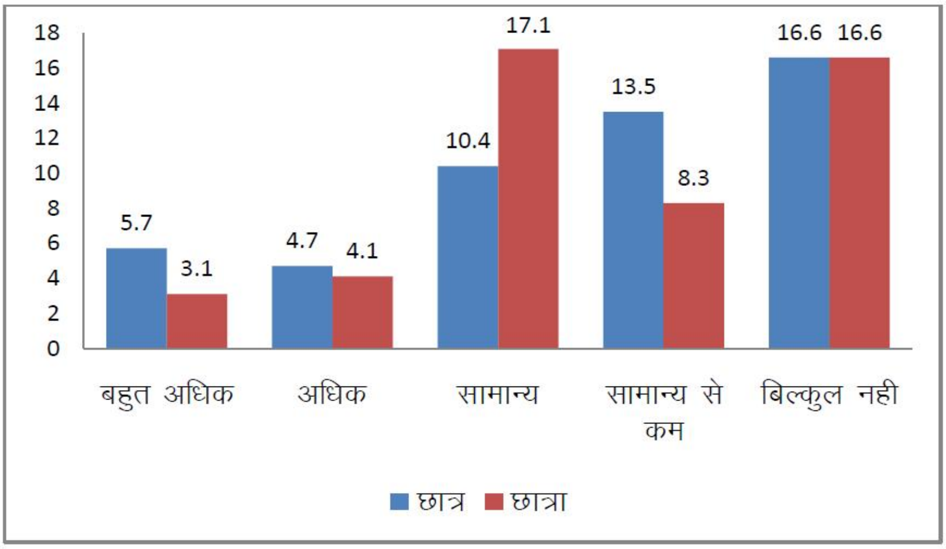

ग्राफ सं0 4.61 : प्रश्न संख्या 12 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

लिंग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल 50.8 प्रतिशत छात्रों में से 5.7 प्रतिशत छात्रों ने बहुत अधिक, 4.7 प्रतिशत छात्रों ने अधिक, 10.4 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य, 13.5 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य से कम तथा 16.6 प्रतिशत छात्रों ने बिल्कुल नही मे उत्तर दिया है अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्रों के अनुसार के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम विज्ञान एवं तकनीकी विषयों से सम्बन्धित नही होते है। इसी प्रकार कुल 49.2 प्रतिशत छात्राओं में से 3.1 प्रतिशत छात्राओं ने बहुत अधिक, 4.1 प्रतिशत छात्राओं ने अधिक, 17.1 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य, 8.3 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य से कम तथा 16.6 प्रतिशत छात्राओं ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्राओं के अनुसार के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम विज्ञान एवं तकनीकी विषयों से सम्बन्धित नही होते है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 3.16 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं में कार्यक्रमों के विज्ञान एवं तकनीकी विषयों से सम्बन्धित होने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शैक्षिक योग्यता के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	8 (4.1)	9 (4.7)	23 (11.9)	20 (10.4)	34 (17.6)	94 (48.7)	3.26 (0.05)
	परास्नातक	9 (4.7)	8 (4.1)	30 (15.5)	22 (11.4)	30 (15.5)	99 (51.3)	

तालिका सं0 4.63 : प्रश्न संख्या 12 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

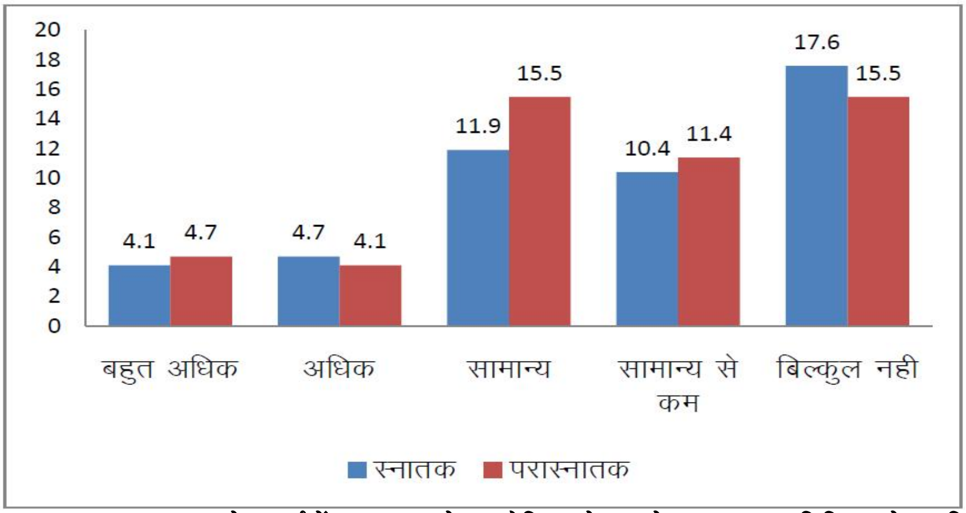

ग्राफ सं0 4.62 : प्रश्न संख्या 12 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

शैक्षिक योग्यता के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 48.7 प्रतिशत स्नातक विद्यार्थियों मे से 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बहुत अधिक, 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 11.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 10.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 17.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि स्नातक वर्ग के अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम विज्ञान एवं तकनीकी विषयों से सम्बन्धित नही होते हैं। इसी प्रकार कुल 51.3 प्रतिशत परास्नातक विद्यार्थियो में से 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 15.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 11.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 15.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि परास्नातक वर्ग के अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम विज्ञान एवं तकनीकी विषयों से सम्बन्धित नही होते हैं।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 3.26 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् स्नातक एंव परास्नातक वर्ग के विद्यार्थियो में कार्यक्रमों के विज्ञान एवं तकनीकी विषयों से सम्बन्धित होने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

विषय वर्ग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
विषय वर्ग	कला	10 (5.2)	10 (5.2)	22 (11.4)	23 (11.9)	33 (17.6)	98 (50.8)	5.46 (0.05)
	विज्ञान	7 (3.6)	7 (3.6)	31 (16.1)	19 (9.9)	31 (16.1)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.64 : प्रश्न संख्या 12 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

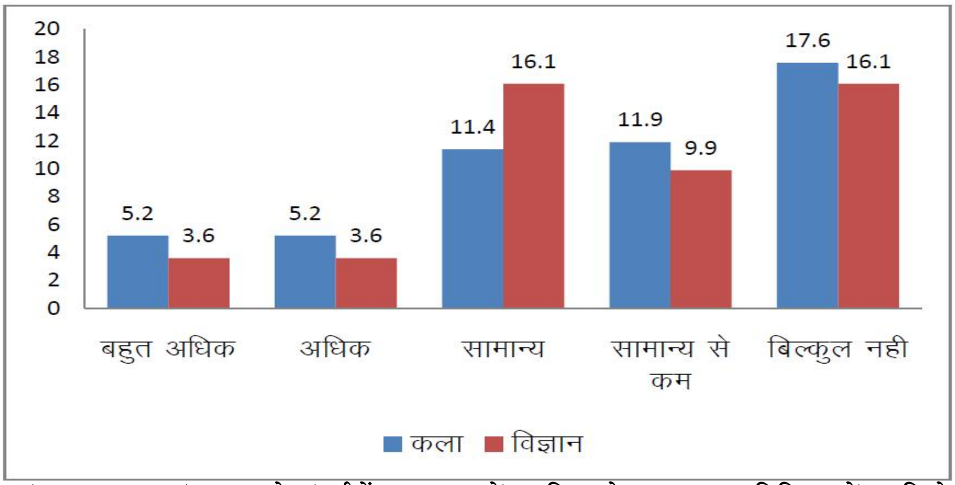

ग्राफ सं0 4.63 : प्रश्न संख्या 12 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

विषय वर्ग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कला विषय के कुल 50.8 प्रतिशत में से 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 11.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 11.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 17.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नही में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि कला विषय वर्ग के अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम विज्ञान एवं तकनीकी विषयों से सम्बन्धित नही होते है। इसी प्रकार विज्ञान विषय वर्ग के कुल 49.2 प्रतिशत में से 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 3.6 विद्यार्थियों ने अधिक, 16.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 9.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम विज्ञान एवं तकनीकी विषयों से सम्बन्धित नही होते हैं।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 5.46 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् कला एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में कार्यक्रमों के विज्ञान एवं तकनीकी विषयों से सम्बन्धित होने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	7 (3.6)	5 (2.6)	10 (5.2)	9 (4.7)	24 (12.4)	55 (28.5)	4.28 (0.05)
	शहरी	10 (5.2)	12 (6.2)	43 (22.3)	33 (17.1)	40 (20.8)	138 (71.5)	

तालिका सं0 4.65 : प्रश्न संख्या 12 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

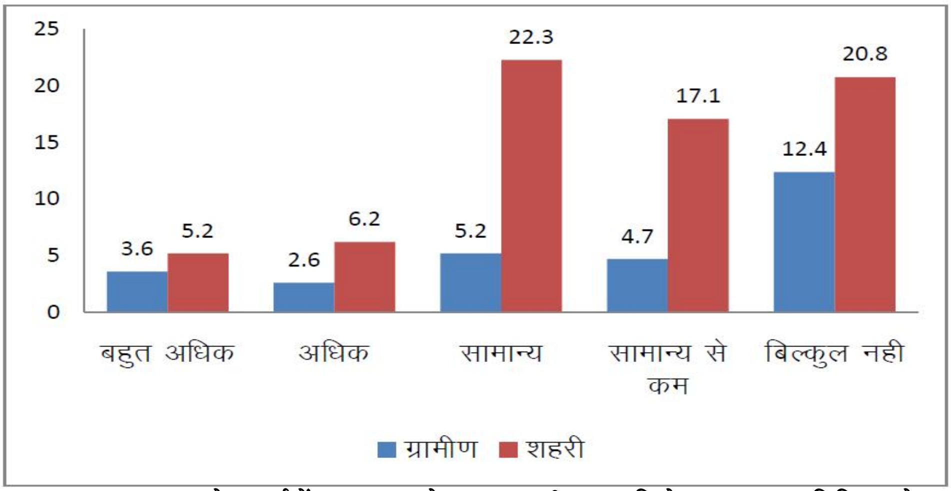

ग्राफ सं0 4.64 : प्रश्न संख्या 12 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 28.5 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों मे से 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 12.4 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम विज्ञान एवं तकनीकी विषयों से सम्बन्धित नही होते है। इसी प्रकार कुल 71.5 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों में से 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 6.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 22.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 17.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 20.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर नही दिया है। अतः स्पष्ट है कि शहरी पृष्ठभूमि के अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम विज्ञान एवं तकनीकी विषयों से सम्बन्धित नही होते हैं।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 4.28 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों में कार्यक्रमों के विज्ञान एवं तकनीकी विषयों से सम्बन्धित होने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

प्रश्न -13 क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों को सुनकर आपकी जिज्ञासा का समाधान हो जाता है ?

प्रस्तुत प्रश्न के संदर्भ में विद्यार्थियों द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नांकित तालिका एवं ग्राफ के अनुसार प्रस्तुत है-

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर					योग	कुल योग
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	20	20	56	1	1	98	193
	छात्रा	13	12	48	13	9	95	
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	17	13	50	8	6	94	193
	परास्नातक	16	19	54	6	4	99	
विषय वर्ग	कला	18	20	56	2	2	98	193
	विज्ञान	15	12	48	12	8	95	
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	11	5	27	6	6	55	193
	शहरी	22	27	77	8	4	138	
आवृत्ति		33	32	104	14	10	193	193
प्रतिशत		17.1	16.6	53.9	7.2	5.2	100	100

तालिका सं0 4.66: प्रश्न संख्या 13 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

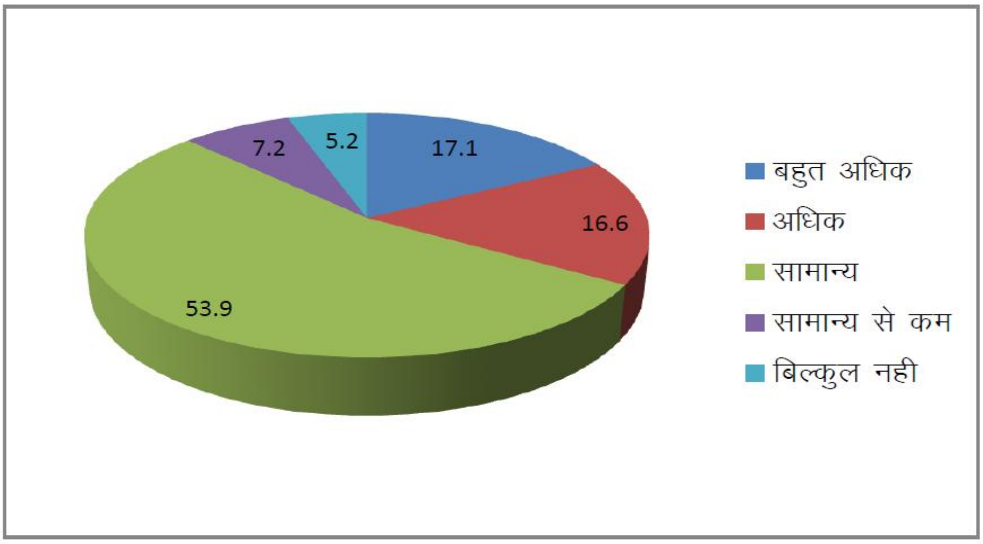

ग्राफ सं0 4.65: प्रश्न संख्या 13 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रश्न में उत्तरदाताओं की कुल संख्या के 17.1 प्रतिशत ने बहुत अधिक, 16.6 प्रतिशत ने अधिक, 53.9 प्रतिशत ने सामान्य, 7.2 प्रतिशत ने सामान्य से कम तथा 5.2 प्रतिशत ने बिल्कुल नहीं पर अपना मत व्यक्त किया है। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित शैक्षिक कार्यक्रमों के सुनने से अधिकतर विद्यार्थियों की जिज्ञासा का समाधान हो जाता है।

लिंग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	20 (10.4)	20 (10.4)	56 (29.0)	1 (0.56)	1 (0.56)	98 (50.8)	2.18 (0.05)
	छात्रा	13 (6.7)	12 (6.2)	48 (24.9)	13 (6.7)	9 (4.7)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.67 : प्रश्न संख्या 13 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

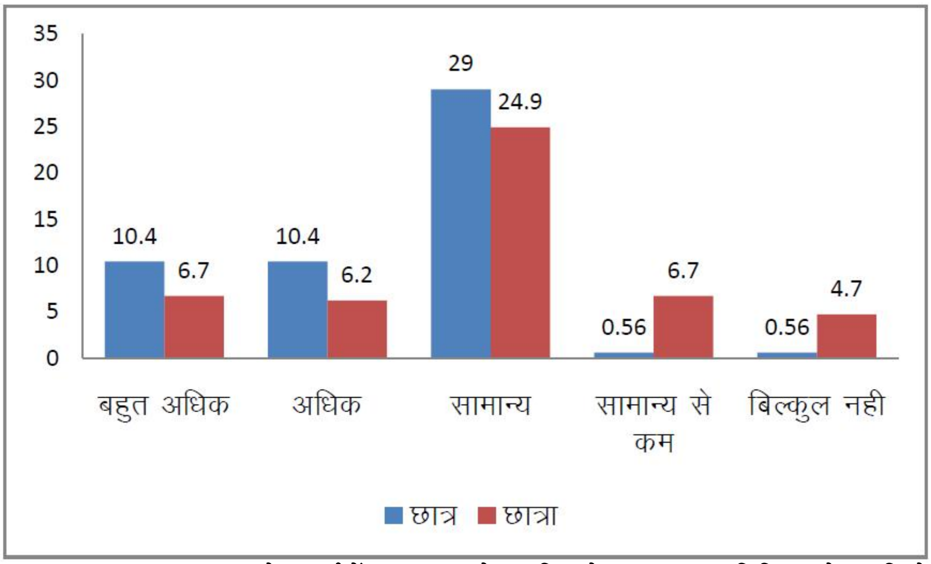

ग्राफ सं0 4.66 : प्रश्न संख्या 13 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

लिंग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल 50.8 प्रतिशत छात्रों में से 10.4 प्रतिशत छात्रो ने बहुत अधिक, 10.4 प्रतिशत छात्रों ने अधिक, 29.0 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य, 0.56 प्रतिशत छात्रों सामान्य से कम तथा 0.56 प्रतिशत छात्रों ने बिल्कुल नही मे उत्तर दिया है अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्रों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित शैक्षिक कार्यक्रमों के सुनने से जिज्ञासा का समाधान हो जाता है। इसी प्रकार कुल 49.2 प्रतिशत छात्राओं में से 6.7 प्रतिशत छात्राओं ने बहुत अधिक, 6.2 प्रतिशत छात्राओं ने अधिक, 24.9 प्रतिशत छात्राओं नें सामान्य, 6.7 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य से कम तथा 4.7 प्रतिशत छात्राओं ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्राओं में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित शैक्षिक कार्यक्रमों के सुनने से जिज्ञासा का समाधान हो जाता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.18 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित शैक्षिक कार्यक्रमों के सुनने से जिज्ञासा के समाधान होने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शैक्षिक योग्यता के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	17 (8.8)	13 (6.6)	50 (25.9)	8 (4.1)	6 (3.1)	94 (48.7)	2.02 (0.05)
	परास्नातक	16 (8.3)	19 (9.9)	54 (28.0)	6 (3.1)	4 (2.1)	99 (51.3)	

तालिका सं0 4.68 : प्रश्न संख्या 13 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

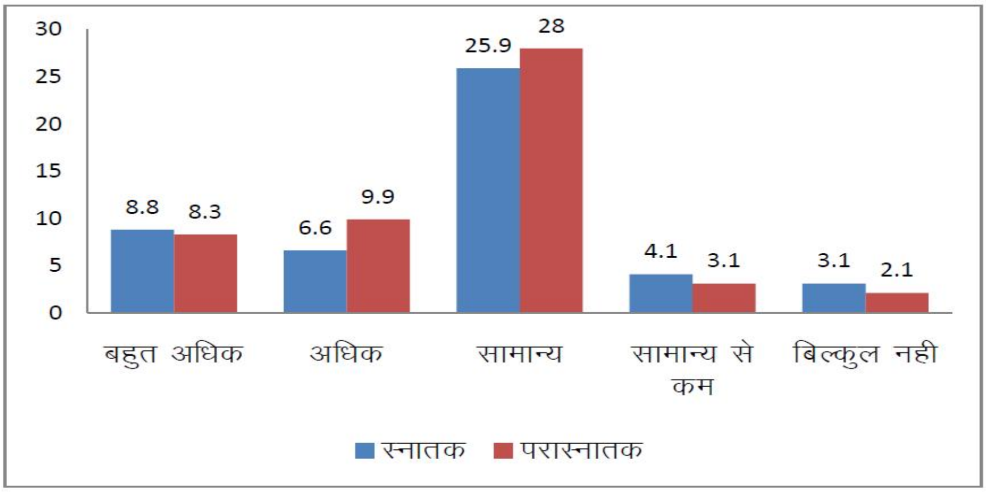

ग्राफ सं0 4.67 : प्रश्न संख्या 13 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

शैक्षिक योग्यता के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 48.7 प्रतिशत स्नातक विद्यार्थियों मे से 8.8 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बहुत अधिक, 6.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 25.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि स्नातक वर्ग के अधिकांश विद्यार्थियों की सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित शैक्षिक कार्यक्रमों के सुनने से जिज्ञासा का समाधान हो जाता है। इसी प्रकार कुल 51.3 प्रतिशत परास्नातक विद्यार्थियों में से 8.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 9.9 प्रतिशत विद्यार्थियो ने अधिक, 28.0 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि परास्नातक वर्ग के अधिकतर विद्यार्थियों की सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित शैक्षिक कार्यक्रमों के सुनने से जिज्ञासा का समाधान हो जाता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.02 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् स्नातक एंव परास्नातक वर्ग के विद्यार्थियो में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित शैक्षिक कार्यक्रमों के सुनने से जिज्ञासा के समाधान के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

विषय वर्ग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
विषय वर्ग	कला	18 (9.3)	20 (10.4)	56 (29.0)	2 (1.03)	2 (1.03)	98 (50.8)	2.14 (0.05)
	विज्ञान	15 (7.8)	12 (6.2)	48 (24.9)	12 (6.2)	8 (4.1)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.69 : प्रश्न संख्या 13 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

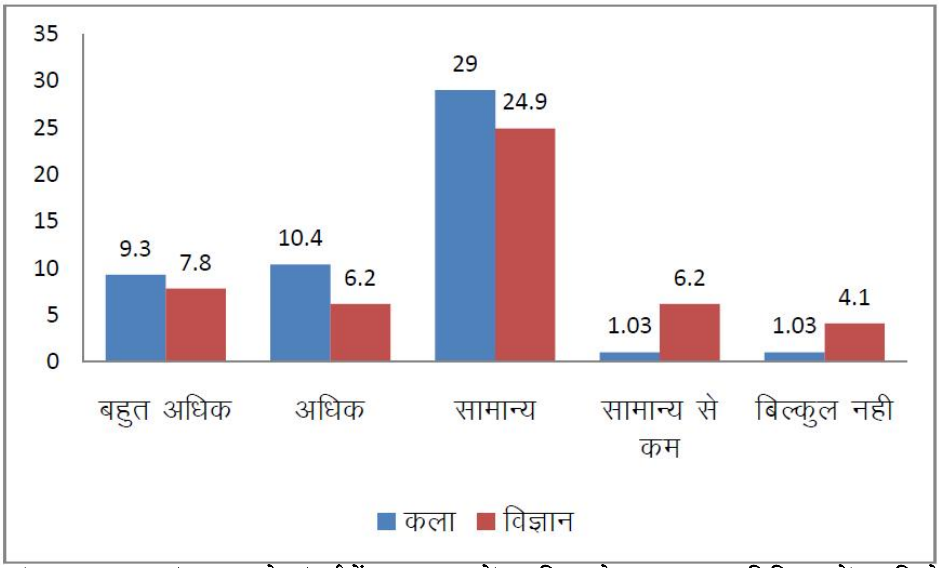

ग्राफ सं0 4.68 : प्रश्न संख्या 13 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

विषय वर्ग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कला विषय के कुल 50.8 प्रतिशत में से 9.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 10.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 29 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 1.03 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 1.03 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नही में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि कला वर्ग के अधिकतर विद्यार्थियों की सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित शैक्षिक कार्यक्रमों के सुनने से जिज्ञासा का समाधान हो जाता है। इसी प्रकार विज्ञान विषय वर्ग के कुल 49.2 प्रतिशत विद्यार्थियों में से 7.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 6.2 विद्यार्थियों ने अधिक, 30.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 6.2 विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि विज्ञान विषय वर्ग के विद्यार्थियों की सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित शैक्षिक कार्यक्रमों के सुनने से जिज्ञासा का समाधान हो जाता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.14 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् कला एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित शैक्षिक कार्यक्रमों के सुनने से जिज्ञासा के समाधानहोने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	11 (5.7)	5 (2.6)	27 (14.0)	6 (3.1)	6 (3.1)	55 (28.5)	3.64 (0.05)
	शहरी	22 (11.4)	27 (14.0)	77 (39.8)	8 (4.1)	4 (2.1)	138 (71.5)	

तालिका सं0 4.70 : प्रश्न संख्या 13 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

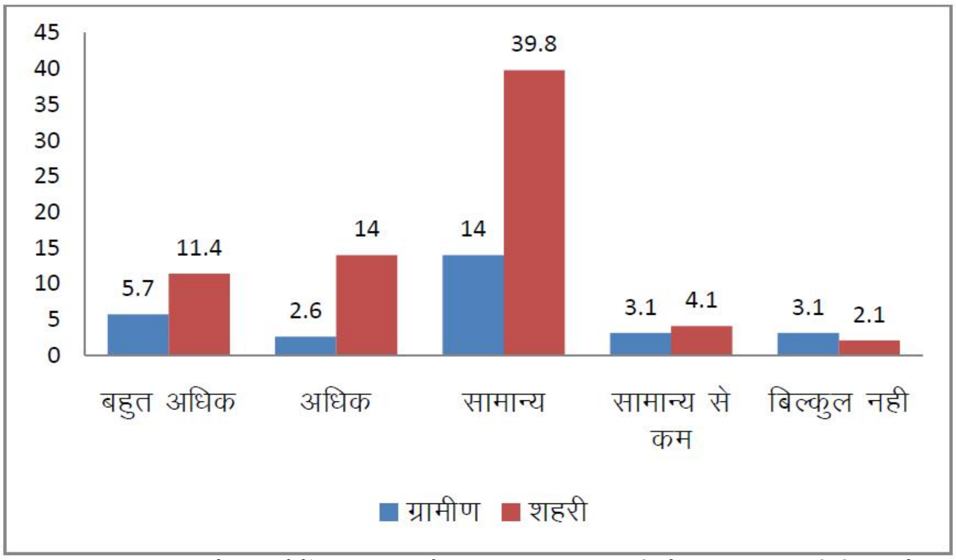

ग्राफ सं0 4.69 : प्रश्न संख्या 13 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 28.5 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों मे से 5.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 14.0 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 1.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 1.6 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर ग्रामीण विद्यार्थियों की सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित शैक्षिक कार्यक्रमों के सुनने से जिज्ञासा का समाधान हो जाता है। इसी प्रकार कुल 71.5 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों में से 11.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 14.0 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 39.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियो ने सामान्य से कम तथा 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकांश शहरी विद्यार्थियो की सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित शैक्षिक कार्यक्रमों के सुनने से जिज्ञासा का समाधान हो जाता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 3.64 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियो में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित शैक्षिक कार्यक्रमों के सुनने से जिज्ञासा के समाधान सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

प्रश्न -14 क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम प्रतियोगी परीक्षाओं में सहायक होते है?

प्रस्तुत प्रश्न के संदर्भ में विद्यार्थियों द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नांकित तालिका एवं ग्राफ के अनुसार प्रस्तुत है।

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर					योग	कुल योग
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	6	6	12	23	51	98	193
	छात्रा	1	5	25	13	51	95	
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	3	6	15	17	53	94	193
	परास्नातक	4	5	22	19	49	99	
विषय वर्ग	कला	5	7	14	20	52	98	193
	विज्ञान	2	4	23	16	50	95	
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	2	2	2	6	43	55	193
	शहरी	5	9	35	30	59	138	
आवृत्ति		7	11	37	36	102	193	193
प्रतिशत		3.6	5.7	19.2	18.7	52.8	100	100

तालिका सं0 4.71: प्रश्न संख्या 14 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

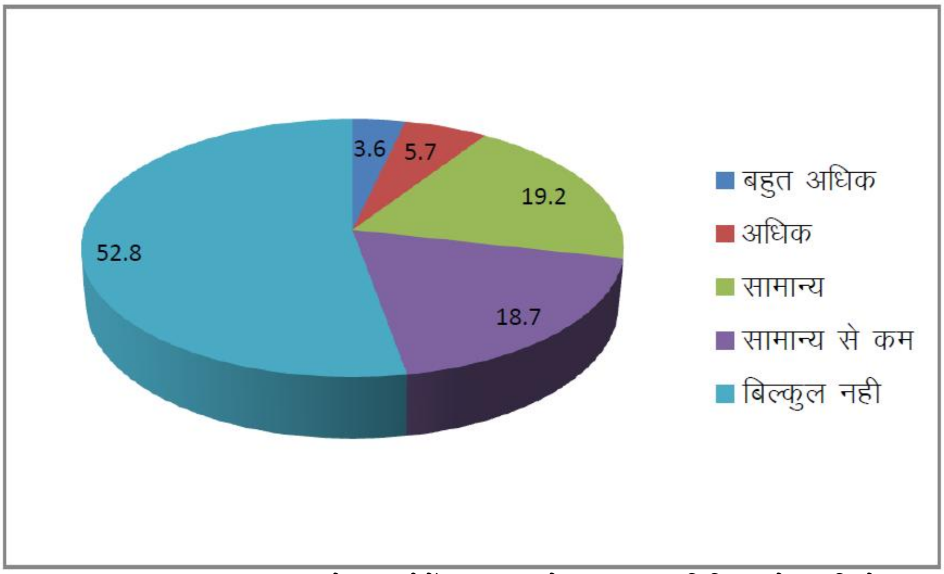

ग्राफ सं0 4.70: प्रश्न संख्या 14 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रश्न में उत्तरदाताओं की कुल संख्या के 3.6 प्रतिशत ने बहुत अधिक, 5.7 प्रतिशत ने अधिक, 19.2 प्रतिशत ने सामान्य, 18.7 प्रतिशत ने सामान्य से कम तथा 52.8 प्रतिशत ने बिल्कुल नहीं पर अपना मत व्यक्त किया है। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहायक नहीं होते हैं।

लिंग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	6 (3.1)	6 (3.1)	12 (6.2)	23 (11.9)	51 (26.4)	98 (50.8)	6.28 (0.05)
	छात्रा	1 (0.56)	5 (2.6)	25 (12.9)	13 (6.7)	51 (26.4)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.72 : प्रश्न संख्या 14 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

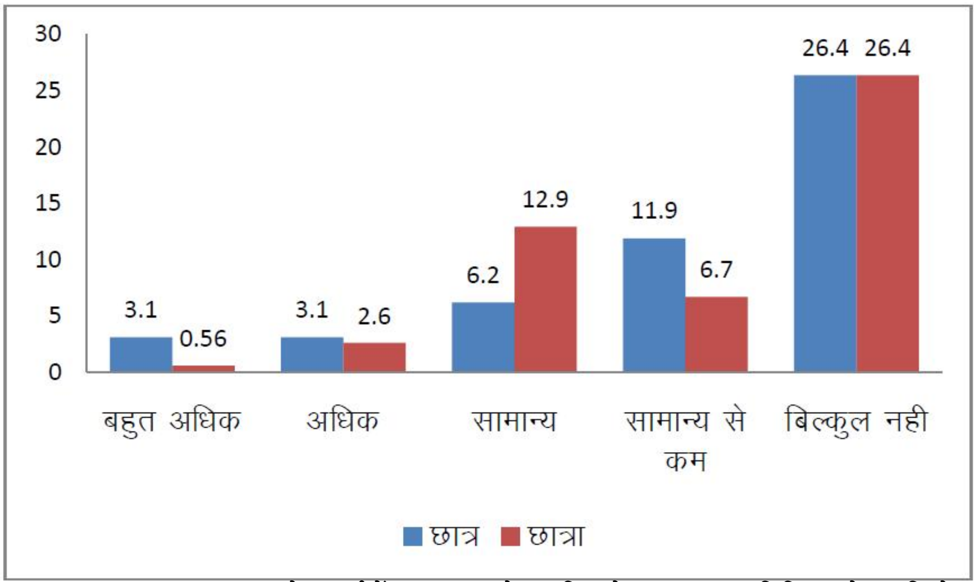

ग्राफ सं0 4.71 : प्रश्न संख्या 14 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

लिंग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल 50.8 प्रतिशत छात्रों में से 3.1 प्रतिशत छात्रों ने बहुत अधिक, 3.1 प्रतिशत छात्रों ने अधिक, 6.2 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य, 11.9 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य से कम तथा 26.4 प्रतिशत छात्रों ने बिल्कुल नही मे उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्रों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहायक नही होते है। इसी प्रकार कुल 49.2 प्रतिशत छात्राओं में से 0.56 प्रतिशत छात्राओं ने बहुत अधिक, 2.6 प्रतिशत छात्राओं ने अधिक, 12.9 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य, 6.7 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य से कम तथा 26.4 प्रतिशत छात्राओं ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्राओं के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहायक नही होते है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 6.28 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहायक होने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शैक्षिक योग्यता के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	3 (1.6)	6 (3.1)	15 (7.8)	17 (8.8)	53 (27.5)	94 (48.7)	2.08 (0.05)
	परास्नातक	4 (2.1)	5 (2.6)	22 (11.4)	19 (9.9)	49 (25.4)	99 (51.3)	

तालिका सं0 4.73 : प्रश्न संख्या 14 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

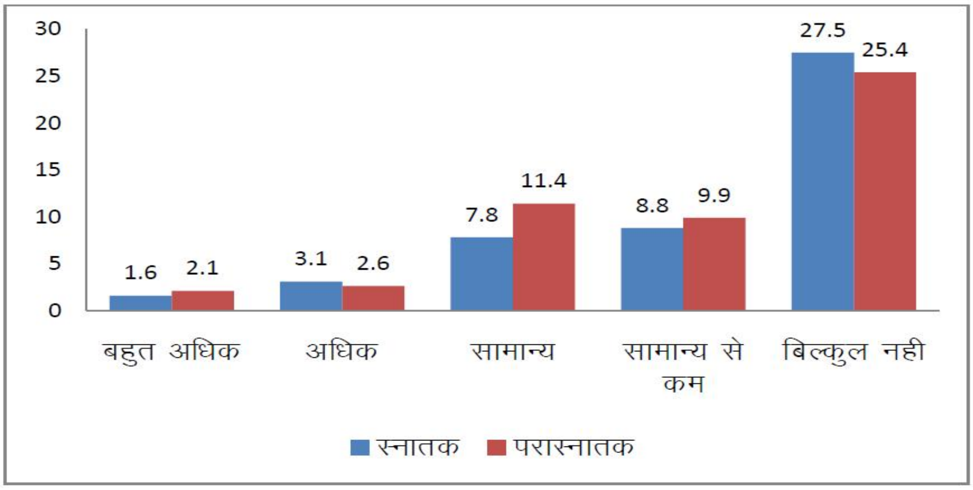

ग्राफ सं0 4.72 : प्रश्न संख्या 14 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

शैक्षिक योग्यता के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 48.7 प्रतिशत स्नातक विद्यार्थियों में से 1.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 7.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 8.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 27.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि स्नातक वर्ग के अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहायक नही होते है। इसी प्रकार कुल 51.3 प्रतिशत परास्नातक विद्यार्थियो में से 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियो ने अधिक, 11.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 9.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 25.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि परास्नातक वर्ग के अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहायक नही होते है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.08 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् स्नातक एंव परास्नातक वर्ग के विद्यार्थियो में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहायक होने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

विषय वर्ग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
विषय वर्ग	कला	5 (2.6)	7 (3.6)	14 (7.2)	20 (10.4)	52 (26.9)	98 (50.8)	5.24 (0.05)
	विज्ञान	2 (1.03)	4 (2.1)	23 (11.9)	16 (8.3)	50 (25.9)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.74 : प्रश्न संख्या 14 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

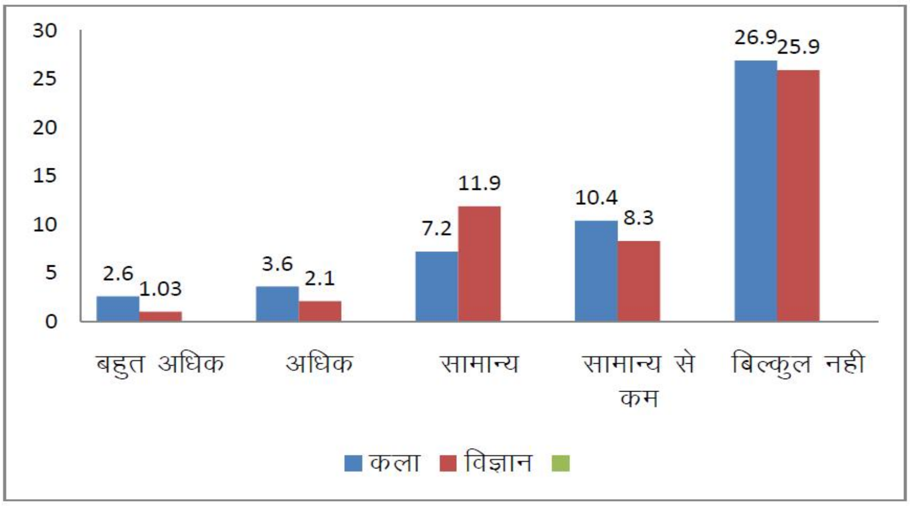

ग्राफ सं0 4.73 : प्रश्न संख्या 14 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

विषय वर्ग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कला विषय के कुल 50.8 प्रतिशत विद्यार्थियों में से 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 7.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 10.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 26.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नही में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि कला विषय वर्ग के अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहायक नही होते है। इसी प्रकार विज्ञान विषय वर्ग के कुल 49.2 प्रतिशत विद्यार्थियों में से 1.03 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 2.1विद्यार्थियों ने अधिक, 11.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 8.3 विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 25.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि विज्ञान वर्ग के अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहायक नही होते हैं।

साख्यकीय विश्लेषण से काई वर्ग का मान 5.24 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् कला एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहायक होने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	2 (1.03)	2 (1.03)	2 (1.03)	6 (3.1)	43 (22.3)	55 (28.5)	4.26 (0.05)
	शहरी	5 (2.6)	9 (4.7)	35 (18.2)	30 (15.5)	59 (30.6)	138 (71.5)	

तालिका सं0 4.75 : प्रश्न संख्या 14 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

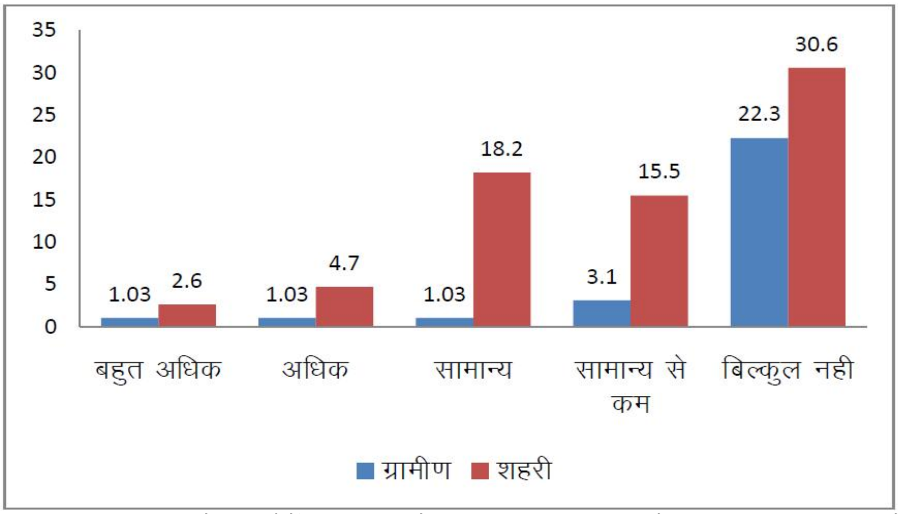

ग्राफ सं0 4.74 : प्रश्न संख्या 14 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 28.5 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों मे से 1.03 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 1.03 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 1.03 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 22.3 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण पृष्ठभूमि के अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहायक नही होते है। इसी प्रकार कुल 71.5 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों में से 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 18.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 15.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 30.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर नही दिया है। अतः स्पष्ट है कि शहरी पृष्ठभूमि के अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहायक नही होते हैं।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 4.26 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहायक होने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

प्रश्न -15 क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित "मन की बात" का कार्यक्रम सामाजिक सद्भाव एवं शैक्षिक जागरुकता के लिए प्रेरित करता है?

प्रस्तुत प्रश्न के संदर्भ में विद्यार्थियों द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नांकित तालिका एवं ग्राफ के अनुसार प्रस्तुत है-

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर					योग	कुल योग
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	16	28	51	1	2	98	193
	छात्रा	9	16	29	17	14	95	
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	13	19	43	10	9	98	193
	परास्नातक	12	25	47	8	7	95	
विषय वर्ग	कला	14	26	49	4	5	98	193
	विज्ञान	11	18	41	14	11	95	
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	7	11	20	8	9	55	193
	शहरी	18	33	70	10	7	138	
आवृत्ति		25	44	90	18	16	193	193
प्रतिशत		12.9	22.8	46.7	9.3	8.3	100	100

तालिका सं0 4.76: प्रश्न संख्या 15 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

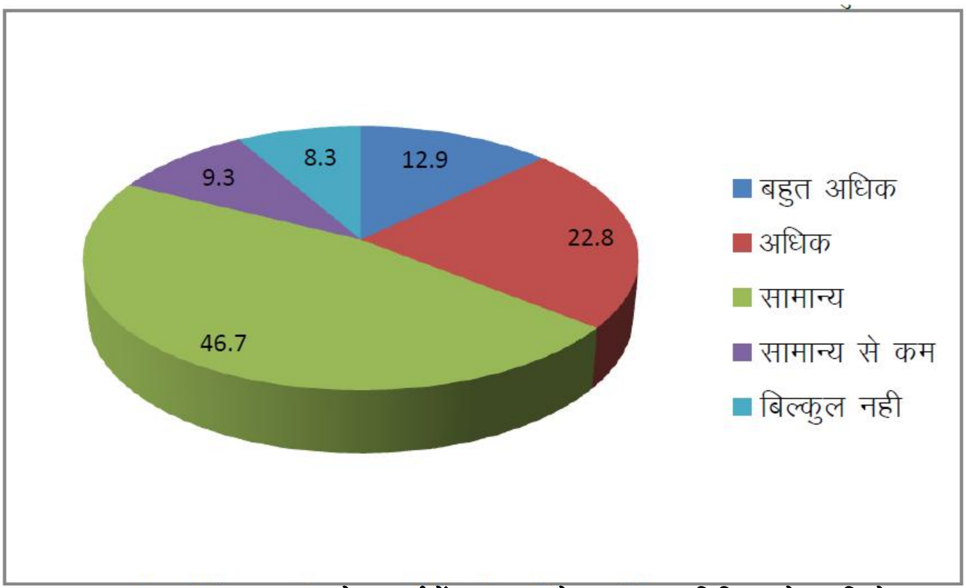

ग्राफ सं0 4.75: प्रश्न संख्या 15 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रश्न में उत्तरदाताओं की कुल संख्या के 12.9 प्रतिशत ने बहुत अधिक, 22.8 प्रतिशत ने अधिक, 46.7 प्रतिशत ने सामान्य, 9.3 प्रतिशत ने सामान्य से कम तथा 8.3 प्रतिशत ने बिल्कुल नहीं पर अपना मत व्यक्त किया है। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार उनके सामुदायिक रेडियो पर प्रधानमंत्री के "मन की बात" का कार्यक्रम सामाजिक सद्भाव एवं शैक्षिक जागरुकता के लिए प्रेरित करता है।

लिंग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	16 (8.3)	28 (14.5)	51 (26.4)	1 (0.56)	2 (1.03)	98 (50.8)	24.42 (0.05)
	छात्रा	9 (4.7)	16 (8.3)	39 (20.1)	17 (8.8)	14 (7.2)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.77 : प्रश्न संख्या 15 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

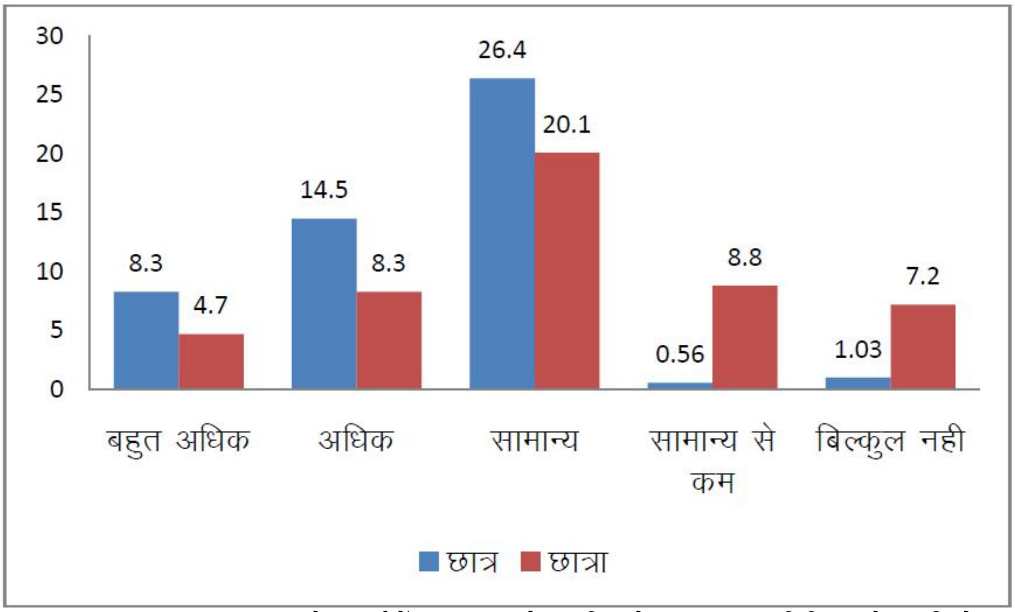

ग्राफ सं0 4.76 : प्रश्न संख्या 15 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

लिंग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल 50.8 प्रतिशत छात्रों में से 8.3 प्रतिशत छात्रो ने बहुत अधिक, 14.5 प्रतिशत छात्रों ने अधिक, 26.4 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य, 0.56 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य से कम तथा 1.03 प्रतिशत छात्रों ने बिल्कुल नही मे उत्तर दिया है अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्रों के अनुसार उनके सामुदायिक रेडियो पर प्रधानमंत्री के "मन की बात" का कार्यक्रम सामाजिक सद्भाव एवं शैक्षिक जागरुकता के लिए प्रेरित करता है। इसी प्रकार कुल 49.2 प्रतिशत छात्राओं में से 4.7 प्रतिशत छात्राओं ने बहुत अधिक, 8.3 प्रतिशत छात्राओं ने अधिक, 20.1 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य, 8.8 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य से कम तथा 7.2 प्रतिशत छात्राओं ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्राओं के अनुसार उनके सामुदायिक रेडियो पर प्रधानमंत्री के "मन की बात का कार्यक्रम सामाजिक सद्भाव एवं शैक्षिक जागरुकता के लिए प्रेरित करता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 24.42 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं में "मन की बात" कार्यक्रम के सामाजिक सद्भाव एवं शैक्षिक जागरुकता के लिए प्रेरित करने े के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शैक्षिक योग्यता के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	13 (6.7)	19 (9.9)	43 (22.3)	10 (5.2)	9 (4.7)	94 (48.7)	2.96 (0.05)
	परास्नातक	12 (6.2)	25 (12.9)	47 (24.3)	8 (4.1)	7 (3.6)	99 (51.3)	

तालिका सं0 4.78 : प्रश्न संख्या 15 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

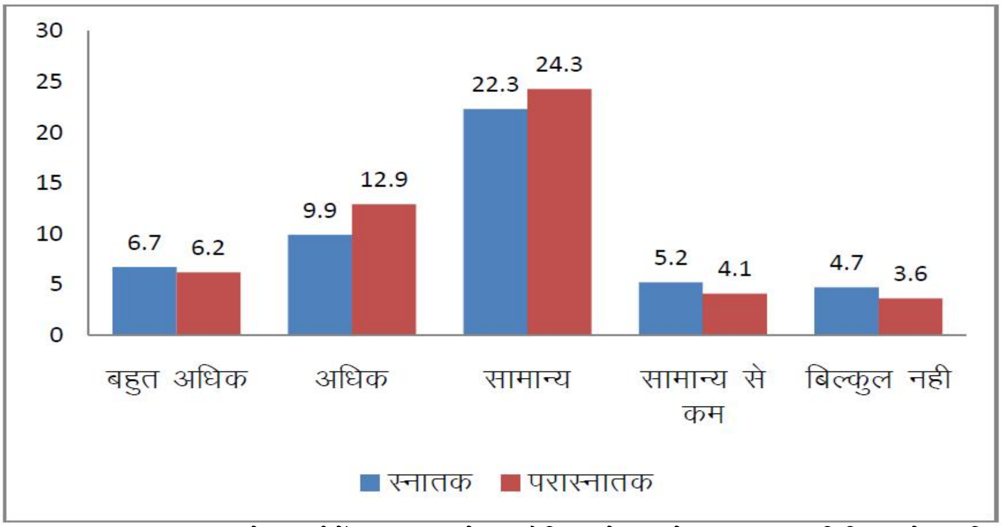

ग्राफ सं0 4.77 : प्रश्न संख्या 15 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

शैक्षिक योग्यता के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 48.7 प्रतिशत स्नातक विद्यार्थियों मे से 6.7 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बहुत अधिक, 9.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 22.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि स्नातक वर्ग के अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार उनके सामुदायिक रेडियो पर प्रधानमंत्री के "मन की बात" का कार्यक्रम सामाजिक सद्भाव एवं शैक्षिक जागरुकता के लिए प्रेरित करता है। इसी प्रकार कुल 51.3 प्रतिशत परास्नातक विद्यार्थियों में से 6.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 12.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 24.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि परास्नातक वर्ग के अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार उनके सामुदायिक रेडियो पर प्रधानमंत्री के मन की बात" का कार्यक्रम सामाजिक सद्भाव एवं शैक्षिक जागरुकता के लिए प्रेरित करता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.96 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् स्नातक एंव परास्नातक वर्ग के विद्यार्थियो में मन की बात कार्यक्रम के सामाजिक सद्भाव एवं शैक्षिक जागरुकता के लिए प्रेरित करने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

विषय वर्ग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
विषय वर्ग	कला	14 (7.2)	26 (13.5)	49 (25.4)	4 (2.1)	5 (2.6)	98 (50.8)	4.06 (0.05)
	विज्ञान	11 (5.7)	18 (9.3)	41 (21.3)	14 (7.2)	11 (5.7)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.79 : प्रश्न संख्या 15 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

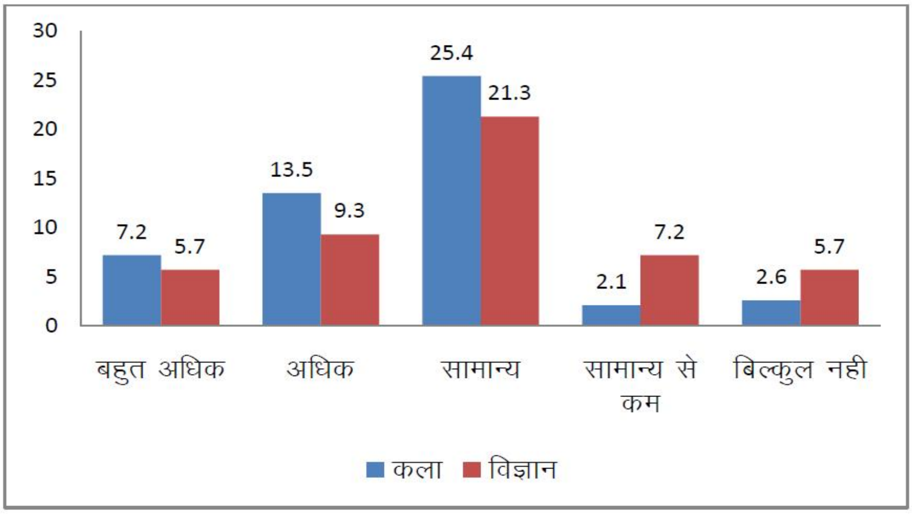

ग्राफ सं0 4.78 : प्रश्न संख्या 15 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

विषय वर्ग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कला विषय के कुल 50.8 प्रतिशत में से 7.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 13.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 25.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नही में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि कला विषय वर्ग के अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार उनके सामुदायिक रेडियो पर प्रधानमंत्री के "मन की बात" का कार्यक्रम सामाजिक सद्भाव एवं शैक्षिक जागरुकता के लिए प्रेरित करता है। इसी प्रकार विज्ञान विषय वर्ग के कुल 49.2 प्रतिशत में से 5.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 9.3 विद्यार्थियों ने अधिक, 21.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 7.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 5.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि विज्ञान वर्ग के अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार उनके सामुदायिक रेडियो पर प्रधानमंत्री के मन की बात का कार्यक्रम सामाजिक सद्भाव एवं शैक्षिक जागरुकता के लिए प्रेरित करता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 4.06 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् कला एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में मन की बात कार्यक्रम के सामाजिक सद्भाव एवं शैक्षिक जागरुकता के लिए प्रेरित करने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	7 (3.6)	11 (5.7)	20 (10.4)	8 (4.1)	9 (4.7)	55 (28.5)	4.26 (0.05)
	शहरी	18 (9.3)	33 (17.1)	70 (36.3)	10 (5.2)	7 (3.6)	138 (71.5)	

तालिका सं0 4.80 : प्रश्न संख्या 15 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

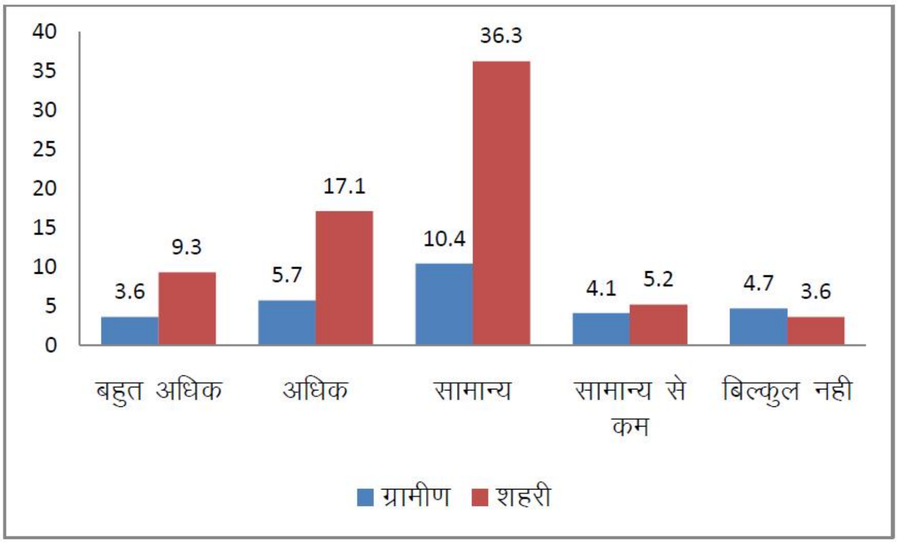

ग्राफ सं0 4.79 : प्रश्न संख्या 15 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 28.5 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों मे से 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 5.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 10.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण पृष्ठभूमि के अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार उनके सामुदायिक रेडियो पर प्रधानमंत्री के "मन की बात" का कार्यक्रम सामाजिक सद्भाव एवं शैक्षिक जागरुकता के लिए प्रेरित करता है। इसी प्रकार कुल 71.5 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों में से 9.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 17.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 36.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियो ने सामान्य से कम तथा 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर नही दिया है। अतः स्पष्ट है कि शहरी पृष्ठभूमि के अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार उनके सामुदायिक रेडियो पर प्रधानमंत्री के मन की बात का कार्यक्रम सामाजिक सद्भाव एवं शैक्षिक जागरुकता के लिए प्रेरित करता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 4.26 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों मे मन की बात कार्यक्रम के सामाजिक सद्भाव एवं शैक्षिक जागरुकता के लिए प्रेरित करने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

प्रश्न -16 क्या आप के सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले शैक्षिक कार्यक्रम रोचक होते है?

प्रस्तुत प्रश्न के संदर्भ में विद्यार्थियों द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नांकित तालिका एवं ग्राफ के अनुसार प्रस्तुत है-

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर					योग	कुल योग
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	7	7	23	50	11	98	193
	छात्रा	4	12	18	49	12	95	
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	5	10	17	50	12	94	193
	परास्नातक	6	9	24	49	11	99	
विषय वर्ग	कला	7	12	21	48	10	98	193
	विज्ञान	4	7	20	51	13	95	
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	3	4	7	35	6	55	193
	शहरी	8	15	34	64	17	138	
आवृत्ति		11	19	41	99	23	193	193
प्रतिशत		5.7	9.9	21.2	51.3	11.9	100	100

तालिका सं0 4.81: प्रश्न संख्या 16 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

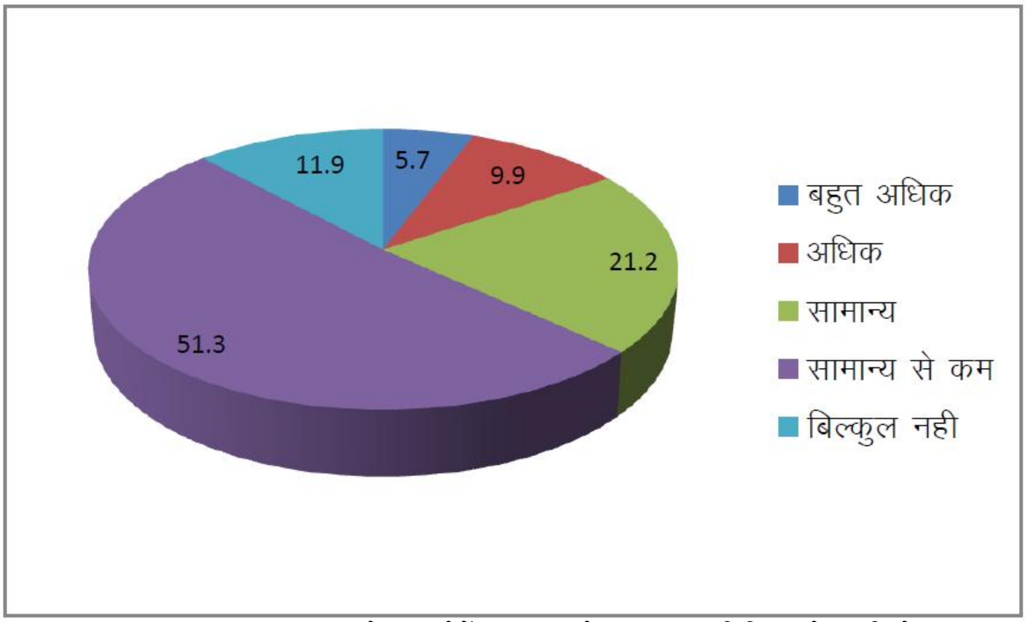

ग्राफ सं0 4.80: प्रश्न संख्या 16 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रश्न में उत्तरदाताओं की कुल संख्या के 5.7 प्रतिशत ने बहुत अधिक, 9.9 प्रतिशत ने अधिक, 21.2 प्रतिशत ने सामान्य, 51.3 प्रतिशत ने सामान्य से कम तथा 11.9 प्रतिशत ने बिल्कुल नहीं पर अपना मत व्यस्त किया है। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले शैक्षिक कार्यकमो में रोचकता का अभाव है।

लिंग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	7 (3.6)	7 (3.6)	23 (11.9)	50 (25.9)	11 (5.7)	98 (50.8)	2.24 (0.05)
	छात्रा	4 (2.1)	12 (6.2)	18 (9.3)	49 (25.4)	12 (6.2)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.82 : प्रश्न संख्या 16 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

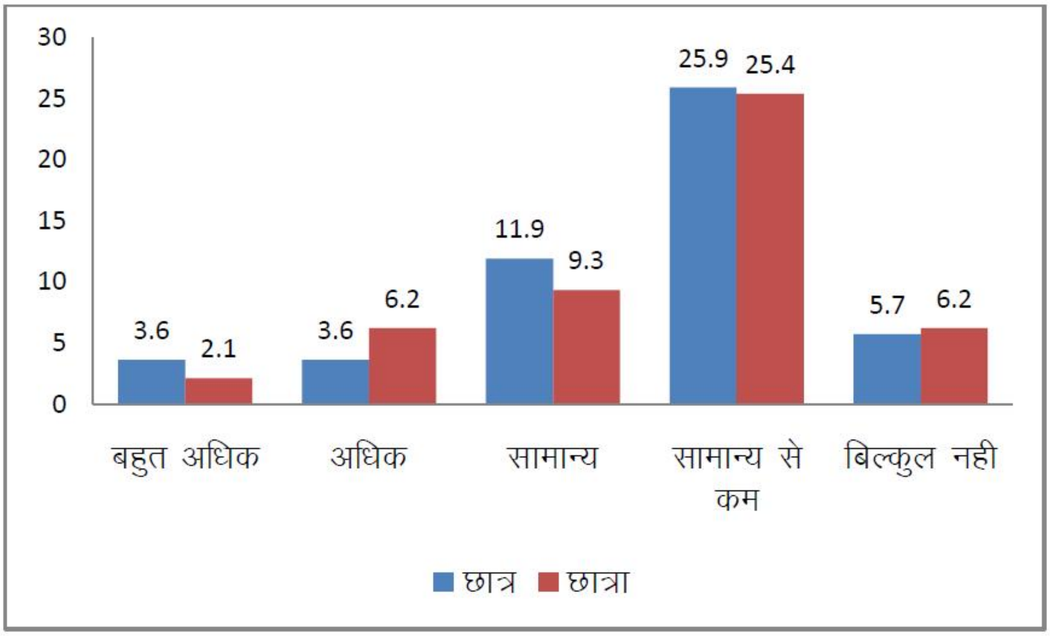

ग्राफ सं0 4.81 : प्रश्न संख्या 16 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

लिंग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल 50.8 प्रतिशत छात्रों में से 3.6 प्रतिशत छात्रों ने बहुत अधिक, 3.6 प्रतिशत छात्रों ने अधिक, 11.9 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य, 25.9 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य से कम तथा 5.7 प्रतिशत छात्रों ने बिल्कुल नही मे उत्तर दिया है। अतः यह स्पष्ट है कि अधिकतर छात्रों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में रोचकता की कमी है। इसी प्रकार कुल 49.2 प्रतिशत छात्राओं में से 2.1 प्रतिशत छात्राओं ने बहुत अधिक, 6.2 प्रतिशत छात्राओं ने अधिक, 9.3 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य, 25.4 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य से कम तथा 6.2 प्रतिशत छात्राओं ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्राओं के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में रोचकता की कमी है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.24 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं में कार्यक्रमों की रोचकता सम्बन्ध में कोई सार्थक अंतर नही है।

शैक्षिक योग्यता के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	5 (2.6)	10 (5.2)	17 (8.8)	50 (25.9)	12 (6.2)	94 (48.7)	2.60 (0.05)
	परास्नातक	6 (3.1)	9 (4.7)	24 (12.4)	49 (25.4)	11 (5.7)	99 (51.3)	

तालिका सं0 4.83 : प्रश्न संख्या 16 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

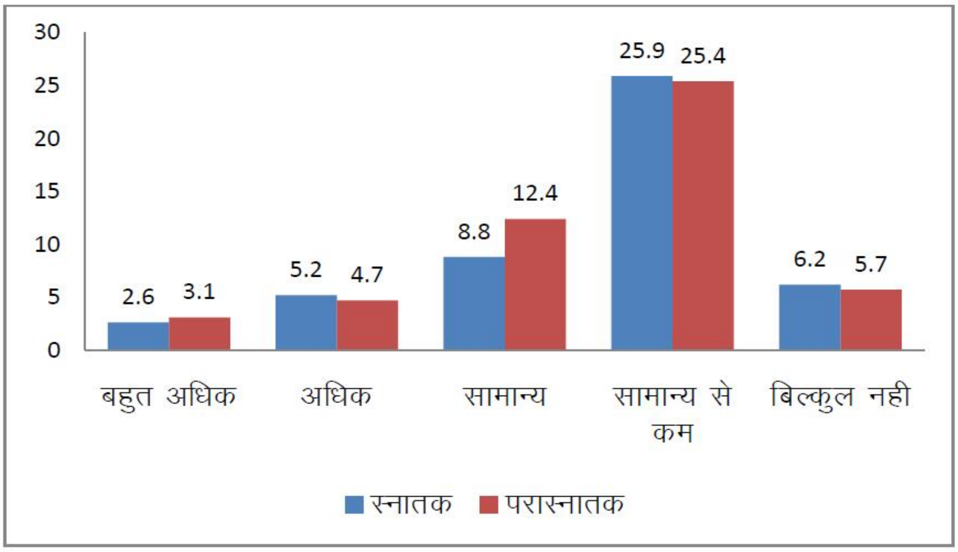

ग्राफ सं0 4.82 : प्रश्न संख्या 16 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

शैक्षिक योग्यता के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 48.7 प्रतिशत स्नातक विद्यार्थियों मे से 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 8.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 25.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 6.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि स्नातक वर्ग के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में रोचकता की कमी है। इसी प्रकार कुल 51.3 प्रतिशत परास्नातक विद्यार्थियों में से 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 12.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 25.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 5.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि परास्नातक वर्ग के विद्यार्थीयों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में रोचकता की कमी है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.60 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् स्नातक एंव परास्नातक विद्यार्थियों में कार्यक्रमों की रोचकता के संदर्भ में कोई सार्थक अंतर नही है।

विषय वर्ग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
विषय वर्ग	कला	7 (3.6)	12 (6.2)	21 (10.9)	48 (24.9)	10 (5.2)	98 (50.8)	1.99 (0.05)
	विज्ञान	4 (2.1)	7 (3.6)	20 (10.4)	51 (25.9)	13 (6.7)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.84 : प्रश्न संख्या 16 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

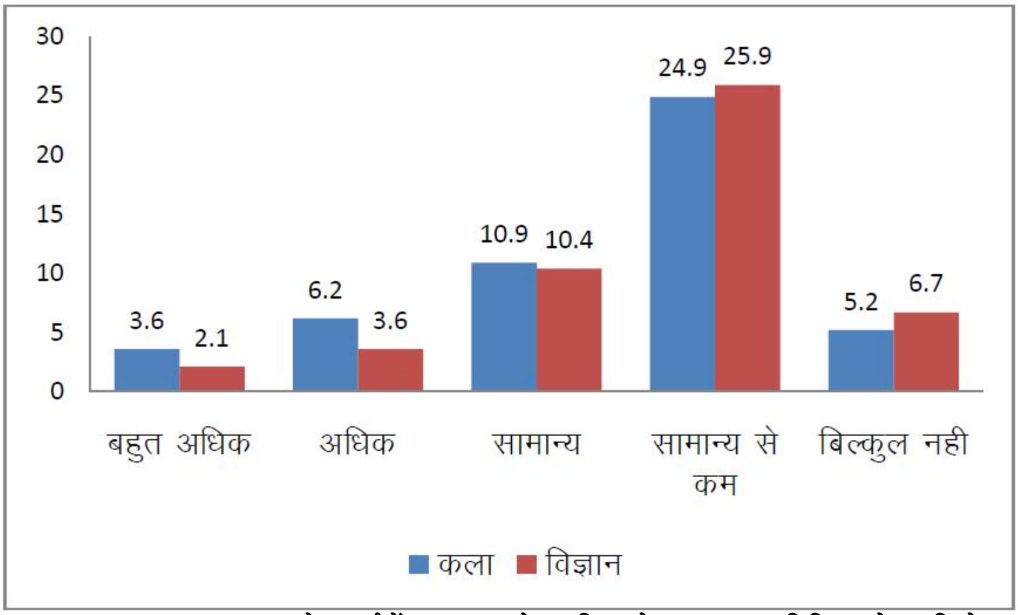

ग्राफ सं0 4.83 : प्रश्न संख्या 16 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

विषय वर्ग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कला विषय के कुल 50.8 प्रतिशत में से 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 6.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 10.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 24.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नही में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि कला विषय वर्ग के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में रोचकता की कमी है। इसी प्रकार विज्ञान विषय वर्ग के कुल 49.2 प्रतिशत विद्यार्थियों में से 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 3.6 विद्यार्थियों ने अधिक, 10.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 25.9 विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 6.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि विज्ञान विषय वर्ग के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में रोचकता की कमी है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 1.99 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् कला एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में रोचकता में कोई सार्थक अंतर नही है।

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	3 (1.6)	4 (2.1)	7 (3.6)	35 (18.2)	6 (3.1)	55 (28.5)	2.78 (0.05)
	शहरी	8 (4.1)	15 (7.8)	34 (17.6)	64 (33.2)	17 (8.8)	138 (71.5)	

तालिका सं0 4.85 : प्रश्न संख्या 16 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

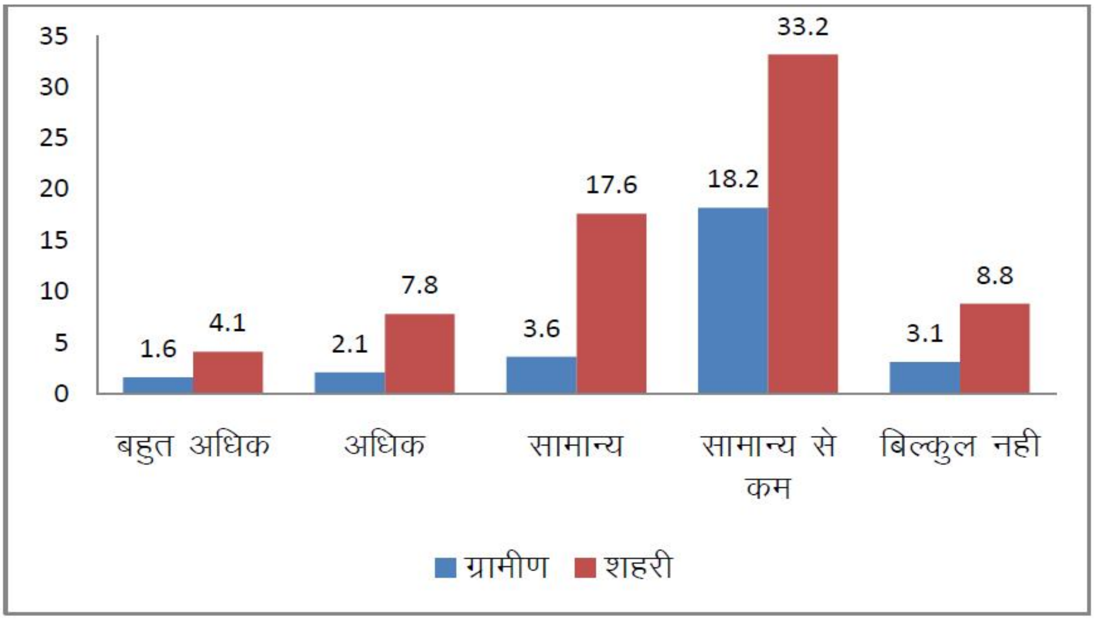

ग्राफ सं0 4.84 : प्रश्न संख्या 16 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 28.5 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों मे से 1.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 18.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में रोचकता की कमी है। इसी प्रकार कुल 71.5 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों में से 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 7.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 17.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 33.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 8.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर नही दिया है। अतः स्पष्ट है कि शहरी विद्यार्थियो के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वालेकार्यक्रमों में रोचकता की कमी है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.78 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियो में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में रोचकता के सम्बन्ध में सार्थक अंतर नही है।

प्रश्न -17 क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कला एवं मानविकी विषयों के कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण रोचक होता है?

प्रस्तुत प्रश्न के संदर्भ में विद्यार्थियों द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नांकित तालिका एवं ग्राफ के अनुसार प्रस्तुत है।

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर					योग	कुल योग
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	7	7	23	50	11	98	193
	छात्रा	4	12	18	49	12	95	
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	5	10	17	50	12	94	193
	परास्नातक	6	9	24	49	11	99	
विषय वर्ग	कला	7	12	21	48	10	98	193
	विज्ञान	4	7	20	51	13	95	
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	3	4	7	35	6	55	193
	शहरी	8	15	34	64	17	138	
आवृत्ति		11	19	41	99	23	193	193
प्रतिशत		5.7	9.9	21.2	51.3	11.9	100	100

तालिका सं0 4.86: प्रश्न संख्या 17 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

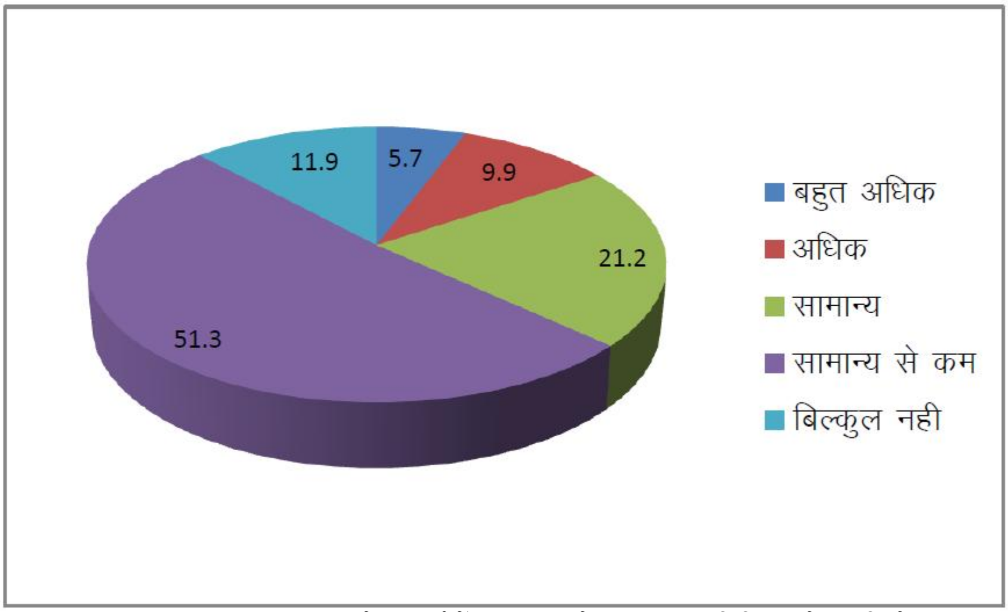

ग्राफ सं0 4.85: प्रश्न संख्या 17 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रश्न में उत्तरदाताओं की कुल संख्या के 5.7 प्रतिशत ने बहुत अधिक, 9.9 प्रतिशत ने अधिक, 21.2 प्रतिशत ने सामान्य, 51.3 प्रतिशत ने सामान्य से कम तथा 11.9 प्रतिशत ने बिल्कुल नहीं पर अपना मत व्यक्त किया है। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कला एवं मानविकी विषयो के कार्यक्रमों के प्रस्तुतीकरण में रोचकता का अभाव है।

लिंग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	7 (3.6)	7 (3.6)	23 (11.9)	50 (25.9)	11 (5.7)	98 (50.8)	6.40 (0.05)
	छात्रा	4 (2.1)	12 (6.2)	18 (9.3)	49 (25.4)	12 (6.2)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.87 : प्रश्न संख्या 17 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

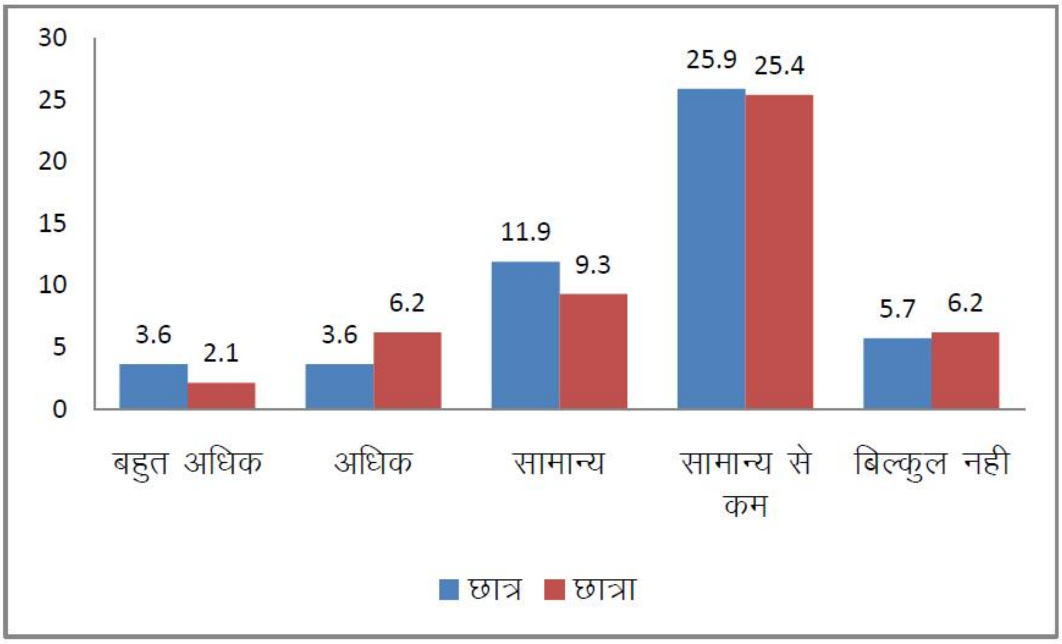

ग्राफ सं0 4.86 : प्रश्न संख्या 17 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

लिंग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल 50.8 प्रतिशत छात्रों में से 3.6 प्रतिशत छात्रो ने बहुत अधिक, 3.6 प्रतिशत छात्रों ने अधिक, 11.9 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य, 25.9 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य से कम तथा 5.7 प्रतिशत छात्रों ने बिल्कुल नही मे उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्रों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कला एवं मानविकी विषयो के कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण रोचक नही होता है। इसी प्रकार कुल 49.2 प्रतिशत छात्राओं में से 2.1 प्रतिशत छात्राओं ने बहुत अधिक, 6.2 प्रतिशत छात्राओं ने अधिक, 9.3 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य, 25.4 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य से कम तथा 6.2 प्रतिशत छात्राओं ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि छात्राओं के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कला एवं मानविकी विषयो के कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण रोचक नही होता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 6.40 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कला एवं मानविकी विषयों के कार्यक्रमों के प्रस्तुतीकरण में रोचक होने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शैक्षिक योग्यता के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	5 (2.6)	10 (5.2)	17 (8.8)	50 (25.9)	12 (6.2)	94 (48.7)	2.36 (0.05)
	परास्नातक	6 (3.1)	9 (4.7)	24 (12.4)	49 (25.4)	11 (5.7)	99 (51.3)	

तालिका सं0 4.88 : प्रश्न संख्या 17 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

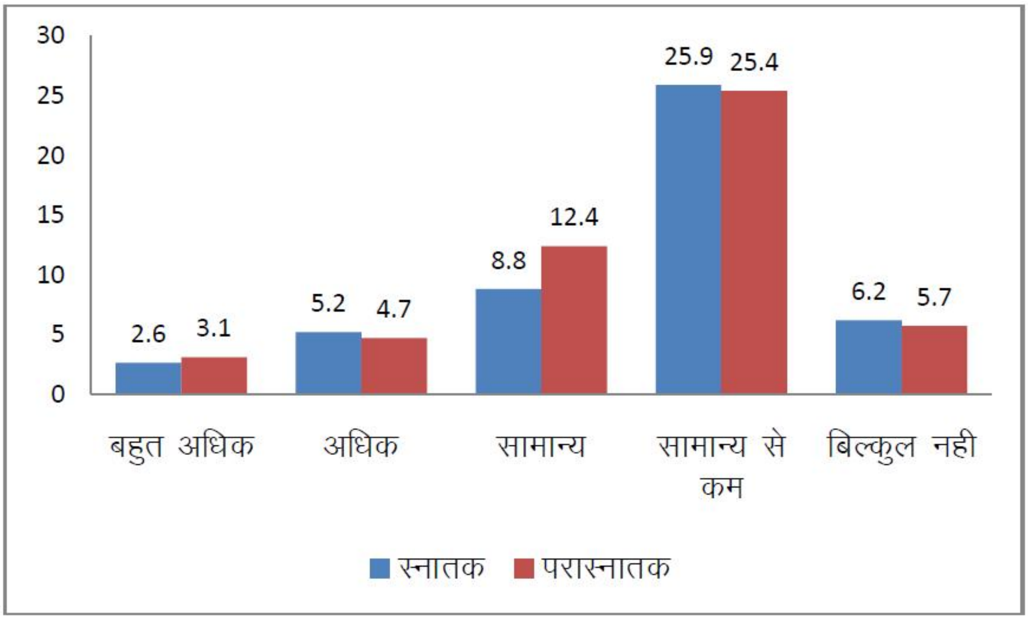

ग्राफ सं0 4.87 : प्रश्न संख्या 17 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

शैक्षिक योग्यता के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 48.7 प्रतिशत स्नातक विद्यार्थियों में से 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 8.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 25.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 6.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि स्नातक वर्ग के अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कला एवं मानविकी विषयों के कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण रोचक नही होता है। इसी प्रकार कुल 51.3 प्रतिशत परास्नातक विद्यार्थियो में से 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 12.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 25.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 5.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि परास्नातक वर्ग के अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कला एवं मानविकी विषयो के कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण रोचक नही होता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.36 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् स्नातक एंव परास्नातक वर्ग के विद्यार्थियो में कार्यक्रमों के प्रस्तुतीकरण के रोचक होने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

विषय वर्ग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
विषय वर्ग	कला	7 (3.6)	12 (6.2)	21 (10.9)	48 (24.9)	10 (5.2)	98 (50.8)	3.14 (0.05)
	विज्ञान	4 (2.1)	7 (3.6)	20 (10.4)	51 (26.4)	13 (6.7)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.89 : प्रश्न संख्या 17 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

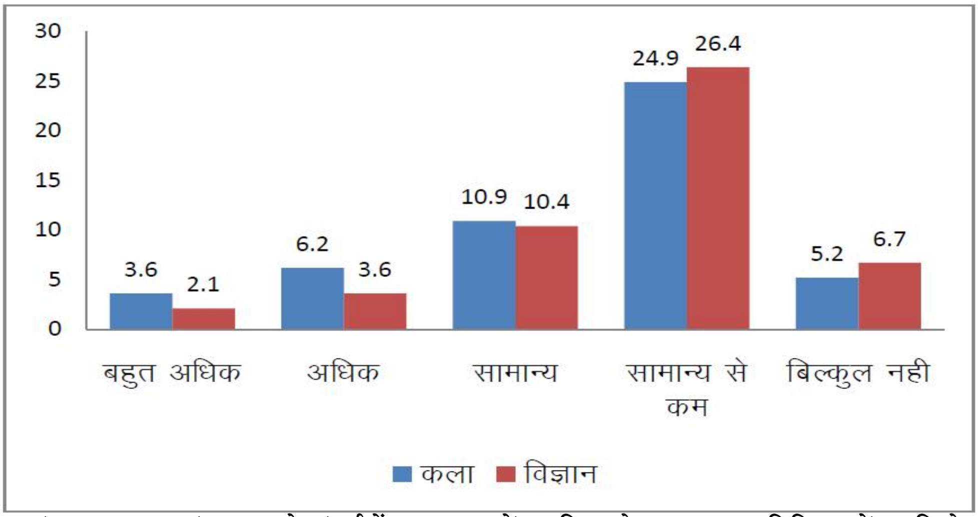

ग्राफ सं0 4.88 : प्रश्न संख्या 17 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

विषय वर्ग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कला विषय के कुल 50.8 प्रतिशत विद्यार्थियों में से 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 6.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 10.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 24.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नही में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि कला विषय वर्ग के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कला एवं मानविकी विषयों के कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण रोचक नही होता है। इसी प्रकार विज्ञान विषय वर्ग के कुल 49.2 प्रतिशत विद्यार्थियों में से 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 3.6 विद्यार्थियो ने अधिक, 10.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 26.4 विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 6.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कला एवं मानविकी विषयो के कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण रोचक नही होता है।

संख्यकीय विश्लेषण से काई वर्ग का मान 3.14 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् कला एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कला एवं कला विषयो के कार्यक्रमों के प्रस्तुतीकरण रोचक होने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	3 (1.6)	4 (2.1)	7 (3.6)	35 (18.2)	6 (3.1)	55 (28.5)	4.06 (0.05)
	शहरी	8 (4.1)	15 (7.8)	34 (17.6)	64 (33.2)	17 (8.8)	138 (71.5)	

तालिका सं0 4.90 : प्रश्न संख्या 17 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

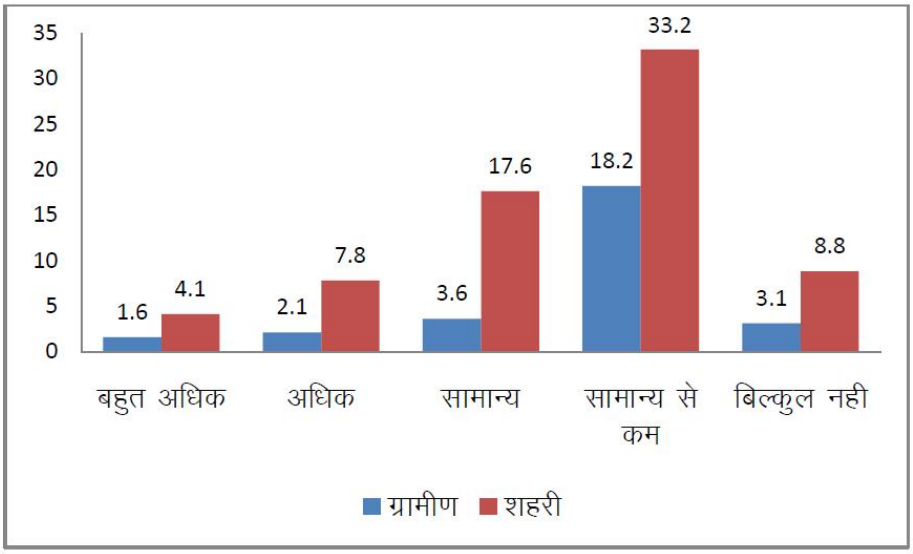

ग्राफ सं0 4.89 : प्रश्न संख्या 17 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 28.5 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों में से 1.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 18.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर ग्रामीण वर्ग के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कला एवं मानविकी विषयों के कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण रोचक नही होता है। इसी प्रकार कुल 71.5 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों में से 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 7.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 17.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 33.2 प्रतिशत विद्यार्थियो ने सामान्य से कम तथा 7.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि शहरी वर्ग के विद्यार्थियो के अनुसारसामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कला एवं मानविकी विषयो के कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण रोचक नही होता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 4.06 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियो में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कला एवं मानविकी विषयों के कार्यक्रमों के प्रस्तुतीकरण के रोचक होने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

प्रश्न -18 क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले विज्ञान एंव तकनीकी विषयों के कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण रोचक होता है?

प्रस्तुत प्रश्न के संदर्भ में विद्यार्थियों द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नांकित तालिका एवं ग्राफ के अनुसार प्रस्तुत है।

चर	**श्रेणी**	**प्रत्युत्तर**					**योग**	**कुल योग**
		बहुत अधिक	**अधिक**	**सामान्य**	**सामान्य से कम**	**बिल्कुल नही**		
लिंग	छात्र	7	8	15	27	41	98	193
	छात्रा	2	7	28	17	41	95	
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	4	8	18	21	43	94	193
	परास्नातक	5	7	25	23	29	99	
विषय वर्ग	कला	6	9	17	24	42	98	193
	विज्ञान	3	6	26	20	40	95	
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	3	4	5	10	33	55	193
	शहरी	6	11	38	34	49	138	
आवृत्ति		9	15	43	44	82	193	193
प्रतिशत		4.7	7.8	22.7	22.8	42.5	100	100

तालिका सं0 4.91: प्रश्न संख्या 18 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

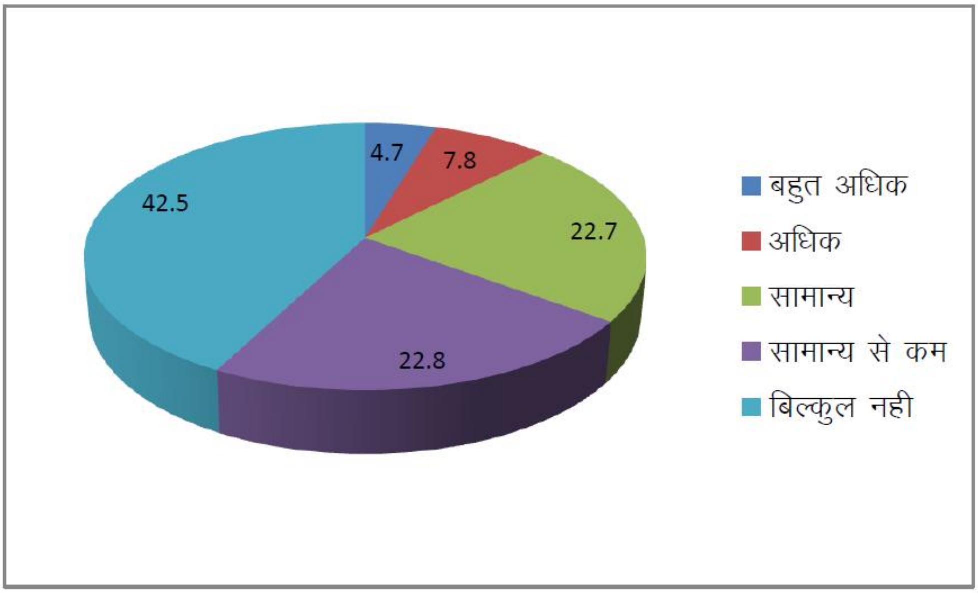

ग्राफ सं0 4.90: प्रश्न संख्या 18 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रश्न में उत्तरदाताओं की कुल संख्या के 4.7 प्रतिशत ने बहुत अधिक, 7.8 प्रतिशत ने अधिक, 22.7 प्रतिशत ने सामान्य, 22.8 प्रतिशत ने सामान्य से कम तथा 42.5 प्रतिशत ने बिल्कुल नहीं पर अपना मत व्यक्त किया है। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले विज्ञान एवं तकनीकी विषयों के कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण रोचक नही होता है।

लिंग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	7 (3.6)	8 (4.1)	15 (7.8)	27 (14.0)	41 (21.3)	98 (50.8)	5.24 (0.05)
	छात्रा	2 (1.03)	7 (3.6)	28 (14.5)	17 (8.8)	41 (21.3)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.92 : प्रश्न संख्या 18 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

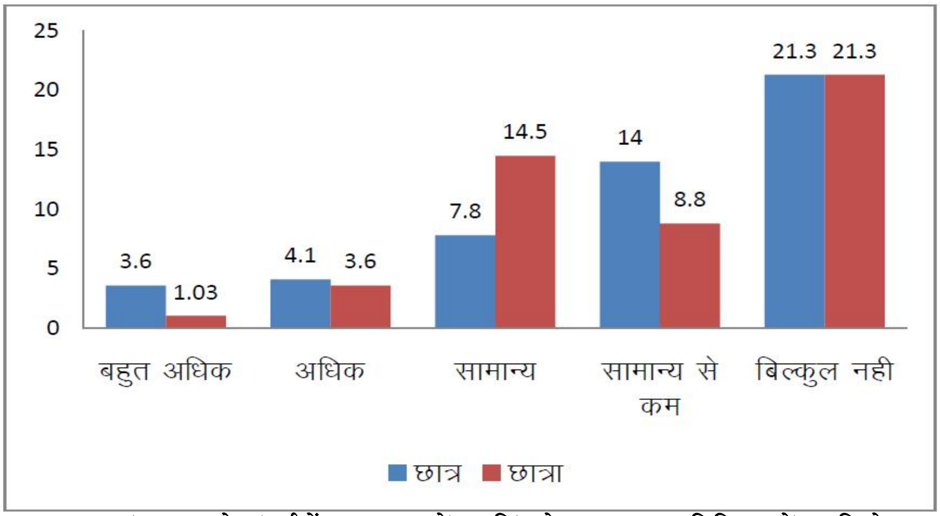

ग्राफ सं0 4.91 : प्रश्न संख्या 18 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

लिंग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल 50.8 प्रतिशत छात्रों में से 3.6 प्रतिशत छात्रों ने बहुत अधिक, 4.1 प्रतिशत छात्रों ने अधिक, 7.8 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य, 14.0 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य से कम तथा 21.3 प्रतिशत छात्रों ने बिल्कुल नही मे उत्तर दिया है अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्रों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले विज्ञान एवं तकनीकी विषयों के कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण रोचक नही होता है। इसी प्रकार कुल 49.2 प्रतिशत छात्राओं में से 1.03 प्रतिशत छात्राओं ने बहुत अधिक, 3.6 प्रतिशत छात्राओं ने अधिक, 14.5 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य, 8.8 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य से कम तथा 21.3 प्रतिशत छात्राओं ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्राओं के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले विज्ञान एवं तकनीकी विषयों के कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण रोचक नही होता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 5.24 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले विज्ञान एवं तकनीकी विषयों के कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण रोचक होने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शैक्षिक योग्यता के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	4 (2.1)	8 (4.1)	18 (9.3)	21 (10.9)	43 (22.3)	94 (48.7)	2.09 (0.05)
	परास्नातक	5 (2.6)	7 (3.6)	25 (12.6)	23 (11.9)	39 (20.17)	99 (51.3)	

तालिका सं0 4.93 : प्रश्न संख्या 18 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

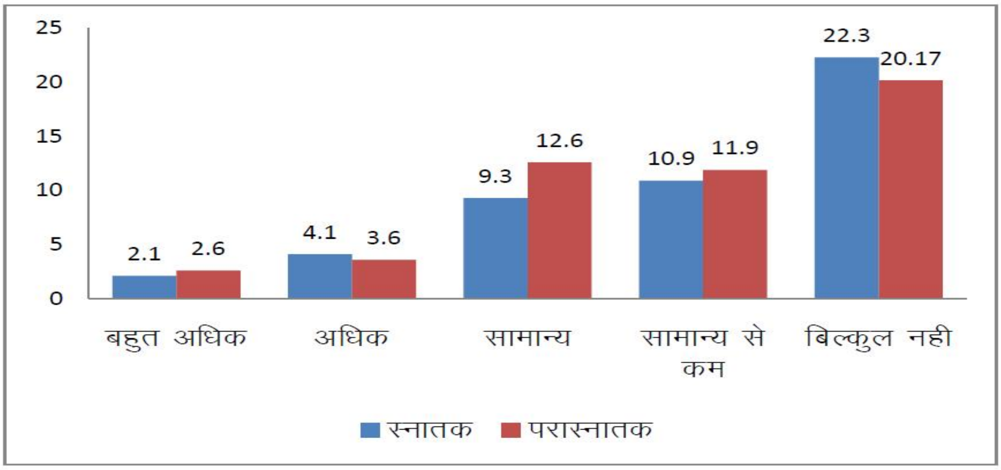

ग्राफ सं0 4.92 : प्रश्न संख्या 18 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

शैक्षिक योग्यता के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 48.7 प्रतिशत स्नातक विद्यार्थियों में से 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 9.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 10.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 22.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि स्नातक वर्ग के विद्यार्थीयो के अनुसार अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले विज्ञान एवं तकनीकी विषयों के कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण रोचक नही होता है। इसी प्रकार कुल 51.3 प्रतिशत परास्नातक विद्यार्थियो में से 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 12.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 11.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 20.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि परास्नातक वर्ग के अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले विज्ञान एवं तकनीकी विषयों के कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण रोचक नही होता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.09 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् स्नातक एंव परास्नातक वर्ग के विद्यार्थियो में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले विज्ञान एवं तकनीकी विषयों के कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण रोचक होने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

विषय वर्ग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
विषय वर्ग	कला	6 (3.1)	9 (4.7)	17 (8.8)	24 (12.4)	42 (21.8)	98 (50.8)	3.24 (0.05)
	विज्ञान	3 (1.6)	6 (3.1)	26 (13.5)	20 (10.4)	40 (20.8)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.94 : प्रश्न संख्या 18 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

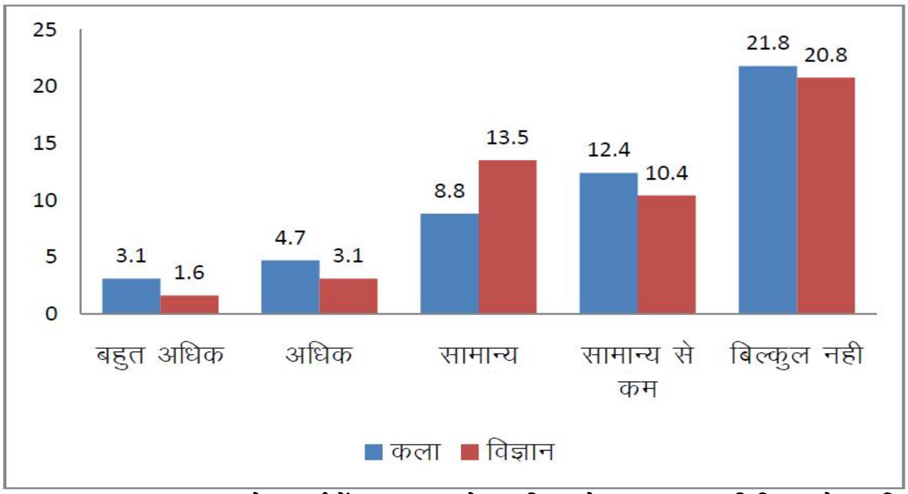

ग्राफ सं0 4.93 : प्रश्न संख्या 18 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

विषय वर्ग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कला विषय के कुल 50.8 प्रतिशत विद्यार्थियों में से 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 8.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 12.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 21.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नही में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि कला विषय वर्ग के अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले विज्ञान एवं तकनीकी विषयों के कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण रोचक नही होता है। इसी प्रकार विज्ञान विषय वर्ग के कुल 49.2 प्रतिशत विद्यार्थियों में से 1.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 3.1विद्यार्थियों ने अधिक, 13.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 10.4 विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 20.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि विज्ञान वर्ग के अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले विज्ञान एवं तकनीकी विषयों के कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण रोचक नही होता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 3.24 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् कला एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले विज्ञान एवं तकनीकी विषयों के कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण रोचक होने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	3 (1.6)	4 (2.1)	5 (2.6)	10 (5.2)	33 (17.1)	55 (28.5)	4.26 (0.05)
	शहरी	6 (3.1)	11 (5.7)	38 (19.7)	34 (17.6)	49 (25.4)	138 (71.5)	

तालिका सं0 4.95 : प्रश्न संख्या 18 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

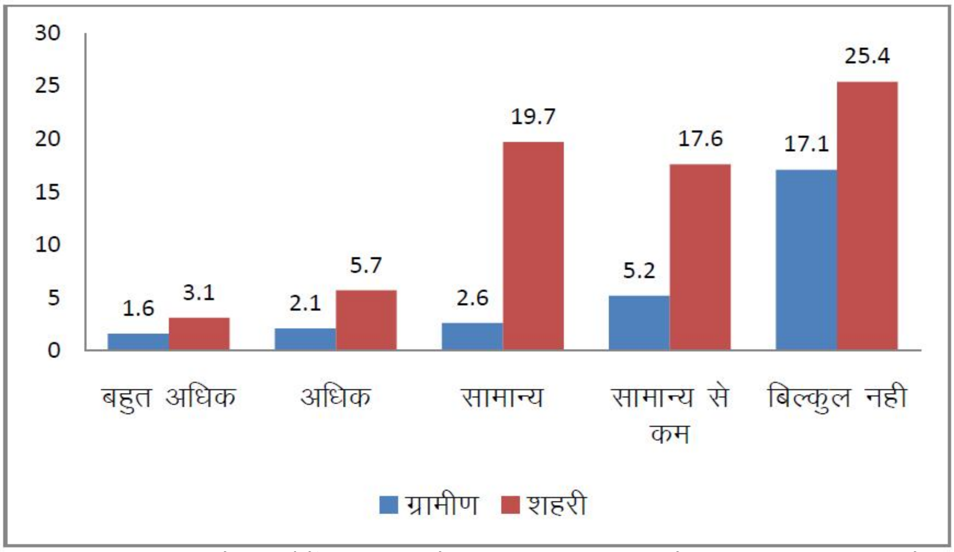

ग्राफ सं0 4.94 : प्रश्न संख्या 18 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 28.5 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों मे से 1.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 17.1 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण पृष्ठभूमि के अधिकंश विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले विज्ञान एवं तकनीकी विषयों के कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण रोचक नही होता है। इसी प्रकार कुल 71.5 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों में से 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 5.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 19.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 17.6 प्रतिशत विद्यार्थियो ने सामान्य से कम तथा 25.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर नही दिया है। अतः स्पष्ट है कि शहरी पृष्ठभूमि के अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले विज्ञान एवं तकनीकी विषयों के कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण रोचक नही होता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 4.26 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले विज्ञान एवं तकनीकी विषयों के कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण रोचक होने के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

प्रश्न -19 क्या आपके सामुदायिक रेडियो का प्रसारण तकनीकी व्यवधान के कारण बाधित होने पर आपकी पढ़ाई पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है?

प्रस्तुत प्रश्न के संदर्भ में विद्यार्थियों द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नांकित तालिका एवं ग्राफ के अनुसार प्रस्तुत है।

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर					योग	कुल योग
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	44	23	13	10	8	98	193
	छात्रा	44	13	26	9	3	95	
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	46	17	16	10	5	94	193
	परास्नातक	42	19	23	9	6	99	
विषय वर्ग	कला	45	20	15	11	7	98	193
	विज्ञान	43	16	24	18	4	95	
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	36	6	3	6	4	55	193
	शहरी	52	30	36	13	7	138	
आवृत्ति		88	36	39	19	11	193	193
प्रतिशत		45.6	18.7	20.1	9.9	5.7	100	100

तालिका सं0 4.96: प्रश्न संख्या 19 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

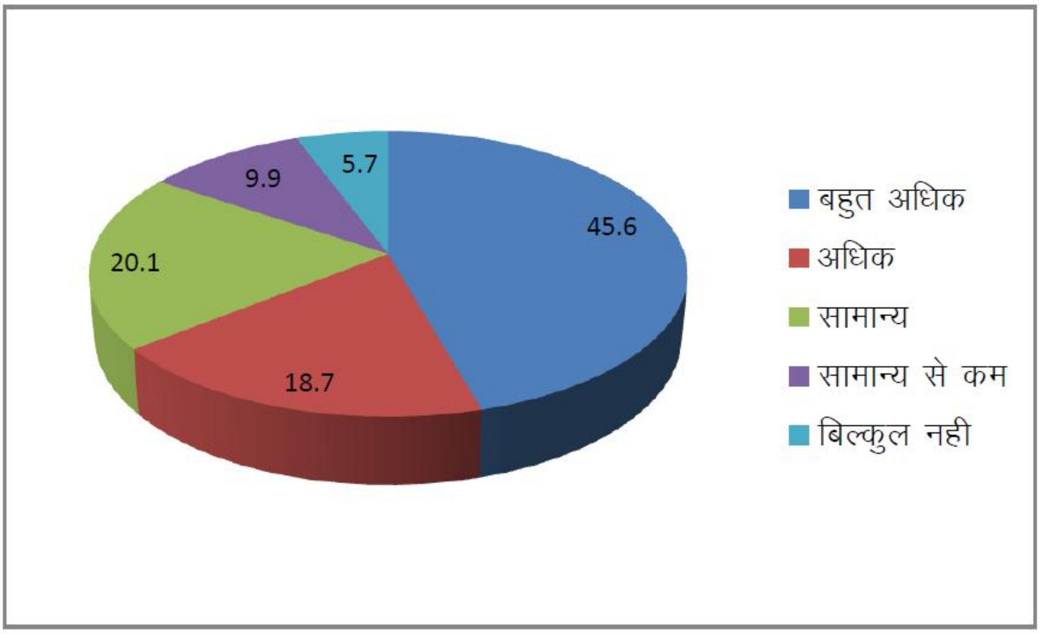

ग्राफ सं0 4.95: प्रश्न संख्या 19 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रश्न में उत्तरदाताओं की कुल संख्या के 45.6 प्रतिशत ने बहुत अधिक, 18.7 प्रतिशत ने अधिक, 20.1 प्रतिशत ने सामान्य, 9.9 प्रतिशत ने सामान्य से कम तथा 5.7 प्रतिशत ने बिल्कुल नहीं पर अपना मत व्यक्त किया है। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो में तकनीकी व्यवधान के कारण प्रसारण बाधित होने पर पढ़ाई पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

लिंग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	44 (22.8)	23 (11.9)	13 (6.7)	10 (5.2)	8 (4.1)	98 (50.8)	9.24 (0.05)
	छात्रा	44 (22.8)	13 (6.7)	26 (13.5)	9 (4.7)	3 (1.6)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.97 : प्रश्न संख्या 19 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

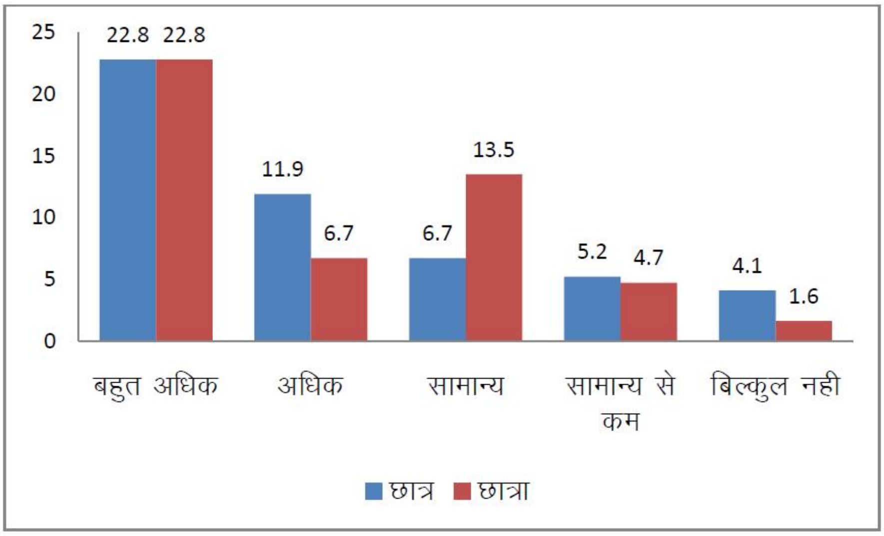

ग्राफ सं0 4.96 : प्रश्न संख्या 19 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

लिंग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल 50.8 प्रतिशत छात्रों में से 22.8 प्रतिशत छात्रो ने बहुत अधिक, 11.9 प्रतिशत छात्रों ने अधिक, 6.7 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य, 5.2 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य से कम तथा 4.1 प्रतिशत छात्रों ने बिल्कुल नही मे उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्रों के अनुसार सामुदायिक रेडियो में तकनीकी व्यवधान के कारण प्रसारण बाधित होने पर पढ़ाई पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार कुल 49.2 प्रतिशत छात्राओं में से 22.8 प्रतिशत छात्राओं ने बहुत अधिक, 6.7 प्रतिशत छात्राओं ने अधिक, 13.5 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य, 4.7 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य से कम तथा 1.6 प्रतिशत छात्राओं ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्राओं के अनुसार सामुदायिक रेडियो में तकनीकी व्यवधान के कारण प्रसारण बाधित होने पर पढ़ाई पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 9.24 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं में सामुदायिक रेडियो में तकनीकी व्यवधान के कारण प्रसारण बाधित होने पर पढ़ाई पर नकारात्मक प्रभाव के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शैक्षिक योग्यता के आधार पर

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	46 (23.8)	17 (8.8)	16 (8.3)	10 (5.2)	5 (2.6)	94 (48.7)	2.14 (0.05)
	परास्नातक	42 (21.8)	19 (9.9)	23 (11.9)	9 (4.7)	6 (3.1)	99 (51.3)	

तालिका सं0 4.98 : प्रश्न संख्या 19 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

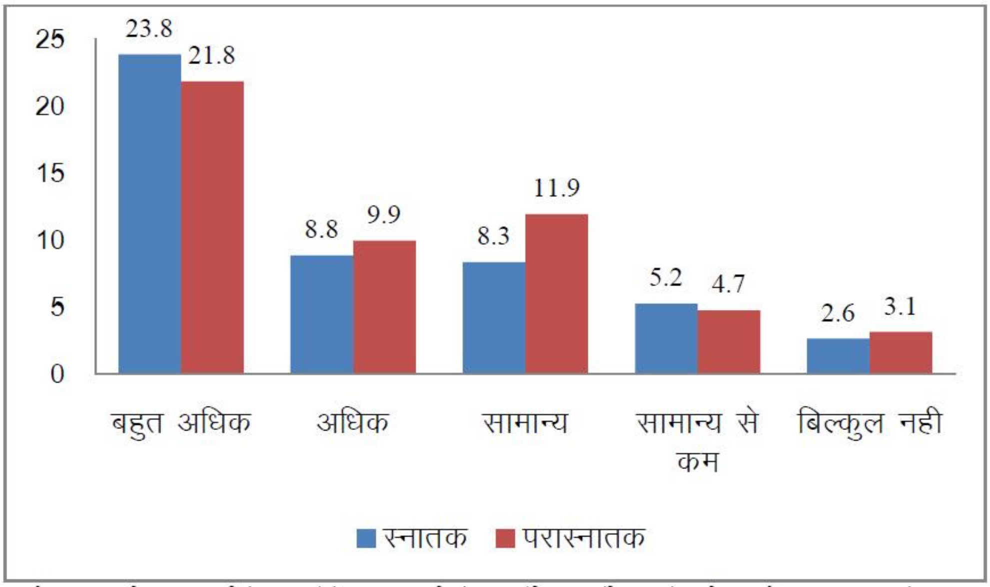

ग्राफ सं0 4.97 : प्रश्न संख्या 19 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

शैक्षिक योग्यता के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 48.7 प्रतिशत स्नातक विद्यार्थियों मे से 23.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 8.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 8.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि स्नातक वर्ग के अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो में तकनीकी व्यवधान के कारण प्रसारण बाधित होने पर पढ़ाई पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार कुल 51.3 प्रतिशत परास्नातक विद्यार्थियो में से 21.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 9.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 11.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि परास्नातक वर्ग केअधिकांश विद्यार्थीयों के अनुसार सामुदायिक रेडियो में तकनीकी व्यवधान के कारण प्रसारण बाधित होने पर पढ़ाई पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.14 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् स्नातक एंव परास्नातक वर्ग के विद्यार्थियो में सामुदायिक रेडियो में तकनीकी व्यवधान के कारण प्रसारण बाधित होने पर पढ़ाई पर नकारात्मक प्रभाव के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

विषय वर्ग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
विषय वर्ग	कला	45 (23.3)	20 (10.4)	15 (7.8)	11 (5.7)	7 (3.6)	98 (50.8)	3.24 (0.05)
	विज्ञान	43 (22.3)	16 (8.3)	24 (12.4)	8 (4.1)	4 (2.1)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.99 : प्रश्न संख्या 19 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

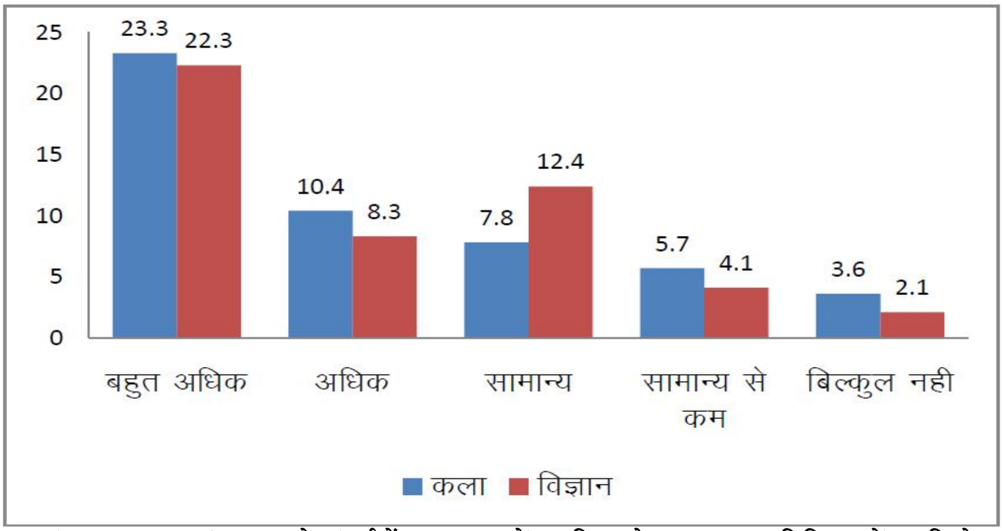

ग्राफ सं0 4.98 : प्रश्न संख्या 19 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

विषय वर्ग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कला विषय वर्ग के कुल 50.8 प्रतिशत में से 23.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 10.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 7.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 5.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नही में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि कला विषय वर्ग के अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो में तकनीकी व्यवधान के कारण प्रसारण बाधित होने पर पढ़ाई पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार विज्ञान विषय वर्ग के कुल 49.2 प्रतिशत विद्यार्थियों में से 22.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 8.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 12.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 4.1 विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि विज्ञान वर्ग के अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो में तकनीकी व्यवधान के कारण प्रसारण बाधित होने पर पढ़ाई पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 3.24 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् कला एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों मे सामुदायिक रेडियो में तकनीकी व्यवधान के कारण प्रसारण बाधित होने पर पढ़ाई पर नकारात्मक प्रभाव के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	36 (18.7)	6 (3.1)	3 (1.6)	6 (3.1)	4 (2.1)	55 (28.5)	5.36 (0.05)
	शहरी	52 (26.9)	30 (15.5)	36 (18.7)	13 (6.7)	7 (3.6)	138 (71.5)	

तालिका सं0 4.100 : प्रश्न संख्या 19 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

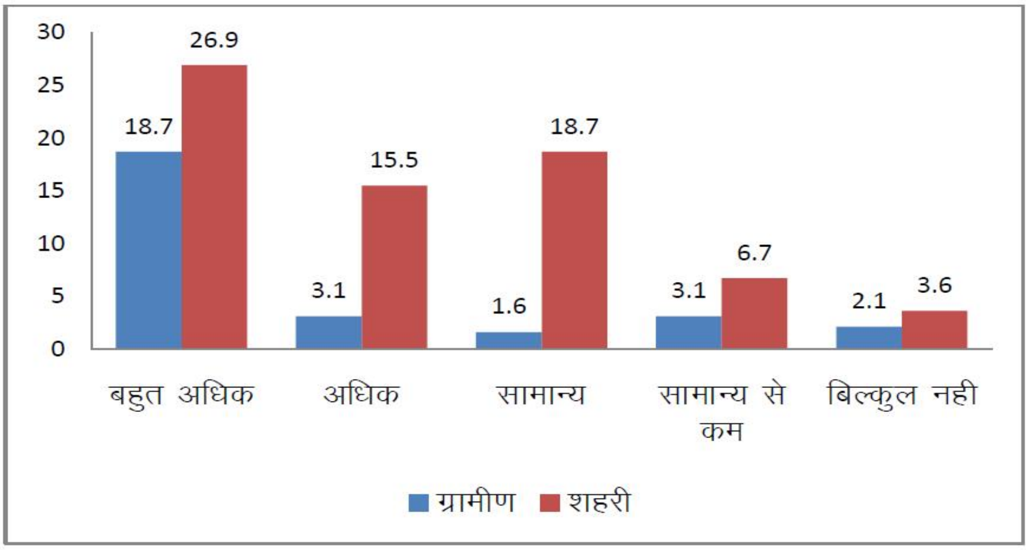

ग्राफ सं0 4.99 : प्रश्न संख्या 19 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 28.5 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों मे से 18.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 1.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण पृष्ठभूमि के अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो में तकनीकी व्यवधान के कारण प्रसारण बाधित होने पर पढ़ाई पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार कुल 71.5 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों में से 26.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 15.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 18.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 6.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर नही दिया है। अतः स्पष्ट है कि शहरी पृष्ठभूमि के अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो में तकनीकी व्यवधान के कारण प्रसारण बाधित होने पर पढ़ाई पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 5.36 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों में सामुदायिक रेडियो में तकनीकी व्यवधान के कारण प्रसारण बाधित होने पर पढ़ाई पर नकारात्मक प्रभाव के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

प्रश्न -20 क्या आप मानते हैं कि सामुदायिक रेडियो का प्रसारण सामान्य हो जाने पर आपकी पढ़ाई पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है?

प्रस्तुत प्रश्न के संदर्भ में विद्यार्थियों द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नांकित तालिका एवं ग्राफ के अनुसार प्रस्तुत है&

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर					योग	कुल योग
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	54	19	11	7	7	98	193
	छात्रा	57	10	20	6	2	95	
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	56	13	14	7	4	94	193
	परास्नातक	55	16	17	6	5	99	
विषय वर्ग	कला	55	16	13	8	6	98	193
	विज्ञान	56	13	18	5	3	95	
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	33	10	6	3	3	55	193
	शहरी	78	19	25	10	6	138	
आवृत्ति		101	29	31	13	9	193	193
प्रतिशत		57.5	15.0	16.1	6.7	4.7	100	100

तालिका सं0 4.101: प्रश्न संख्या 20 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

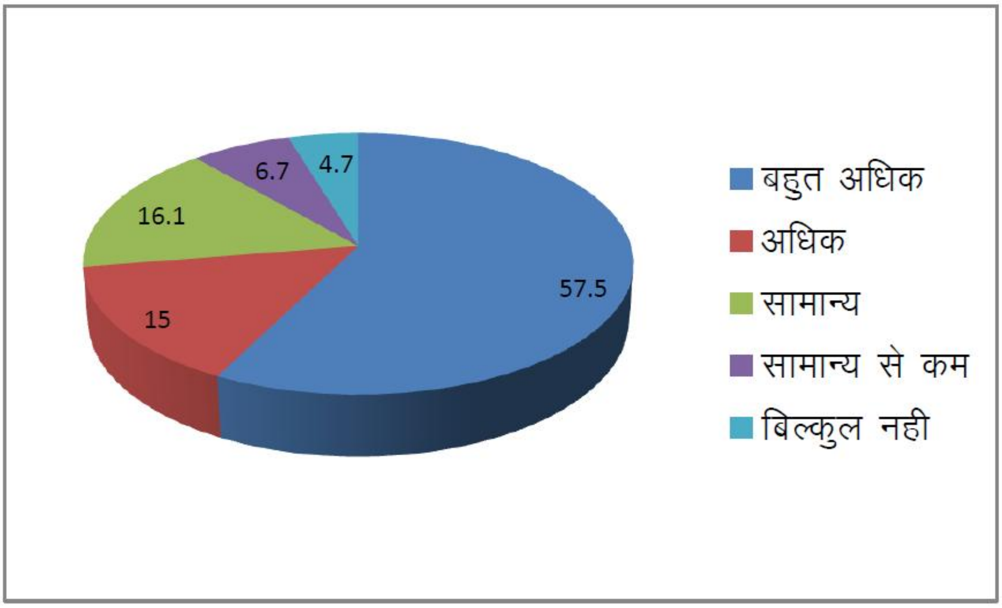

ग्राफ सं0 4.100: प्रश्न संख्या 20 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रश्न में उत्तरदाताओं की कुल संख्या के 57.5 प्रतिशत ने बहुत अधिक, 15.0 प्रतिशत ने अधिक, 16.1 प्रतिशत ने सामान्य, 6.7 प्रतिशत ने सामान्य से कम तथा 4.7 प्रतिशत ने बिल्कुल नहीं पर अपना मत व्यक्त किया है। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि सामुदायिक रेडियो का प्रसारण सामान्य हो जाने पर अधिकांश विद्यार्थियों की पढ़ाई पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

लिंग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	54 (28.0)	19 (9.9)	11 (5.7)	7 (3.6)	7 (3.6)	98 (50.8)	4.28 (0.05)
	छात्रा	57 (29.5)	10 (5.2)	20 (10.4)	6 (3.1)	2 (1.03)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.102 : प्रश्न संख्या 20 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

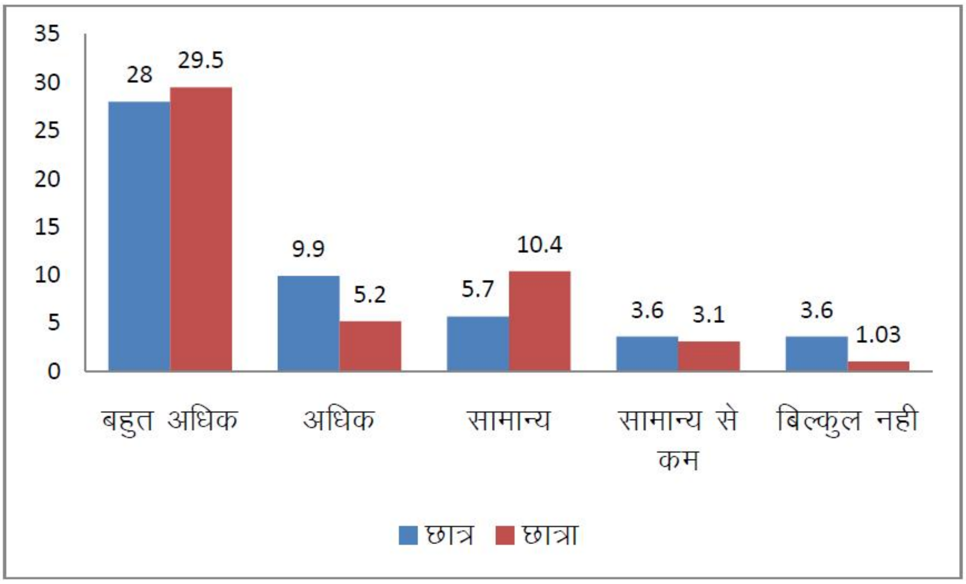

ग्राफ सं0 4.101 : प्रश्न संख्या 20 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

लिंग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल 50.8 प्रतिशत छात्रों में से 28.0 प्रतिशत छात्रो ने बहुत अधिक, 9.9 प्रतिशत छात्रों ने अधिक, 5.7 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य, 3.6 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य से कम तथा 3.6 प्रतिशत छात्रों ने बिल्कुल नही मे उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्रों के अनुसार सामुदायिक रेडियो का प्रसारण सामान्य हो जाने पर पढ़ाई पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार कुल 49.2 प्रतिशत छात्राओं में से 29.5 प्रतिशत छात्राओं ने बहुत अधिक, 5.2 प्रतिशत छात्राओं ने अधिक, 10.4 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य, 3.1 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य से कम तथा 1.03 प्रतिशत छात्राओं ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकांश छात्राओं अनुसार सामुदायिक रेडियो का प्रसारण सामान्य हो जाने पर पढ़ाई पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 4.28 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं में सामुदायिक रेडियो का प्रसारण सामान्य हो जाने पर पढ़ाई पर सकारात्मक प्रभाव के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शैक्षिक योग्यता के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	56 (29.0)	13 (6.7)	14 (7.2)	7 (3.6)	4 (2.1)	94 (48.7)	2.14 (0.05)
	परास्नातक	55 (28.5)	16 (8.3)	17 (8.8)	6 (3.1)	5 (2.6)	99 (51.3)	

तालिका सं0 4.103 : प्रश्न संख्या 20 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

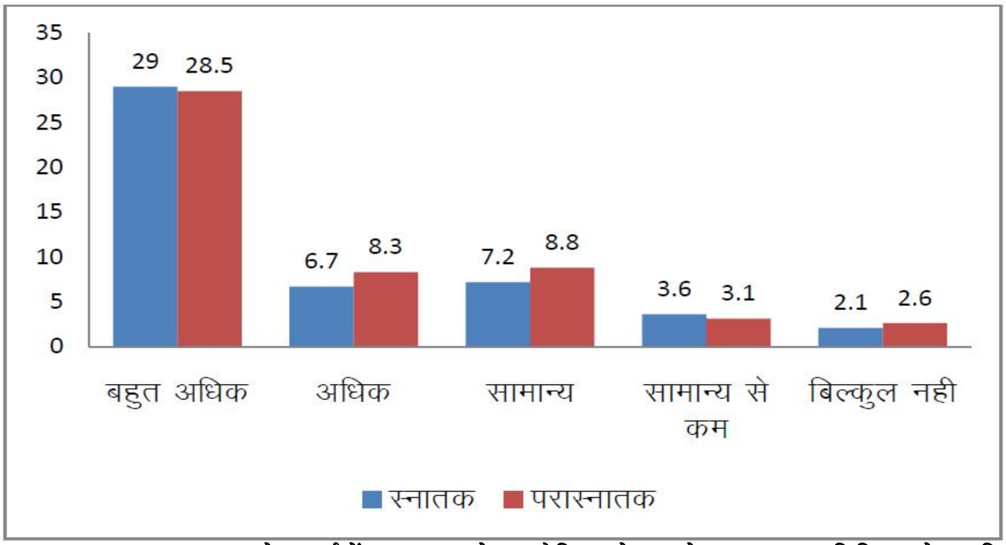

ग्राफ सं0 4.102 : प्रश्न संख्या 20 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

शैक्षिक योग्यता के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 48.7 प्रतिशत स्नातक विद्यार्थियों मे से 29 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 6.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 7.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि स्नातक वर्ग के अधिकांश विद्यार्थियो के अनुसार सामुदायिक रेडियो का प्रसारण सामान्य हो जाने पर विद्यार्थियों की पढ़ाई पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार कुल 51.3 प्रतिशत परास्नातक विद्यार्थियों में से 28.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 8.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 8.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि परास्नातक वर्ग के अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो का प्रसारण सामान्य हो जाने पर पढ़ाई पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.46 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् स्नातक एंव परास्नातक वर्ग के विद्यार्थियों में सामुदायिक रेडियो का प्रसारण सामान्य हो जाने पर पढ़ाई पर सकारात्मक प्रभाव के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

विषय वर्ग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
विषय वर्ग	कला	55 (58.5)	16 (8.3)	13 (6.7)	8 (4.1)	6 (3.1)	98 (50.8)	2.98 (0.05)
	विज्ञान	56 (29.0)	13 (6.7)	18 (9.3)	5 (2.6)	3 (1.6)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.104 : प्रश्न संख्या 20 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

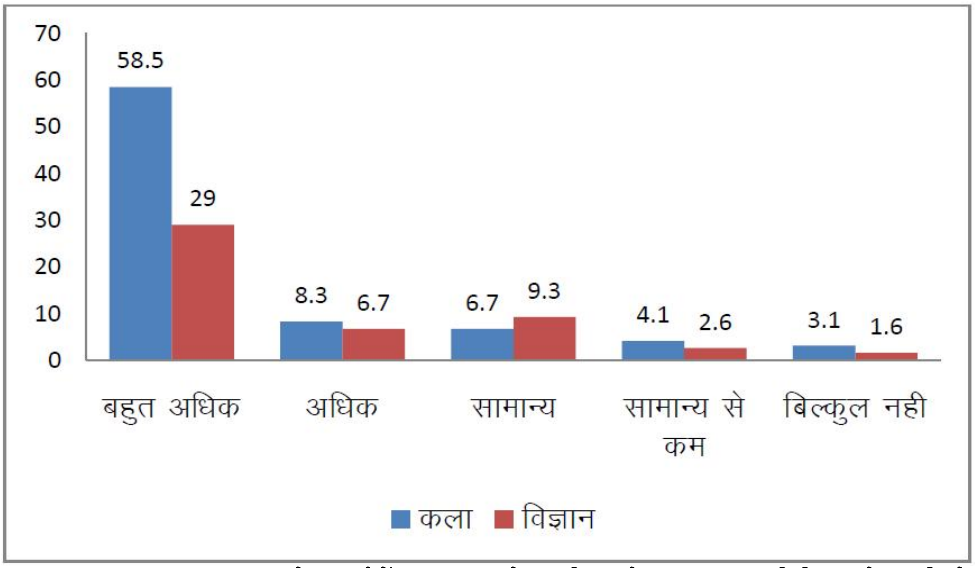

ग्राफ सं0 4.103 : प्रश्न संख्या 20 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

विषय वर्ग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कला विषय के कुल 50.8 प्रतिशत विद्यार्थियों में से 28.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 8.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 6.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नही में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि कला विषय वर्ग के अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो का प्रसारण सामान्य हो जाने पर पढ़ाई पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। विज्ञान विषय वर्ग के कुल 49.2 प्रतिशत विद्यार्थियों में से 29.0 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 6.7 विद्यार्थियों ने अधिक, 9.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 2.6 विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 1.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो का प्रसारण सामान्य हो जाने पर पढ़ाई पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.98 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् कला एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों मे सामुदायिक रेडियो का प्रसारण सामान्य हो जाने परपढ़ाई पर सकारात्मक प्रभाव के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	33 (17.1)	10 (5.2)	6 (3.1)	3 (1.6)	3 (1.6)	55 (28.5)	3.68 (0.05)
	शहरी	78 (40.3)	19 (9.9)	25 (12.9)	10 (5.2)	6 (3.1)	138 (71.5)	

तालिका सं0 4.105 : प्रश्न संख्या 20 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

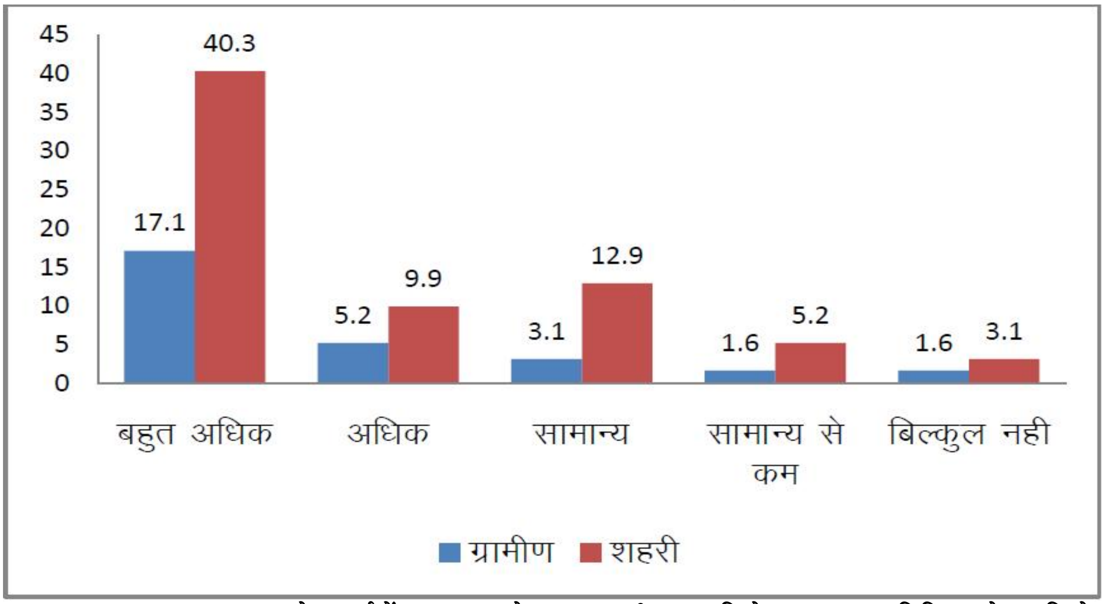

ग्राफ सं0 4.104 : प्रश्न संख्या 20 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 28.5 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों मे से 17.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 1.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 1.6 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण पृष्ठभूमि के अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो का प्रसारण सामान्य हो जाने पर पढ़ाई पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार कुल 71.5 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों में से 40.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 9.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 12.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियो ने सामान्य से कम तथा 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर नही दिया है। अतः स्पष्ट है कि शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों सामुदायिक रेडियो का प्रसारण हो जाने पर अधिकांश विद्यार्थियों की पढ़ाई पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 3.68 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि विद्यार्थियों मेसामुदायिक रेडियो का प्रसारण सामान्य हो जाने पर पढ़ाई पर सकारात्मक प्रभाव के सम्बन्ध सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

प्रश्न -21 क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रसारण के दौरान Reception Quality से सामान्यतः आप संतुष्ट रहते है?

प्रस्तुत प्रश्न के संदर्भ में विद्यार्थियों द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नांकित तालिका एवं ग्राफ के अनुसार प्रस्तुत है।

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर					योग	कुल योग
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	16	29	46	5	2	98	193
	छात्रा	9	17	34	21	14	95	
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	13	20	38	14	9	94	193
	परास्नातक	12	26	42	12	7	99	
विषय वर्ग	कला	14	27	44	8	5	98	193
	विज्ञान	11	19	36	18	11	95	
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	6	9	23	13	4	55	193
	शहरी	19	37	57	13	12	138	
आवृत्ति		25	46	80	26	16	193	193
प्रतिशत		12.9	23.8	41.5	13.5	8.3	100	100

तालिका सं0 4.106: प्रश्न संख्या 21 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

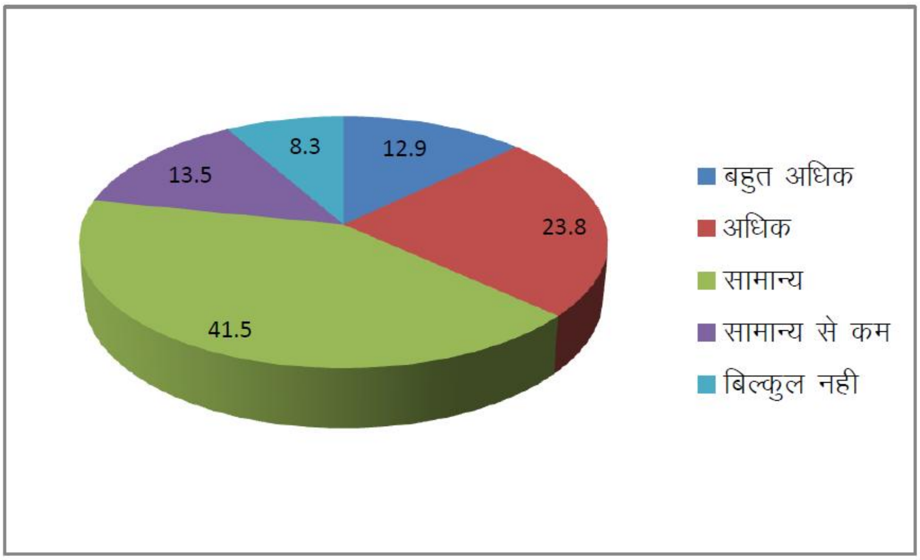

ग्राफ सं0 4.105: प्रश्न संख्या 21 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रश्न में उत्तरदाताओं की कुल संख्या के 12.9 प्रतिशत ने बहुत अधिक, 23.8 प्रतिशत ने अधिक, 41.5 प्रतिशत ने सामान्य, 13.5 प्रतिशत ने सामान्य से कम तथा 8.3 प्रतिशत ने बिल्कुल नहीं पर अपना मत व्यक्त किया है। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि सामुदायिक रेडियो पर प्रसारण के दौरान Reception Quality से विद्यार्थी सामान्यतः संतुष्ट रहते है।

लिंग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	16 (8.3)	29 (15.0)	46 (23.8)	5 (2.6)	2 (1.03)	98 (50.8)	6.25 (0.05)
	छात्रा	9 (4.7)	17 (8.8)	34 (17.6)	21 (10.9)	14 (7.2)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.107 : प्रश्न संख्या 21 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

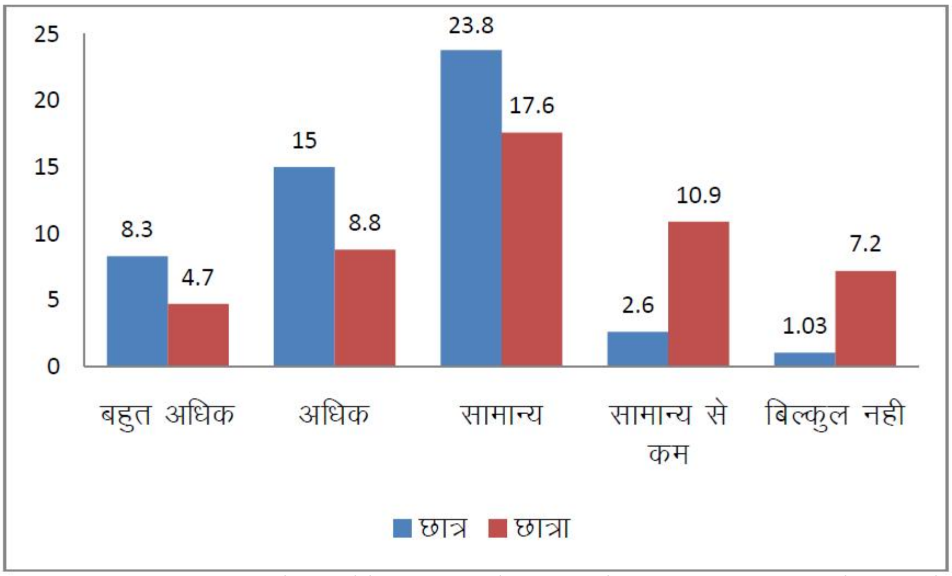

ग्राफ सं0 4.106 : प्रश्न संख्या 21 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

लिंग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल 50.8 प्रतिशत छात्रों में से 8.3 प्रतिशत छात्रो ने बहुत अधिक, 15.0 प्रतिशत छात्रों ने अधिक, 23.8 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य, 2.6 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य से कम तथा 1.03 प्रतिशत छात्रों ने बिल्कुल नही मे उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकांश छात्र सामुदायिक रेडियो पर प्रसारण के दौरान Reception Quality से संतुष्ट रहते है। इसी प्रकार कुल 49.2 प्रतिशत छात्राओं में से 4.7 प्रतिशत छात्राओं ने बहुत अधिक, 8.8 प्रतिशत छात्राओं ने अधिक, 17.6 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य, 10.9 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य से कम तथा 7.2 प्रतिशत छात्राओं ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकांश छात्राएं सामुदायिक रेडियो पर प्रसारण के दौरान Reception Quality से संतुष्ट रहती हैं।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 6.25 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारण के दौरान Reception Quality के स्तर के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शैक्षिक योग्यता के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	13 (6.7)	20 (10.4)	38 (19.7)	14 (7.2)	9 (4.7)	94 (48.7)	2.28 (0.05)
	परास्नातक	12 (6.2)	26 (13.5)	42 (21.8)	12 (6.2)	7 (3.6)	99 (51.3)	

तालिका सं0 4.108 : प्रश्न संख्या 21 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

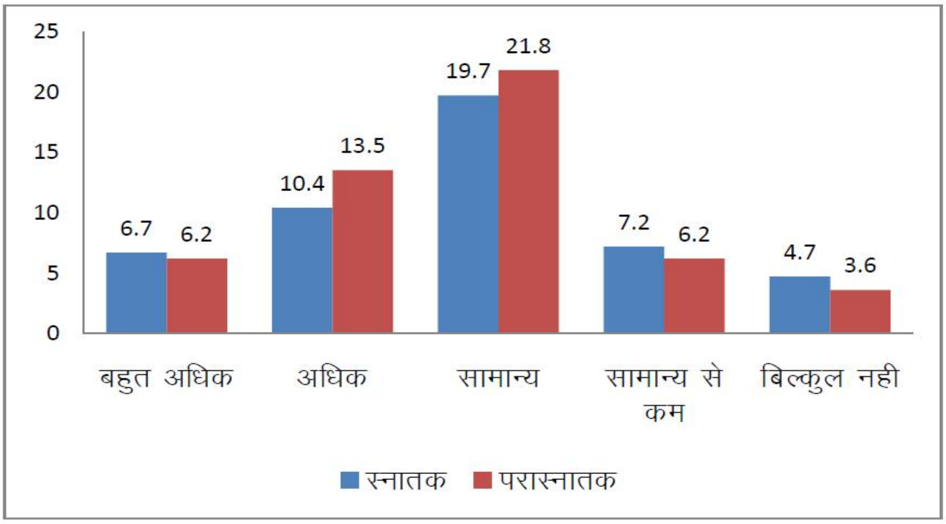

ग्राफ सं0 4.107 : प्रश्न संख्या 21 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

शैक्षिक योग्यता के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 48.7 प्रतिशत स्नातक विद्यार्थियों मे से 6.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 10.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 19.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 7.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि स्नातक वर्ग के अधिकांश विद्यार्थी सामुदायिक रेडियो पर प्रसारण के दौरान Reception Quality से संतुष्ट रहते हैं। इसी प्रकार कुल 51.3 प्रतिशत परास्नातक विद्यार्थियो में से 6.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 13.5 प्रतिशत विद्यार्थियो ने अधिक, 21.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 6.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि परास्नातक वर्ग के अधिकांश विद्यार्थी सामुदायिक रेडियो पर प्रसारण के दौरान Reception Quality से संतुष्ट रहते है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.28 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् स्नातक एंव परास्नातक वर्ग के विद्यार्थियो में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारण के दौरान Reception Quality के स्तर के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

विषय वर्ग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
विषय वर्ग	कला	14 (7.2)	27 (14.0)	44 (22.8)	8 (4.1)	5 (2.6)	98 (50.8)	4.68 (0.05)
	विज्ञान	11 (5.7)	19 (9.9)	36 (18.7)	18 (9.3)	11 (5.7)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.109 : प्रश्न संख्या 21 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

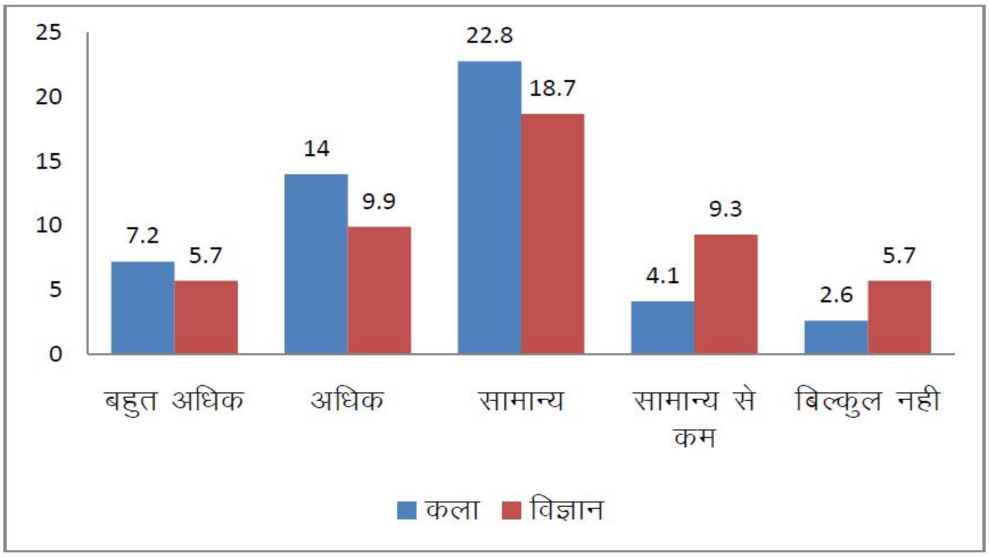

ग्राफ सं0 4.108 : प्रश्न संख्या 21 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

विषय वर्ग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कला विषय के कुल 50.8 प्रतिशत में से 7.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 14 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 22.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नही में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि कला विषय वर्ग अधिकांश विद्यार्थी सामुदायिक रेडियो पर प्रसारण के दौरान Reception Quality से संतुष्ट रहते हैं। इसी प्रकार विज्ञान विषय वर्ग के कुल 49.2 प्रतिशत विद्यार्थियों में से 5.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 9.9 विद्यार्थियों ने अधिक, 18.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 9.3 विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 5.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि विज्ञान वर्ग के अधिकांश विद्यार्थी सामुदायिक रेडियो पर प्रसारण के दौरान Reception Quality से संतुष्ट रहते हैं।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 4.68 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् कला एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में सामुदायिक रेडियो पर प्रसारण के दौरान Reception Quality के स्तर के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	6 (3.1)	9 (4.7)	23 (11.9)	13 (6.7)	4 (2.1)	55 (28.5)	4.26 (0.05)
	शहरी	19 (9.9)	37 (19.2)	57 (29.5)	13 (6.7)	12 (6.2)	138 (71.5)	

तालिका सं0 4.110 : प्रश्न संख्या 21 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

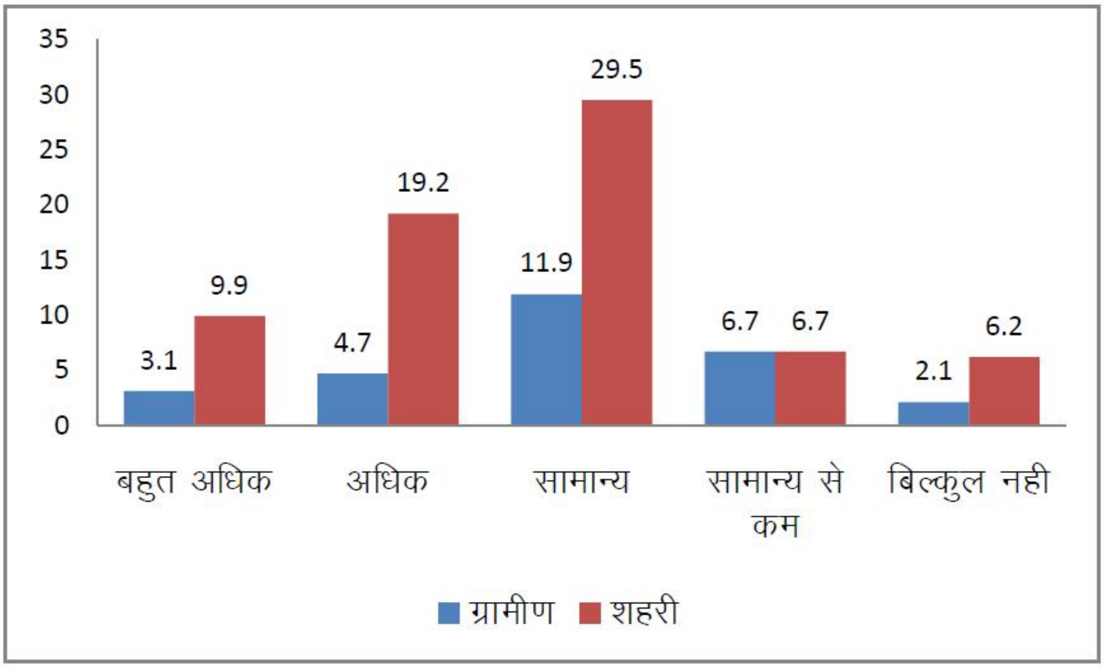

ग्राफ सं0 4.109 : प्रश्न संख्या 21 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 28.5 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों मे से 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 11.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण पृष्ठभूमि के अधिकांश विद्यार्थी सामुदायिक रेडियो पर प्रसारण के दौरान Reception Quality से संतुष्ट रहते है। इसी प्रकार कुल 71.5 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों में से 9.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 19.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 29.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 6.7 प्रतिशत विद्यार्थियो ने सामान्य से कम तथा 6.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि शहरी पृष्ठभूमि के अधिकांश विद्यार्थी सामुदायिक रेडियो पर प्रसारण के दौरान Reception Quality से संतुष्ट रहते है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 4.26 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों मेंसामुदायिक रेडियो पर प्रसारण के दौरान Reception Quality के स्तर के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

प्रश्न -22 क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर काम करने वाले कार्मिको की तकनीकी दक्षता एवं कुशलता से आप संतुष्ट रहते हैं?

प्रस्तुत प्रश्न के संदर्भ में विद्यार्थियों द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नांकित तालिका एवं ग्राफ के अनुसार प्रस्तुत है-

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर					योग	कुल योग
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	0	14	24	4	56	98	193
	छात्रा	12	7	12	20	44	95	
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	7	11	15	13	48	94	193
	परास्नातक	5	10	21	11	52	99	
विषय वर्ग	कला	3	12	22	7	54	98	193
	विज्ञान	9	9	14	17	46	95	
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	7	5	7	11	25	55	193
	शहरी	5	16	29	13	75	138	
आवृत्ति		12	21	36	24	100	193	193
प्रतिशत		6.2	10.9	18.7	12.4	51.8	100	100

तालिका सं0 4.111: प्रश्न संख्या 22 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

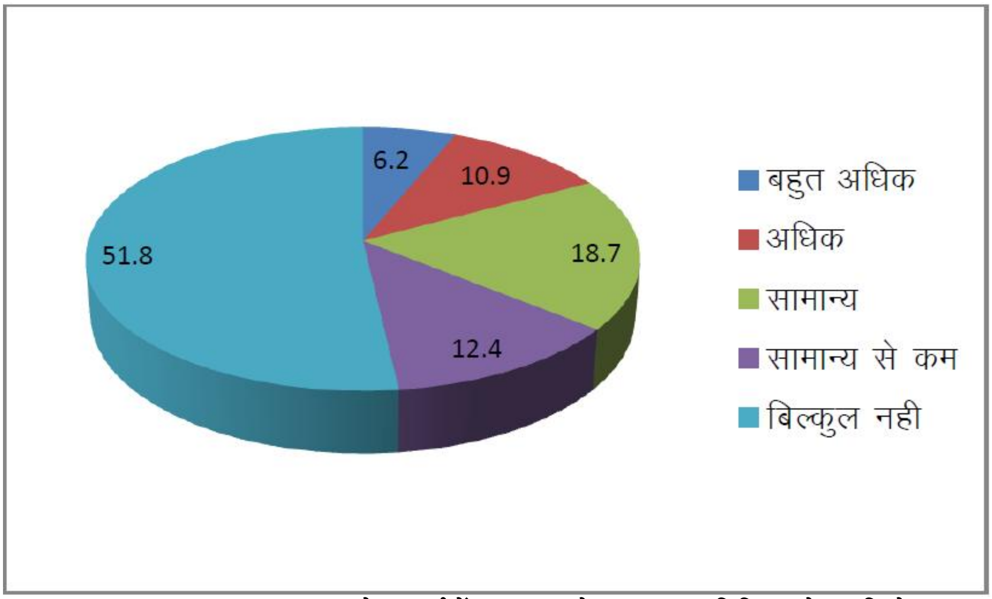

ग्राफ सं0 4.110: प्रश्न संख्या 22 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रश्न में उत्तरदाताओं की कुल संख्या के 6.2 प्रतिशत ने बहुत अधिक, 10.9 प्रतिशत ने अधिक, 18.7 प्रतिशत ने सामान्य, 12.4 प्रतिशत ने सामान्य से कम तथा 51.8 प्रतिशत ने बिल्कुल नहीं पर अपना मत व्यक्त किया है। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि अधिकांश विद्यार्थी सामुदायिक रेडियो पर काम करने वाले कार्मिकों की तकनीकी दक्षता एवं कुशलता से संतुष्ट नही हैं।

लिंग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	0 (0.0)	14 (7.2)	24 (12.4)	4 (2.1)	56 (29.1)	98 (50.8)	7.46 (0.05)
	छात्रा	12 (6.2)	7 (3.6)	12 (6.2)	20 (10.4)	44 (22.8)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.112 : प्रश्न संख्या 22 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

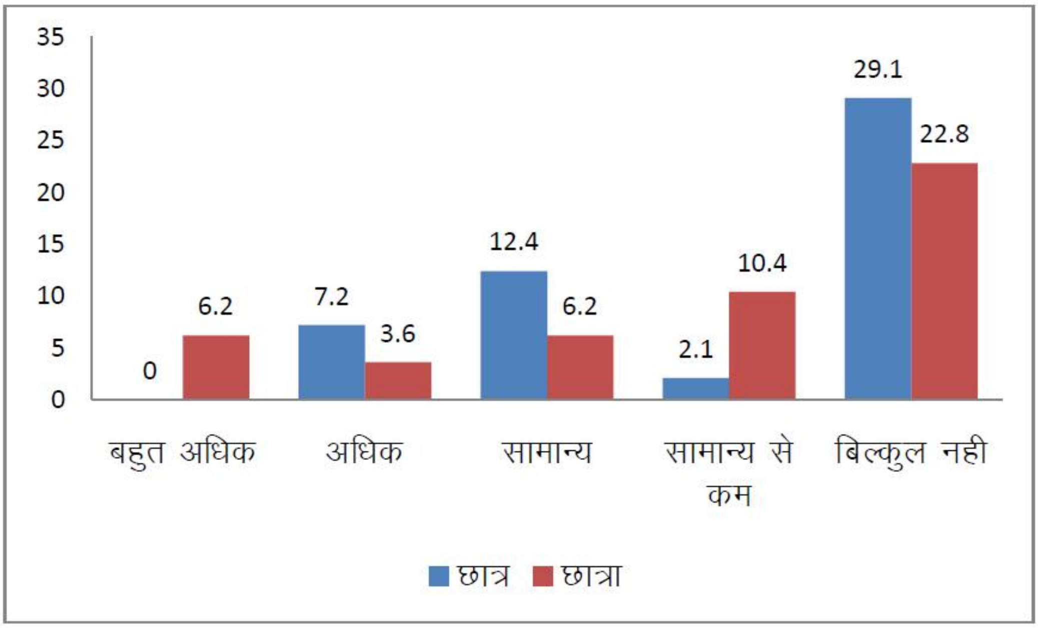

ग्राफ सं0 4.111 : प्रश्न संख्या 22 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

लिंग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल 50.8 प्रतिशत छात्रों में से 0 प्रतिशत छात्रों ने बहुत अधिक, 7.2 प्रतिशत छात्रों ने अधिक, 12.4 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य, 2.1 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य से कम तथा 29.1 प्रतिशत छात्रों ने बिल्कुल नही मे उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्र सामुदायिक रेडियो पर काम करने वाले कार्मिको की तकनीकी दक्षता एवं कुशलता से संतुष्ट नही है। इसी प्रकार कुल 49.2 प्रतिशत छात्राओं में से 6.2 प्रतिशत छात्राओं ने बहुत अधिक, 3.6 प्रतिशत छात्राओं ने अधिक, 6.2 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य, 10.4 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य से कम तथा 22.8 प्रतिशत छात्राओं ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकांश छात्राएं सामुदायिक रेडियो पर काम करने वाले कार्मिको की तकनीकी दक्षता एवं कुशलता से संतुष्ट नही हैं।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 7.46 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं में सामुदायिक रेडियो पर काम करने वाले कार्मिकों की तकनीकी दक्षता एवं कुशलता के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।

शैक्षिक योग्यता के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	7 (3.6)	11 (5.7)	15 (7.8)	13 (6.7)	48 (24.9)	94 (48.7)	2.07 (0.05)
	परास्नातक	5 (2.6)	10 (5.2)	21 (10.9)	11 (5.7)	52 (26.9)	99 (51.3)	

तालिका सं0 4.113 : प्रश्न संख्या 22 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

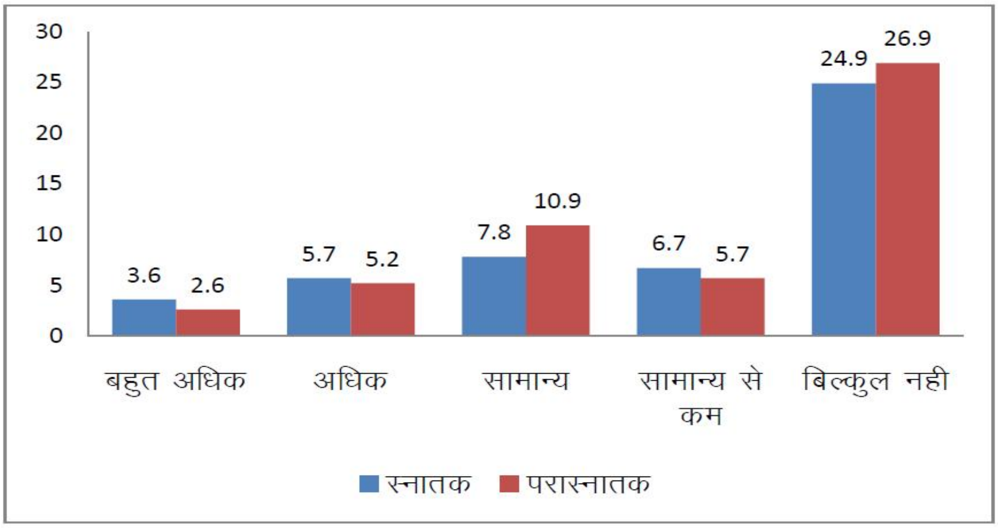

ग्राफ सं0 4.112 : प्रश्न संख्या 22 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

शैक्षिक योग्यता के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 48.7 प्रतिशत स्नातक विद्यार्थियों मे से 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 5.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 7.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 6.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 24.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि स्नातक वर्ग के अधिकांश विद्यार्थी सामुदायिक रेडियो पर काम करने वाले कार्मिको की तकनीकी दक्षता एवं कुशलता से संतुष्ट नही हैं। इसी प्रकार कुल 51.3 प्रतिशत परास्नातक विद्यार्थियो में से 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियो ने अधिक, 10.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 5.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 26.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि परास्नातक वर्ग के अधिकांश विद्यार्थीसामुदायिक रेडियो पर काम करने वाले कार्मिको की तकनीकी दक्षता एवं कुशलता से संतुष्ट नही हैं।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.07 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् स्नातक एंव परास्नातक वर्ग के विद्यार्थियों में सामुदायिक रेडियो पर काम करने वाले कार्मिकों की तकनीकी दक्षता एवं कुशलता के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

विषय वर्ग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
विषय वर्ग	कला	3 (1.6)	12 (6.2)	22 (11.4)	7 (3.6)	54 (28.0)	98 (50.8)	3.26 (0.05)
	विज्ञान	9 (4.7)	9 (4.7)	14 (7.2)	17 (8.8)	46 (23.8)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.114 : प्रश्न संख्या 22 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

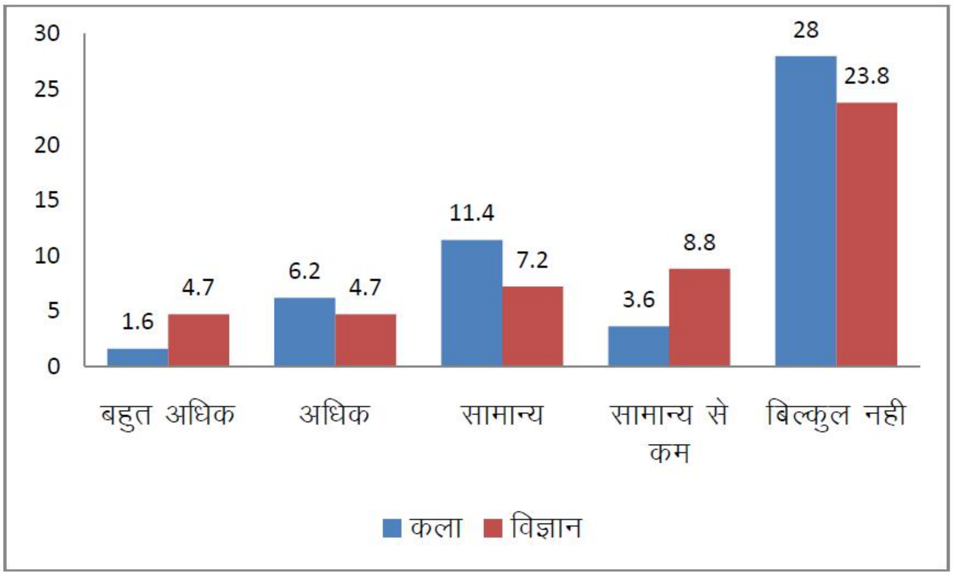

ग्राफ सं0 4.113 : प्रश्न संख्या 22 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

विषय वर्ग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कला विषय के कुल 50.8 प्रतिशत विद्यार्थियों में से 1.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 6.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 11.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 28.0 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नही में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि कला विषय वर्ग के अधिकांश विद्यार्थी सामुदायिक रेडियो पर काम करने वाले कार्मिकों की तकनीकी दक्षता एवं कुशलता से संतुष्ट नही हैं। इसी प्रकार विज्ञान विषय वर्ग के कुल 49.2 प्रतिशत विद्यार्थियों में से 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 4.7 विद्यार्थियों ने अधिक, 7.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 8.8 विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 23.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि विज्ञान वर्ग के अधिकांश विद्यार्थी सामुदायिक रेडियो पर काम करने वाले कार्मिको की तकनीकी दक्षता एवं कुशलता से संतुष्ट नही है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 3.26 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् कला एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में सामुदायिक रेडियो पर काम करने वाले कार्मिको की तकनीकी दक्षता एवं कुशलता के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	7 (3.6)	5 (2.6)	7 (3.6)	11 (5.7)	25 (12.9)	55 (28.5)	3.28 (0.05)
	शहरी	5 (2.6)	16 (8.4)	29 (14.7)	13 (6.9)	75 (38.9)	138 (71.5)	

तालिका सं0 4.115 : प्रश्न संख्या 22 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

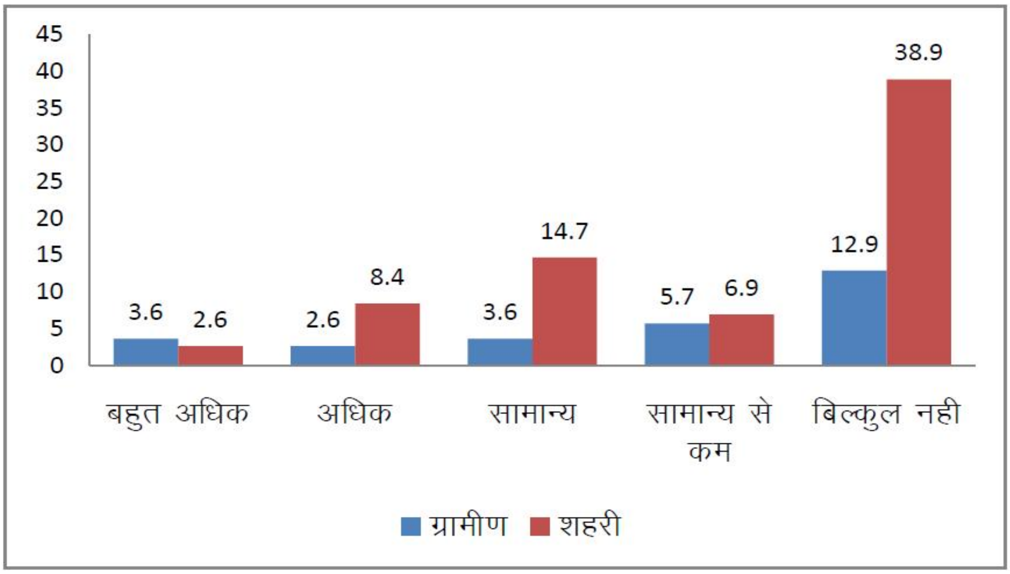

ग्राफ सं0 4.114 : प्रश्न संख्या 22 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 28.5 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों मे से 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 5.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 12.9 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण पृष्ठभूमि के अधिकतर विद्यार्थी सामुदायिक रेडियो पर काम करने वाले कार्मिकों की तकनीकी दक्षता एवं कुशलता से संतुष्ट नही हैं। इसी प्रकार कुल 71.5 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों में से 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 8.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 14.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 6.7 प्रतिशत विद्यार्थियो ने सामान्य से कम तथा 38.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि शहरी पृष्ठभूमि के अधिकांश विद्यार्थी सामुदायिक रेडियो पर काम करने वाले कार्मिको की तकनीकी दक्षता एवं कुशलता से संतुष्ट नही हैं।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 3.28 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों में सामुदायिक रेडियो पर काम करने वाले कार्मिको की तकनीकी दक्षता एवं कुशलता के सम्बन्धमें कोई सार्थक अन्तर नही है।

प्रश्न -23 क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रतिघंटे के कार्यक्रम में 5 मिनट या उससे अधिक का विज्ञापन प्रसारित होता है?

प्रस्तुत प्रश्न के संदर्भ में विद्यार्थियों द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नांकित तालिका एवं ग्राफ के अनुसार प्रस्तुत है।

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर					योग	कुल योग
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	9	9	14	25	41	98	193
	छात्रा	4	8	27	15	41	95	
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	6	9	17	19	43	94	193
	परास्नातक	7	8	24	21	39	99	
विषय वर्ग	कला	8	10	16	22	42	98	193
	विज्ञान	5	7	25	18	40	95	
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	5	5	4	8	33	55	193
	शहरी	8	12	37	32	49	138	
आवृत्ति		13	17	41	40	82	193	193
प्रतिशत		6.7	8.8	21.2	20.8	42.5	100	100

तालिका सं0 4.116: प्रश्न संख्या 23 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

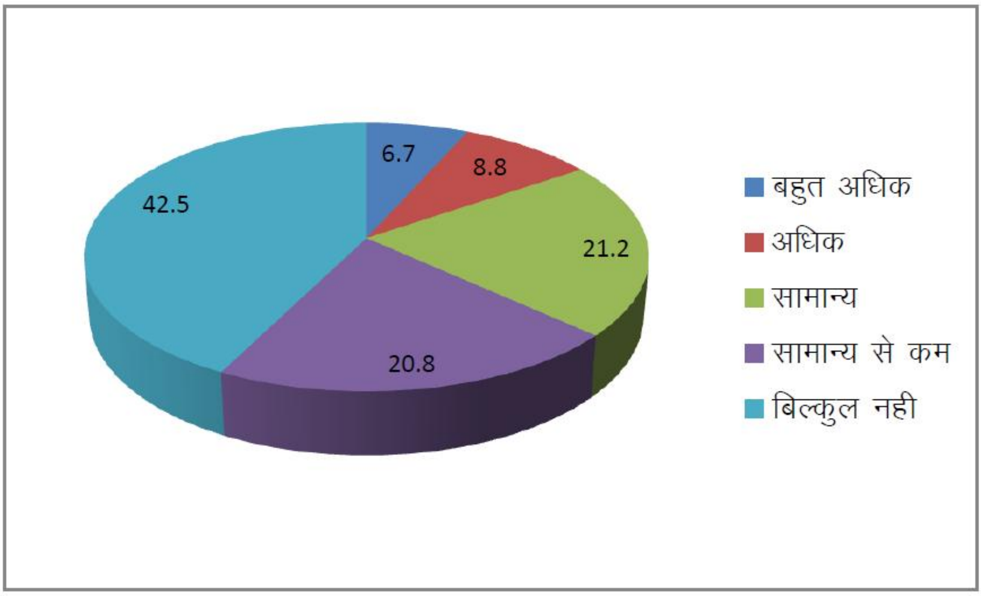

ग्राफ सं0 4.115: प्रश्न संख्या 23 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रश्न में उत्तरदाताओं की कुल संख्या के 6.7 प्रतिशत ने बहुत अधिक, 8.8 प्रतिशत ने अधिक, 21.2 प्रतिशत ने सामान्य, 20.8 प्रतिशत ने सामान्य से कम तथा 42.5 प्रतिशत ने बिल्कुल नहीं पर अपना मत व्यक्त किया है। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि सामुदायिक रेडियो पर प्रति घंटे 5 मिनट या उससे अधिक का विज्ञापन प्रसारित होने की स्थिति न्यूनतम है।

लिंग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	9 (4.7)	9 (4.7)	14 (7.2)	25 (12.9)	41 (21.3)	98 (50.8)	3.18 (0.05)
	छात्रा	4 (2.1)	8 (4.1)	27 (14.0)	15 (7.8)	41 (21.3)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.117 : प्रश्न संख्या 23 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

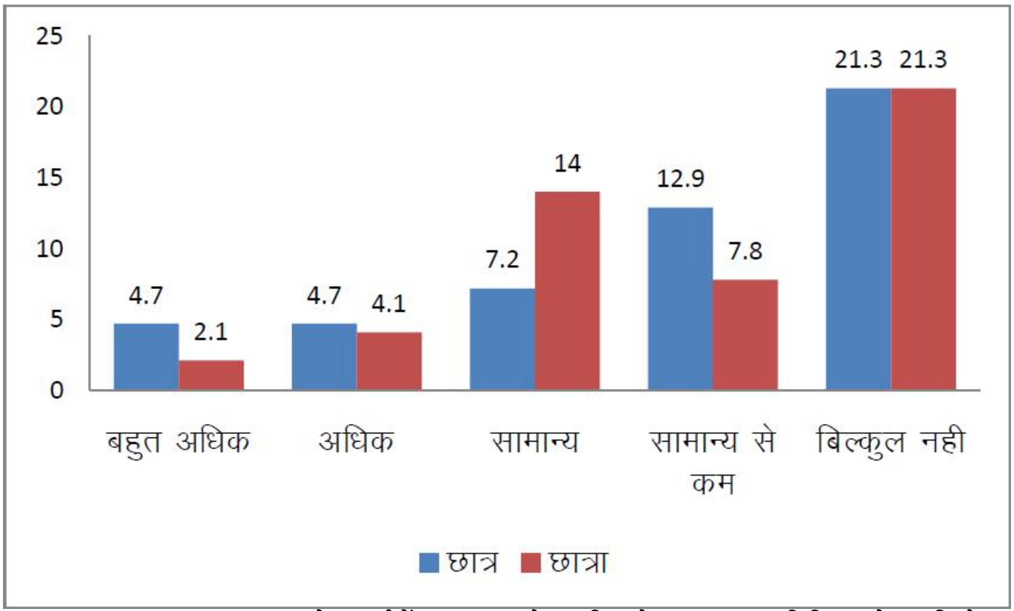

ग्राफ सं0 4.116 : प्रश्न संख्या 23 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

लिंग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल 50.8 प्रतिशत छात्रों में से 4.7 प्रतिशत छात्रों ने बहुत अधिक, 4.7 प्रतिशत छात्रों ने अधिक, 7.2 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य, 12.9 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य से कम तथा 21.3 प्रतिशत छात्रों ने बिल्कुल नही मे उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्रों के अनुसारसामुदायिक रेडियो पर प्रति घंटे 5 मिनट या उससे अधिक का विज्ञापन प्रसारित होने की स्थिति न्यूनतम है। इसी प्रकार कुल 49.2 प्रतिशत छात्राओं में से 2.1 प्रतिशत छात्राओं ने बहुत अधिक, 4.1 प्रतिशत छात्राओं ने अधिक, 14.0 प्रतिशत छात्राओं ने ा सामान्य, 7.8 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य से कम तथा 21.3 प्रतिशत छात्राओं ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकांश छात्राओं के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रति घंटे 5 मिनट या उससे अधिक का विज्ञापन प्रसारित होने की स्थिति न्यूनतम है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 3.18 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं में विज्ञापन प्रसारण की स्थिति के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शैक्षिक योग्यता के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	6 (3.1)	9 (4.7)	17 (8.8)	19 (9.9)	43 (22.3)	94 (48.7)	2.36 (0.05)
	परास्नातक	7 (3.6)	8 (4.1)	24 (12.4)	21 (10.9)	39 (20.1)	99 (51.3)	

तालिका सं0 4.118 : प्रश्न संख्या 23 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

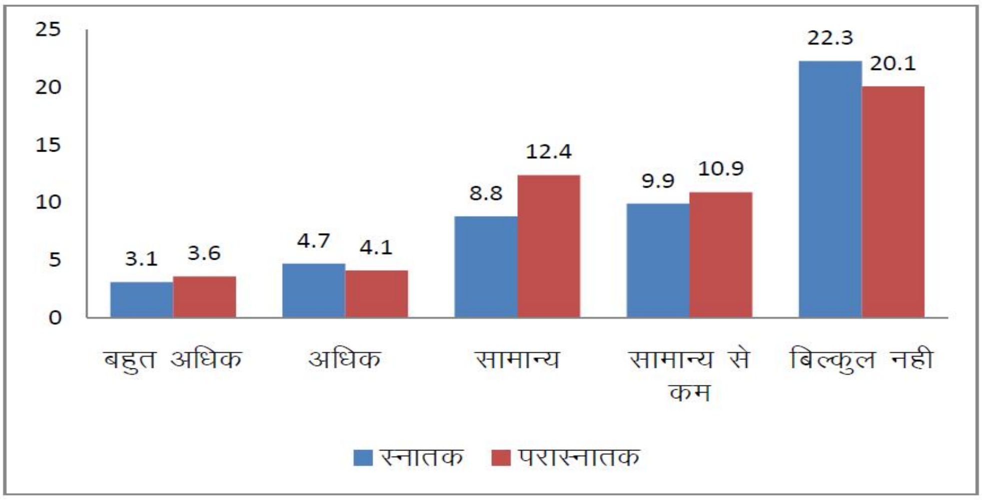

ग्राफ सं0 4.117 : प्रश्न संख्या 23 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

शैक्षिक योग्यता के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 48.7 प्रतिशत स्नातक विद्यार्थियों मे से 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 8.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 9.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 22.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि स्नातक वर्ग के विद्यार्थियो के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रति घंटे 5 मिनट या उससे अधिक का विज्ञापन प्रसारित होने की स्थिति न्यूनतम है। इसी प्रकार कुल 51.3 प्रतिशत परास्नातक विद्यार्थियो में से 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 12.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 10.9 प्रतिशत विद्यार्थियों सामान्य से कम तथा 20.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि परास्नातक वर्ग के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रति घंटे 5 मिनट या उससे अधिक का विज्ञापन प्रसारित होने की स्थिति न्यूनतम है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.36 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् स्नातक एंव परास्नातक वर्ग के विद्यार्थियो में सामुदायिक रेडियो पर प्रति घंटे 5 मिनट या उससे अधिक का विज्ञापन प्रसारण की स्थिति के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

विषय वर्ग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
विषय वर्ग	कला	8 (4.1)	10 (5.2)	16 (8.3)	22 (11.4)	42 (21.8)	98 (50.8)	2.84 (0.05)
	विज्ञान	5 (2.6)	7 (3.6)	25 (12.9)	18 (9.3)	40 (20.8)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.119 : प्रश्न संख्या 23 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

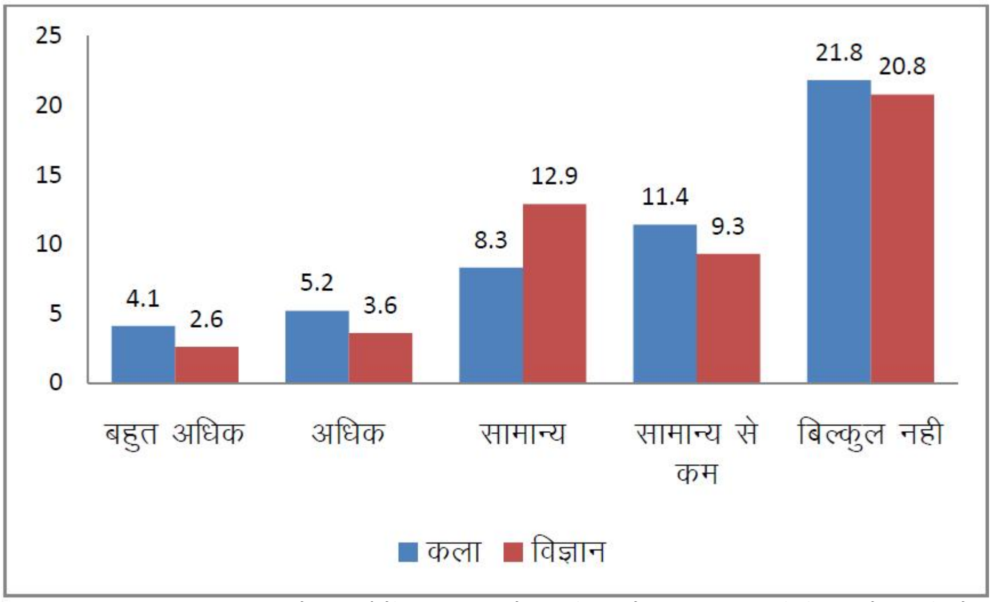

ग्राफ सं0 4.118 : प्रश्न संख्या 23 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

विषय वर्ग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कला विषय के कुल 50.8 प्रतिशत में से 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 5.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 8.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 11.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 21.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नही में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि कला विषय वर्ग के अधिकंश विद्यार्थियों के अनुसार 5 मिनट या उससे अधिक का विज्ञापन प्रसारित होने की स्थिति न्यूनतम है। इसी प्रकार विज्ञान विषय वर्ग के कुल 49.2 प्रतिशत में से 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 3.6 विद्यार्थियों ने अधिक, 12.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 9.3 विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 20.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि विज्ञान विषय वर्ग के अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रति घंटे 5 मिनट या उससे अधिक का विज्ञापन प्रसारित होने की स्थिति न्यूनतम है।

साख्यकीय विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.84 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् कला एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में विज्ञापन प्रसारण की स्थिति के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	5 (2.6)	5 (2.6)	4 (2.1)	8 (4.1)	33 (17.1)	55 (28.5)	4.28 (0.05)
	शहरी	8 (4.1)	12 (6.2)	37 (19.2)	32 (16.6)	49 (25.4)	138 (71.5)	

तालिका सं0 4.120 : प्रश्न संख्या 23 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

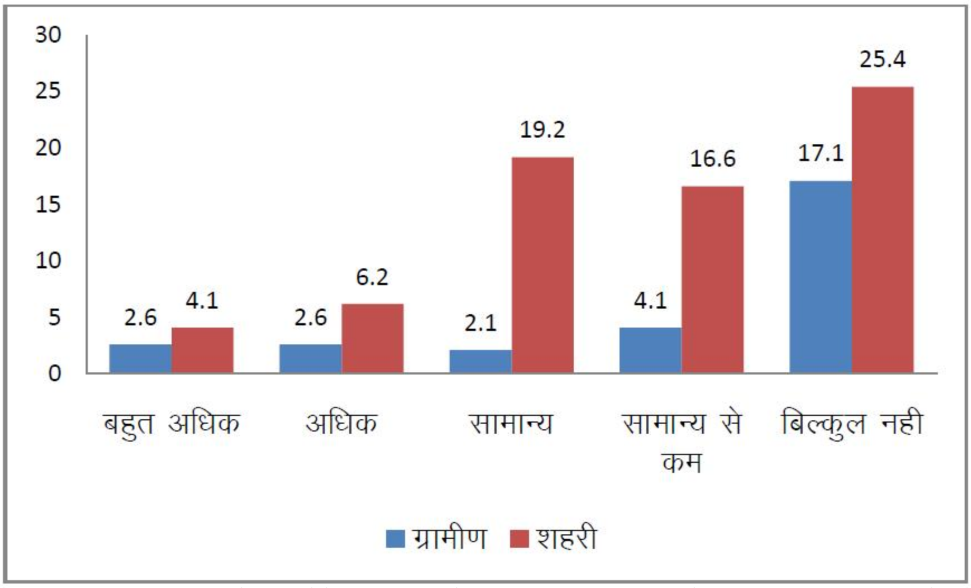

ग्राफ सं0 4.119 : प्रश्न संख्या 23 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 28.5 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों मे से 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 15.0 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रति घंटे 5 मिनट या उससे अधिक का विज्ञापन प्रसारित होने की स्थिति न्यूनतम है। इसी प्रकार कुल 71.5 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों में से 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 6.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 19.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 16.6. प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 25.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर नही दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकांश शहरी विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर प्रति घंटे 5 मिनट या उससे अधिक का विज्ञापन प्रसारित होने की स्थिति न्यूनतम है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 4.28 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियो में विज्ञापन प्रसारण की स्थिति के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

प्रश्न-24 क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों के निर्माण में रेडियो विशेषज्ञों की आवश्यकता है?

प्रस्तुत प्रश्न के संदर्भ में विद्यार्थियों द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नांकित तालिका एवं ग्राफ के अनुसार प्रस्तुत है।

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर					योग	कुल योग
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	57	21	10	5	5	98	193
	छात्रा	57	11	23	4	0	95	
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	59	15	13	5	2	94	193
	परास्नातक	55	17	20	4	3	99	
विषय वर्ग	कला	58	18	12	6	4	98	193
	विज्ञान	56	14	21	3	1	95	
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	49	4	0	1	1	55	193
	शहरी	65	28	33	8	4	138	
आवृत्ति		114	32	33	9	5	193	193
प्रतिशत		59.4	16.6	17.1	4.6	2.6	100	100

तालिका सं0 4.121: प्रश्न संख्या 24 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

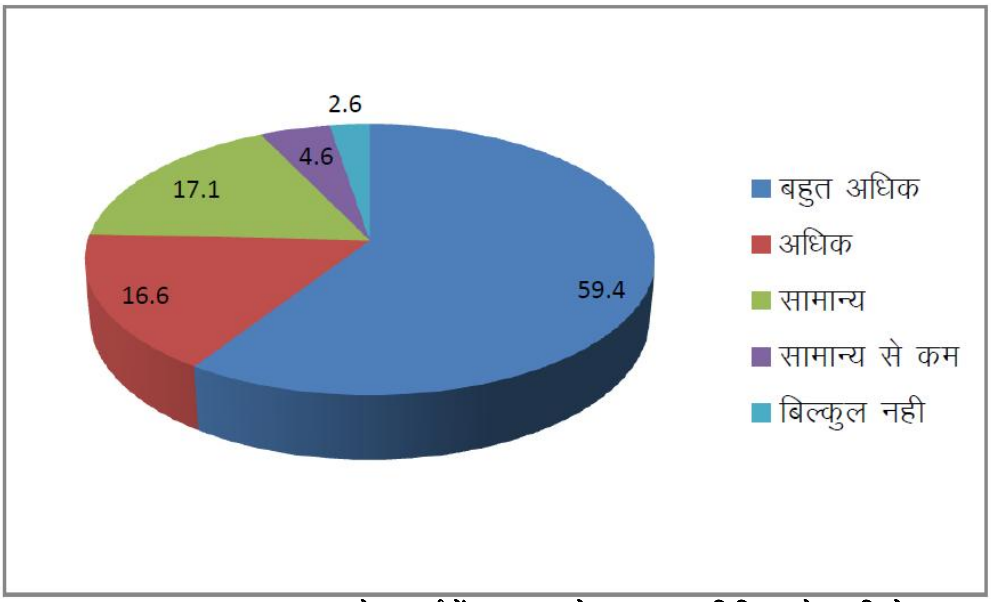

ग्राफ सं0 4.120: प्रश्न संख्या 23 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रश्न में उत्तरदाताओं की कुल संख्या के 59.4 प्रतिशत ने बहुत अधिक, 16.6 प्रतिशत ने अधिक, 17.1 प्रतिशत ने सामान्य, 4.6 प्रतिशत ने सामान्य से कम तथा 2.6 प्रतिशत ने बिल्कुल नहीं पर अपना मत व्यस्त किया है। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि उच्च शिक्षण संस्थानों के सामुदायिक रेडियो हेतु कार्यक्रमों को तैयार करने में रेडियो विशेषज्ञों की आवश्यकता है।

लिंग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	57 (29.9)	21 (10.9)	10 (5.2)	5 (2.6)	5 (2.6)	98 (50.8)	2.04 (0.05)
	छात्रा	57 (29.9)	11 (5.7)	23 (11.9)	4 (2.1)	0 (0.0)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.122 : प्रश्न संख्या 24 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

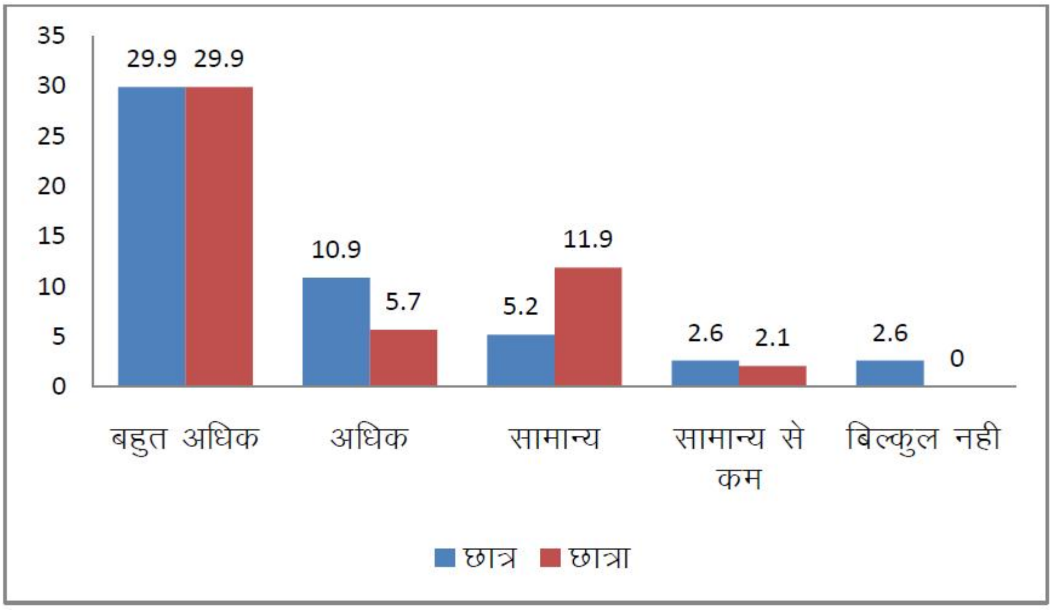

ग्राफ सं0 4.121 : प्रश्न संख्या 23 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

लिंग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल 50.8 प्रतिशत छात्रों में से 29.9 प्रतिशत छात्रों ने बहुत अधिक, 10.9 प्रतिशत छात्रों ने अधिक, 5.2 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य, 2.6 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य से कम तथा 2.6 प्रतिशत छात्रों ने बिल्कुल नही मे उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्रों के अनुसार सामुदायिक रेडियो हेतु कार्यक्रमों को तैयार करने में रेडियो विशेषज्ञों की आवश्यकता है। इसी प्रकार कुल 49.2 प्रतिशत छात्राओं में से 29.5 प्रतिशत छात्राओं ने बहुत अधिक, 5.7 प्रतिशत छात्राओं ने अधिक, 11.9 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य, 2.1 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य से कम तथा 0 प्रतिशत छात्राओं ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि छात्राओं के अनुसार सामुदायिक रेडियो हेतु कार्यक्रमों को तैयार करने में रेडियो विशेषज्ञों की आवश्यकता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.04 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं में सामुदायिक रेडियो हेतु कार्यक्रमों को तैयार करने में रेडियो विशेषज्ञों की आवश्यकता के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शैक्षिक योग्यता के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	59 (30.6)	15 (7.8)	13 (6.7)	5 (2.6)	2 (1.03)	94 (48.7)	1.46 (0.05)
	परास्नातक	55 (28.4)	17 (8.8)	20 (10.4)	4 (2.1)	3 (1.6)	99 (51.3)	

तालिका सं0 4.123 : प्रश्न संख्या 24 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

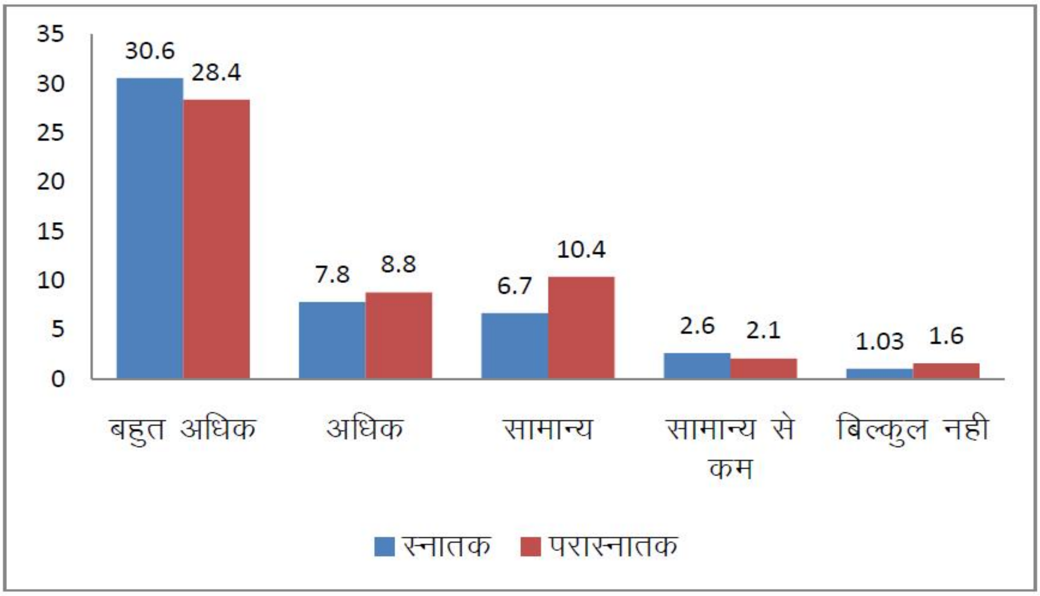

ग्राफ सं0 4.122 : प्रश्न संख्या 24 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

शैक्षिक योग्यता के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 48.7 प्रतिशत स्नातक विद्यार्थियों मे से 30.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 7.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 6.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 1.03 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि स्नातक वर्ग के अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार उच्च शिक्षण संस्थानों के सामुदायिक रेडियो हेतु कार्यक्रमों को तैयार करने में रेडियो विशेषज्ञों की आवश्यकता है। इसी प्रकार कुल 51.3 प्रतिशत परास्नातक विद्यार्थियों में से 25.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 8.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 10.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 1.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि परास्नातक वर्ग के अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार उच्च शिक्षण संस्थानों के सामुदायिक रेडियो हेतु कार्यक्रमों को तैयार करने में रेडियो विशेषज्ञों की आवश्यकता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 1.46 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् स्नातक वर्ग के विद्यार्थियों एंव परास्नातक वर्ग के विद्यार्थियों मं उच्च शिक्षण संस्थानों के सामुदायिक रेडियो हेतु कार्यक्रमों को तैयार करने में रेडियो विशेषज्ञों की आवश्यकता के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

विषय वर्ग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
विषय वर्ग	कला	58 (30.1)	18 (9.3)	12 (6.2)	6 (3.1)	4 (2.1)	98 (50.8)	1.67 (0.05)
	विज्ञान	56 (29.0)	14 (7.2)	21 (10.9)	3 (1.6)	1 (0.56)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.124 : प्रश्न संख्या 24 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

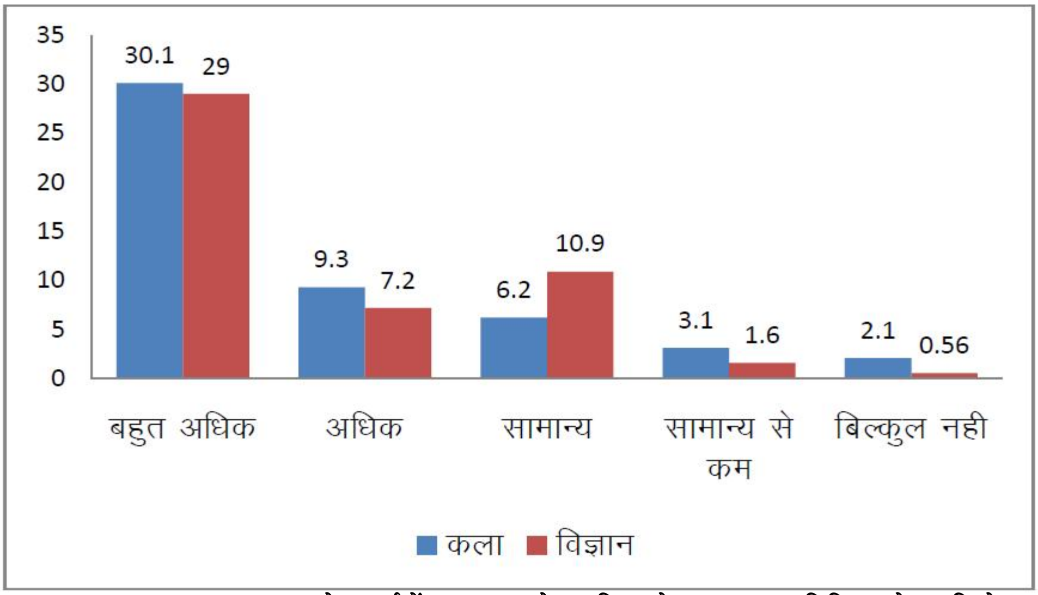

ग्राफ सं0 4.123 : प्रश्न संख्या 23 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

विषय वर्ग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कला विषय के कुल 50.8 प्रतिशत में से 30.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 9.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 6.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नही में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि कला विषय वर्ग के विद्यार्थियों के अनुसार उच्च शिक्षण संस्थानों के सामुदायिक रेडियो हेतु कार्यक्रमों को तैयार करने में रेडियो विशेषज्ञों की आवश्यकता है। इसी प्रकार विज्ञान विषय वर्ग के कुल 49.2 प्रतिशत विद्यार्थियों में से 29.0 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 7.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 10.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 1.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 0.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि विज्ञान विषय वर्ग के विद्यार्थियों के अनुसार उच्च शिक्षण संस्थानों के सामुदायिक रेडियो हेतु कार्यक्रमों को तैयार करने में रेडियो विशेषज्ञों की आवश्यकता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 1.67 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् कला एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के अनुसार उच्च शिक्षण संस्थानों के सामुदायिक रेडियो हेतु कार्यक्रमों को तैयार करने में रेडियो विशेषज्ञों की आवश्यकता के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	49 (25.4)	4 (2.1)	0 (0.0)	1 (0.56)	1 (0.56)	55 (28.5)	3.16 (0.05)
	शहरी	65 (33.7)	28 (14.5)	33 (17.1)	8 (4.1)	4 (2.1)	138 (71.5)	

तालिका सं0 4.125 : प्रश्न संख्या 24 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

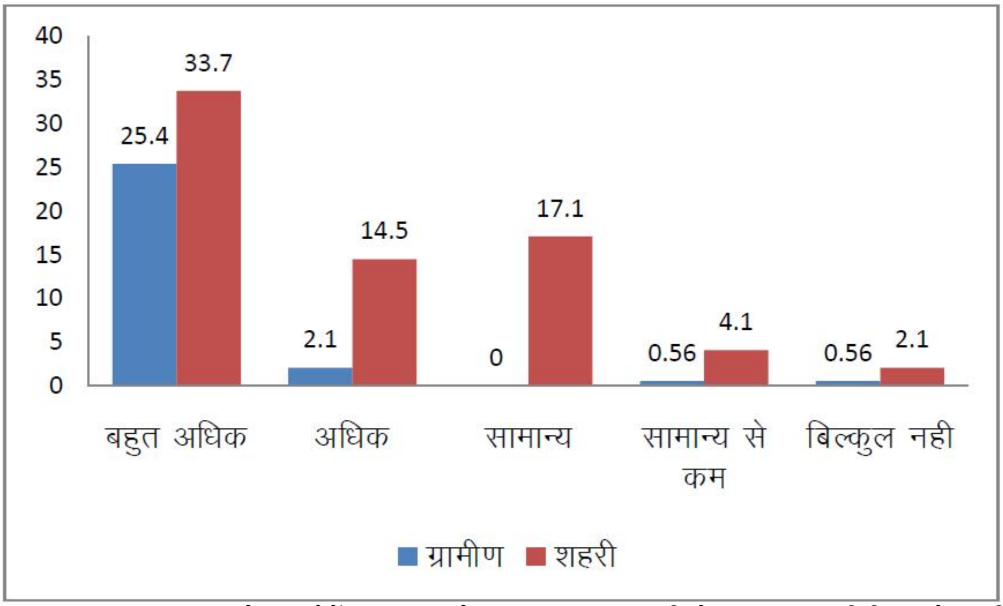

ग्राफ सं0 4.124 : प्रश्न संख्या 23 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 28.5 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों में से 25.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 0 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 0.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 0.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो हेतु शैक्षिक कार्यक्रमों को तैयार करने में रेडियो विशेषज्ञों की आवश्यकता है। इसी प्रकार कुल 71.5 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों में से 33.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 14.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 17.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो हेतु कार्यक्रमों को तैयार करने में रेडियो विशेषज्ञों की आवश्यकता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 3.16 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियो में सामुदायिक रेडियो हेतु कार्यक्रमों को तैयार करने में रेडियो विशेषज्ञों की आवश्यकता के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

प्रश्न -25 क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर समाचारों के प्रसारण के परमीशन की आवश्यकता है?

प्रस्तुत प्रश्न के संदर्भ में विद्यार्थियों द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नांकित तालिका एवं ग्राफ के अनुसार प्रस्तुत है।

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर					योग	कुल योग
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	43	26	14	8	7	98	193
	छात्रा	43	16	27	7	2	95	
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	45	20	17	8	4	94	193
	परास्नातक	41	22	24	7	5	99	
विषय वर्ग	कला	44	23	16	9	6	98	193
	विज्ञान	42	19	25	6	3	95	
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	35	9	4	4	3	55	193
	शहरी	51	33	37	11	6	138	
आवृत्ति		86	42	41	15	9	193	193
प्रतिशत		43.5	21.8	21.2	7.8	5.7	100	100

तालिका सं0 4.126: प्रश्न संख्या 25 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

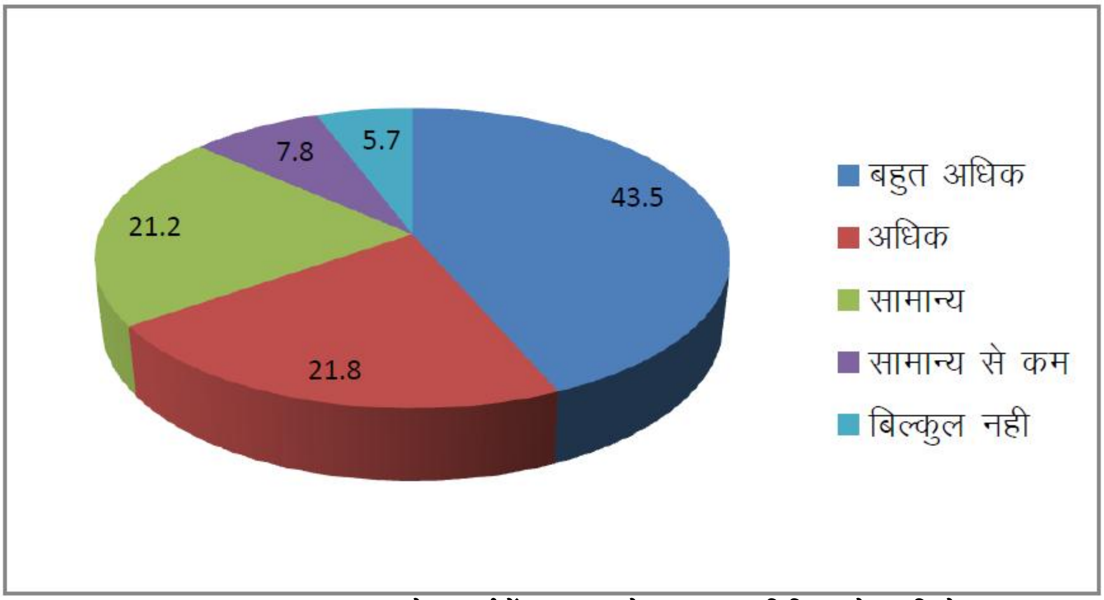

ग्राफ सं0 4.125: प्रश्न संख्या 25 के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रश्न में उत्तरदाताओं की कुल संख्या के 43.5 प्रतिशत ने बहुत अधिक, 21.8 प्रतिशत ने अधिक, 21.2 प्रतिशत ने सामान्य, 7.8 प्रतिशत ने सामान्य से कम तथा 5.7 प्रतिशत ने बिल्कुल नहीं पर अपना मत व्यक्त किया है। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर समाचारों के प्रसारण के परमीशन की आवश्यकता है।

लिंग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
लिंग	छात्र	43 (22.2)	26 (13.5)	14 (7.2)	8 (4.1)	7 (3.6)	98 (50.8)	8.24 (0.05)
	छात्रा	43 (22.2)	16 (8.3)	27 (14.0)	7 (3.6)	2 (1.03)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.127 : प्रश्न संख्या 25 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

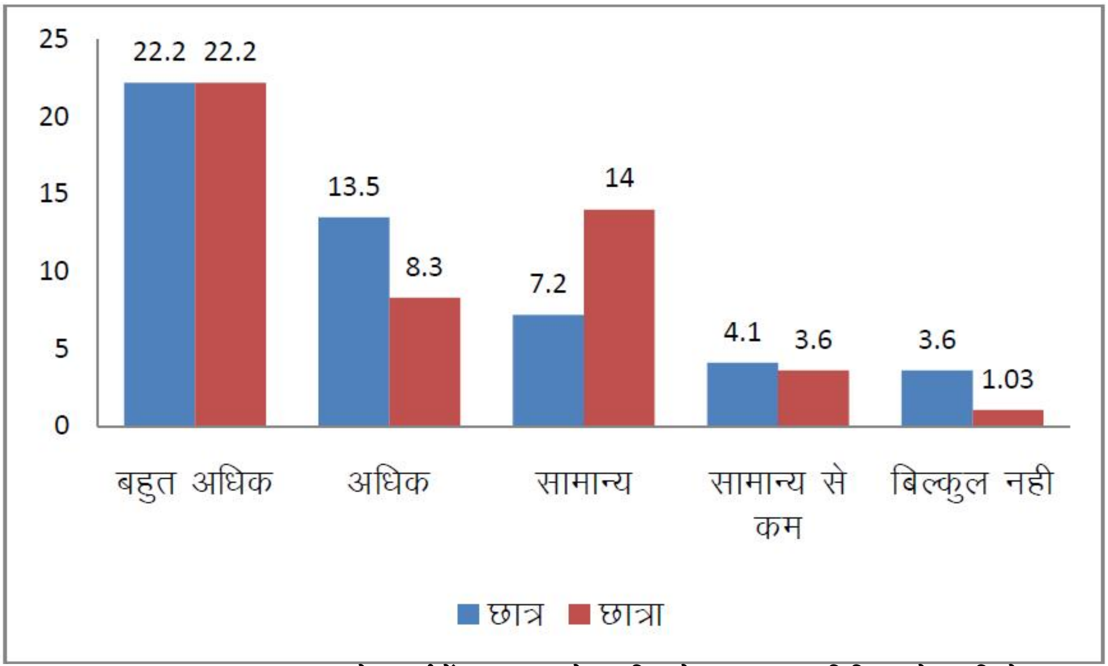

ग्राफ सं0 4.126 : प्रश्न संख्या 25 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का लिंग के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

लिंग के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल 50.8 प्रतिशत छात्रों में से 21.8 प्रतिशत छात्रों ने बहुत अधिक, 13.5 प्रतिशत छात्रों ने अधिक, 7.2 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य, 4.1 प्रतिशत छात्रों ने सामान्य से कम तथा 4.1 प्रतिशत छात्रों ने बिल्कुल नही मे उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर छात्रों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर समाचारों के प्रसारण के परमीशन की आवश्यकता है। इसी प्रकार कुल 49.2 प्रतिशत छात्राओं में से 21.8 प्रतिशत छात्राओं ने बहुत अधिक, 8.3 प्रतिशत छात्राओं ने अधिक, 14.0 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य, 3.6 प्रतिशत छात्राओं ने सामान्य से कम तथा 1.6 प्रतिशत छात्राओं ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अधिकांश छात्राओं के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर समाचारों के प्रसारण के परमीशन की आवश्यकता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 8.24 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं में सामुदायिक रेडियो पर समाचारों के प्रसारण के परमीशन की आवश्यकता के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शैक्षिक योग्यता के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
शैक्षिक योग्यता	स्नातक	45 (23.3)	20 (10.4)	17 (8.8)	8 (4.1)	4 (2.1)	94 (48.7)	3.16 (0.05)
	परास्नातक	41 (21.2)	22 (11.4)	24 (12.4)	7 (3.6)	5 (2.6)	99 (51.3)	

तालिका सं0 4.128 : प्रश्न संख्या 25 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

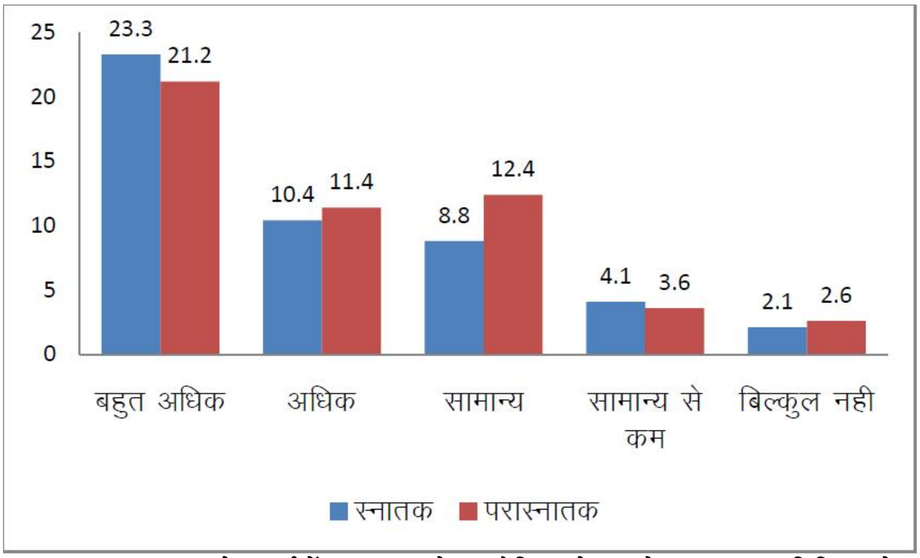

ग्राफ सं0 4.127 : प्रश्न संख्या 25 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

शैक्षिक योग्यता के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 48.7 प्रतिशत स्नातक विद्यार्थियों मे से 22.8 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बहुत अधिक, 10.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 8.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 4.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 2.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि स्नातक वर्ग के अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर समाचारों के प्रसारण के परमीशन की आवश्यकता है। इसी प्रकार कुल 51.3 प्रतिशत परास्नातक विद्यार्थियो में से 20.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 11.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 12.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 3.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि परास्नातक वर्ग के अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर समाचारों के प्रसारण के परमीशन की आवश्यकता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 3.16 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् स्नातक एंव परास्नातक वर्ग के विद्यार्थियो में सामुदायिक रेडियो पर समाचारों के प्रसारण में परमीशन की आवश्यकता के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

विषय वर्ग के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
विषय वर्ग	कला	44 (22.8)	23 (11.9)	16 (8.3)	9 (4.7)	6 (3.1)	98 (50.8)	2.16 (0.05)
	विज्ञान	42 (21.8)	19 (9.9)	25 (12.9)	6 (3.1)	3 (1.6)	95 (49.2)	

तालिका सं0 4.129 : प्रश्न संख्या 25 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

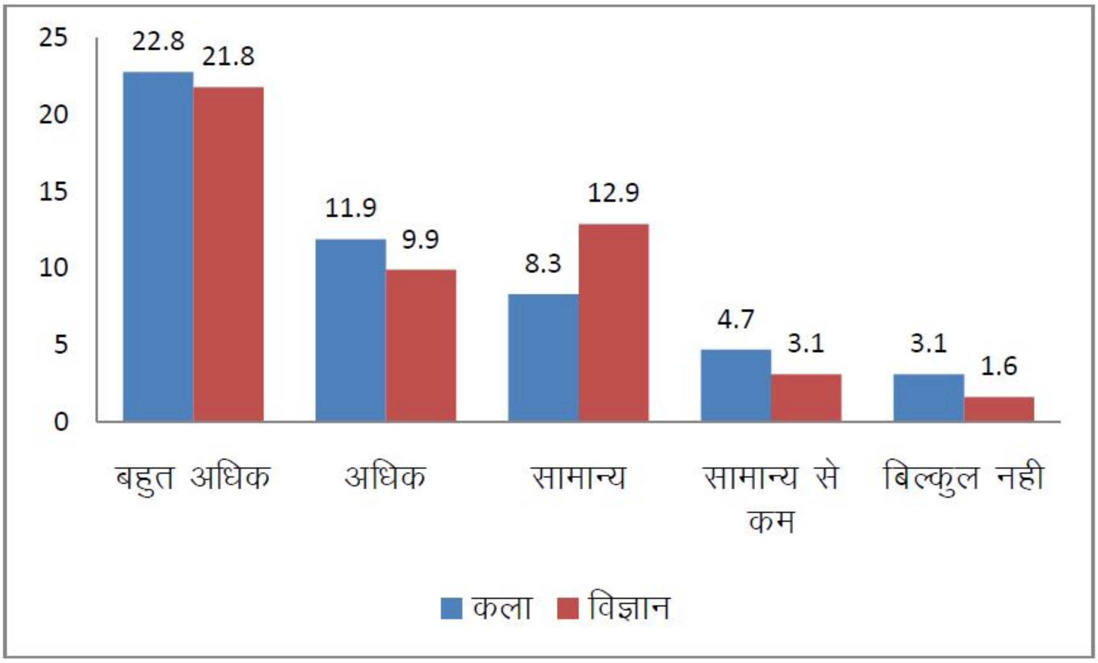

ग्राफ सं0 4.128 : प्रश्न संख्या 25 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का विषय के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 3.16 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् स्नातक एंव परास्नातक वर्ग के विद्यार्थियो में सामुदायिक रेडियो पर समाचारों के प्रसारण में परमीशन की आवश्यकता के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 2.16 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् कला एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में सामुदायिक रेडियो पर समाचारों के प्रसारण के परमीशन की आवश्यकता के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर -

चर	श्रेणी	प्रत्युत्तर संख्या एवं (प्रतिशत)					योग	काई वर्ग मान एंव (सार्थकता)
		बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही		
आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	35 (18.1)	9 (4.7)	4 (2.1)	4 (2.1)	3 (1.6)	55 (28.5)	3.16 (0.05)
	शहरी	51 (26.4)	33 (17.1)	37 (19.2)	11 (5.7)	6 (3.1)	138 (71.5)	

तालिका सं0 4.130 : प्रश्न संख्या 25 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

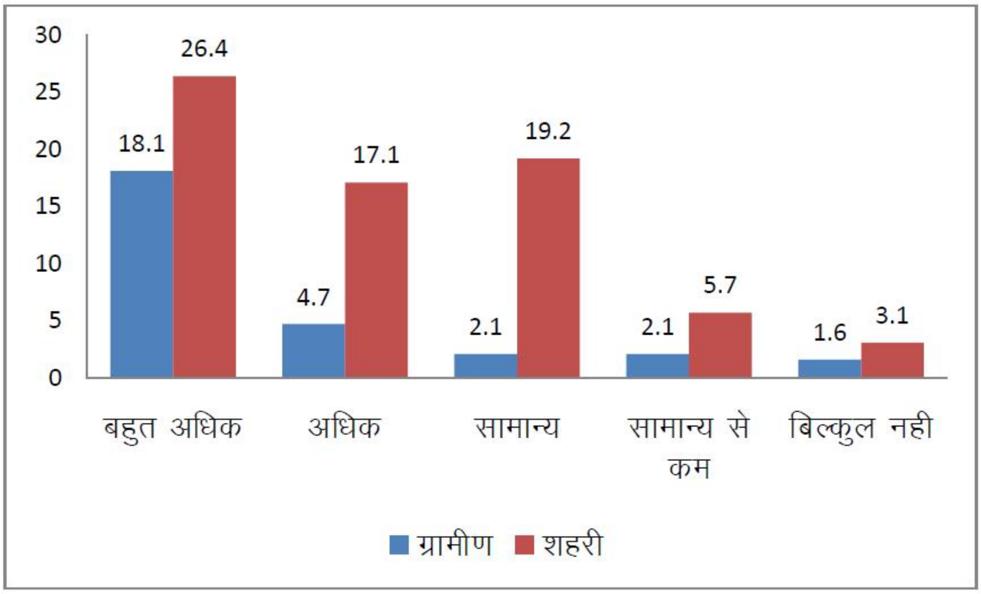

ग्राफ सं0 4.129 : प्रश्न संख्या 25 के संदर्भ में उत्तर दाताओं का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 28.5 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों मे से 17.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 4.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य से कम तथा 2.1 प्रतिशत विद्यार्थियो ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण पृष्ठभूमि के अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर समाचारों के प्रसारण में परमीशन की आवश्यकता है। इसी प्रकार कुल 71.5 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों में से 25.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत अधिक, 17.1 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अधिक, 19.2 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सामान्य, 5.7 प्रतिशत विद्यार्थियो ने सामान्य से कम तथा 3.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बिल्कुल नहीं में उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि शहरी पृष्ठभूमि के अधिकतर विद्यार्थियों के अनुसार सामुदायिक रेडियो पर समाचारों के प्रसारण में परमीशन की आवश्यकता है।

सांख्यिकी विश्लेषण से काई वर्ग का मान 3.16 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि विद्यार्थियों के विद्यार्थियों मेसामुदायिक रेडियो पर समाचारों के प्रसारण के परमीशन की आवश्यकता के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।

प्रश्न-26 उच्च शिक्षा में सामुदायिक रेडियो की उपयोगिता, चुनौतियां एवं संभावनाओं पर अपने विचर व्यक्त कीजिये।

उक्त प्रश्न के संदर्भ में उत्तर दाताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रियाओं के विश्लेषण से ये ज्ञात होता है कि विश्वविद्यालय के विद्यार्थीयों में सामुदायिक रेडियो के प्रति एक स्वाभाविक आकर्षण है। वो सामुदायिक रेडियो सुनना पसंद करते हैं। ये ज्ञात हुआ कि वो अपने विषय के अतिरिक्त अन्य विषयों पर आधारित कार्यक्रमों को सुनते हैं। अधिकांश विद्यार्थियों का मानना है कि प्रसारण की तकनीकी खामियों एवं रोचक प्रस्तुति के अभाव में में भी वो कार्यक्रमों के साथ बने रहते हैं क्योंकि वो सामुदायिक रेडियो से आत्मिक जुडाव महसूस करते हैं और दूसरे शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत अपने मित्रों से गर्व पूर्वक अपने सामुदायिक रेडियो का बखान करते हैं लेकिन नियमित रूप से नये कार्यक्रमों का प्रसारण नहीं होने से उन्हें दुख होता है।

विद्यार्थियों ने ये माना है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के रेडियो कार्यक्रम मन की बात को वो तल्लीनता के साथ सुनते हैं उनकी बात सामुदायिक रेडियो की अवधारणा के ऐन मुताबिक लगती है उसमे समुदाय की सहभागिता का समावेश रहता है। उनका मानना है कि उक्त कार्यक्रम उन्हे निराशा में संबल प्रदान करता है और उनके मनोबल को बढ़ाने के साथ साथ देश एवं समाज के प्रति कुछ बेहतर योगदान के प्रेरित करता है।

अधिकांश विद्यार्थियों का मानना है कि उच्च शिक्षा में सामुदायिक रेडियो की उपयोगिता को बढ़ा कर इसकी भूमिका महत्वपूर्ण बनाई जा सकती है। उनका मानना है कि सामुदायिक रेडियो पर प्रति दिन नये कार्यक्रमों का प्रसारण सुनिश्चित किया जाना चाहिए, समय और आवश्यकतानुसार पुराने कार्यक्रमों का पुनःप्रसारण किया जा सकता है लेकिन नये और मौलिक कार्यक्रमों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। उनका मानना है कि नये और पुराने कार्यक्रमों को मिला कर कम से कम 4 घंटे प्रतिदिन प्रसारण अवश्य होना चाहिए।

विद्यार्थियों ने ये भी माना है कि उनका सामुदायिक रेडियो वित्तीय चुनौतियों एवं दक्ष कार्मिकों की समस्या से जूझ रहा है, हालांकि वो प्रशिक्षण के समुचित व्यवस्था के अभाव को स्वीकार करते हुए सामुदायिक रेडियो विशेषज्ञों की सेवाएं लेने के समर्थन में हैं। उन्होंने माना भी है और मांग भी की है कि

सामुदायिक रेडियो पर समाचारों के प्रसारण की अनुमति मिलनी चाहिए एवं इसकी लोकप्रियता बढ़ाने के लिए प्रति घंटे समाचारों का प्रसारण होना चाहिए।

4.5 गुणात्मक आंकड़े (Qualitative Data)

प्रस्तुत शोध कार्य में गुणात्मक आंकड़ों के संग्रहण, विश्लेषण एवं व्याख्या के लिए 20 विशेषज्ञों को उद्देश्यपूर्ण निदर्शन (Purposive Sampling) से चयनित किया गया है। अध्ययन में 10 उन विशेषज्ञों का चुनाव किया गया है जिनकी शैक्षिक योग्यता पत्रकारिता एवं जनसंचार विषय में पीएच.डी. है साथ ही साथ मीडिया शिक्षक के रूप में 5 वर्ष के अध्यापन का अनुभव है। कुल विशेषज्ञों में से 10 उन विशेषज्ञों का चयन किया गया है जो पिछले 10 वर्षों से मीडिया के व्यावहारिक कार्यों में संलग्न रहते हुए मीडिया इंडस्ट्री या विशेषकर रेडियो नियामक संस्थाओं से संबंधित रहे हैं तथा जिन्हें रेडियो एवं सामुदायिक रेडियो के संचालन व प्रबंधन के क्षेत्र में विशेष अनुभव प्राप्त है।

विशेषज्ञों में प्रत्येक से निर्धारित प्रश्नों पर अर्ध संरचनात्मक साक्षात्कार के माध्यम से जानकारी संग्रहित की गई है तथा उन्हीं 20 में से 5 विशेषज्ञों का समूह बनाकर पुनः उन्हीं निर्धारित प्रश्नों पर परिचर्या संचालित कर के गुणात्मक आंकड़ों का संग्रहण किया गया है। तदुपरांत विषय वस्तु विश्लेषण के द्वारा आंकड़ों की व्याख्या की गई है।

उपकरण	साक्षात्कार, फोकस समूह परिचर्चा
विशेषज्ञ	20 विशेषज्ञ (मीडिया शिक्षा एवं सामुदायिक रेडियो प्रबंधक, संचालक एवं नीति निर्धारक)
सांख्यिकी विधि	विषय वस्तु विश्लेषण

तालिका सं0 4.131 : गुणात्मक आंकड़ों के लिए उपकरण, विशेषज्ञ एवं सांख्यिकीय विधि

फोकस समूह परिचर्चा

प्रश्न-1 क्या आप मानते हैं कि उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों से नियमित प्रसारण के लिए थन के स्रोतों की पर्याप्त उपलब्धता है?

विशेषज्ञों से व्यक्तिगत साक्षात्कार एवं पांच सदस्यीय विशेषज्ञ समिति से फोकस समूह परिचर्चा के दौरान विचर विमर्श में लगभग सभी विशेषज्ञों का मानना है कि उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के सुचारू रूप से संचालन के लिए धन की पर्याप्त उपलब्धता एक अनिवार्य आवश्यकता है।

सामुदायिक रेडियो विशेषज्ञ एवं बीबीडी एफएम की निदेशक डॉ जया तिवारी कहती हैं कि मीडिया के किसी भी संगठन के पास धन का सबसे बड़ा स्रोत विज्ञापन होता है। विज्ञापनों के द्वारा ही मीडिया संगठन अपने खर्चों की पूर्ति करते हैं। चूंकि विश्वविद्यालयों के पास धन के अन्य स्रोत भी होते हैं इसलिए अगर सामुदायिक रेडियो के संचालन में धन की कमी आती है तो विश्वविद्यालय अपने दूसरे मदों का धन सामुदायिक रेडियो केंद्र के सुचारू संचालन में समायोजित करते हैं। वहीं दूसरी तरफ आकाशवाणी लखनऊ के कार्यक्रम अधिकारी श्री सुभाष खन्ना कार्यक्रमों की उपयोगिता एवं गुणवत्ता की ओर इशारा करते हुए बताते हैं कि यदि आपके केन्द्र से प्रसारित कार्यक्रम उपयोगी, रोचक एवं गुणवत्तापरक है तो कोई कारण नहीं कि विज्ञापन ना मिले। श्री खन्ना अपने अनुभवों को साझा करते हुए बताते हैं कि पूर्व में इन्दिरा गॉधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो 'ज्ञानवाणी' का प्रसारण हमारे आकाशवाणी के परिसर से होता था। उस दौरान हमने देखा है कि ज्ञानवाणी पर विज्ञापन के लिए एयरटाइम लेने वालों की भारी भीड़ जमा रहती थी।

प्रश्न-2- क्या आप मानते हैं कि उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों से मौलिक प्रसारण के लिए उनके पास उपयोगी सामग्री की पर्याप्त उपलब्धता है?

विशेषज्ञों से व्यक्तिगत साक्षात्कार एवं पांच सदस्यीय विशेषज्ञ समिति से फोकस समूह परिचर्चा के दौरान विचर विमर्श में सभी विशेषज्ञों का एक स्वर में मानना है कि उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के सुचारू रूप से संचालन के लिए उपयोगी सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित करना अति आवश्यक है। कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि इस कार्य में सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के प्रभारियों की मुख्य भूमिका है।

सीएमएस रेडियो लखनऊ के वरिष्ठ प्रसारण अधिकारी श्री हर्ष बावा बताते हैं कि उनके सामुदायिक रेडियो केन्द्र से प्रतिदिन आठ घंटे का प्रसारण होता है। जिसमें कुछ कार्यक्रमों का पुनः प्रसारण होता है लेकिन नवीन एवं मौलिक कार्यक्रमों का भी प्रसारण होता है। सीएमएस रेडियो की वरिष्ठ ऐंकर श्रीमती वनीता शर्मा बताती हैं कि वैसे तो अधिकांश कार्यक्रमों का निर्माण हमारे कॉलेज के शिक्षक एवं विद्यार्थियों के द्वारा किया जाता है लेकिन आवश्यकतानुसार बाहर के विशेषज्ञों की भी सेवाएं ली जाती हैं। वहीं दूसरी तरफ आकाशवाणी लखनऊ के पूर्व कार्यक्रम अधिकारी श्री अवधेश प्रताप सिंह बताते हैं कि विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित अधिकतर सामुदायिक रेडियो केन्द्रों से प्रसारित कार्यक्रमों को सुनने के बाद ऐसा प्रतीत होता है कि वहाँ आवश्यकता के अनुरूप गुणवत्तायुक्त एवं उपयोगी सामग्री का उत्पादन नहीं हो पा रहा है। इसके बावजूद वो मानते हैं कि उच्च शिक्षा में सामुदायिक रेडियो के प्रयोग ने पठन-पाठन को सुलभ किया है।

प्रश्न-3 क्या आप मानते हैं कि उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों से निर्बाध प्रसारण के लिए प्रशिक्षित मानव संसाधन की पर्याप्त उपलब्धता है?

विशेषज्ञों से व्यक्तिगत साक्षात्कार एवं पांच सदस्यीय विशेषज्ञ समिति से फोकस समूह परिचर्चा के दौरान विचर विमर्श में सभी विशेषज्ञों का एकमत से मानना है कि उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के सुचारू रूप से संचालन के लिए प्रशिक्षित मानव संसाधन की उपलब्धता अनिवार्य आवश्यकता है। हालांकि विशेषज्ञों में इस पहलू पर मत भिन्नता पाई गई कि प्रशिक्षित मानव संसाधनों की आपूर्ति के लिए संस्थान से बाहर के विशेषज्ञों की सेवाएं ली जायें या फिर संस्थान के लोगों को प्रशिक्षित किया जाये।

रेडियो विशेषज्ञ एवं आकाशवाणी लखनऊ की सहायक निदेशक सह कार्यक्रम प्रमुख सुश्री मीनू खरे बताती हैं कि शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों से प्रसारित कार्यक्रमों को सुन कर वहां पर कार्यरत कार्मिकों की कुशलता एवं दक्षता का अनुमान लगाया जा सकता है। सुश्री खरे का मानना है कि उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों का समुदाय मूलतः उसकी प्रसारण परिधि में आने वाले विद्यार्थी एवं शिक्षक हैं इसलिए उन्हें प्रशिक्षण देकर कुशल सामुदायिक रेडियोकर्मी के तौर पर तैयार किया जा सकता है। वरिष्ठ प्रसारण अधिकारी एवं आकाशवाणी लखनऊ के पूर्व सहायक निदेशक श्री प्रतुल जोशी का मानना है कि पूर्वोत्तर भारत की अपेक्षा उत्तर भारत में सामुदायिक रेडियो कार्मिकों में तकनीकी दक्षता का अभाव दिखता है। उन्होंने सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के निर्बाध प्रसारण के लिए प्रशिक्षित मानव संसाधन की आवश्यकता जताई।

प्रश्न-4 उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो की विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से उपयोगिता क्या है?

विशेषज्ञों से व्यक्तिगत साक्षात्कार एवं पांच सदस्यीय विशेषज्ञ समिति से फोकस समूह परिचर्चा के दौरान विचर विमर्श में लगभग सभी विशेषज्ञों का मानना है कि उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों का औचित्य ही वहां के विद्यार्थियों की रुचि पर निर्भर करता है। विशेषज्ञों का मानना है कि उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षकों की भारी कमी है। शिक्षक भर्ती प्रक्रिया इतनी जटिल है कि सभी अभ्यर्थियों को संतुष्ट कर पाना बहुत मुश्किल होता है ऐसी स्थिति में असंतुष्ट अभ्यर्थी शिक्षक भर्ती परिणामों से निराश हो कर अदालत चले जाते हैं। जिसके कारण शिक्षकों की भर्ती में विलंब होता है परिणामस्वरूप विद्यार्थियों का नुकसान होता है। विद्यार्थियों का नुकसान न हो तथा उनकी पढाई सुचारू रूप से चलती रहे इसमें सामुदायिक रेडियो एक अदृश्य शिक्षक की प्रभावी भूमिका निभाता है।

मीडिया शिक्षक एवं लखनऊ विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के प्रोफेसर (डॉ) मुकुल श्रीवास्तव का मानना है कि कक्षाओं में पठन-पाठन के दौरान कभी कभी त्रुटियां भी हो जाती हैं कभी किसी मानसिक तनाव की वजह से पाठ्यक्रम को पूरी तल्लीनता से पढा पाना मुश्किल हो जाता है। विद्यार्थी भी किसी समस्या के ना समझ पाने पर उसको बार बार पूछने से कतराता है लेकिन सामुदायिक रेडियो पर एक शिक्षक तथ्यों, संदर्भों को क्रास चेक करने के उपरांत ही बोलता है, वहां मानसिक स्थितियों का विशेष महत्व नहीं होता क्यों कि शिक्षक तभी सामुदायिक रेडियो पर आता है जब वो पूरी तरह आत्मविश्वास से परिपूर्ण होता है। विद्यार्थियों के लिए भी उक्त व्याख्यान को सुनना आसान होता है वो उस व्याख्यान को अपने मोबाइल पर रिकार्ड कर उसे बाद में भी सुन सकता है। वहीं दूसरी तरफ रेडियो ऐंकर एवं विजिटिंग फैकल्टी श्री अनवारुल हसन बताते हैं कि सामुदायिक रेडियो की परिकल्पना स्थानीय समुदाय को सूचित, शिक्षित एवं सशक्त करने के उद्देश्यों को लेकर की गई थी,। उनका मानना है कि सुधार की संभावनाओं के बावजूद सामुदायिक रेडियो केन्द्रों द्वारा प्रसारित कार्यक्रम समुदाय हित में होते हैं।

प्रश्न-5 उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो की संस्थान के दृष्टिकोण से उपयोगिता क्या है?

विशेषज्ञों से व्यक्तिगत साक्षात्कार एवं पांच सदस्यीय विशेषज्ञ समिति से फोकस समूह परिचर्चा के दौरान विचर विमर्श में लगभग सभी विशेषज्ञों का मानना है कि उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के सुचारू रूप से संचालन से संस्थान को अनेक प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं। देश के प्रख्यात शिक्षाविद् एवं वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति तथा छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति प्रोफेसर (डॉ) विनय कुमार पाठक बताते हैं कि जब मैं उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय का कुलपति था तो वहां सामुदायिक रेडियो केन्द्र की स्थापना कर शिक्षण एवं प्रशिक्षण में एक अभिनव प्रयोग किया तथा वो प्रयोग सफल रहा जिसका प्रत्यक्ष लाभ विद्यार्थियों एवं विश्वविद्यालय के साथ साथ आसपास के समुदायों को भी प्राप्त हुआ।

प्रोफेसर पाठक कहते हैं कि उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा सामुदायिक रेडियो केन्द्र के संचालन से कई प्रकार के लाभ होते हैं। पहला लाभ तो ये है कि संबंधित संस्थान की साख बढ़ती है। दूसरा लाभ ये है कि संबंधित संस्थान की ओर युवाओं का रुझान बढ़ता है चूंकि युवाओं में मीडिया के प्रति एक सहज आकर्षण होता है इसलिए जब और जहाँ मौका मिलता है वहां युवा अपनी बात लिखने, बोलने और दिखने की कोशिश करता है इसके लिए वह फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, यूट्यूब चैनल तक पर अपना समय खपाता है। जब एक युवा या युवती को सामुदायिक रेडियो सहित संस्थान और सामुदायिक रेडियो रहित संस्थान के चयन के लिए कहा जाये तो निश्चित रूप से युवा सामुदायिक रेडियो सहित संस्थान के विकल्प का चयन करना चाहेगा।

प्रश्न-6 उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो की विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से चुनौतियां क्या हैं ?

विशेषज्ञों से व्यक्तिगत साक्षात्कार एवं पांच सदस्यीय विशेषज्ञ समिति से फोकस समूह परिचर्चा के दौरान विचर विमर्श में लगभग सभी विशेषज्ञों का मानना है कि उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के सुचारू रूप से संचालन के लिए विद्यार्थियों की चुनौतियों का समाधान करना आवश्यक है। विशेषज्ञों ने विद्यार्थियों के समक्ष उपस्थित चुनौतियों को स्वीकार किया लेकिन उनके अलग अलग कारक बताये।

मीडिया शिक्षक डॉ विजय प्रकाश उपाध्याय ने बताया कि सामुदायिक रेडियो पर प्रसारण की निरंतरता एक चुनौती है। डॉ उपाध्याय ने कुछ सामुदायिक रेडियो केन्द्रों का उदाहरण देते हुए बताया कि प्रसारण की अनियमितता के कारण विद्यार्थियों के उत्साह में उत्तरोत्तर कमी दर्ज की जा रही है। वहीं अलीगढ़ के मंगलायतन विश्वविद्यालय के सामुदायिक रेडियो केन्द्र के प्रबंधक श्री संतोष कुमार ने प्रसारण सामग्री की उपयोगिता को रेखांकित करते हुए कहा कि गुणवत्तायुक्त प्रसारण सामग्री की कमी विद्यार्थियों के लिए बड़ी चुनौती बनी हुई है। वरिष्ठ पत्रकार एवं भारतीय जनसंचर संस्थान दिल्ली में प्रोफेसर (डॉ) गोविंद सिंह कहते हैं कि उच्च शिक्षा में सामुदायिक रेडियो का अनुप्रयोग विद्यार्थियों के लिए एक अभिनव अनुभव है इसे आकर्षण का केंद्र होना चाहिए लेकिन कार्यक्रमों के लिए पटकथा लेखन, उसका आकर्षक संपादन एवं प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण का अभाव विद्यार्थियों के सामने एक बाधा बनी हुई है।

प्रश्न-7 उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो की संस्थान के दृष्टिकोण से चुनौतियां क्या हैं?

विशेषज्ञों से व्यक्तिगत साक्षात्कार एवं पांच सदस्यीय विशेषज्ञ समिति से फोकस समूह परिचर्चा के दौरान विचर विमर्श में लगभग सभी विशेषज्ञों का मानना है कि उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के सुचारू रूप से संचालन के लिए संस्थान की चुनौतियों को दृष्टिगत रखना चाहिए। विशेषज्ञों ने अन्य चुनौतियों के साथ सबसे बड़ी चुनौती के रूप में वित्तीय चुनौती को माना है। किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी लखनऊ के सामुदायिक रेडियो केजीएमयू गूंज के संरक्षक एवं कुलपति लेफ्टिनेंट जनरल प्रो (डॉ) विपिन पुरी कहते हैं कि हमारा सामुदायिक रेडियो पठन-पाठन के साथ साथ मरीजों के लिए चिकित्सकीय परामर्श प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। डॉ पुरी मानते हैं कि केजीएमयू गूंज ना सिर्फ विद्यार्थियों में बल्कि अपने प्रसारण क्षेत्र की परिधि में भी लोकप्रिय हो रहा है। फिर भी इसके संचालन के लिए हमें विज्ञापन से पर्याप्त धन की व्यवस्था नहीं हो पाती इसलिए हमें विश्वविद्यालय के दूसरे मदों से धन का समायोजन करना पड़ता है।

वहीं दूसरी तरफ मीडिया शिक्षक एवं वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय के सह आचार्य डॉ सुबोध कुमार अपने बीबीसी हिन्दी सेवा के प्रसारण के अनुभवों को साझा करते हुए बताते हैं कि बीबीसी जैसी विश्वविख्यात मीडिया संस्थान में भी मार्केटिंग की सुनियोजित व्यवस्था होती है। डॉ कुमार बताते हैं कि सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के लिए सुव्यवस्थित, सुनियोजित एवं पेशेवर मार्केटिंग रणनीति अपनाकर उसकी वित्तीय चुनौतियों से निपटा जा सकता है। रामा विश्वविद्यालय कानपुर की मीडिया शिक्षक एवं रामा रेडियो से संबद्ध सुश्री भावनी सिंह का कहना है कि सरकार द्वारा प्रायोजित कार्यक्रमों का भुगतान शीघ्र न होना भी संस्थान के दृष्टिकोण से एक चुनौती है।

प्रश्न-8 उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के वित्तीय प्रबंधन की रणनीति क्या है?

विशेषज्ञों से व्यक्तिगत साक्षात्कार एवं पांच सदस्यीय विशेषज्ञ समिति से फोकस समूह परिचर्चा के दौरान विचर विमर्श में लगभग सभी विशेषज्ञों का मानना है कि उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के सुचारू रूप से संचालन के लिए समुचित वित्त का प्रबंध अनिवार्य रूप से आवश्यक है। हालांकि विशेषज्ञों में इस बात को लेकर मत भिन्नता पाई गई कि क्या सामुदायिक रेडियो के लिए कार्पोरेट का सहयोग लिया जा सकता है या नहीं! इस मुद्दे पर कुछ विशेषज्ञों का मानना था कि सामुदायिक सहयोग से सामुदायिक रेडियो का संचालन अधिक श्रेयस्कर है।

वरिष्ठ प्रसारण अधिकारी एवं दूरदर्शन केंद्र लखनऊ के कार्यक्रम अधिशासी (समन्वय) श्री श्याम नारायण चौधरी बताते हैं कि सभी मीडिया संस्थानों के वित्त प्रबंधन की रणनीति लगभग एक जैसी होती है। आमतौर पर सभी मीडिया संस्थन विज्ञापनों एवं प्रायोजित कार्यक्रमों के द्वारा प्राप्त होने वाली आय से अपने कार्यक्रमों का निर्माण एवं कार्मिकों के वेतन भत्ते का भुगतान करते हैं। श्री चौधरी मानते हैं कि वित्तीय प्रबंधन की पारंपरिक रणनीति उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्र भी अपनाते हैं लेकिन उन्होंने रणनीतियों में अभिनव प्रयोगों की संभावनाओं पर बल दिया। वहीं दूसरी तरफ आकाशवाणी लखनऊ के वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी डॉ सुशील कुमार रॉय कहते हैं कि उच्च शैक्षणिक संस्थान, औपचारिक श्रेणी के संस्थान होते हैं इसलिए उनके द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की संरचना, उसका स्वरूप एवं उसका संचालन सुविचारित तरीके से होता है। डॉ रॉय का मानना है कि निश्चित रूप से विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्र श्रेष्ठ वित्तीय रणनीतियों के अंतर्गत कार्य करते हैं।

प्रश्न-9 उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के वित्तीय प्रबंधन में सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र की भूमिका क्या है?

विशेषज्ञों से व्यक्तिगत साक्षात्कार एवं पांच सदस्यीय विशेषज्ञ समिति से फोकस समूह परिचर्चा के दौरान विचर विमर्श में लगभग सभी विशेषज्ञों का मानना है कि उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के सुचारू रूप से संचालन में सार्वजनिक एवं निजी दोनों क्षेत्रों की भूमिका महत्वपूर्ण है।

आकाशवाणी दिल्ली के सहायक निदेशक एवं प्रधानमंत्री के मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' के फॉलोअप कार्यक्रम पोस्ट बॉक्स नंबर 111 के सूत्रधार श्री जैनेन्द्र सिंह कहते हैं कि हम एक लोक कल्याणकारी राज्य में रहते हैं जिसका ध्येय अपने नफे नुकसान से ऊपर उठ कर लोक का कल्याण करना है। जिसके लिए केंद्र सरकार से लेकर सभी राज्य सरकारें लोक कल्याण की नीतियों का निर्माण करती हैं तथा उन्हें कार्यक्रमों के द्वारा धरातल पर उतारती है। श्री सिंह का मानना है कि सामुदायिक रेडियो के संचालन में सरकारों का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से महत्वपूर्ण योगदान है। सरकारें विज्ञापन एवं प्रायोजित कार्यक्रमों के द्वारा सामुदायिक रेडियो की सहायता करती हैं तथा समय समय पर प्रोत्साहन पैकेजों के द्वारा भी उनका वित्तीय पोषण करती हैं। वहीं निजी क्षेत्रों की भूमिका के बारे में सुप्रसिद्ध रेडियो कमेंटेटर एवं दूरदर्शन लखनऊ के सहायक निदेशक श्री अनुपम पाठक बताते हैं कि निजी क्षेत्र चूंकि लाभ हानि के सिद्धांत पर कार्य करते हैं इसलिए वो उसी सामुदायिक रेडियो केन्द्र को विज्ञापन देते हैं या उन्हीं सामुदायिक रेडियो केन्द्रों पर प्रायोजित कार्यक्रम प्रसारित कराना पसंद करते हैं जिन्हें जनता की लोकप्रियता प्राप्त होती है। इसलिए उन सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के वित्तीय प्रबंधन की राह आसान होती है जहाँ नियमित, उपयोगी एवं रोचक कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है।

प्रश्न-10 उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के लिए आपका प्रस्तावित मॉडल कैसा होना चाहिए।

विशेषज्ञों से व्यक्तिगत साक्षात्कार एवं पांच सदस्यीय विशेषज्ञ समिति से फोकस समूह परिचर्चा के दौरान विचर विमर्श में लगभग सभी विशेषज्ञों का मानना है कि उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के सुचारू रूप से संचालन के लिए एक सुविचारित, सुव्यवस्थित एवं सुविधाजनक मॉडल की आवश्यकता है। सभी विशेषज्ञों का मानना है कि विद्यार्थियों को केन्द्र बिन्दु मानते हुए मॉडल की प्रस्तावना करनी चाहिए। जिसमें प्रसारण की निरंतरता, प्रसारण की उपयोगिता एवं प्रसारण की रोचकता जैसी चिंताएं सर्वोपरि होनी चाहिए।

वरिष्ठ प्रसारण अधिकारी एवं दूरदर्शन केन्द्र लखनऊ की कार्यक्रम प्रमुख, सहायक निदेशक श्रीमती रमा अरुण त्रिवेदी कहती हैं कि सामुदायिक रेडियो केन्द्रों से कार्यक्रमों के प्रसारण में निरंतरता होनी चाहिए, प्रसारण की निरंतरता से सामुदायिक रेडियो की पहुंच बढ़गी और जब पहुंच बढेगी तो समुदाय में इसकी लोकप्रियता बढेगी। वहीं प्रसारण की उपयोगिता को रेखांकित करते हुए आकाशवाणी लखनऊ के समाचार एकांश के प्रमुख एवं उप निदेशक श्री दिलीप शुक्ल बताते हैं कि सामुदायिक रेडियो की प्रासंगिकता तभी बरकरार रहेगी जब उस पर समुदाय के लिए उपयोगी कार्यक्रमों का प्रसारण किया जायेगा।उन्होंने ऐसे कार्यक्रमों के निर्माण की आवश्यकता जताई जो प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहायक सिद्ध हो सकें।

सामुदायिक रेडियो पर समाचारों के प्रसारण की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए आकाशवाणी लखनऊ के पूर्व निदेशक श्री पृथ्वीराज चव्हाण कहते हैं कि सामुदायिक रेडियो पर समाचारों के प्रसारण की अनुमति मिलनी चाहिए। उनका मानना है सामुदायिक रेडियो पर नियमित समाचारों के प्रसारण से लोगों का जुड़ाव बढ़ेगा जिससे इसकी लोकप्रियता में बढ़ोतरी होगी। वहीं वरिष्ठ प्रसारक एवं दूरदर्शन केन्द्र लखनऊ के सहायक निदेशक श्री आत्म प्रकाश मिश्र कहते हैं कि कार्यक्रमों की रोचकता किसी भी प्रसारण संस्थान की आत्मा होती है किसी भी कार्यक्रम की रोचकता के लिए गुणवत्तायुक्त पटकथा, तकनीकी दक्षता एवं मनमोहक प्रस्तुतीकरण जैसी अनिवार्यता सम्मिलित होती है। श्री मिश्र का मानना है कि कार्यक्रमों की रोचकता से सामुदायिक रेडियो की लोकप्रियता में बढ़ोतरी होगी।

❖❖❖

प्राप्तियाँ, निष्कर्ष एवं संस्तुतियाँ

5.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत अध्याय, प्राप्तियां, निष्कर्ष एवं संस्तुतियां में शोध अध्ययन के परिणाम उसके सार एवं उसके सुझावों को संक्षिप्त एवं स्पष्ट रूप में बताने का प्रयास किया गया है। अध्याय को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। पहले भाग में शोध की प्राप्तियों को उद्देश्य के अनुक्रमानुसार बताया गया है तथा परिकल्पना के परिणामों को बताया गया है। दूसरे भाग में निष्कर्ष और तीसरे भाग में सुझाव के साथ साथ सामुदायिक रेडियो के उपयुक्त मॉडल के लिए संस्तुतियां की गई हैं।

21 वीं सदी के तीसरे दशक में भी देश के सामने एक बड़ी चुनौती हर घर और हर नागरिक तक शिक्षा की लौ पहुंचाना है। दुनिया एक ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था के युग में प्रवेश कर चुकी है जिसकी बुनियाद शिक्षा है। लेकिन अफसोस की बात ये है कि देश में अभी भी निरक्षर लोगों की संख्या कुल जनसंख्या का 26 प्रतिशत से अधिक है। यही नहीं, एक बड़ी आबादी उच्च शिक्षा के दायरे से बाहर है। जबकि महिलाओं और समाज के वंचित एवं दूर-दराज़ के वर्गों के एक बड़े हिस्से की पहुंच औपचारिक शिक्षा तक नहीं हो पा रही है। इसके सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कारण हो सकते हैं। अगर उन कारणों की तह में न भी जायें तो शिक्षा के प्रसार की बढ़ती आवश्यकता से इंकार नहीं किया जा सकता। जाहिर है, इसके लिए ऐसे उपाय और माध्यम तलाशने की जरूरत है जिससे शिक्षा की रोशनी हर घर और हर नागरिक तक पहुंचाया जा सके। रेडियो ऐसा ही एक सशक्त और प्रभावशाली माध्यम है जो पिछले सौ वर्षों से सूचना, शिक्षा एवं मनोरंजन का सबसे सस्ता सबसे सुलभ सबसे सहज साधन बना हुआ है। सूचना दरिद्रता के उस दौर में भी और सूचना समृद्धि के इस दौर में भी व्यक्तियों के परस्पर संबंध स्थापित करने का सुगम मंच रेडियो है। 1995 के सर्वाोच्च न्यायालय के ऐतिहासिक फैसले के बाद 2002 में भारत सरकार के सामुदायिक रेडियो की स्थापना एवं संचालन की नीतियों को आधिकारिक तौर पर निर्धारित किये जाने और 2006 में उसे संशोधित किये जाने तक सामुदायिक रेडियो क्षेत्र में काफी प्रगति हुई है। चूंकि यह अध्ययन उच्च शिक्षा में सामुदायिक रेडियो के हस्तक्षेप की पड़ताल करता है इसलिए यहाँ हमने सामुदायिक रेडियो की भूमिका को उच्च शिक्षा तक ही सीमित रखा है।

5.2 प्राप्तियाँ

सामाजिक विषयों पर शोध हो या वैज्ञानिक विषयों पर, अगर उसका निष्कर्ष नहीं बताया जाये तो संभव है कि उसके परिणाम को समझने में मुश्किल हो। चूँकि शोध अध्ययन में शोध के प्रत्येक पक्ष को स्पष्टतः लिखा जाता है इसलिए ये आवश्यक हो जाता है कि शोध अध्ययन के दौरान प्राप्त परिणामों का निष्कर्ष स्पष्ट शब्दों में लिखा जाये ताकि उसे समझने में आसानी हो। प्रस्तुत शोध कार्य के परिणामों को शोध शीर्षक के उद्देश्यों के अनुसार लिखा गया है।

5.2.1 उद्देश्य - 1 उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की वस्तुस्थिति का अध्ययन।

वस्तुस्थिति का अर्थ वास्तविक स्थिति से है। शोध समस्या के उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण के उपरांत परिणाम बताते हैं कि उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो को विद्यार्थी सुनना पसंद करते हैं। वो सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित हो रहे शैक्षिक कार्यक्रमों को भी पसंद करते हैं लेकिन प्रतिदिन के प्रसारण में शिक्षा आधारित नये कार्यक्रमों का अभाव, कार्यक्रमों को रोचक एवं समुदाय सहभागिता आधारित बनाने के लिए लाइव फोन इन प्रारुप की कमी, कार्मिकों की दक्षता एवं कुशलता का अभाव तथा प्रसारण योग्य उपयोगी सामग्री की किल्लत से सामुदायिक रेडियो के कार्यक्रमों की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है । हालांकि शोध अध्ययन के परिणाम ये भी बताते हैं कि सामुदायिक रेडियो द्वारा प्रसारित सामग्री में 50 प्रतिशत से अधिक सामग्री शिक्षा पर आधारित होती है तथा वो सामग्री विद्यार्थियों के पाठ्यक्रमों से संबंधित होती है।

हमारे अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि कार्यक्रमों के निर्माण एवं उसके प्रस्तुतीकरण में विद्यार्थियों की सहभागिता के बावजूद उन्हें कोई प्रोत्साहन राशि अथवा कोई प्रोत्साहन प्रमाणपत्र प्रदान नहीं किया जाता है। विज्ञापनों के संबंध में अध्ययन के परिणाम इस ओर इंगित करते हैं कि सामुदायिक रेडियो पर प्रति घंटे के कार्यक्रम में 5 मिनट के विज्ञापन के प्रसारण की स्थिति न्यूनतम है। अध्ययन से पता चला कि उच्च शिक्षण संस्थानों के पास सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के संचालन के लिए धन के पर्याप्त स्रोत नहीं है उन्हें इस के संचालन के लिए अपने दूसरे मदों से व्यवस्था करनी पड़ रही है।

5.2.2 उद्देश्य - 2. उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों से प्रसारित कार्यक्रमों की उपयोगिता का अध्ययन।

उपयोगिता का अर्थ उस आनंद या संतुष्टि की डिग्री से है जो एक व्यक्ति को किसी कार्य से प्राप्त होता है। शोध समस्या के उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण के उपरांत परिणाम बताते हैं कि उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो पर कार्यक्रमों की निरंतरता से विद्यार्थियों में संतोष है लेकिन वो प्रसारण अवधि में बढ़ोतरी की मांग कर रहे हैं। वो कार्यक्रमों के बारे में श्रोताओं की प्रतिपुष्टि से संतुष्ट है। सामुदायिक रेडियो केन्द्रों द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों को सुन कर उन की जिज्ञासाओं का समाधान हो जाता है। उनके लिए कार्यक्रमों का प्रसारण समय भी उपयुक्त है तकनीकी रूप से देखें तो उन्होंने Reception Quality पर भी संतोष जताया है। विद्यार्थी सामुदायिक रेडियो पर कला एवं कला विषयों से संबंधित पाठ्यक्रमों का प्रसारण भी पर्याप्त मात्रा में मानते हैं फिर भी वो सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित कार्यक्रमों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहायक नहीं मानते हैं। परिणामों से पता चलता है कि सामुदायिक रेडियो केन्द्रों पर विज्ञान एवं तकनीकी विषयों से संबंधित पाठ्यक्रमों के प्रसारण की मात्रा कला एवं कला विषयों के अपेक्षाकृत कम है। हालांकि विद्यार्थियों का मानना है कि दोनों ही विषयों का प्रस्तुतीकरण रोचक नहीं है।

प्रधानमंत्री के मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात को लेकर शोध अध्ययन के तथ्य बहुत ही रोचक परिणाम प्रस्तुत करते हैं, परिणामों के अनुसार मन की बात कार्यक्रम ने सामुदायिक रेडियो की लोकप्रियता में बढ़ोतरी की है विद्यार्थियों में इस कार्यक्रम को लेकर उत्साह एवं उत्सुकता बरकरार रहती है वो चिट्ठी एवं ईमेल के द्वारा प्रधानमंत्री से अपने मन की बात भी साझा करते हैं। अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि निराशा की अवस्था में प्रधानमंत्री के मन की बात कार्यक्रम से उनमें संबल के साथ साथ आशा की किरण का संचर होता है। विद्यार्थी मन की बात को सामाजिक सद्भाव एवं शैक्षिक जागरूकता में बढ़ोतरी करने वाला कार्यक्रम मानते हैं। परिणामों से ज्ञात होता है कि सामुदायिक रेडियो केन्द्रों का संचालन विद्यार्थियों एवं संस्थानों दोनों के लिए उपयोगी है।

5.2.3 उद्देश्य - 3. उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की चुनौतियों का अध्ययन।

चुनौती कोई एक समस्या नहीं है। आमतौर पर उन्हीं मुश्किलों को चुनौती कहा जाता है जो महत्त्वपूर्ण तो हैं लेकिन जिन पर जीत हासिल की जा सकती है। यदि किसी मुश्किल के भीतर ऐसी संभावना है कि उस मुश्किल से छुटकारा मिल सके तो उसे हम चुनौती कहते हैं। शोध समस्या के उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण के उपरांत परिणाम बताते हैं कि उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित हो रहे कार्यक्रमों की गुणवत्ता एवं उपयोगिता को उत्कृष्ट बनाने के लिए रेडियो विशेषज्ञों की आवश्यकता है। क्योंकि तकनीकी रूप से दक्ष एवं कुशल कार्मिकों के अभाव में प्रसारण में व्यवधान उत्पन्न होता है जिससे विद्यार्थियों की पढ़ाई प्रभावित होती है। हालांकि तकनीकी व्यवधानों को ठीक कर दिये जाने पर विद्यार्थीयों की नकारात्मकता सकारात्मक ऊर्जा में परिवर्तित हो जाती है। फिर भी प्रसारण की उपयोगिता एवं गुणवत्ता में सुधार के लिए वो रेडियो विशेषज्ञों की सेवाएं लेने के पक्ष में हैं। वहीं दूसरी तरफ शोध अध्ययन के परिणाम इस ओर इंगित करते हैं कि सामुदायिक रेडियो दिशा-निर्देश 2006 को संशोधित कर उसे समुदाय हित में बनाया जाने के साथ सामुदायिक रेडियो संचालकों की शिकायतों एवं सुझावों के त्वरित संबोधन के शिकायत निवारण पोर्टल का गठित किया जाये।

शोध के परिणामों के अनुसार हार्ड समाचारों के प्रसारण पर प्रतिबंध तथा निजी संस्थानों / प्रतिष्ठानों द्वारा प्रायोजित कार्यक्रमों पर रोक जैसे प्रावधान सामुदायिक रेडियो की लोकप्रियता एवं विज्ञापनदाताओं को रिझाने में अवरोधक बने हुए हैं। इन प्रतिबंधों के कारण निजी क्षेत्र से प्राप्त होने वाले धन के स्रोतों का संकुचन हो गया है। जिसके कारण सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के संचालन में वित्तीय प्रबंधन बड़ी चुनौती बन गया है। अध्ययन के परिणाम ये भी बताते हैं कि सरकारी प्रायोजित कार्यक्रमों के भुगतान में विलंब भी एक चुनौती है इसके साथ साथ कारगर विपणन रणनीति के अभाव में सामुदायिक रेडियो केन्द्र निजी क्षेत्र से विज्ञापन प्राप्त कर पाने में असफल सिद्ध हो रहे हैं।

5.2.4 उद्देश्य - 4. उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के वित्तीय प्रबन्धन का अध्ययन।

हेनरी फेयोल कहते हैं प्रबंधन करना पूर्वानुमान लगाना और योजना बनाना, व्यवस्थित करना, समन्वय करना और नियंत्रण करना है। शोध समस्या के उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण के उपरांत परिणाम बताते हैं कि उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो का वित्तीय प्रबंधन एक दुरुह कार्य बना हुआ है। हालांकि हाल के वर्षों में तकनीकी के विकास के साथ साथ सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की स्थापना की लागत में कमी आई है फिर भी सामुदायिक रेडियो केन्द्र अपने प्रयासों से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त धन की व्यवस्था नहीं कर पा रहे हैं। हमारे शोध अध्ययन के परिणाम इस दिशा की ओर इंगित करते हैं कि सामुदायिक रेडियो केन्द्र संचालित करने वाले संस्थान इसके ध्येय को दृष्टिगत रखते हुए कार्पोरेट की वित्तीय सहायता से स्वयं को दूर रखते हैं। तथा जिन समुदायों के सर्वांगीण विकास हेतु एवं उनके विचरों की अभिव्यक्ति के लिये मंच प्रदान करते हैं उनकी आर्थिक स्थिति स्वयं न्यूनतम स्तर पर है इसलिए उनसे कोई वित्तीय सहायता की अपेक्षा करना ठीक नहीं है। ऐसी स्थिति में सिर्फ सार्वजनिक और निजी क्षेत्र ही वो विकल्प हैं जिनसे सामुदायिक रेडियो केन्द्र संचालित करने वाले संस्थान वित्तीय सहयोग की अपेक्षा करते हैं।

चूंकि शोधकर्ता ने उच्च शिक्षण संस्थानों यानी विश्वविद्यालयों पर अपना अध्ययन केन्द्रित रखा है। हम जानते हैं कि विश्वविद्यालय एक औपचारिक प्रकृति के संस्थान होते हैं जिनके पास स्रोत के अन्य कई माध्यम होते हैं। शोध अध्ययन के परिणामों के अनुसार ये संस्थान अपने सामुदायिक रेडियो केन्द्र के खर्च की आपूर्ति के लिए सार्वजनिक क्षेत्र एवं निजी क्षेत्रों के स्रोत के अतिरिक्त संस्थान के अन्य मदों से धन का समायोजन सामुदायिक रेडियो के लिए करते हैं।

5.2.5 उद्देश्य - 5. उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के लिये उपयुक्त मॉडल पर अध्ययन

मॉडल एक प्रतिकृति है जिसे अधिक उपयोगी और बेहतर परिणाम प्राप्त करने में सहायता करने के लिए निर्माण किया जाता है। शोध समस्या के उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण के उपरांत परिणाम बताते हैं कि उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों ने अपने उद्देश्यों की पूर्ति में संतोषजनक सफलता प्राप्त की है। लेकिन सामुदायिक रेडियो को अत्यधिक उपयोगी, अत्यधिक प्रासंगिक एवं अत्यधिक सार्थक बनाने के लिए नयी संरचना एवं नये प्रयोगों की अत्यधिक संभावनाएं हैं। शोध अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि सामुदायिक रेडियो केन्द्रों से प्रतिदिन 4 घंटे का न्यूनतम प्रसारण होना चाहिए जिसमें 2 घंटे का नया कार्यक्रम अनिवार्य रूप से प्रसारित होना चाहिए। कार्यक्रमों की गुणवत्ता एवं विविधता के लिए लाइव फोन इन कार्यक्रमों के प्रसारण के साथ-साथ कार्यक्रमों में सुधार के लिए रेडियो विशेषज्ञों की सेवाएं लेने पर भी सहमति है। कार्यक्रमों के निर्माण में विद्यार्थियों की सहभागिता पर उन्हें प्रोत्साहन स्वरूप प्रोत्साहन धनराशि अथवा प्रोत्साहन प्रमाणपत्र दिये जाने का प्रावधान किया जाना चाहिए।

शोध अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि सामुदायिक रेडियो पर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी से संबंधित कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाना चाहिए तथा कार्यक्रमों की प्रस्तुतीकरण में रोचकता का समावेश किया जाना चाहिए। तथा सामुदायिक रेडियो केन्द्र के संचालकों की शिकायतों एवं सुझावों के निपटारे के लिए एक शिकायत निवारण पोर्टल का गठन किया जाना चाहिए। उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के वित्तीय प्रबंधन के लिए सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित हो रहे कार्यक्रमों की लोकप्रियता एक अनिवार्य रूप से आवश्यक शर्त है। इसके लिए सामुदायिक रेडियो को समाचारों के प्रसारण की अनुमति के साथ साथ निजी क्षेत्र के द्वारा प्रायोजित कार्यक्रमों की अनुमति प्रदान करना चाहिए।

5.3 परिकल्पनाओं का परिणाम

परिकल्पना - 1: उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की वस्तुस्थिति के सन्दर्भ में विभिन्न प्रकार के विद्यार्थियों एवं विशेषज्ञों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उपरोक्त परिकल्पना से संबंधित मात्रात्मक आंकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण तथा विशेषज्ञों से व्यक्तिगत साक्षात्कार एवं समूह परिचर्चा द्वारा प्राप्त गुणात्मक आंकड़ों के विषय वस्तु विश्लेषण के उपरांत प्राप्त मान, 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शोध की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात विभिन्न प्रकार के उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की वस्तुस्थिति के संदर्भ में विद्यार्थियों एवं विशेषज्ञों के विभिन्न वर्गों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना - 2: उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों से प्रसारित कार्यक्रमों की उपयोगिता के सन्दर्भ में विभिन्न प्रकार के विद्यार्थियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उपरोक्त परिकल्पना से संबंधित मात्रात्मक आंकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण के उपरांत प्राप्त मान, 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।अतः शोध की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात विभिन्न प्रकार के उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों से प्रसारित कार्यक्रमों की उपयोगिता के संदर्भ में विद्यार्थियों के विभिन्न वर्गों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना - 3: उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की चुनौतियों के सन्दर्भ में विभिन्न प्रकार के विद्यार्थियों एवं विशेषज्ञों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उपरोक्त परिकल्पना से संबंधित मात्रात्मक आंकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण तथा विशेषज्ञों से व्यक्तिगत साक्षात्कार एवं समूह परिचर्चा द्वारा प्राप्त गुणात्मक आंकड़ों के विषय वस्तु विश्लेषण के उपरांत प्राप्त मान, 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।अतः शोध की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात विभिन्न प्रकार के उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की चुनौतियों के संदर्भ में विद्यार्थियों एवं विशेषज्ञों के विभिन्न वर्गों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना - 4: उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के वित्तीय प्रबन्धन के सन्दर्भ में विभिन्न प्रकार के विशेषज्ञों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उपरोक्त परिकल्पना से संबंधित विशेषज्ञों से व्यक्तिगत साक्षात्कार एवं समूह परिचर्चा द्वारा प्राप्त गुणात्मक आंकड़ों के विषय वस्तु विश्लेषण के उपरांत लगभग एक समान निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं। अतः शोध की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात विभिन्न प्रकार के उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की वित्तीय प्रबंधन के संदर्भ में विशेषज्ञों के विभिन्न वर्गों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना - 5: उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के उपयुक्त मॉडल के सन्दर्भ में विभिन्न प्रकार के विद्यार्थियों एवं विशेषज्ञों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उपरोक्त परिकल्पना से संबंधित मात्रात्मक आंकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण तथा विशेषज्ञों से व्यक्तिगत साक्षात्कार एवं समूह परिचर्चा द्वारा प्राप्त गुणात्मक आंकड़ों के विषय वस्तु विश्लेषण के उपरांत प्राप्त मान, 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शोध की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात विभिन्न प्रकार के उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के लिए उपयुक्त मॉडल के संदर्भ में विद्यार्थियों एवं विशेषज्ञों के विभिन्न वर्गों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5.4 निष्कर्ष

सामुदायिक रेडियो को हम समुदाय के रेडियो के रूप में भी जानते हैं। सामुदायिक रेडियो केंद्र की परिधि शहरी क्षेत्रों में लगभग 10 किलोमीटर तक की होती है जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में 20 किलोमीटर तक पहुंच जाती है। स्थानीय क्षेत्र के स्थानीय समुदाय की शैक्षिक विकास संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति में सामुदायिक रेडियो अहम भूमिका निभा रहे हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणामों से शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि, इसमें कोई दो राय नहीं है कि सामुदायिक रेडियो के शैक्षिक प्रसारणों से समुदाय को लाभ हुआ है। इसके शैक्षिक प्रसारणों ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान किया है।

जिसके जरिये न सिर्फ विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जा रही है बल्कि उन विद्यार्थियों को भी बेहतर शिक्षा दी जा रही है जो विश्वविद्यालय की दहलीज से बाहर हैं। सामुदायिक रेडियो की सबसे बड़ी खूबी यही है कि वो शिक्षा का एक सस्ता, सर्वसुलभ एवं स्थानीय समुदाय की आवश्यकताओं के अनुकूल बहुत सृजनात्मक माध्यम है। यहां यह रेखांकित करना उचित होगा कि भाषा और साहित्य के शिक्षण के लिए सामुदायिक रेडियो सबसे बेहतरीन माध्यम है। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि दुनिया भर में भाषा शिक्षण के

मामले में रेडियो की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। साहित्य की बारीकियों को समझने और समझाने के लिए रेडियो का खूब इस्तेमाल हुआ है। ऐसा नहीं है कि विज्ञान एवं तकनीकी विषयों के शिक्षण में सामुदायिक रेडियो की कोई सार्थक भूमिका नहीं है। शोध के परिणाम बताते है कि चूंकि विज्ञान एक प्रायोगिक विषय है इसलिए उसके कार्यक्रम तैयार करने के लिए विषय वस्तु के साथ साथ रोचकता का ध्यान रखना भी जरूरी है।

शोधकर्ता ने सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के प्रत्यक्ष अवलोकन में ये पाया कि सामुदायिक रेडियो के चलन एवं संभावनाओं के बाबत वहाँ के प्रभारियों एवं विद्यार्थियों के प्रत्याशित उत्साह में उत्तरोत्तर कमी आ रही है। शोधकर्ता को उक्त कमी के पीछे मुख्यतः तीन कारण समझ में आये-

1- सामग्री

2- संसाधन

3- संरचना

सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के सुचारू रूप से संचालन के लिए उनके पास प्रसारण योग्य उपयोगी सामग्री का अभाव दिखता है। ये अभाव शिक्षा कार्यक्रमों की गुणवत्ता एवं लोकप्रियता पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है। विषय वस्तु लेखन में अकुशलता, रेडियो की विभिन्न विधाओं की अज्ञानता के साथ साथ कार्यक्रमों एवं विषयवस्तु के सामंजस्य का अभाव भी झलकता है।

सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के सुचारू रूप से संचालन के लिए उनके पास वित्तीय संसाधन एवं प्रशिक्षित मानव संसाधन का अभाव दिखता है। ये अभाव शिक्षा कार्यक्रमों की गुणवत्ता एवं लोकप्रियता पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है। धन के तरलता की निरंतरता एवं कार्यक्रमों के प्रस्तुतीकरण में रोचकता का अभाव भी झलकता है।

सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के सुचारू रूप से संचालन के लिए उनके पास प्रसारण की अवधि एवं कार्यक्रमों के लिए सुविचारित संरचना का अभाव दिखता है। ये अभाव शिक्षा कार्यक्रमों की गुणवत्ता एवं लोकप्रियता पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है। सुनिश्चित प्रसारण की अवधि एवं व्यवस्थित प्रारुप का अभाव भी झलकता है।

5.5 संस्तुतियाँ

वर्तमान समय में सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के संचालन के लिए दो दार्शनिक दृष्टिकोण मौजूद हैं।

1. सेवा का दृष्टिकोण
2. सहभागिता का दृष्टिकोण

सेवा का दृष्टिकोण इस लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करता है कि सामुदायिक रेडियो समुदाय के सशक्तिकरण एवं उनके सर्वांगीण विकास के लिए क्या, कैसे और कितना योगदान कर सकता है। जबकि सहभागिता का दृष्टिकोण इस लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करता है कि सामुदायिक रेडियो समुदाय के सशक्तिकरण एवं उनके सर्वांगीण विकास के लिए श्रोताओं की सहभागिता का क्या, कैसे और कितना योगदान ले सकता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष इस ओर इंगित करते हैं कि उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के लिए सेवा और सहभागिता का मिश्रित दृष्टिकोण अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

अध्ययन के निष्कर्षों से ये ज्ञात हुआ है कि विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो अपने उद्देश्यों की पूर्ति में संतोषजनक प्रभाव डाला है लेकिन इसे अत्यधिक उपयोगी बनाने के लिए बहुत कुछ किया जाना शेष है।

उपरोक्त निष्कर्षों के आलोक में शोधकर्ता के निम्नलिखित सुझावों को सम्मिलित करते हुए सामुदायिक रेडियो का एक उपयुक्त मॉडल तैयार किया जा सकता है।

1- प्रसारण

2- प्रशिक्षण

3- परमिशन

4- प्रोत्साहन

5- पहचान

6- पार्टिसिपेशन

1. प्रसारण

सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के प्रत्यक्ष अवलोकन एवं शोध परिणामों में ये पाया गया कि विभिन्न सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के प्रसारण की अवधि में एकरूपता नहीं है। किसी रेडियो केन्द्र पर प्रतिदिन एक घंटे का प्रसारण होता है तो किसी केन्द्र पर दो घंटे का। किसी केन्द्र पर कुछ नये कार्यक्रमों का प्रसारण होता हैं तो किसी केन्द्र पर कार्यक्रमों का पुनर्प्रसारण किया जाता है। शोधकर्ता का सुझाव एवं संस्तुति है

कि विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित प्रत्येक सामुदायिक रेडियो केन्द्र पर प्रतिदिन 4 घंटे का प्रसारण अनिवार्य होना चाहिए और ये सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि उसमें 2 घंटे का नया कार्यक्रम अवश्य हो।

2. प्रशिक्षण

सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के प्रत्यक्ष अवलोकन एवं शोध परिणामों में ये पाया गया कि वहां पर काम करने वाले कार्मिक पर्याप्त प्रशिक्षित नहीं हैं। सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के समक्ष सामग्री लेखन की चुनौती है अगर लेखन हो गया तो उसे रोचकता पूर्वक प्रस्तुत करने की चुनौती है और अगर प्रस्तुतिकरण भी संतोषजनक है तो उस कार्यक्रम से धनोपार्जन की चुनौती है। चूंकि रेडियो एक ध्वनि का माध्यम है, ध्वनि माध्यम की अपनी सीमाएँ तथा विशेषताएँ होती हैं। व्यक्ति के बोलने के अंदाज़, उसकी भाषा, उसका उच्चरण और भाषा पर मजबूत पकड़ का प्रभाव सुनने वाले पर पड़ता है। प्रसारणकर्ता को उसके विद्यार्थी देख नहीं पाते, केवल उसे सुन कर उसके व्यक्तित्व की कल्पना तथा उसके ज्ञान का अनुमान लगाते हैं। सामुदायिक रेडियो के कार्यक्रमों में रोचकता एवं श्रोताओं में उत्सुकता बनाये रखने के लिए प्रसारण कर्मियों का उचित प्रशिक्षण आवश्यक है। सुप्रसिद्ध संचरशास्त्री श्री मॉल्टन ने कहा था-

You can improve the faculty by practice or impair it with negligence

3. परमिशन

सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के प्रत्यक्ष अवलोकन एवं शोध परिणामों में ये पाया गया कि सामुदायिक रेडियो द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों से देश दुनिया की ताजातरीन समसामयिक घटनाओं की जानकारी नहीं हो पाती। सामुदायिक रेडियो पर समाचारों के प्रसारण का अधिकार मिलना चाहिए। अभी साफ्ट न्यूज की परमिशन है लेकिन हार्ड न्यूज की परमिशन मिलनी चाहिए। शोधकर्ता का सुझाव एवं संस्तुति है कि प्रत्येक सामुदायिक रेडियो पर अपराह्ल 2 बजे से लेकर शाम 6 बजे तक प्रत्येक घंटे दो मिनट का समाचार प्रसारित किया जाना चाहिए। ताकि प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले अभ्यर्थियों को अपने साथ जोड़ा जा सके। इससे सामुदायिक रेडियो की प्रासंगिकता बनी रहेगी और इसकी लोकप्रियता में बढ़ोतरी होने से बाजार से विज्ञापन प्राप्त होंगे। फलस्वरूप सामुदायिक रेडियो को अपनी वित्तीय चुनौतियों से निपटने में आसानी होगी।

4. प्रोत्साहन

सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के प्रत्यक्ष अवलोकन एवं शोध परिणामों में ये पाया गया कि सामुदायिक रेडियो के सुचारू संचालन में उसे गंभीर वित्तीय चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। हालांकि सरकार ने सामुदायिक रेडियो पर 7 मिनट प्रति घंटा विज्ञापन की नीति लागू कर रखी है। लेकिन सामुदायिक रेडियो के सुव्यवस्थित संचालन के लिए इसे बढायें जाने की आवश्यकता है। शोधकर्ता का सुझाव एवं संस्तुति है कि प्रति घंटे विज्ञापन की सीमा 7 मिनट से बढ़ाकर 9 मिनट की जानी चाहिए जिसमें 5 मिनट प्रति घंटे का कार्यक्रम अथवा विज्ञापन सरकार द्वारा प्रायोजित किया जाना चाहिए तथा निजी क्षेत्रों द्वारा प्रायोजित कार्यक्रमों की अनुमति प्रदान की जानी चाहिए। शैक्षिक क्षेत्रों में सामुदायिक रेडियो के प्रोत्साहन के लिए एक स्वतंत्र नियामक संस्था बनाई जाये तथा उसके शिकायतों के निवारण के लिए एक Redressal Forum का गठन हो। हालांकि सरकार ने इस दिशा में ठोस प्रयास शुरु कर दिए है। भारत में सामुदायिक रेडियो को लोकप्रिय बनाने में कम्युनिटी रेडियो एसोसिएशन ऑफ इंडिया तथा कम्युनिटी रेडियो फोरम ऑफ इंडिया ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आवश्यकता इस बात की है कि ऐसी स्व-नियमन एजेंसियों को केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा प्रोत्साहन प्रदान किया जाए ताकि सामुदायिक रेडियो का अपेक्षित विस्तार हो सके।

5. पहचान

सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के प्रत्यक्ष अवलोकन एवं शोध परिणामों में ये पाया गया कि सामुदायिक रेडियो के सफल संचालन में इसकी पहचान एक बाधा है। सामुदायिक रेडियो को लोकप्रिय बनाने के लिए प्रत्येक विश्वविद्यालय के स्नातक एवं परास्नातक पाठ्यक्रमों में सामुदायिक रेडियो पर आधारित एक विषय होना चाहिए जिसमें उत्तीर्णांक प्राप्त करना अनिवार्य हो तथा वित्तीय प्रबन्धन के लिए विश्वविद्यालय में सामुदायिक रेडियो पर कुछ शॉर्ट टर्म व्यवसायिक कोर्सेज संचालित किये जाने चाहिए जिससे कि सामुदायिक रेडियो क्षेत्र को दक्ष कार्मिक प्राप्त हो सकें। साथ-साथ सामुदायिक रेडियो का बाजार विकसित हो सकें।

सामुदायिक रेडियो में कार्यरत कर्मियों में दक्षता एवं कुशलता की कमी है। शोधकर्ता का सुझाव है कि सामुदायिक रेडियो के उन्नयन एवं उसके गुणवत्तापूर्ण लेखन तथा सुरुचिपूर्ण प्रस्तुतिकरण के लिए

उसमें काम करने वाले कार्मिकों की अनिवार्य योग्य ता कम से कम रेडियो/सामुदायिक रेडियो में 6 महीने का सर्टिफिकेट होना चाहिए एवं वांछित योग्य ता पत्रकारिता विषय में डिग्री होनी चाहिए।

6. पार्टिसिपेशन

सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के प्रत्यक्ष अवलोकन एवं शोध परिणामों में ये पाया गया कि सामुदायिक रेडियो पर शोध कार्य पूर्ण कर चुके अध्येता या तो किसी शैक्षिक संस्थान में मीडिया शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं या किसी मीडिया संस्थान में नौकरी कर रहे हैं। लेकिन सामुदायिक रेडियो अध्येता के तौर पर उनकी विशेषज्ञता का लाभ न तो समाज को मिल पा रहा है और न ही वो स्वयं संतुष्ट हो पा रहे हैं। इसलिए शोधकर्ता का सुझाव एवं संस्तुति है कि सामुदायिक रेडियो शोधकर्ताओं का राष्ट्रीय स्तर पर एक डाटा बेस तैयार किया जाय तथा सामुदायिक रेडियो के लाइसेंस के लिए प्राप्त होने वाले आवेदनों एवं सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के संचालन की पूरी प्रक्रिया का नोडल अधिकारी नियुक्त किया जाये। जिससे कि सामुदायिक रेडियो की प्रसारण की गुणवत्ता में सुधार हो सके।

5.6 भावी शोध अध्ययन की संभावनाऐं

प्रस्तुत शोध अध्ययन सामुदायिक रेडियो: उच्च शिक्षा में चलन एवं संभावांनाये शीर्षक पर उत्तर प्रदेश में सम्पन्न किया गया है। भावी अध्ययन देश-विदेश के अन्य शहरों एवं राज्यों में किया जा सकता है। साथ ही यह अध्ययन अन्य पाठ्यक्रम वर्ग, अन्य शैक्षिक योग्य ता वाले विद्यार्थियों पर किया जाना प्रासंगिक हो सकता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन उच्च शिक्षा पर सम्पन्न किया गया है। भावी अध्ययन चिकित्सा शिक्षा, प्राविधिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, स्कूली एवं माध्यमिक शिक्षा पर भी किया जा सकता है। प्रस्तुत अध्ययन का सैम्पल साइज 200 विद्यार्थी हैं। भावी शोध अध्ययन का प्रतिदर्श 200 से ज्यादा भी हो सकता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन 8 विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित 8 सामुदायिक रेडियो केन्द्रों पर सम्पन्न किया गया है। भावी अध्ययन इससे अधिक या कम शैक्षणिक संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों पर भी किया जा सकता है।

❖❖❖

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

शोध पत्र @Research Paper

1. Africanus, D.L. Naaikuur, L. (2015). Who Is the Community in Community Radio?:A Case Study of Radio Progress in the Upper West Region, Ghana. *Ghana Studies*, 68-89.

2. Fraser, C. Estrada, S. R. (2002). Community Radio : ChangeAnd Development. *Development*, 45, 69-73.

3. Jayprakash, T.Y. Shoesmith, B. (2015). Community Radio And Development : Tribal Audiences in South India. *The Power of Global Community*, 43-53.

4. Jun'ichi, H. Shaw, R. (2013). Role of Community Radio in Disaster Management: Reflections from Japan. *Disaster Risk Reduction*, 121-132.

5. Khan, Saadullah. (2010). Role of Community Radio in Rural Development. *Communication Today*, 12,87-93.

6. Nisha, Dr. Pawar. (2013). Women's Community Radio For Poverty Reduction. *Communication Today*, 134-143.

7. Sharma,Arpita. Sharma,Adita. (2011) Community Radio: Information Tool In Fisheries. *Communication Today*, 13,79-88.

8. Aleaz, Bonita. (2010). Community Radio And Empowerment. *Economic & Political Weekly*, 29-32.

9. Fraser, colin. Estrada, Sonia. (2002). Community Radio for change & Development. *Local/Global Encounters*, 69-73.

पुस्तक /BOOKS

1. श्रीमाली, डॉ0 इन्द्रप्रकाश. (2013). सामुदायिक रेडियो, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
2. कुमार, डॉ. मनोज. (2016). कम्युनिटी रेडियो, आलेख प्रकाशन, दिल्ली।

3. मुरादा, पूजा ओ. राममूर्ति, डॉ. श्रीधर. (2019). भारत में सामुदायिक रेडियो, आलेख प्रकाशन, दिल्ली।

4. Aspinell, Richard. (1973). *Radio Programme Production: A Manual for Training*, UNESCO Press, Paris.

5. Alphonse, Xavier. (2010). *Role of Autonomous College In Strengthening The Quality Of Higher Education*, Bharti Vidyapeeth.

6. Bora, A. (2010). *University Education In India: Need For A Total Revamp*, Bharti Vidyapeeth.

7. Dunaway, David. (2010). *Community Radio At The Beginning Of The 21st Century*, Cresskill, Nj Hampton Press.

8. Agarwal, B. (2005). *Campus And Community Radio Policy Educational Media In India*. Sage India Publications, New Delhi.

9. Berkowitz, Edward D. (2010) *Mass Appeal Formative Age Of The Movies, Radio And TV.* CambridgeUniversity Press, USA.

10. Saxena,Ambrish. (2011). *Radio in NewAvatarAM to FM : Community Radio And Policy Measures*,Kanishka Publishers & Distributors, New Delhi.

11. Saxena, Ambrish. (2012). *Issues of Communication DevelopmentAnd Society*. Kanishka Publishers anddistributors, New Delhi.

12. White, Shirley A. (2015). *The Art of Facilitating participation realizing the power of grass root communication*, Sage India Publications, New Delhi.

13. Mathur, Asharani. (2006). *The Indian Media: Illusion, DelusionAnd Reality, Broadcasting In India*.Rupa And Co. New Delhi.

14. Ledwith, Margaret. (2006). *Community Development A Critical Approach*. Rawat Publications-New Delhi.

15. Cary, Lee J. (1970). *Community Development As A process*. University of

Missouri Press, Columbia.

16. Gupta, V.S. (2000) *Communication And Development : The Challenge of Twenty-first Century*. Concept Publishing Company, New Delhi.
17. Sinha, Arbind. (1985). *Mass Media And Rural Development :A Study of village communication inBihar*. Concept Publishing Company, New Delhi.
18. Murthy, DVR. (2006). *Development Journalism*, *What next? An Agenda For Press*. Kanishka Publishers and Distributors, New Delhi.
19. Aldridge, Meryl. (2007). *Understanding the Local Media*. Open University Press the McGraw HillCompanies.
20. Chakravartty, Paula. Sarikakis, Katharine. (2006). *Media PolicyAnd Globalization*. EdinburgUniversity Press.
21. Hutchby, Ian. (2006). *Media Talk*. Open University Press, McGraw Hill Education/House.
22. White, A. Shirley Nair, Sadanandan.Ascroft, Joseph. (1994). *Participatory Communication workingfor change & Development*. Sage India Publications, New Delhi.
23. Minar, W. David. Greer, Scott. (1969). *The Concept of Community*. The State University Press.
24. Jaiswal, B. (2010). *Indian Higher Education In India: A Paradox.* Bharti Vidyapeeth.
25. Parmeswaran, K. (2012). *Radio Broadcasting:A Reader's Guide, Community Radio AndBroadcasting*. Authors Press.
26. Delanty, Gerard. (2010). *Community And Difference: Varieties of Multiculturalism*.Rutledge, London.
27. Chingell, Hugh. (2002). *Key Concepts in Radio Studies*. Sage Publications-

London.

28. Carole, Fleming. (2002). *The Radio Handbook* (2nd edition). Routledge-London, New York.

29. Christopher, H. Slerling. (2004). *Encyclopedia of Radio, Publication Fitzroy*. Dearborn, Taylor AndFrancis Group, London.

30. Baneerjee, Indrajeet. Logan, Stephen. (2008). *Asian Communication Handbook*, AMIC Publications, Singapore.

31. Baneerjee, Indrajeet. Kalinga, Seneviratne. (2006). *Public Service broadcasting in the Age of Globalization*. AMIC, Singapore.

32. Pati, Jagannath. (2004). *Media And Tribal Development*. Concept Publishing Company.

33. Rajan, Nalini. (2005). *Practising Journalism : Values, constraints, implications*. Sage India Publications -New Delhi.

34. Kumar, Keval. J. (2010). *Mass Communication in India* (Fourth Edition). Jaico Publishing House, Mumbai.

35. Desai, Vandana. Potter, Robert B. (2011). *The Companion to Development Studies* (2nd edition). Hodder Education, London.

36. Sparks, Colin. (2007). *Globalization Development And the Mass Media*. Sage Publication,London.

37. Kumar, Rakesh. (2012). *Mass Movement And Power of Media*. Prashant Publishing House.

38. Downing, John. (2010). *Encyclopaedia of Social Movement Media*, Sage India Publication, New Delhi.

39. Waltz, C. Mitzi. (2005). *Alternative And Activist Media.* Edinburgh University Press.

40. Singhal, Arvind. Rogers, Everett M, (1999). *Entertainment–Education:A communication Strategy for Social Change*. Routledge Publications, Taylor & Francis Group, New York And London.

41. Irene, Guijt. & Meera Kaul, shah. (1998). *The Myth of Community*. Intermediate Technology Publications.

42. Sharma, Ajay kumar. (2012). *Radio And Television Broadcasting : Community Radio*. Random Publications.

43. Talbot, Mary. (2007). *Media Discourse: Representation And Interaction*, Edinburgh University Press Ltd.

44. McPhail, Thomas. (2009). *Development Communication Reframing The Role of Media 2009*. Wiley-Blackwell Publishing Ltd, UK.

45. Godara, Indraj. (2013). *Community And Community Organization,* Black Prints India, New Delhi.

46. Pasha, A R. (1997). *Community Radio: The Voices Of The People*. Voices Publication, Bangalore- India.

47. Narula, Uma. (2013). *Development Communication TheoryAnd Practice*, Haranand Publications Pvt, Ltd.

48. Reddy, Y.K. (2014). *Understanding Development Communication*. Astha Publishers andDistributors.

49. Desai, Kapil. (2010). *Media ethics & Social Change*. Swastic Publications, Delhi.

50. Hesmondhalgh, David & Toynbee, Jason. (2008). *The Media And Social theory*. Rootledge, London& New York.

51. Koradia, Zahir. (2013). *Web Radio:A Manual For Streaming Audio On The Web*. Common wealthEducational Media Centre forAsia, New Delhi.

52. Singh, Dhawal Paramjeet. (2011). *Community Journalism: International Encyclopaedia of NewMedia*. Anmol Publications, New Delhi.

53. McLuhan, Marshall. (2008). *Understanding Media*. Routledge Taylor, London & New York.

54. Siddiqui, Hasan. (2011). *Radio Broadcasting*. Anmol Publications, New Delhi.

55. UNESCO, (1965). *World Radio And Televison*. UN Press.

56. Awasthy, G.C. (1965). *Broadcasting in India*, Allied Publishers.

57. Singh, Kaushalendra Saran. (2013). *History of Broadcasting in India: Policies & Principles*. Kanishka Publishers, Distributors, New Delhi.

58. Gandhi, Ved Prakash. (2008). *Broadcasting & Development Communication*. Kanishka Publishers,Distributors, New Delhi.

59. Sharma, Jitendra kumar. (2003). *Digital Broadcasting Journalism*, Authors Press, New Delhi.

60. Joni, C. Joseph. (1997). *Mass Media & Rural Development*. Rawat Publications, New Delhi.

61. McLeish, Robert. (1999). *Radio Production A Manual For Broadcasters* (4th edition). Focal Press,Elsevier, Burlington MA-Great Britain.

62. Lee, Nancy R. Cotler, PhilipA . *Social Marketing Influence Behaviour For Good* (4thedition), Sage India Publications, New Delhi.

63. Kak,Anil. (2008). *Essentials And Practices of Radio Management, Radio In India, present And future of Radio*. Wings Institute of Broadcasting.

64. Thomas, Pradeep Ninan. (2011). *Negotiating Communication Rights*. Sage India Publication, New Delhi.

65. Stevenson, K. (2012). *Media Literacy Project For Pre University Students*. Concept Publishing Co., New Delhi.

66. Mathur, Shyam. (2009). *Samudayik Radio*. Hindi Granth Academy, Jaipur.

67. Fraser, Collin. Restrepo, Sonia. (2001). *Community Radio Handbook.* UNESCO & CEMCA, New Delhi.

68. Pavarala, Vinod. Malik, Kanchan. (2007). *Other Voices: The Struggle For Community Radio in India*. New Delhi.

69. Handbook (2012). *Community Radio basics*. Ministry Of InformationAnd Broadcasting, New Delhi.

70. Handbook (2010). *Community Radio Awareness*. Ministry Of InformationAnd Broadcasting & CEMCA. New Delhi

71. Handbook (2013). *Community Radio Awareness*. Ministry Of Information And Broadcasting & CEMCA. New Delhi.

72. भानावत, डॉ0 संजीव (2009). इलेक्ट्रानिक मीडिया, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।

73. ठेरिया, घरवेश, डॉ० सिंह महावीर (2013). रेडियो माध्यम और तकनीक दिल्ली, शिल्पायन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स।

74. शर्मा, कौशल, (2004). रेडियो प्रसारण. प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली।

75. वर्मा, चन्द केशव. (1990). शब्द की साख. (भारत में रेडियो प्रसारण), प्रदीपन प्रकाशन, इलाहाबाद।

76. कुमार, डॉ० सिद्धनाथ. (1992). रेडियो नाटक की कला,

77. राधाकृष्णन प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।

78. मुकर्जी, पी.एन. (2000). मैथडोलॉजी इन सोशल रिसर्च: डिलेमाज् एण्ड पर्सपैक्टिव्स. सेज इण्डिया पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

79. सारन्ताकोस, एस. (1988). सोशल रिसर्च, मैकमिलन, लन्दन।

80. ग, पी.वी. (1977). साईन्टिफिक सोशल सर्वेस एण्ड रिसर्च, प्रेन्टिस हाल, नई दिल्ली।

81. डाबी, जॉन टी. (1954). इन इन्ट्रोडक्शन टू सोशल रिसर्च (सम्पादित), द स्टेकवेल कम्पनी, लन्दन।

82. करलिंगर, एफ.एन. (1964). फाउण्डेशन ऑफ विहैवियरल रिसर्च, हाल्ट रिनेहार्ट एण्ड विन्सटन, न्यूयार्क।

83. ब्लैक जेम्स ए.एण्ड डी.जे. चैम्पियन (1976). मैथेड्स एण्ड ईश्यूज इन सोशल रिसर्च, जॉन विले, न्यूयार्क।

84. यिन, आर.के. (1991). केस स्टडी रिसर्च: डिजाइन एण्ड मैथड. सेज पब्लिकेशन्स, न्यूवरी पार्क, सी.ए.।

85. मोजर, सी.ए. (1961). सर्वे मेथड्स इन सोशल इन्वेस्टिगेशन. दी मैकमिलन कम्पनी, न्यूयार्क।

86. गुडे एण्ड हाट. (1952). मेथड्स ऑफ सोशल रिसर्च, मैकग्रा-हिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क।

87. नन्दा, वर्तिका. (2013). नये जमाने का मीडिया: सामुदायिक रेडियो. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।

88. जॉन, डयूवी. सक्सेना, सरोज. (1999). शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्री आधार, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

89. भटिया, बीडी. अग्रवाल, एसके (1990). शिक्षा के तात्विक सिद्धात. राजेश पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।

90. एकॉफ, आर.एल. (1953). द डिजाइन ऑफ सोशल रिसर्च, यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस।

91. कोहन, एम. एण्ड नैगेल (1934). एन इन्ट्रोडक्शन टू लॉजिक एण्ड साइन्टिफिक मैथड्स. मैकमिलन कम्पनी, न्यूयार्क।

92. लुण्डबर्ग, जी.ए. (1942). सोशल रिसर्च. मैकमिलन कम्पनी, न्यूयार्क।

93. के.डी. बैली, (1967). मैथड्स ऑफ सोशल रिसर्च. यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस।

94. आहूजा, राम (1994). रिसर्च मैथड्स. प्रभात पब्लिकेशन्स, दिल्ली।

शोध प्रबन्ध/ Thesis

1. श्रीवास्तव, डॉ साधना. पाण्डेय, डॉ गोविंद जी (2015). *भारत में सामुदायिक रेडियो की सामाजिक परिवर्तन में भूमिका एवं प्रभाव का अध्ययन*. बीबीएयू, लखनऊ।
2. अग्रवाल, डॉ राजेश. किशोर, डॉ देवेश (2013). *राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में सामुदायिक रेडियो का आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर प्रभाव का अध्ययन*. यूपीआरटीओयू, प्रयागराज।

वेबसाइट@Website:

1. Chander, U. Sharma, R. (2013).*Bridge To Effective Learning Through Radio*.www.col-org. retrieved on 01.11.2019.
2. Thomas, J. (2011). *CampusAnd Community Radio For Non Formal Education*.www.col.org. retrieved on 30.12.2018.

❖❖❖

स्क्रीनिंग प्रपत्र

1. नामः ....

2. लिंग: छात्रा छात्र

3. कक्षा: स्नातक परास्नातक

4. आवासीय पृष्ठभूमि: ग्रामीण शहरीय

5. सामुदायिक रेडियो सम्बन्धी जानकारी:

1. क्या आपने सामुदायिक रेडियो का नाम सुना है ? हाँ नही
2. क्या आप अपने संस्थान के सामुदायिक रेडियो के बारे में जानते है? हाँ नहीं

3. क्या आपने अपने संस्थान के सामुदायिक रेडियो को कभी सुना है? हाँ नहीं

4. क्या आप अपने संस्थान के सामुदायिक रेडियो को 24 घण्टे में न्यूनतम एक बार ट्यून इन करते है? हाँ नहीं
5. आप अपने संस्थान के सामुदायिक रेडियो को प्रतिदिन कितनी देर तक सुनते है?

एक घण्टे से कम एक घण्टे से ज्यादा

सामुदायिक रेडियो **उपयोगिता प्रश्नावली**

1. नामः ....

2. लिंग: छात्रा छात्र

3. कक्षा: स्नातक परास्नातक

4. आवासीय पृष्ठभूमि: ग्रामीण शहरीय

सामान्य नियम:

- कृपया सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए, प्रत्येक प्रश्न में एक ही विकल्प का चयन कीजिए।
- प्रश्न संख्या-26 पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

क्र0सं0	**प्रश्न**	**बहुत अधिक**	**अधिक**	**सामान्य**	**सामान्य से कम**	**बिल्कुल नही**
प्रश्न-1	**क्या आप अपने शैक्षणिक संस्थान का सामुदायिक रेडियो सुनना पंसद करते है?**					
प्रश्न -2	**क्या आप सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों को सुनना पंसद करते है?**					
प्रश्न -3	**क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का प्रसारण समय आपके लिए उपयुक्त होता है ?**					
प्रश्न -4	**क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित कार्यक्रमों में शिक्षा**					

क्र0सं0	प्रश्न	बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही
	आधारित कार्यक्रमों की सख्या 50 प्रतिशत या उससे अधिक रहती है ?					
प्रश्न - 5	क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रतिदिन शिक्षा आधारित नये कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है?					
प्रश्न -6	क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रतिदिन शिक्षा आधारित लाइव फोन इन कार्यक्रम प्रसारित किए जाते है ?					
प्रश्न -7	क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित कार्यक्रमों की प्रतिपुष्टि (फीडबैक) से आपको संतुष्टि प्राप्त होती है?					
प्रश्न-8	क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर सेवा देने के लिए आपको प्रमाण पत्र/ प्रोत्साहन राशि दिया जाता है?					
प्रश्न -9	क्या आप अपने सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले					

क्र0सं0	प्रश्न	बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही
	शैक्षिक कार्यक्रमों की निरंतरता से संतुष्ट है?					
प्रश्न -10	क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम आपके पाठ्यक्रम से सम्बन्धित होते है?					
प्रश्न -11	क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम कला एवं मानविकी विषयों से सम्बन्धित होते है?					
प्रश्न -12	क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम विज्ञान एंव तकनीकी विषयो से सम्बन्धित होते है?					
प्रश्न -13	क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों को सुनकर आपकी जिज्ञासा का समाधान हो जाता है ?					
प्रश्न -14	क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम प्रतियोगी परीक्षाओं में सहायक					

क्र0सं0	प्रश्न	बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही
	होते है?					
प्रश्न -15	क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित "मन की बात" का कार्यक्रम सामाजिक सद्भाव एवं शैक्षिक जागरुकता के लिए प्रेरित करता है?					
प्रश्न -16	क्या आप के सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले शैक्षिक कार्यक्रम रोचक होते है?					
प्रश्न -17	क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले कला एवं मानविकी विषयों के कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण रोचक होता है?					
प्रश्न -18	क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले विज्ञान एंव तकनीकी विषयों के कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण रोचक होता है?					
प्रश्न -19	क्या आपके सामुदायिक रेडियो का प्रसारण तकनीकी व्यवधान के कारण बाधित होने पर आपकी पढ़ाई पर नकारात्मक प्रभाव					

क्र0सं0	प्रश्न	बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही
	पड़ता है?					
प्रश्न -20	क्या आप मानते हैं कि सामुदायिक रेडियो का प्रसारण सामान्य हो जाने पर आपकी पढ़ाई पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है?					
प्रश्न -21	क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रसारण के दौरान Reception Quality से सामान्यतः आप संतुष्ट रहते है?					
प्रश्न -22	क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर काम करने वाले कार्मिको की तकनीकी दक्षता एवं कुशलता से आप संतुष्ट रहते हैं?					
प्रश्न -23	क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रतिघंटे के कार्यक्रम में 5 मिनट या उससे अधिक का विज्ञापन प्रसारित होता है?					
प्रश्न-24	क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों के निर्माण में रेडियो विशेषज्ञों की आवश्यकता है?					

क्र0सं0	प्रश्न	बहुत अधिक	अधिक	सामान्य	सामान्य से कम	बिल्कुल नही
प्रश्न -25	**क्या आपके सामुदायिक रेडियो पर समाचारों के प्रसारण के परमीशन की आवश्यकता है?**					

प्रश्न-26 उच्च शिक्षा में सामुदायिक रेडियो की भूमिका एवं उपयोगिता पर अपने विचार व्यक्त कीजिये।

उत्तर: ....

....

....

....

आपको आश्वासन दिया जाता है कि सभी जानकारियाँ पूर्णतया गोपनीय रखी जायेगी। किसी भी उत्तरदाता की व्यक्तिगत जानकारी को किसी भी प्रकार से सार्वजनिक नहीं किया जायेगा।

बहुमूल्य समय देने के लिये धन्यवाद

साक्षात्कार एवं फोकस समूह परिचर्चा के प्रश्न

प्रश्न-1 क्या आप मानते हैं कि उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों से नियमित प्रसारण के लिए थन के स्रोतों की पर्याप्त उपलब्धता है?

प्रश्न-2- क्या आप मानते हैं कि उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों से मौलिक प्रसारण के लिए उनके पास उपयोगी सामग्री की पर्याप्त उपलब्धता है?

प्रश्न-3 क्या आप मानते हैं कि उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों से निर्बाध प्रसारण के लिए प्रशिक्षित मानव संसाधन की पर्याप्त उपलब्धता है?

प्रश्न-4 उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो की विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से उपयोगिता क्या है?

प्रश्न-5 उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो की संस्थान के दृष्टिकोण से उपयोगिता क्या है?

प्रश्न-6 उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो की विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से चुनौतियां क्या हैं ?

प्रश्न-7 उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो की संस्थान के दृष्टिकोण से चुनौतियां क्या हैं?

प्रश्न-8 उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के वित्तीय प्रबंधन की रणनीति क्या है?

प्रश्न-9 उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के वित्तीय प्रबंधन में सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र की भूमिका क्या है?

प्रश्न-10 उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो केन्द्रों के लिए आपका प्रस्तावित मॉडल कैसा होना चाहिए।

Vardhman Mahaveer Open University, Kota

Rawatbhata Road, Kota-324010, Rajasthan

Certificate of Participation

This is to certify that Dr. /Mr. /Ms.......Mohd. ...... Meraj ..... Ahmad..................has actively participated in the workshop on ***"Health of Higher Education in India"*** organized by Vardhman Mahaveer Open University, Kota, Rajasthan on 5th of September, 2014.

Happy Teacher's Day

Dr. Keerti Singh	Dr. R. R. Singh	Prof. (Dr.) Vinay Kumar Pathak
Organizing Secretary	Convener (Education)	Vice-Chancellor, VMOU, Kota

Vardhman Mahaveer Open University, Kota

Rawatbhata Road, Kota-324010, Rajasthan

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

Certificate of Appreciation

This is to certify that Dr. /Mr. /Ms. MOHD. MERAJ AHMAD.........has actively participated in DOCUMENTARY... PRESANTATION on the occasion of ***"National Unity Day"*** organized by Vardhman Mahaveer Open University, Kota, Rajasthan on 31st of October, 2014.

National Unity Day

Prof. (Dr.) Vinay Kumar Pathak
Vice-Chancellor, VMOU, Kota

Serial No. 15

Vardhman Mahaveer Open University, Kota

RESULT-CUM-DETAILED MARKS CERTIFICATE

Pre Ph.D. Course Work Examination, 2014

(Journalism)

Roll No. VMOU/14/JM/48

Name Mohd. Meraj Ahmad

Father's Name Mohd. AAshique Ali

Mother's Name Sagiran Khatoon

	Mode of Evaluation	Max. Marks	Marks Obtained	Grade Obtained
	I. Continuous Assessment (CA)			
	Assignments	50	44	
	Presentation of research proposal	25	21	
	Review of five research papers	50	43	
	Review of five articles	25	21	
	Review of a book	10	08	
	Annotated bibliography of two books	10	08	
	Writing of 30 references and bibliography in APA, MLA and Chicago format	30	26	
	Total (Qualifying marks in CA: 60% of CA or Grade C)	200	171	A
	II. Term End Examination (TEE)			
	Part 'A' Module I and Module II	40	30	
	Part 'B' Module III	60	44	
	Total (Qualifying marks in TEE: 50% of TEE or Grade C)	100	74	B
	Grand Total (Part I and Part II)	300	245	
	Overall Result	300	245	A

Grade obtained in Continuous Assessment (CA) A

Grade obtained in Term End Examination (TEE) B

Grade obtained in Overall (CA and TEE) A

Date of Declaration of Result 29-01-2015

Result Prepared by [signature]

Result Checked by [signature]

R Arun Kumar

Controller of Examinations

Note: The total aggregate marks/grade obtained by the researcher in all the three modules is added to determine his / her final performance to get admission in Ph.D. programme. To qualify in the course work the student requires 60% of marks or Grade C in Continuous Assessment (CA) mode of evaluation and 50% of marks or Grade C in Term End Examination (TEE) mode of evaluation separately and in total (CA and TEE), 60% marks or Grade 'C' is necessary for a student to be declared successful for enrolment in Ph.D. programme. The final result is expressed in Alphabetical Grade on Four Point Scale.

Range of % age	Grade
80 +	A (Excellent)
71- 80	B (Good)
60-70	**C (Average)**
40- 59	D* (Unsatisfactory)

** If a student gets Grade 'D' in final result (in CA and TEE) then he or she needs to complete the Pre Ph.D. course work again.*

Serial No. 15 Exam Roll No. VMOU/14/JM/48

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/~~श्रीमती~~ मोहम्मद मेराज अहमद ने वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय की प्री० पीएच०डी० कोर्स वर्क परीक्षा, 2014 में ग्रेड ए में उत्तीर्ण होकर पीएच०डी० पत्रकारिता पाठ्यक्रम में नामांकन हेतु योग्यता प्राप्त की।

Vardhman Mahaveer Open University, Kota

Certificate

This is to certify that Mr./~~Mrs.~~ Mohd. Meraj Ahmad has successfully qualified the Pre Ph.D. Course Work Examination of 2014 and got the eligibility to enroll in Ph.D. Journalism programme of this University. In this examination he/she was placed in Grade A

VMOU, Kota

Date: 14/05/2015

Registrar

VARDHAMAN MAHAVEER OPEN UNIVERSITY, KOTA
(Department of Research)

No.: VMOU/R&D/ /2016/ 4815 Date: 20/4/16

The Head/Convener/Incharge
Department of Journalism
Vardhaman Mahaveer Open University,
Kota

Registration No: VMOU/Research/Ph.D./JM/2014/45

Dear sir,

With reference to your endorsement on the application and approved synopsis of **Mohd. Meraj Ahmad** for registration as a Research Scholar to supplicate for the Ph.D. Degree of the University as per UGC guideline-2009. I am to inform you that he/she has been permitted by the Vice-Chancellor on behalf of the Research Board to carry on Research on the **Title: "सामुदायिक रेडियो: उच्च शिक्षा में चलन एवं संभावनाएं"** under the supervision of Dr. (Smt) Rashmi Bohra, Director, Regional Centre, VMOU, Udaipur.

Please intimate:

(a) Date of commencement of Ph.D. work and;
(b) **Medium of writing of thesis.**
(c) **Hindi/English Transcription of title of your proposed research work.**
(d) **Please also send the revised synopsis in soft copy which you have still not submitted to the department.**

The date of commencement of research work may be the date on which the candidate commences work or an earlier date but it should not be earlier than the date of the **approval of synopsis by the Hon'ble Vice-Chancellor on 09-4-2016.**

The candidate has to follow the general instructions for Ph.D. and act as per guidelines issued by the University as per the UGC Regulations-2009.

Yours truly

—Sd—

Director

Copy forwarded to:

1. Dr. (Smt) Rashmi Bohra, Director, Regional Centre, VMOU, Udaipur.
2. Director, ………………………………………., VMOU, Kota.
3. Director, Academic, VMOU, Kota
4. Incharge, Central Library, VMOU, Kota.
5. Mohd Meraj Ahmad S/O Mohd Aashique Ali 43,44 Aadil Nagar Ring Road Vikas Nagar SPO Lucknow-226022
6. File

K. Bamali

Dy. Director

NATIONAL WEBINAR ON

MEDIA ETHICS DURING COVID-19 : PANDEMIC

ORGANISED BY

JOURNALISM AND MASS COMMUNICATION, SCHOOL OF HUMANITIES
U.P. RAJARSHI TANDON OPEN UNIVERSITY, PRAYAGRAJ
6TH JUNE 2020

E-CERTIFICATE OF PARTICIPATION

This is to certify that ***Mohd Meraj Ahmad*** has participated in the National Webinar on "**Media Ethics during COVID - 19 : Pandemic**" Organised by Journalism and Mass Communication, School of Humanities U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj held on 6th June 2020.

PROF. RPS YADAV	DR. SADHANA SRIVASTAVA	DR. SATISH CHANDRA JAISAL
WEBINAR DIRECTOR	ORGANIZING SECRATARY	WEBINAR CONVENER

VMOU/SOCE/20/1368 (1-347)

NATIONAL WEBINAR

On

"CHALLENGES AND PROSPECTS OF MEDIA DURING COVID-19 PANDEMIC"

June 3, 2020

Organised by

Department of Journalism

Vardhman Mahaveer Open University, Kota (Rajasthan) 324010

Certificate

This is to certify that Prof./ Dr./Mr. /Mrs. MOHD MERAJ AHMAD has participated / attended / delivered lecture in the National Webinar on organised by the Department of Journalism, Vardhman Mahaveer Open University, Kota (Rajasthan) on June 3, 2020. He/She has successfully completed the Webinar.

Prof. R.L. Godaraa	Dr. Subodh Kumar	Dr. Patanjali Mishra
Patron	Convener	Organising Secretary
Vice-Chancellor	Director, SOCE	Dy. Director (Research)

Vidyawarta®

International Multilingual Research Journal
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed Pin-431126 (Maharashtra)

Certificate Of Publication

This is to certify that the review board of our research journal accepted the research paper/article titled THE ROLE OF COMMUNITY RADIO IN THE INCLUSIVE DEVELOPMENT OF HIGHER ED of.

Dr./Mr./Miss/Mrs. MOHD MERAJ AHMAD

It is peer reviewed and published in the Issue 29 Vol. 09 in the month of JAN - MARCH 2019.

Thank you for sending your valuable writing for Vidyawarta Journal

Indexed (IIJIF)
Impact Factor 6.021
Govt.of India, Trade Marks Registry Regd.No.2611690
ISSN-2319 9318

Editor in chief
Dr.Bapu G.Gholap

प्रिंटिंग एरिया™

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed Pin-431126 (Maharashtra)

Printing Area UGC Refereed Journal

Certificate Of Publication

This is to certify that the review board of our research journal accepted the research paper/article titled ग्रामीण क्षेत्रों के शैक्षिक विकास में सामुदायिक रेडियो की चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ of Dr./Mr./Miss/Mrs. मुहम्मद मेराज अहमद

It is peer reviewed and published in the Issue 50 Vol. 01 in the month of फरवरी 2019.

Thank you for sending your valuable writing for printing area Journal

Indexed (IIJIF)
Impact Factor 5.011
Govt.of India, Trade Marks Registry Regd.No.3418002
ISSN 2394-5303

Editor in chief
Dr.Bapu G.Gholap

International Seminar

On

Aspects of Contemporary Arts

Organized by

Department of Fine Arts

Faculty of Music and Fine Arts

Dr Shakuntala Misra National Rehabilitation University, Mohaan Road, Lucknow

in collaboration with

State Lalit Kala Akademi, Uttar Pradesh, Lal Baradari Bhawan, Quisarbagh, Lucknow

Certificate

This is to certify that Prof/ Dr/ Mr/ Mrs/ Ms........Mohd. Meraj Ahmad........ has participated/ presented / submitted a paper titled........Role of Community ....Radio in Contemporary Art........in the International seminar on **Aspects of Contemporary Arts** held on 30-31 March 2017.

P. Raji

Prof. P Rajivanayan

Convener

Dean, Faculty of Music and Fine Arts, DSMNR University, Lucknow

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

प्रमाण-पत्र

राष्ट्रीय संगोष्ठी

बुद्धवार, 29 मार्च, 2017

'सोशल मीडिया के सामाजिक सरोकार'
(Social Concern of Social Media)

प्रमाणित किया जाता है कि प्रो0/डॉ0/श्री/श्रीमती ...Md. Meraj Ahmad.......ने दिनांक 29 मार्च, 2017 को उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रतिभाग किया एवं "Social Harmony & Socialis of higher education through community Radio in Social Media age" शीर्षक पर अपना शोध-पत्र प्रस्तुत किया।

॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

संगोष्ठी निदेशक	संयोजक	आयोजन सचिव
डॉ0 आर.पी.एस.यादव	डॉ0 सतीश चन्द्र जैसल	डॉ0 साधना श्रीवास्तव
निदेशक	असिस्टेन्ट प्रोफेसर	असिस्टेन्ट प्रोफेसर

VARDHMAN MAHAVEER OPEN UNIVERSITY
KOTA (RAJASTHAN)

DEPARTMENT OF JOURNALISM & MASS COMMUNICATION

QUESTION BANK DEVELOPMENT WORKSHOP

8-10 February, 2015

CERTIFICATE OF PARTICIPATION

Dr./Mr./Km./Smt. Mohd. Meraj Ahmad of VMOU, Kota has participated in three days Workshop on "Development of Question Bank" organised by the SCHOOL OF CONTINUING EDUCATION, Department of Journalism & Mass Communication, VARDHMAN MAHAVEER OPEN UNIVERSITY, KOTA.

Prof. H.B. Nandwana
Director, SOCE

Dr. Subodh Kumar
Organising Secretary / Convener